
अनुराग कुमार जीनियस
एक लाश का चक्कर
अपराध रहस्य रोमांच
सूरज
पॉकेट बुक्स


अनुराग कुमा

एक लाश का चक्कर

एक लाश का चक्कर

अनुराग कुमार जीनियस

सूरज पॉकेट बुक्स

एक लाश का चक्कर (उपन्यास)

‘सूरज पॉकेट बुक्स’ पुस्तक संख्या- 57
नवीन संस्करण: जनवरी 2019

कवर: शाहनवाज़ खान
आतंरिक पृष्ट सज्जा: चन्द्रप्रकाश पाण्डेय

प्रकाशक:

सूरज पॉकेट बुक्स
ठाणे, महाराष्ट्र
www.soorajbooks.com
Email ID: soorajpocketbooks@gmail.com & publisher@soorajbooks.com

लेखकीय

डियर फ्रेंड्स,

नमस्कार! लगभग एक साल बाद मैं फिर हाजिर हूँ आपकी अदालत में अपने दूसरे उपन्यास 'एक लाश का चक्कर' के साथ। 'एक लाश का चक्कर' के बारे में कुछ भी कहने से पहले मैं अपनी पूर्वप्रकाशित नॉवेल 'एक्सीडेंट – एक रहस्य कथा' के बारे में बात करना चाहूँगा। सबसे पहले तो अपने प्रकाशक श्री शुभानन्द जी व पूरी सूरज पॉकेट बुक्स की टीम को दिल से शुक्रिया बोलना चाहता हूँ, जिन्होंने मुझ जैसे नये, मामूली लेखक पर विश्वास जताया, नॉवेल छापा। जासूसी नॉवेल हमेशा लुग्दी वाले काले पन्नों पर छपते रहे। कुछ सालों से श्री सुरेन्द्र मोहन पाठक जी के नॉवेल जरूर काले पन्नों पर नहीं छप रहे। ऐसे में सूरज पॉकेट बुक्स ने जासूसी साहित्य को काले पन्नों की गैर जरूरी कालिमा से उबारा और सुपर व्हाईट पेपर पर बेहतरीन साज-सज्जा के साथ प्रस्तुत किया। 'एक्सीडेंट - एक रहस्य कथा' को जो बेहरतरीन सफलता हासिल हुई है उससे आपका ये प्रिय लेखक बहुत-बहुत खुश है। हो भी क्यों न! नॉवेल पाठकों की कसौटी पर पूर्णतया खरा उतरा है। नॉवेल की बाबत पाठकों की जो राय मुझ तक पहुँची है, वो मैं यहाँ आप सब के साथ शेयर करना चाहूँगा।

सबसे पहले मुझे फेसबुक के माध्यम से मथुरा के श्री संतोष सक्सेना जी, जो कि एक बैंक में कार्यरत हैं, का फीडबैक प्राप्त हुआ। वे लिखते हैं– *'अनुराग कुमार वास्तव में जीनियस हैं। मुझे नॉवेल 'एक्सीडेंट– एक रहस्य कथा' सुरेन्द्र मोहन पाठक जी के 'चोरों की बरात' की टक्कर का लगा। नॉवेल में सस्पेंस गज़ब का था।'*

जालंधर, पंजाब के श्री मनु दुग्गल जी फरमाते हैं – *'नाम भले ही 'एक्सीडेंट – एक रहस्य कथा' हो पर कहानी कहीं भी फिसलती नज़र नहीं आती है।'* वे मेरे इस दावे को भी सही ठहराते हैं कि रहस्य से पर्दा अंत में जाकर ही उठा।

इंदौर, मध्यप्रदेश के श्री संदीप नायक जी, जो कि पेशे से वकील हैं, को नॉवेल खूब पसंद आया। उन्होंने इसे फर्स्ट डिवीज़न देकर पास किया। उन्होंने नॉवेल की कथाकथन शैली बहुत अच्छी लगी। भाषा सरल व बोधगम्य थी। दूसरे उनका सारा ध्यान कहानी पर

ही लगा रहा। कठिन, जटिल वाक्यों में उलझना नहीं पड़ा। दृश्यों का सुंदर वर्णन अतिरिक्त रोमांच दे गया। बस उन्हें अघोरानाथ, नागेश व उर्वशी वाले दृश्य थोड़े अनावश्यक लगे।

देहरादून, उत्तराखण्ड के आदरणीय श्री रमाकांत मिश्रा जी, जो खुद एक वरिष्ठ लेखक हैं, लिखते हैं– *'नॉवेल बेहद शानदार है। एक्सीडेंट के चारों ओर एक विशिष्ट रहस्य की लेखक ने जो सृष्टि कर उसके अन्तर्निहित सत्य का जो उदघाटन किया है, वो बेहत रोचक व तर्कसंगत है।'* नॉवेल में उन्हें श्री वेद प्रकाश शर्मा जी की शैली नज़र आई। बस उन्हें नॉवेल के अंत से थोड़ी निराशा हुई। अंत थोडा और विस्तार से होता तो बढ़िया रहता। मैं उनकी इस बात से पूर्ण रूप से सहमत हूँ।

राजस्थान के बड़े ही स्नेही व्यक्ति श्री गुरप्रीत लेक्चरर जी को नॉवेल रहस्य-रोमांच से भरपूर लगा। नॉवेल में एक ठिगने लड़के के माध्यम से आजकल बच्चों की घट रही लम्बाई को दर्शाने वाला प्रसंग उन्हें ज्ञानप्रद लगा।

हिसार, हरियाणा के श्री जे. के. वर्मा साहब, जो कि जासूसी साहित्य में टाइगर के नाम से फेमस हैं, ने बाकायदा मुझे एक बड़ा पत्र भेजा। वे लिखते हैं कि उपन्यास उन्होंने एक ही सीटिंग में पढ़ा। उन्हें उपन्यास बेहद पसंद आया। उपन्यास में कहानी को जिस स्पीड से उठाया गया और बिना ब्रेक लगाये आगे बढाया गया, उनके अनुसार ऐसा बहुत कम लेखक कर पाते हैं। उनकी नज़र में मेरी छवि एक दक्ष व अनुभवी लेखक की बनी है। नोवेक के क्लाइमेक्स से उन्हें भी थोड़ी अप्रसन्नता हुई। फिर भी नॉवेल ने उन्हें बहुत खुश किया।

महूआ, कानपुर देहात के श्री विनोद मिश्रा जी ने जीवन में पहली बार कोई नॉवेल, जो कि 'एक्सीडेंट– एक रहस्य कथा' है, पढ़ा। नॉवेल इतना भाया कि उसे चार बार पढ़ा और फिर नॉवेल पढने का ऐसा चस्का लगा कि मेरे पास उपलब्ध सारे उपन्यास पढ़ डाले।

दिल्ली के श्री आदित्य वत्स जी, जो पेशे से अध्यापक हैं, को नॉवेल बहुत बढ़िया लगा। बीच में कुछ एक जगह उन्हें नॉवेल की गति थोड़ी स्लो जान पड़ी।

महाराष्ट्र के श्री अमित वाधवानी साहब के मुताबिक़ वे हमेशा 'WHO DONE IT' की खोज में रहते हैं। 'एक्सीडेंट– एक रहस्य कथा' नॉवेल *'A well written 'WHO DONE IT'* है।

वाराणसी के श्री चन्द्रप्रकाश जी लिखते हैं – '*Excellent! Unique style of story telling'*

राजस्थान के श्री अमित श्रीवास्तव साहब को नॉवेल बेहद शानदार लगा।

सत्यवीर वर्मा बिरकाली साहब को भी नॉवेल बहुत बढ़िया लगा।

मुंबई के श्री देवेन पाण्डेय जी को नॉवेल शानदार फिल्म की गति सा, रोचक, मनोरंजक लगा। वे कहते हैं कि लेखक ने अपने पहले उपन्यास में ही अपनी क्षमता साबित कर दी है।

इसके अलावा बहुत सारे नाम हैं जिन्हें नॉवेल खूब पसंद आया पर कुछ के ही नाम देना सम्भव है – श्री उदय, विक्की गुप्ता, विजी चौधरी, बबलू जांगिड, एयरफ़ोर्स बैंगलोर में कार्यरत हरपुरा निवासी अमर सिंह राठौर, देवकान्त पाण्डेय, वंदना शुक्ला, अनूप तोमर भडपूरा मध्यप्रदेश, सुशिल राजपूत, जीतू सिंह, विजय कुमार, विवेक कश्यप, आदित्य वाथम, आबिद खान, पेशे से लेखपाल कमल किशोर, अंकित गौर, पियूषा, पूजा चतुर्वेदी, आकांक्षा राठौर, नगीना राजपूत, सर्वेश दिवाकर, राजेश पाण्डेय, राम मिहिर सिंह (नरवाना)।

जिनके नाम नहीं आ पायें हैं मैं अगले नॉवेल में पूरी कोशिश करूँगा कि कोई नाम न छूटे।

लखनऊ के श्री अनंत कात्यान साहब को केवल मेरा नाम ही *Attractive* लगा। उपन्यास उन्हें बिलकुल पसंद नहीं आया। जनाब ने मुझे ई-मेल कर इस बात से अवगत कराया था और बाकायदा चैलेंज जारी किया था कि अगर मैं सच्चा लेखक हूँ तो उनकी उपन्यास की बाबत जो राय हैं उसे अगले नॉवेल की लेखकीय में लिखूं। वो तो मैनें कर ली। उनसे मैं यही कहना चाहूँगा कि मैं अपनी तरफ से हमेशा और मेहनत लगन से लेखन कार्य करूँगा पर फिर भी सबको मेरा नॉवेल पसंद आयेगा ये नहीं कह सकता क्योंकि दुनियाँ में ऐसी कोई चीज नहीं है जिसे सबका प्यार हासिल हो।

' एक लाश का चक्कर'- युवा बिज़नेसमैन प्रभु सोनकर अपनी गर्लफ्रेंड निकट भविष्य में होनी वाली वाइफ के साथ वुडालैंड एक खुबसूरत हिल स्टेशन पर पहुंचा। वह वहाँ छुट्टियाँ मनाने, थकान मिटाने, हरी-भरी वादियों में सुकून पाने गया था, पर वहाँ एक लाश उसके गले ऐसी पड़ी जिसने उसका न सिर्फ चैन-सुकून छीन लिया बल्कि खाना-पीना सब

हराम कर दिया। ये सब कैसे हुआ, क्यों हुआ, आगे क्या हुआ, जानने के लिए खुद पढ़ें मेरी नयी, तेज रफ़्तार, मर्डर मिस्ट्री-कम-थ्रिलर नॉवेल।

अंत में नए वर्ष की शुभकामनाएं देते हुए आपसे विदा लेता हूँ। बस एक वादा चाहता हूँ कि प्रस्तुत उपन्यास पढ़ें। वो जैसा भी लगे अच्छा, बुरा, मुझे अवगत जरुर करायें। जिन पाठकों ने एक्सीडेंट नॉवेल के प्रति जो अमूल्य राय भेजी उन सभी का दिल से आभार।

फीडबैक की प्रतीक्षा में।

आपका,

अनुराग कुमार जीनियस

एक लाश का चक्कर

 अभी घण्टा-भर पहले बारिश होकर हटी थी। सुबह का वक्त था। बारिश की वजह से हर तरफ खुशनुमा माहौल था। पेड़-पौधे, जमीन सब बारिश से सराबोर हो चुके थे। जंगल से होकर गुजरने वाली वह सड़क इस समय बारिश में नहाकर काली नागिन सी प्रतीत हो रही थी। सड़क के किनारे खड़े पेड़ों की पत्तियों से अभी भी बूंदें टप-टप जमीन पर गिर रही थीं। दूर-दूर दोनों तरफ ऊंचे-ऊंचे, गगन से बातें करते जंगल से लदे पहाड़ थे। मौसम में मनमोहक ठण्डक थी। फिलहाल अब आकाश साफ था। पहाड़ों की बारिश का कोई निश्चित समय नहीं होता है... पता नहीं कब बादल आएं और ठंडी-ठंडी बूंदों से सराबोर कर जाएं।

जंगल के उस रास्ते पर एकदम सन्नाटा था।

तभी भीगी सड़क पर तेज रफ्तार से पुलिस जीप आती दिखी, जो मिनट भर बाद ही एक जगह पहुंचकर रुकी। ड्राइवर ने जीप साइड में खड़ी की, फिर उसमें से चार-पांच पुलिसवाले उतरे। उनमें से एक 50 वर्षीय, तोंद वाला इंस्पेक्टर बहादुर सिंह था तथा एक युवा सब-इंस्पेक्टर कमल नैन था। तीन सिपाही थे। बहादुर सिंह ने जीप से उतरकर चारो तरफ एक उड़ती हुई दृष्टि डाली।

“सर, आपको यकीन है कि यहां लाश होगी?” उसके बराबर में खड़े होकर इधर-उधर देखते हुए कमल नैन ने बुझे स्वर में पूछा। लगा जैसे जबरदस्ती लाया गया हो।

“होनी तो चाहिए।”

“किसी ने फोन पर मजाक भी तो किया हो सकता है।” आधे घण्टे पहले किसी ने फोन पर पुलिस को लाश होने के बारे में बताया था। बहादुर सिंह उसकी तरफ घूमा।

“पुलिस से कौन मजाक करेगा? किसी की मजाल है?”

एक पल के लिए कमल नैन सकपकाया, पर तुरंत ही संभलकर दबे स्वर में बोला-”क...कई बार ऐसा हुआ तो है। कई सिरफिरों ने ऐसे मजाक किए हैं।”

बहादुर बहादुर सिंह ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला था फिर सांस भरकर रह गया, पर पल भर बाद कहा-”यहां आए हैं तो पता चल ही जाएगा कि किसी ने हमारे साथ मजाक करने की जुर्रत की है या सच बोला है।”

“हूं! पर फोन करने वाले को यहां होना चाहिए था।”

“पुलिस के पचड़े में कौन पड़ना चाहता है। भाग गया होगा।”

कमल नैन ने ‘हां’ में मुण्डी हिलाई।

“आओ, पहले देखते हैं।”

बहादुर सिंह नीचे ढलान में उतरता चला गया।

पीछे कमल नैन भी लपका। सिपाहियों को तो पीछे जाना ही था। ढलान उतरकर वे सब जंगल में प्रवेश कर गए। बारिश के पानी से पत्ते भींग गए थे। तभी उनके चलने से खडर-

बडर की आवाज नहीं उभर रही थी।

सब लोग बहते हुए पानी के पास जाकर ठिठके। वह पानी पास के झरने से आता था।

"स...सर....ल....लाश।" आगे चल रहे सिपाही ने सबसे पहले कहा।

सबने देखा।

एक लाश उस पत्थर में अटकी हुई थी।

बहादुर सिंह के आदेश पर उस लाश को दो सिपाहियों ने बाहर निकाला। अब लाश पानी से बाहर जमीन पर पड़ी थी। सब उसे घूर रहे थे।

लाश एकदम काली थी, चेहरा जला था। "इसे पहले मारा गया। पहचान छुपाने के लिए चेहरे को बिगाड़ा गया, बाद में जला दिया गया।" बहादुर सिंह लाश को कई पल घूरते रहने के बाद बोला।

"ये बात तो समझ में आती है सर। पर लाश यहां पानी में कैसे आ गई?" कमल नैन ने पूछा।

बहादुर सिंह सोचने लगा।

"कातिल को एकाएक सूझा होगा कि वह लाश झरने में डाल दे, लाश किसी के हाथ में न आएगी। पर उसकी बदकिस्मती से लाश यहां पत्थर में अटक गई।"

"झरने का पानी नैनी झील में जाता है। अगर लाश पत्थर में न अटकती तो बहती हुई झील में जाती। वहां हमेशा पर्यटकों का मेला लगा रहता है। क्या किसी को नजर नहीं आती लाश?"

बहादुर बहादुर सिंह फिर सोचने लगा।

"कातिल को जरूर ये बात मालूम नहीं होगी कि झरने का पानी झील में जाता है।" वह बोला।

"तब तो मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं कि कातिल कोई बाहरी व्यक्ति है। यहां का स्थानीय व्यक्ति नहीं है क्योंकि यहां के स्थानीय व्यक्ति को यह बात पता है कि झरने का पानी नैनी झील में जाता है। वह लाश को पानी में फेंकने की बेवकूफी नहीं करेगा।"

बहादुर सिंह गंभीर हुआ। कमल नयन की छाती चौड़ी होने लगी।

"हो सकता है कि जो तुम कह रहे हो, वो सच हो, पर... जरूरी नहीं!"

"क्यों?" कमल नैन ने तुरंत पूछा।

"हो सकता है कातिल ने कुछ ज्यादा दिमाग लगाया हो और जान बूझकर लाश पानी में डाली हो ताकि हम वही सोचें, जो तुमने अभी सोचा-कि कातिल लोकल का नहीं है-कोई बाहरी व्यक्ति है।"

"आ..आपके कहने का मतलब कातिल लोकल का आदमी है?"

"है नहीं...हो सकता है। ये जरूरी भी नहीं! हो सकता है कि तुम्हारी की बात सच हो, कातिल कोई बाहरी व्यक्ति ही हो। पर सच्चाई खोजबीन करने से ही पता चलेगी।"

वह एक हिल स्टेशन था, जहां पर्यटक घूमने आते थे।

"किस वजह से मारा गया होगा इसे? कमल नैन पलभर की चुप्पी के बाद बोला-"अगर कातिल बाहरी व्यक्ति हुआ तो अब तक फरार भी हो चुका होगा।"

“पहले हमें लाश के बारे में पता करना चाहिए कि वह कौन है...क्या है।” बहादुर सिंह ने याद दिलाया तो कमल नैन ने लाश की तलाशी ली। कपड़े शरीर से बुरी तरह चिपके थे। उसे लाश से कुछ नहीं मिला।

“कातिल बहुत ही शातिर जान पड़ता है। उसने लाश की तलाशी पहले ही ले ली होगी।”

✠✠✠

दीपशिखा।

उस हिल स्टेशन का एक बढ़िया होटल, जो न ज्यादा महंगा था और न ज्यादा सस्ता था। वह पहाड़ की चोटी पर स्थित था। वहां से दूर-दूर तक फैला हरा-भरा जंगल और पहाड़ स्पष्ट नजर आते थे व खूबसूरत लगते थे। इसी होटल के रूम नं. 36 में ठहरे थे युवा और हैंडसम प्रभु व उसकी खूबसूरत गर्लफ्रेंड तमन्ना। दोनों ही वहां रामनगर से घूमने के लिए आए थे।

सुबह पांच बजे के आसपास बारिश शुरू हुई थी, जो लगभग एक घण्टा तक लगातार होती रही थी। दोनों पलंग पर बेसुध पड़े सो रहे थे। बीच में तमन्ना की आंख खुल गई थी। उसे बारिश देखना, उसमें भींगना खूब भाता था तभी तो वह उठ बैठी थी और बैक साइड का स्लाइडिंग डोर खोलकर बाहर निकल आई थी। वो कुछ पल बारिश को देखती रही और फिर खुले लॉन में आ गई। जहां पलभर में ही वह पूरी भींग गई और दोनों हाथ ऊपर उठाकर गोल-गोल घूमने लगी। बहुत खुश नजर आ रही थी। लॉन में लगे पेड़-पौधे, फूल सब खुश नजर आ रहे थे। तमन्ना ने झीनी नाइटी पहनी हुई थी, जो अब उसके शरीर से चिपक गई थी। नाइटी पारदर्शी थी। उसके गोरे अंग चमक से रहे थे। भीतर उसने केवल ब्रा व पैंटी ही पहने हुए थे, जो स्पष्ट नजर आ रहे थे। तमन्ना बेफिक्र होकर बारिश में नहाने का मजा ले रही थी। वो एकाएक चौंकी जब दूसरे रूम की खुली खिड़की से एक आशिक मिजाज, शौकीन (बुजुर्ग) को अपनी ओर ललचाई नजरों से ताकते देखा। वह फौरन भागी और अपने रूम में छज्जे के नीचे आ खड़ी हुई। कुछ पल उखड़ी सांसों को कंट्रोल करती रही, फिर कमरे में आ गई। दरवाजा अंदर से बोल्ट किया। एक नजर पलंग पर औंधे पड़े प्रभु को देखा और फिर बाथरूम में जा समाई।

बाथरूम से दस-पंद्रह मिनट में निकली। तन पर केवल तौलिया था। वार्डरोब से कपड़े निकालकर पहने। जींस की काली पैंट व फुल बाजू की लाल शर्ट। गीले बालों को ड्रायर से सुखाया।

तभी प्रभु जागा।

अब बारिश बंद हुए काफी देर हो चुकी थी। वह उठा और तमन्ना की ओर बढ़ा। तमन्ना आइने के सामने खड़ी थी।

“पहले बाथरूम जाकर फ्रेश हो जाओ।” तमन्ना ने शरारती मुस्कान बिखेरी। उसने शीशे में नजर उसी पर अटका रखी थी।

“तुम नहा चुकी?” प्रभु ने उसके पास पहुंचकर कहा।

“हां! वो भी बारिश में।” वह खिलखिलाई।

“ब..बारिश!” उसने फौरन खिड़की से बाहर देखा।

“म..मुझे क्यों नहीं जगाया?मैं भी बारिश में नहा लेता।” वह शिकायती लहजे में बोला।

“तुम्हें जगाती तो तुम शरारत पर उतर आते।”

“हां ये बात तो तुमने सही कही।”

“इसलिए नहीं जगाया। अब जाओ।” तमन्ना ने उसे बाथरूम की तरफ हल्के से धकेला।

आधे घंटे बाद,जब प्रभु भी नहा-धोकर तैयार हो चुका था, उन्होंने कमरे में ही ब्रेकफास्ट मंगाकर खाया। खाने-पीने के बाद उनका इरादा कहीं घूमने जाने का था।

नाश्ता किए वे अभी फारिग ही हुए थे कि दरवाजे पर दस्तक हुई।

“देखो, वेटर होगा। बर्तन लेने आया होगा।” प्रभु बोला। तमन्ना उठी, जाकर दरवाजा खोला और चौंकी। सामने पुलिस थी। इंस्पेक्टर बहादुर सिंह व सब-इंस्पेक्टर कमल नैन बाहर खड़े थे।

“गुड मार्निंग!”

तमन्ना के माथे पर बल पड़ चुके थे।

“क...कौन है? गेट पर तमन्ना को देर लगी तो प्रभु ने पूछा। पर तमन्ना को जवाब नहीं देना पड़ा। दोनों पुलिसिए अंदर आ गए। पुलिस को देखकर प्रभु भी चौंका।

“गुडर मार्निंग सर!” प्रभु को न चाहते हुए भी कहना पड़ा।

“आपका नाम प्रभु सोनकर है-फ्रॉम रामनगर? बहादुर सिंह बोला।

“ह..हां..हां... पर कैसे जाना?”

“रिसेप्शन से। होटल में ठहरे हर व्यक्ति का लेखा-जेखा रिसेप्शन पर होता है न।”

“ब...बात क्या है?” प्रभु समझ नहीं पा रहा था कि पुलिस क्यों आई है। यही हाल तमन्ना का भी था। वह प्रभु के पास आकर बैठ गई थी।

“बात..बात दरअसल ये है कि लगभग घंटा भर पहले हमें झरने के पास एक लाश मिली...।”

“ल...लाश...।” दोनों उछल पड़े।

“हां! किसी ने हमें फोन कर यह बात बताई थी। हम वहां पहुंचे तो बात सच निकली।” बीच में कमल नैन ने कहा।

बहादुर बहादुर सिंह ने पलटकर उसे घूरा। वह सकपका गया। “उस लाश के बारे में खोजबीन की तो पता चला कि वह लाश एक टूरिस्टर की है, जो इस होटल में ठहरा हुआ था और कल शाम से मिसिंग है। लाश हालांकि बहुत बुरी कंडीशन में थी, फिर भी कुछ कपड़े सही सलामत थे। उसी से होटल वालों ने पहचाना कि वह उन्हीं के यहां ठहरा टूरिस्टर है। मुझे पहले ही लगता था कि हिल स्टेशन से कोई-न-कोई तो मिसिंग है, जो लाश बना पड़ा है। दरयाफ्त की तो शीघ्र ही नतीजा सामने आ गया।

“आना ही था। छोटा सा हिल स्टेशन है। थोड़ी आबादी है। ऐसी खबरें तुरंत पता चल जाती हैं।” कमल नैन फिर बोला। पर इस बार उसे घूरा नहीं गया।

"हालांकि थाने में किसी की मिसिंग रिपोर्ट दर्ज नहीं थी। होती भी कैसे? चौबीस घण्टे के बाद ही ऐसी रिपोर्ट दर्ज कराई जाती है। कानून में ऐसा ही नियम है। पर हम इंतजार नहीं कर सकते थे क्योंकि लाश तो हमें मिल ही चुकी थी। सो हमें तो पता करना ही था लाश के बारे में।"

"अ...आप ये सब हमें क्यों बता रहे हैं?" बहादुर सिंह रुका तो तमन्ना ने पूछा।

बहादुर सिंह ने तमन्ना पर नजर डालकर प्रभु से पूछा-"आप वासु को जानते हैं?"

"कौन...वासु भट्टाचार्य? जानता हूं। बड़ी बढ़िया फिल्में बनाता है।"

"मैं मुम्बई के फिल्म डायरेक्टर वासु भट्टाचार्य की बात नहीं कर रहा।"

"फि..फिर?"

"उस वासु की बात कर रहा हूँ जिसकी हमें लाश मिली है।"

"उसका नाम वासु है?"

"हां!"

" प..पर मैं उसे कैसे जानता हूंगा?"

"वह रामनगर से बिलांग करता था।"

"तो क्या हुआ! रामनगर की आबादी करोड़ के ऊपर है। मालूम है आपको?"

"हां! पर आप भी रामनगर से...।"

"रामनगर से बिलांग करने वाले हर शख्स के बारे में मालूमात होना क्या जरूरी है? क्या ये मुमकिन है?" प्रभु चिढ़कर बोला-"आपके हिल स्टेशन की आबादी तो बहुत कम है। क्या आप यहां के हर बाशिंदे को बाई नेम, बाई फेस जानते हैं?"

"लगता है आप नाराज हो गए हैं? मैंने तो बस यूं ही पूछा था कि शायद आप वासु को जानते हों। केस को हल करने में मदद...।"

"नहीं जानता।"

"हूं! यानी आप सच में वासु को नहीं जानते हैं?

"बार-बार एक ही सवाल करने का क्या मतलब हुआ?" प्रभु बुरी तरह चिढ़ गया था।

बहादुर सिंह ने उसे अपलक घूरा।

"खैर, वैसे आप कल इस होटल में छः बजे के आसपास आकर ठहरे थे... राइट...?"

"हां!"

"फिर आपने क्या किया?"

"टैरेस पर जाकर डांस किया।" प्रभु चिढ़े हुए स्वर में ही बोला- "अ... अरे होटल में आकर अपने कमरे में आकर आराम किया। चाय-नाश्ता किया।"

"वासु आपसे एक-डेढ़ घंटा पहले ही होटल में आया था और आपके सामने वाला रूम उसका है।"?

"होगा! मुझे क्या!"

"फिर साढ़े सात के करीब वह होटल के बाहर गया।..."

बहादुर बहादुर सिंह उसकी बात को नजरअंदाज कर अपनी बात जारी रखते हुए बोला-"...तबसे वापस नहीं लौटा। सुबह झरने के पास उसकी जली हुई लाश मिली।"

“आप कहना क्या चाहते हैं?” प्रभु ने गहरी सांस खींची फिर पूछा।

“हमें अंदेशा है कि उसे किसी बाहरी व्यक्ति ने ही मारा है? वजह फिलहाल पता नहीं पर कत्ल जिस ढंग से हुआ, उससे ऐसा लगता है कि मरने वाला और मारने वाला जरूर एक-दूसरे से परिचित थे। पहचान छुपाने के लिए ही लाश को जलाया गया।”

“क्यों...कातिल लोकल का व्यक्ति क्यों नहीं हो सकता?” अक्सर लोकल के व्यक्ति बाहरी व्यक्ति को लूटकर मार डालते हैं। पहचान छुपाने के लिए लाश को जला देते हैं।”

“मैंने पक्के तौर पर ये बात नहीं कही बल्कि अंदेशा जाहिर किया। वैसे, आप कल होटल के बाहर गए थे?”

“आपको लगता है वासु को मैंने मारा?जिसे मैं जानता नहीं, पहचानता नहीं...।”

“अभी मैंने सिर्फ नाम बोला है। हो सकता है शक्ल से आप उसे जानते हों?”

प्रभु पहली बार सकपकाया।

बहादुर सिंह ने जेब से एक फोटो निकालकर उसकी तरफ बढ़ाते हुए कहा-”ये हमें वासु के कमरे में मिला। देखिए।”

प्रभु ने फोटो लेकर देखी। तमन्ना ने भी देखी। तमन्ना ने हैरानी से प्रभु की ओर देखा। जबकि प्रभु की हालत खराब सी होने लगी थी।

“अब तो आपको वासु याद आया होगा?” बहादुर सिंह ने मजे लेने वाले अंदाज में कहा।

“न...नहीं! मैं...सच में इसे नहीं जानता।”

“कमाल है। फोटो में आप इसके साथ हैं, फिर भी आप ऐसा कह रहे हैं?”

“मैं नहीं जानता कि ये फोटो कब खिंची। म... मेरा यकीन मानिए मैं इस शख्स को बिल्कुल नहीं जानता।”

बहादर सिंह गंभीर हुआ। कुछ पल प्रभु के चेहरे पर नजरें गड़ाये रहा फिर फोटो वापस ले ली।

“हो सकता है वासु से आपकी कभी छोटी-मोटी मुलाकात हुई हो... उसी दरम्यान फोटो खिंचवाई हो। काफी समय बीत गया हो आपका याद न हो। ऐसा कभी-कभी हो जाता है।”

प्रभु ने फौरन इंकार में गर्दन हिलाई।

“ए...ऐसा बिल्कुल नहीं है।”

“फिर ये फोटो कैसे खिंची?”

“मैं..मैं बता चुका हूं। म...मुझे इस बारे में कुछ पता नहीं! म.म...मैं तो खुद हैरान हूं कि आखिर एक अनजान व्यक्ति के साथ मेरी तस्वीर कैसे खिंची।”

“हूं! बहरहाल आप वासु को बाई नेम, बाई शक्ल नहीं जानते?”

ये सच है।”

“ठीक है। अब ये बताइए कि कल रात आप होटल से कहीं बाहर गए थे?”

“न...नहीं...।”

“ये ठीक कह रहे हैं।” बीच में पहली बार तमन्ना बोली। बहादुर सिंह ने उसकी तरफ देखा। फिर प्रभु से पूछा-”ये कौन हैं?”

“मेरी गर्लफ्रेंड!”

“गर्लफ्रेंड?”
“बहुत जल्द हमारी शादी होने वाली है।”
“हूं!” उसने गंभीरता से हुंकार भरी। फिर उठ बैठा।
“बातचीत करने के लिए शुक्रिया।”
फिर दोनों पुलिसिए रुख्सत हो गए।
लॉबी में पहुंचकर आगे बढ़ते हुए कमल नैन बोला”प्रभु कहता है वह वासु को जानता नहीं पर वासु के साथ उसका फोटो है। ये कैसे हुआ होगा?”
“वह झूठ बोल रहा हो सकता है।”
“या सच भी हो सकता है।”
“कैसे?” बहादुर सिंह ठिठका।
“वासु व प्रभु दोनों ही रामनगर से आए। कोई रामनगर का ही व्यक्ति होगा जो प्रभु का दुश्मन होगा। उससे किसी बात का बदला लेना चाहता होगा। इधर उसे वासु व प्रभु के हिल स्टेशन आने के बारे में पता चला होगा।”
“तुम्हारे कहने का मतलब, वासु की हत्या किसी ने प्रभु को फंसाने के लिए की। वो फोटो उसने ही वासु के कमरे में प्लांट किया?”
“फोटो की वजह से ही तो हमें प्रभु के बारे में पता चला। फोटो न होता तो कैसे पता चलता?”
“फोटो के बारे में क्या ख्याल है?” आगे बढ़ते हुए बहादुर सिंह ने पूछा।
“ट्रिक फोटो से ऐसे कमाल होना कोई बड़ी बात नहीं है।”
“हूं! पर अभी कुछ निश्चित करना सही नहीं होगा, क्योंकि हो सकता है वासु मर्डर में प्रभु का हाथ हो। फोटो के बारे में वह झूठ बोल रहा हो।”
“यानी दोनों के बीच में कोई ऐसा मुद्दा था, जिसे लेकर बात मर्डर तक पहुंची।”
“मे बी। दोनों का एक ही दिन आना। एक ही होटल में ठहरना। पास-पास कमरे होना। ये सब बातें मुझे उलझन में डाल देती हैं।”
“य...ये इत्तेफाक हो सकता है।”
“मुझे नहीं लगता।”
दोनों होटल से बाहर आ गए।
“हमें पता करना पड़ेगा कि आखिर कल रात प्रभु होटल के बाहर गया था या नहीं! और ये भी कि वासु बाहर क्यों, कहां गया था?”
✠✠✠
“तुम कहते हो कि तुम वासु को नहीं जानते!” पुलिस के जाने के बाद तमन्ना गंभीर स्वर में बोली-”जबकि फोटो में तो...।”
“म...मुझे नहीं पता यह करिश्मा कब हुआ।” प्रभु सोचनीय मुद्रा में बोला-”पर सच मानो मैं वासु को नहीं जानता।”
“मुझे तुम पर विश्वास है पर.. आखिर वह फोटो खिंची कैसे? और सबसे बड़ी बात है कि वासु वह फोटो यहां तक क्यों लाया?”

“मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा।” प्रभु परेशान दिखा।

तमन्ना भी परेशान, बेचैन नजर आ रही थी।

एकाएक प्रभु ने सामान्य लहजे में खुद को संतुलित करके कहा- “खैर, ये सब छोड़ो। चलो कहीं घूमने चलते हैं। मूड फ्रेश हो जाएगा।”

तमन्ना ने हैरानी से उसे देखा।

“अरे जब कुछ किया नहीं तो डर नहीं!” वह उसके भाव को फौरन ताड़ गया और बेफिक्री से बोला-”चलो अब देर न करो। कम ऑन।”

“प...पुलिस तुम पर वासु के कत्ल में शामिल होने का शक कर रही है। ऐसे में हम कूल होकर घूम पाएंगे?”

“कमरे में बंद रहने से अगर कूल बने रहे तो ठीक है। हम यहीं रहेंगे, कहीं नहीं जाएंगे। खिड़कियां बंद कर लेंगे-दरवाजों पर ताले जड़ लेंगे- ठीक!”

तमन्ना उठ बैठी। वह प्रभु को और नाराज नहीं करना चाहती थी। फिर प्रभु ने ठीक बात कही थी। कमरे में बंद रहने से बेहतर था बाहर जाकर कहीं घूमना।

घूम-फिरकर वे शाम को होटल वापस लौटे।

पर जब कमरे के पास पहुँचे तो ठिठके।

“क्या हुआ?” प्रभु को चौंका हुआ देखकर तमन्ना ने पूछा।

“दरवाजा खुला है।”

तमन्ना उसकी कमर में हाथ डाले उससे लिपटी हुई थी, चौंक पड़ी। फौरन अलग होकर दरवाजे की ओर पलटी।

“द...दरवाजा...तो हम बंद करके गए थे।” वह हैरानी से बोली।

दरवाजा सच में खुला हुआ था। चौखट व दरवाजे के बीच हल्की रोशनी बाहर आ रही थी। उसी से वो चौंके थे, दरवाजा खुले होने का अनुमान लगा था।

मामला रहस्यमय हो उठा था।

दोनों के दिल अनचाहे डर से जोर-जोर से धड़कने लगे थे। मन में अनचाहे भय का धुआं भरने लगा था।

प्रभु ने हिम्मत जुटाकर, तमन्ना को पीछे कर, हाथ से धीरे से दरवाजा खोला।

और सामने जिनके दर्शन हुए उन्हें देखकर क्रोध से लाल हो गया। सामने सोफे पर दोनों पुलिसिए आराम कर रहे थे।

तमन्ना भी भीतर पुलिस को देखकर आश्चर्यचकित रह गई।

“ये हमारे रूम में क्या कर रहे हैं?” वह नाराजगी में बोली। प्रभु तेजी से लपककर दोनों के पास पहुंचा।

“आ गए आप।” बहादुर सिंह सोफे की पुश्त से पीठ टिकाये, ऊंध-सा रहा था। प्रभु को देखा तो जम्हाई लेते हुए बोला।

“व्हाट आर यू डूईंग इन माई रूम?” प्रभु ने गुस्से में पूछा।

“कुछ नहीं! बस यूं ही...।”

“व्हाट! यूं ही।” प्रभु फट पड़ने को तैयार था।

"लगता है, आप नाराज हो गए।"

"किसी के रूम में इस तरह घुसकर बैठना गैर-कानूनी है। मालूम है?" तमन्ना भी तमतमाकर बोली।

"हमसे बेहतर कौन जानता होगा ये बात।" बहादुर सिंह लापरवाही से बोला।

"फिर भी।"

"पहले आप लोग बैठ जाइए फिर मैं समझाता हूं।"

दोनों कसमसाते हुए सामने वाले सोफे पर बैठ गए।

"बात दरअससल यह है कि जब हम होटल में आए तो पता चला कि आप लोग बाहर गए हैं। लौटने के टाइम के बारे में पता नहीं था। होटल की लॉबी में बैठकर इंतजार करते, इससे बेहतर हमें लगा कि आपके रूम में बैठकर इंतजार करें। सो... बस यहां आकर बैठ गए। भला हो आपका जो जल्दी आ गए, वरना मुझे तो नींद...।" उसने जोर से जम्हाई ली। पता नहीं असली थी या नकली-और बोला- "आने लगी थी।"

"होटल वालों ने रोका नहीं?"

"उनकी इतनी औकात नहीं!"

दोनों कुछ पल खामोश रहे।

"आने का सबब क्या था?" कुछ पल बाद प्रभु ने शांत लहजे में पूछा।

"यहां आकर सोने का तो बिल्कुल नहीं था।"

"फिर?"

"फिर....सुबह आपने झूठ बोला था, इसलिए सच जानने के लिए दोबारा आना पड़ा।"

"झूठ?" प्रभु ने चौंककर उसे देखा।

"सरासर झूठ।"

प्रभु ने बेचैनी से पहलू बदला।

"क्या झूठ बोला प्रभु ने?" तमन्ना खुद हैरान थी। एक नजर प्रभु पर डालकर उसने पूछा।

"इन्हें पता है।"

"क्या पता है मुझे?" एकाएक झल्ला गया प्रभु।

"कमाल है! आपने झूठ बोला और आपको ही नहीं पता।" बहादुर सिंह व्यंग्य से मुस्कराया।

"अ...अरे मैंने क्या झूठ बोला था? कुछ बताएंगे या यूंही गोल-मोल बातें करते रहेंगे।"

"आपने सुबह हमसे झूठ बोला था कि कल रात आप होटल से बाहर नहीं गए थे।" बहादुर सिंह कुछ रुककर प्रभु पर नजर गड़ाते हुए बोला।

प्रभु ने सूखे होठों पर बेचैनी से जुबान फेरी।

"अ..आपको जरूर कोई गलतफहमी हुई है इंस्पेक्टर साहब।" तमन्ना सपाट लहजे में बोली-"प्रभु और मैं..कल रात होटल से बाहर नहीं गए।"

"आप नहीं गई होंगी पर...प्रभु महाशय जरूर बाहर गए थे। क्यों प्रभु जी?"

“आप तुक्का मार…।”

“हमारे पास इस बात का पक्का सबूत है।” प्रभु की बात बीच में काटकर तपाक से बोला बहादुर सिंह।

प्रभु व तमन्ना दोनों चौंके। तमन्ना ने हैरानी से प्रभु को देखा।

“अ..आपको जरूर गलतफहमी…।”

“हमने कहा न हमारे पास सबूत है।” तमन्ना ने कहना चाहा पर उसकी बात भी बीच में काटकर बहादुर सिंह ने याद दिलाया।

वह सकपका गई।

“क्या सबूत है?” उसने फिर पूछा।

प्रभु की तरफ प्रश्नसूचक नजरों से कुछ पल देखने के बाद उसने फिर निर्णयात्मक मुद्रा में कहा -”जिस टैक्सी में आप बैठकर कहीं गए थे, उसका हमने पता लगा लिया है।”

प्रभु ने बेचैनी से पहलू बदला। तमन्ना ने हैरानी से प्रभु को देखा।

“कहें तो टैक्सी ड्राइवर को शिनाख्त के लिए यहाँ बुला लूं?”

“नहीं….।” प्रभु ने सूखे होठों पर जुबान फेरी और बड़ी मुश्किल से स्वीकारा।

“त..तुम कल रात बाहर गए थे। कब?” तमन्ना को यकीन नहीं हो रहा था।

“त..तुम उस वक्त आ…आराम कर…शायद सो रही थी।”

“लेकिन क्यों….?”

“बेहतर होगा कि जो मोहतरमा ने पूछा है, उसका जवाब दें क्योंकि यही हमारा भी प्रश्न है। साथ में कहां, कितने बजे, प्रश्नों के उत्तर भी देना। बार-बार पूछने-बताने में टाइम खराब होगा।”

“रामनगर से होटल में आने के बाद हम दोनों ने खा-पीकर आराम करने का फैसला किया था। तमन्ना शायद ज्यादा थकी थी, इसलिए इसे जल्दी नींद आ गई थी।”

“आप रामनगर से यहां पैदल आए थे?”

“प्लेन से।”

“फिर कहीं घूमने की बजाय आराम करने का क्या मतलब?”

“आपको क्या पता कि हम लोग किस सिच्युएशन से रामनगर से यहां आए थे। फिर जब घूमने ही आए थे तो हमारे पास घूमने के लिए पर्याप्त वक्त था। ये नहीं था कि हमें दो-चार घंटे में ही वापस जाना है। या आपको इस बात में भी भेद लगता है।”

“ठीक! ठीक! आगे बताइए।”

प्रभु रुककर पुनः बोला-”पर मुझे नींद नहीं आ रही थी। मैं उठकर बैक डोर से पिछवाड़े के लॉन में टहलने लगा। बाहर मौसम अच्छा था।”

“आप इनकी तरह थके नहीं थे।” कमल नैन ने व्यंग्य किया।

“थका होता तो भी मैं पलंग पर लेटकर नींद ले रहा होता। लॉन में टहल नहीं रहा होता।”

बहादुर सिंह ने कमल नैन को घूरा। वह सिटपिटिया गया।

“ठ…ठीक है। आगे बताइए।” वह हड़बड़ाकर बोला।

“लॉन में टहलते हुए अचानक मुझे नैनी लेक का ख्याल आया। वहां चांदनी रात में घूमना मन को आनंदित करता है। सो मैं वहाँ चला गया। होटल से वह ज्यादा दूर नहीं थी।”

“आप रामनगर से पहली बार यहां आए हैं। राइट? आप ऐसा बता रहे थे।” बहादुर सिंह ने टोका।

“हां!”

“फिर लेक के बारे में इतनी जानकारी कैसे है?”

“जब कोई समझदार व्यक्ति कहीं बाहर अनजान जगह पहली बार घूमने जाता है तो वह वहां के बारे में,वहां की खास चीजों के बारे में जानकारी इकट्ठा कर लेता है...किताबों से,...इंटरनेट से....।”

बहादुर सिंह हड़बड़ाया। पर तुरंत ही संभला और खीसें निपोरते हुए बोला-”तो यहां के बारे में आपने किताबों से, इंटरनेट से जानकारी प्राप्त की। बढ़िया। वाकई आप समझदार हैं। खैर... आगे।”

“टैक्सी में मैं लेक गया और लौट आया बस।”

“और कहीं नहीं गए... कहीं रुके नहीं आप?”

“नहीं!”

“हूं! तो आपके पास टिकट तो होगा?”

“टिकट? कैसा टिकट?”

“लेक में बोटिंग करने के लिए पैसे लगते हैं, बदले में एक टिकट दिया जाता है, जो एक तरह से सबूत होता है कि आपने बोटिंग की। वो टिकट?”

“नहीं है।”

“क्यों?” बहादुर सिंह की आंखें चमक सी रही थीं।

“क्यों क्या! जब मैंने बोटिंग नहीं की तो टिकट कैसे होगा मेरे पास।”

“अरे! ये तो अजीब बात है। आप लेक तक गए और आपने बोटिंग नहीं की। वहां तो लोग बोटिंग का ही लुत्फ उठाने जाते हैं।”

“इसमें अजीब क्या है? क्या लेक पर कोई यूं ही नहीं जा सकता? बोटिंग न करे तो फांसी का हुक्म सुना दिया जाता है?” प्रभु चिढ़कर बोला- “या लेक में डुबा-डुबाकर मार देने का प्रावधान है।”

बहादुर सिंह हड़बड़ाया।

“ए...ऐसा तो कुछ नहीं है।”

“फिर अजीब क्या है?”

“वो तो मैंने चलताऊ बात की थी। लोग लेक पर बोटिंग का ही लुत्फ लेने जाते हैं, इसलिए मैं बोला।”

“मगर बोटिंग न करें तो क्या कोई तगड़ा टैक्स भरना पड़ता है?”

“अ...अरे ऐसा कुछ नहीं है। आप कहां की बात कहां ले जा रहे हैं।” पहली दफा वह नाराज होकर गुस्से में बोला-”कम से कम हमारा कुछ तो लिहाज कीजिए। आप टूरिस्ट हैं, इसलिए हम आपका लिहाज कर रहे हैं और सामान्य पूछताछ कर रहे हैं।”

प्रभु नरम पड़ा।

"स...सॉरी।"

"इट्स ओके।" वह भी नरम हुआ और आगे पूछा-"तो आप कल रात केवल लेक देखने भर गए थे?"

"न।"

"फि..फिर?"

"सच कहू तो बोटिंग का सोचकर ही लेक पर गया था पर... वहां जाकर मन बदल गया।"

"अरे...क्यों?"

"क्योंकि लेक पर पहुंचकर मुझे लगा कि मुझे अकेले बोटिंग नहीं करनी चाहिए। अकेले बोटिंग में वो लुत्फ नहीं मिलेगा जो तमन्ना के साथ मिलता। वहां हर कोई जोड़े में ही बोटिंग का मजा ले रहा था।"

"वहां जोड़ों को देखकर ही आपको तमन्ना जी का ख्याल आया जो पहले नहीं था?"

"हां!"

"हूं! यानी आप फिर वापस होटल में लौट आए?"

"हां!"

"आपको याद है कि आप कितने बजे होटल से लेक के लिए निकले थे? कब पहुँचे.... कितनी देर ठहरकर कितने बजे वापस लौटे? मतलब आने-आने में कुल कितना टाइम लगा?"

"लगभग एक घंटा।"

"यहां से टैक्सी से लेक पहुंचने में बीस मिनट के करीब लगते हैं। इतने ही आने के जोड़े जाएं तो... आने-जाने में 40 मिनट खर्च हुए, जो होते ही हैं। बाकी बचे बीस मिनट, जो आपने लेक पर बिताए। राइट?"

"ह...हां!"

"वहांकुछ खाया-पिया तो होगा या केवल टहलकर लौट आए?"

"आपने सही कहा।"

"हूं! तो आप केवल लेक तक गए। टहले और लौट आए।"

"मैं बता ही चुका हूं।"

"ओह....हां! मैं तो भूल गया था। वैसे, आप कितने बजे गए थे?"

"आठ बजे।"

"कैसे पता?"

"वापसी में कमरे में आने पर दीवार घड़ी पर नजर पड़ गई थी इत्तेफाकन। उस समय घड़ी में नौ बज रहे थे। मैं मुश्किल से लेक पर बीस मिनट ही ठहरा था। बाकी लेक पर आने-जाने का 40 मिनट लगता है बकौल आपके।"

"इसलिए अंदाजा लगा लिया कि आप आठ बजे गए थे?"

"हां! अगर आने-जाने में लगने वाले समय के बारे में आपका अनुमान सही है तो...।"

वह मुस्कराया।
"बातें...बढ़िया करते हैं।"
"थैंक्स।" प्रभु बोला।
"आपके आने-जाने के बारे में होटल के किसी व्यक्ति को मालूम नहीं क्योंकि आप होटल के पिछवाड़े टहल रहे थे। वहीं से पीछे वाले गेट से ही आना-जाना किया।"
"हां! इसमें कोई चोरी है।"
"नहीं तो। गेट है ही इसलिए कि कोई आ-जा सके। पर आप सामने वाले गेट से क्यों नहीं गए?"
"तब कहां पता था कि इस बारे में सवाल-जवाब होगा। मालूम होता तो बैक डोर से जाने की जहमत नहीं उठाता।"
"यानी बैक डोर से जाने के पीछे कोई खास मकसद नहीं था?"
"क्या खास मकसद हो सकता है?"
"खैर छोड़िए। वैसे, तमन्ना जी को आपने क्यों नहीं बताया कि कल रात आप लेक पर गए थे।"
"पहले सोचा था कि बताऊंगा पर...।"
"पर क्या?"
"पर सुबह आप से झूठ बोला था। सोचा अगर वाटर लेक पर जाने वाली बात तमन्ना को बताई तो ये क्या सोचेगी। मुझे लगा कहीं ये मुझ पर शक न करने लगे इसलिए...।"
"हूं! पर आपने हमसे झूठ क्यों बोला था?"
"आप जिस ढंग से बात कर रहे थे, उससे मुझे लगा कि कहीं मेरे सच बताने से आप कुछ और न समझ बैठें। म.... मैं डर गया था कि वासु के कत्ल में आप मुझे न घसीट लें।"
बहादुर सिंह कुछ देर उसे घूरता रहा। फिर बोला-"हमें यह भी पता चल गया है कि वासु कल रात वुडा लैंड गया था।"
"गया होगा।"
"वुडा लैंड लेक से थोड़ा ही आगे है। टैक्सी से लगभग पांच-सात मिनट की दूरी पर है।"
"मुझे मालूम है।"
"मेरे ख्याल से आपको सब कुछ मालूम है।"
"क्या मतलब?"
"मतलब ये कि... आपने लेक जाने की जो थ्योरी पेश की है, वह खड़े पैर नहीं बनी बल्कि पहले से तैयार थी।"
"अ... आप कहना क्या चाहते हैं?"
"मैं ये कहना चाहता हूं कि आप यहां एक सोची-समझी साजिश के तहत आए हैं।"
"क्या?"
"वजह मुझे नहीं पता पर आप वासु को ठिकाने लगाने ही यहां आए थे। इसलिए आप जानबूझ कर इसी होटल में ठहरे ताकि वासु पर नजर रख सकें। आपको यह भी मालूम था

कि वासु यहां किसी काम से वुडालैंड आया है। आपने वेट किया। जैसे ही वासु यहां से निकला, आप भी पीछे-पीछे लग गए और मौका मिलते ही आपने वासु का काम तमाम कर दिया। लेक-वेक आप कहीं नहीं गए।"

प्रभु का चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था।

"मुझे मालूम नहीं था कि इस हिल स्टेशन पर घूमने आने पर मुझे इस बखेड़े में घिसटना पड़ेगा वरना... कभी नहीं आता।" वह गुस्से में बोला- "जिस व्यक्ति को मैं जानता नहीं,पहचानता नहीं भला उससे मेरी क्या दुश्मनी हो सकती। मैं भला उसे क्यों मारूंगा?"

"ये तो आपको पता होगा।"

"अरे क्या पता होगा?" वह चीखा-"जब मैं वासु को ही नहीं जानता।"

"क्या पता झूठ बोल रहे हो।"

सच नहीं बोल रहा हो सकता?"

"उम्मीद तो नहीं है क्योंकि आपके खिलाफ कई चीजें हैं। आप समझते हैं?"

"वो इसलिए खिलाफ हैं क्योंकि आप पहले से ही मुझे कातिल माने बैठे हैं।"

"आपके अलावा और कोई तो सस्पेक्ट भी नजर नहीं आ रहा।"

"कोई सस्पेक्ट नजर नहीं आ रहा तो कातिल मै...।"

बहादुर सिंह ने पहलू बदला।

"अगर मैं कह देता कि मैं कल बाहर गया ही नहीं तो?"

"टैक्सी का ड्राइवर आकर शिनाख्त करता न।"

"उसके पास मेरी टैक्सी में बैठने की कोई तस्वीर है? रिकार्डिंग है? मैं मना कर देता तो कैसे साबित करता कि कल मैं टैक्सी में बैठ कर लेक पर गया था?"

बहादुर सिंह हड़बड़ाया। कमल नैन भी।

"या वो हरिश्चन्द्र है जो सच के सिवा कुछ नहीं बोलता। कानूनन उसे कोई मान्यता हासिल है कि वह झूठ नहीं बोल सकता।"

"वो भला झूठ क्यों बोलेगा?"

"क्योंकि आपको कोई सस्पेक्ट नहीं मिल रहा। बलि का बकरा मैं मिल गया। उसे हलाल कर केस को जल्दी सॉल्व कर लिया। सरकार से तरक्की मैडल मिल जाएगा। हर तरफ वाहवाही हो जाएगी।"

"तुम मुझ पर बेजा इल्जाम लगा रहे हो।" बहादुर सिंह गुस्से में बोला।

"आप मुझे बेवजह कातिल साबित करने पर तुले हैं और मैंने सफाई दी तो आपको बेजा इल्जाम लगी। जिन वजहों से आप मुझे अपराधी ठहरा रहे हैं, क्या वे इत्तेफाक नहीं हो सकते। क्या ये नहीं हो सकता है कि वासु वुडालैंड में किसी से मिलने गया हो उसी ने उसका काम तमाम कर दिया हो या वुडालैंड आते-जाते समय रास्ते में उसके साथ लूट-पाट हुई हो, जिसमें टैक्सी ड्राइवर भी शामिल हो। राज खुले न इसलिए उसे मौत के घाट उतार दिया हो।"

बहादुर सिंह मुंह बाए उसे ताकता रहा। कमल नैन की भी यही हालत थी।

"ऐसी तमाम संभावनाएं हैं पर आप उन पर गौर न करके मेरे पीछे पड़े हैं।"

बहादुर सिंह कुछ पल मौन रहा। फिर बोला-"उस फोटो के बारे में क्या कहेंगे?"

"उस फोटो की वजह से ही आप को कातिल के रूप में सिर्फ मैं नजर आता हूं, जबकि मैं बता चुका हूं कि उसके बारे में मुझे कुछ पता नहीं!"

"अच्छा, वुडालैंड में वासु क्यों गया होगा?"

"ये मैं... बताऊं? जबकि मुझे तो यह भी नहीं पता कि वासु कौन था।"

"वो आपसे मिलने गया हो सकता है।"

"जब हम एक ही होटल में थे तो मिलने वुडालैंड क्यों जाएंगे?"

"होगी कोई सीक्रेट बात।"

"और क्या!"

"जो रामनगर में नहीं हो सकती थी।"

"और क्या!"

"बढ़िया! घूम-फिरकर मेरा ही गला नापने लगते हैं। जब मैं ही कातिल हूं तो गिरफ्तार कर जेल में डाल दीजिए।आगे अदालत में सुंदर-सुंदर दलीलें पेश कर फांसी लगवा दीजिए मुझे।" प्रभु भयंकर चिढ़ा हुआ था।

"अभी ऐसा नहीं कर सकता। अभी तो इन्वेस्टीगेशन चल रही है।"

"खाली मेरे से।" वह व्यंग्य से गुस्से में बोला।

"ऐसा आपका वहम है।"

एकाएक बहादुर सिंह उठ बैठा।

"अभी तो चलता हूं। आप दोनों घूम फिरकर आए हैं। थक गए होंगे। आराम करें।"

सारा दूध का दही कर दिया अब आराम करने को बोल रहा था कमबख्त!

बहादुर सिंह लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ आगे बढ़ गया। कमल नैन पीछे से लपका।

"अब आप क्या सोचते हैं?" कमरे से निकलकर जब वे गलियारे में आए तो कमल नैन ने साथ-साथ चलते चलते पूछा।

"किस बारे में?"

"प्रभु के बारे में।"

"या तो वह सचमुच निर्दोष है या....।"

"या....।"

"या बहुत बड़ा घाघ है। शातिर दिमाग शख्स है।"

"ऐसा।"

"हां!"

"कैसे पता चलेगा कि वह घाघ है,शातिर है या इन्नोसेंट?"

"वो...वो खोजबीन से ही पता चलेगा।" वे गैलरी से अब हॉल में आ गए थे।

श...।" बहादुर सिंह चलते-चलते ही बोला-"अभी हमें यह पता करना है कि वासु आखिर वुडालैंड में क्यों गया था? क्या वजह थी? इसके अलावा हमें घटनास्थल ढूंढना होगा। हमारे अनुमान से उसे झरने के आसपास मारा गया होना चाहिए था, पर झरने के

आसपास वो जगह नहीं लगती। वासु का कत्ल कहीं और किया, वहीं जलाया गया और फिर लाकर उसे झरने में डाला गया।"

"सर, मुझे लगता है उस केस को हल करने में रामनगर की पुलिस मदद कर सकती है। बहरहाल मरने वाला रामनगर का ही बाशिंदा था।" दोनों होटल के गेट पर पहुंच चुके थे।

"तुम शायद ठीक कहते हो।"

"सर, एक और बात मुझे उलझन में डाल रही है।"

"क्या?"

"प्रभु कहता है कि वह वासु को जानता नहीं, जबकि वासु के बैग से उन दोनों की फोटो मिली। अगर एक मिनट यह मान लिया जाए कि प्रभु झूठ बोल रहा है।"

"मतलब। प्रभु वासु को जानता है। यही न?"

"मान लो कि दोनों एक-दूसरे से वाकिफ थे। इस बात का पता हम रामनगर पुलिस से लगा सकते हैं।"

"तो सवाल यह उठता है कि वासु वह फोटो अपने साथ यहां क्यों लाया। अच्छे दोस्त भी जो फोटो खिंचवाते हैं,इस तरह अपने साथ लिए नहीं घूमते। फिर वासु क्यों फोटो लिए घूम रहा था?"

बहादुर सिंह ठिठका। सोचा। फिर बोला-"बकौल तुम्हारे कोई तीसरा शख्स वह फोटो प्लांट कर सकता है। उस फोटो के जरिए हमें प्रभु के बारे में पता चले। उसका यही मकसद होगा।"

"इससे क्या होगा? जब प्रभु ने वासु को मारा नहीं तो भला उसे क्या हानि होगी। उस तीसरे शख्स की फोटो प्लांट करने से क्या हासिल होगा।"

"यह तीसरे शख्स वाला आइडिया तुम्हारा ही था।" दोनों गेट पर बाईक पार्किंग की तरफ बढ़ रहे थे।"

"हां! पर मैं यह सोच नहीं पा रहा कि आखिर तीसरे शख्स को फायदा क्या होगा? क्यों वो सिर्फ हमारे द्वारा प्रभु को परेशान करवाना चाहता है, जो अपनी गर्लफ्रेंड के साथ यहां पहली बार घूमने-फिरने आया है।"

"अभी कुछ भी निश्चित तौर पर कह पाना मुश्किल है। पर पता नहीं क्यों मुझे लगता है कि इस फोटो के पीछ कोई बड़ी वजह,बड़ा रहस्य छुपा है जो हमें दिख नहीं रहा।"

"यू आर राइट सर।"

दोनों पार्किग में पहुंच चुके थे। बहादुर सिंह ने अपनी बाईक स्टार्ट की। कमल नैन पीछे बैठा। और फिर बाईक धीरे-धीरे आगे बढ़ गई।

✠✠✠

रामनगर!

पुलिस कमिश्नर एस.पी.सिंह के ऑफिस में बैठे थे पुलिस के दो जांबाज। एक 35 वर्षीय युवा शिववीर सिंह राणावत और दूसरा युवा इंस्पेक्टर मुकेश तिवारी, जो उम्र में राणावत से 2 साल छोटा था। दोनों ही पुलिस विभाग में हीरो जैसी छवि रखते थे। उन्हें एक घंटे पहले ही कमिश्नर ऑफिस से मैसेज भेजा गया था और वे वहां उपस्थित थे। आने के कारण के

संबंध में उन्हें कोई जानकारी नहीं थी। दोनों तत्काल बुलाए जाने की वजह कोई वेरी इम्पोर्टेंट बात समझ रहे थे, पर वह फिलहाल रहस्य में थी। पर जब कमिश्नर ने उन्हें बताया कि हिल स्टेशन की पुलिस उनसे वासु मर्डर केस को सुलझाने में मदद चाहती है और हिल स्टेशन की पुलिस द्वारा फैक्स से भेजी वासु मर्डर की खोजबीन आदि की सारी जानकारी दी तो फिर रहस्य से पर्दा उठा या ये कहें कि सस्पेंस और बढ़ गया। अब उन्हें वासु मर्डर केस की तहकीकात करनी थी।

सुबह अपने थाने में राणावत व तिवारी वासु के मर्डर को लेकर बातचीत में मशगूल थे। कहीं जाने का प्लान भी लग रहा था।

"सर एक लड़की मिलना चाहती है?" तभी एक सिपाही ने आकर कहा।

बातचीत में व्यवधान पड़ा।

"क्यों किसलिए?" राणावत ने थोड़ी नाराजगी से पूछा।

"वो आपने शाम को उस न्यूज रिपोर्टर शिवाकांत को वासु मर्डर की बात छापने को दी थी।"

"हां तो?" राणावत की भवें सिकुड़ी।

"वासु की हत्या के बारे में वह कुछ बताना चाहती है।"

दोनों पुलिसिए चौंके।

राणावत सीधा होता हुआ बोला-"उसे अंदर भेजो।"

"जी।"

सिपाही चला गया। थोड़ी देर बाद वह एक लड़की को साथ लेकर लौटा। लड़की युवा थी.सुंदर थी पर उस घड़ी गुस्से में जान पड़ती थी। हाथ में अखबार पकड़ रखा था। उसने आते ही पूछा-" क्या यह सच है ?" और अखबार मेज पर डाल दिया।

"हां!" जवाब राणावत ने उसे घूरते हुए दिया।

लड़की का चेहरा बिगड़ने लगा। वेदना का बवंडर सा उमड़ता जान पड़ा।

"तुम कौन हो? वासु को कैसे जानती हो? पहले तुम बैठो।"

राणावत ने उसकी बिगड़ती हालत देखकर पहले उसे एक चेयर पर बिठाया। लड़की सिर झुकाए कुछ देर बैठी रही, फिर जब सर ऊपर किया तो चेहरा आंसुओं से भीगा हुआ था। "रिलैक्स...रिलैक्स...।" राणावत ने उसे ढांढस बंधाया। सिपाही को भेजकर गिलास में पानी मंगाया, उसे दिया। लड़की ने पानी पिया, खुद को कंट्रोल किया। हथेली से आंसू पोंछ डाले। दोनों पुलिसिए गंभीरता से उसे वाच कर रहे थे। "म....मैं..और वासु एक-दूसरे को प्यार करते थे।" कुछ देर में लड़की ने कहा-"मेरे भाई को हमारा प्यार पसंद नहीं था। उ..उसी ने वासु को मरवाया होगा। इससे पहले भी जब मेरी दीदी ने एक लड़के से प्यार किया था तो उसे पसंद नहीं आया था। उसने लड़के के साथ मार-पीट की थी। दीदी को भी मारा था। पर दोनों का प्यार कम नहीं हुआ। फिर...फिर लड़के की एक रोड एक्सीडेंट में अचानक मौत हो गई। दीदी ने उसके गम में फांसी लगाकर जान दे दी। मरने से पहले दीदी कहती थी कि उसके प्रेमी का एक्सीडेंट भइया ने करवाया था।"

दोनों पुलिसिए गंभीरता से सुन रहे थे।

“क्या तुम्हारे भाई को तुम्हारे व वासु के अफेयर के बारे में पता था?” तिवारी ने पूछा।
“हां! आज से चार दिन पहले भइया ने हम दोनों को एक रेस्टोरेंट में हंस-हंसकर बातें करते हुए देखा था।”
“फिर तो उसने तुम्हें डांटा होगा।”
“ऐसा तो कुछ नहीं किया था।” लड़की हिचकिचाई।
“फिर तुम कैसे कह सकती हो कि वासु मर्डर में तुम्हारे भाई का हाथ है। हो सकता है कि उसने तुम लोगों को देखा ही न हो। तुम्हें केवल वहम हुआ हो। भाई के बारे में जैसा तुम बता रही हो, उस हिसाब से तो भाई को तुरंत एक्शन लेना चाहिए था।”
लड़की बगलें झांकने लगी।
“ये मुझे नहीं पता।” फिर वह झल्लाते हुए बोली-”पर वासु के मर्डर में मेरे भाई का ही हाथ है।”
प्रेमी की मौत ने उसे हिला दिया था। उसकी मानसिक स्थिति समझी जा सकती थी।
“तुम प्रभु को जानती हो?” एकाएक राणावत ने पूछा।
“हां! वह मेरे भइया का जिगरी दोस्त है। उसी को हिल स्टेशन भेजकर तो उसने वासु को मरवाया।”
“अच्छा!” राणावत चौंका। आंखें सोचने वाले अंदाज में सिकुड़ती चली गईं।
“हिल स्टेशन जाने से पहले प्रभु भइया से मिलने घर पर आया था। तब भइया ने हमारे अफेयर की बात करते हुए उस वासु को सबक सिखाने की बात की थी। मैंने खुद सुना था।”
“तो तुमने वासु को हिल स्टेशन जाने से रोका क्यों नहीं?उसे सावधान क्यों नहीं किया?”
“मैंने फोन किया था पर किसी कारणवश फोन पर बात नहीं हुई।”
“अच्छा वासु हिल स्टेशन क्यों गया था तुम्हें बताया था इस बारे में?”
“नहीं...।”
“क्यों?”
“क्यों क्या?”
“भई! तुम उसकी प्रेमिका थी। तुम्हें तो बताना चाहिए था उसे।”
“प्रेमी हर बात प्रेमिका को बताते हैं?”
“हर बात तो नहीं पर खास तो बताते ही हैं।”
“हूं! पर वासु ने मुझे अपने हिल स्टेशन जाने के बारे में कभी कुछ नहीं बताया।” लड़की कहते-कहते रुकी और सोचकर बोली-”हो सकता है तैयारी अर्जेंट में बनी हो। तभी मुझे बता न सका हो।”
“फोन तो करना था।”
“हां! पर...ज्यादा बिजी रहा होगा। फिर...हिल स्टेशन पहुंचने के चंद घंटों के बाद ही तो उसका मर्डर...।”
लड़की का फिर मुंह बनने लगा। वह भावुक होने लगी।

कुछ पल माहौल गंभीर बना रहा।

"हिल स्टेशन पर वासु जिस होटल में ठहरा था, उसके रूम की तलाशी में एक फोटो मिली थी। उसमें वासु व प्रभु की तस्वीरें हैं। पर प्रभु का कहना है कि वह वासु को जानता तक नहीं था।"

"वह झूठ बोल रहा है।" लड़की गुस्से में चीखी-"वह वासु को

मारने के लिए ही जब हिल स्टेशन गया था तो उसे जानता कैसे नहीं होगा।"

"हो सकता है ऐसा हो।"

"ऐसा ही है।"

"ठीक! ठीक!" उसे शांत कराने वाले अंदाज में राणावत ने कहा-"पर वासु प्रभु का फोटो लेकर हिल स्टेशन क्यों गया था?"

लड़की ने चौंककर सिर उठाया। चेहरे पर गंभीरता थी।

"म...मुझे क्या पता।"

"अच्छा, वासु ने कभी उस फोटो का जिक्र तुमसे किया था। शायद कभी अपनी व प्रभु की दोस्ती के बारे में बताया हो।"

"नहीं! ऐसा तो उसने कभी नहीं बताया।"

"ये अजीब बात है। प्रभु तुम्हारे भाई का जिगरी दोस्त है और वासु उसका। अगर वासु व प्रभु के बीच में दोस्ती थी तो उसने इस बात का जिक्र तुमसे कभी क्यों नहीं किया?"

"तो दोस्ती नहीं होगी।"

"फिर वह फोटो कैसे खिंची।"

"फोटो खिंचवाने के लिए क्या दोस्त होना जरूरी है?"

राणावत हड़बड़ाया।

"नहीं! पर थोड़ी बहुत जान-पहचान तो होनी ही चाहिए।"

"होगी। इसलिए शायद उसने कभी प्रभु के बारे में जिक्र न किया हो।"

"हूं!"

"आप प्रभु को गिरफ्तार कीजिए। वह खुद-ब-खुद सब कुछ बता देगा।"

"यू आर राइट।" राणावत ने कहा-"तुम्हें वासु के घर का पता तो मालूम होगा?"

"हां!"

लड़की ने पता बताया।

"प्रभु का।"

लड़की ने प्रभु का भी पता बताया। इसके अलावा राणावत ने उसका पता व उसके भाई का नाम पूछकर उसे रुख्सत कर दिया।

"लड़की हमें बहुत विस्फोटक जानकारी दे गई है सर।" लड़की के जाते ही तिवारी उत्तेजित स्वर में बोला-"अभी तक हमारे पास वासु के कत्ल की वजह नहीं थी, पर अब है। वासु की हत्या ऑनर किलिंग के चलते हुई होगी।"

राणावत गंभीरता से सोच में डूबा था।

"हो सकता है। बहरहाल जानकारी के हिसाब से भाई रूढ़िवादी लगता है, जिसे प्यार-व्यार वाहियात चीज लगती है। उसे लड़की व वासु के प्यार के बारे में पता चला तो मन ही मन प्रेमी को सबक सिखाने की ठानी। ऐसे में उसे वासु के हिल स्टेशन जाने के बारे में पता चला। उसे सुनहरा मौका लगा। अपने दोस्त प्रभु को हिल स्टेशन भेजकर उसका काम तमाम करवा दिया।"

"पर भाई ने अपनी बहन को,उसके प्रेमी को डांटा-फटकारा नहीं प्रेमी को फर्स्ट एंड लास्ट वार्निंग न दी?"

"उसने बड़ी बहन के मैटर से सबक लिया न।"

"इसलिए स्ट्रेटजी बदलकर काम किया?"

"और क्या!"

"वो वासु का काम तमाम रामनगर में भी करवा सकता था? फिर हिल स्टेशन क्यों चुना?"

"अब तुम अपनी ही बात काट रहे हो।" राणावत मुस्कराया।

"क्या?"

"तुम्हीं ने तो कहा था कि वासु की हत्या ऑनर किलिंग के चलते हुई।"

"हां! पर मुझे यह नहीं समझ में आ रहा कि हत्या के लिए हिल स्टेशन ही क्यों चुना?"

"क्योंकि उसे लगा होगा कि हिल स्टेशन पर वासु को मारना आसान होगा व फंसने का चांस भी नहीं होगा।"

"हूं! य...ये.. सच भी था। अगर वासु के बैग से वह फोटो न मिलता तो हमें हत्यारे के बारे में कुछ भी पता नहीं चलता।"

"अभी यह निश्चित मत करो कि हत्यारा कौन है?" राणावत ने टोका-"कई बार जो केस ओपन एंड शट लगते हैं, वे बहुत ही पेचीदा निकलते हैं।"

"ह..हां...सो तो है।"

✠✠✠

वह छोटा मगर खूबसूरत बंगला था, जिसके सामने पुलिस व जीप आकर रुकी।

वह बंगला प्रभु का था। प्रभु सोनकर उसकी एक 'प्रभु सोनकर' नाम की छोटी-सी ट्रांसपोर्ट कंपनी थी, जिसका वो इकलौता मालिक था। उसके पिता-मां की कई साल पहले एक कार एक्सीडेंट में मृत्यु हो गई थी। इतने बड़े हादसे के बाद करोड़ों की सम्पत्ति को वह अकेले ही संभाल रहा था और बखुबी संभाल रहा था। जीप से उतरकर छः फुटा अमिताभ की कद-काठी वाला राणावत आयरन गेट की तरफ बढ़ गया।

गेट के पास पहुंचकर ठिठका। गेटकीपर कुर्सी पर मौजूद नहीं था। पलभर बाद वहां उपस्थित हुआ। राणावत को देखकर उसने फौरन सैल्यूट मारा।

"दरवाजा खोलो। मुझे तुम्हारे साहब से मिलना है।" राणावत उसके सैल्यूट जवाब गर्दन को हल्के से जुम्बिश देते हुए बोला।

उसने तत्परता से दरवाजा खोला। राणावत लंबे-लंबे डग भरता हुआ बंगले की ओर बढ़ गया। बंगले के आसपास लगे पेड़-पौधे,फूल-सुंदर लॉन की तरफ उसने केवल एक उड़ती

नजर भर डाली थी बस।
बंगले के प्रवेश द्वार पर उसे रुकना नहीं पड़ा। क्योंकि दरवाजा आलरेडी खुला हुआ था। वह दनदनाता हुआ सीधा बंगले के अंदर घुसता चला गया और ड्राइंग रूम में उस घड़ी प्रभु सोनकर अपने दोस्त वीर के साथ मौजूद था। राणावत को सामने देखकर दोनों चौंके। जबकि राणावत आगे बढ़ते हुए बोला-"हल्लो एवरीबडी।"
दोनों के मुंह से बोल नहीं फूटा। वीर कुमार ने प्रश्नचिन्ह नजरों से प्रभु की तरफ देखा जरूर था।
"लगता है आप लोगों को मेरा यहां आना पसंद नहीं आया?" राणावत ने मुस्कराकर कहा।
"...नहीं!" ऐसी बात नहीं है।" प्रभु हड़बड़ाये स्वर में बोला।
"आपने तो बैठने के लिए भी नहीं कहा। नहीं हैल्लो जवाब दिया।"
"स...सॉरी। आइए बैठिए।"
राणावत उनके सामने वाले सोफे पर बैठ गया।
कुछ पल जब खामोशी से गुजर गए तो प्रभु ने पूछा-"आ...आप कैसे आए?"
"जीप से।"
"मेरा मतलब था किस काम से आए?"
"काम....आपने सुबह पेपर तो पढ़ा ही होगा?"
"नहीं...।"
"नहीं....क्यों?"राणावत चौंका।
"क्यों क्या? क्या अखबार न पढ़ने पर सरकार टैक्स लगा देती है?"
प्रभु ने सपाट लहजे में कहा।
"ऐसा होता तो आपने पेपर जरूर पढ़ा होता शायद। वैसे मैंने तो इस अंदाजे से पूछा था कि लगभग हर भारतीय की सुबह की शुरूआत चाय और अखबार के साथ ही होती है।"
"पर मेरी नहीं होती। मैं अखबार का शौकीन नहीं हूं।"
"तभी।" राणावत ने पहलू बदला-"टीवी के तो होंगे।"
"उसका भी नहीं हूं।"
"कमाल है। खैर, रेडियो का तो रखते होंगे।"
"नहीं रखता।"
"जब अखबार, टीवी जैसी चीजों से वास्ता नहीं रखते तो रेडियो से भला क्या रखते होंगे। वैसे इन तीनों में से किसी एक का भी आप शौक रखते होते तो आपको पूछना नहीं पड़ता कि मैं यहां क्यों आया हूं।"
प्रभु की आंखें सिकुड़ीं।
"कहीं आप हिल स्टेशन पर हुए वासु मर्डर केस के बारे में तो नहीं बताने आए, क्योंकि वो मामला अब रामनगर पुलिस को सौंप दिया गया है।"

“अरे..! आपको कैसे पता चला। रेडियो, टीवी अखबार में तो आपका कोई कांटेक्ट नहीं है।”

राणावत ने हैरानी जताई।

“जानकारी के और भी स्रोत होते हैं।”

“जब आप को पता है तो जाहिर है कि अन्य स्रोत भी होंगे पर रेडियो, टीवी, अखबार के अलावा और किस स्रोत से आपको पता चला?”

जवाब में प्रभु ने वीर की तरफ देखा।

“म...मैंने बताया।” वह गला खंखारकर बोला।

राणावत ने फौरन उसकी ओर अपनी गर्दन घुमाई।

“वीर कुमार।”

“वीर कुमार?”

“मेरा दोस्त है।”

“ओह! बढ़िया, आप यहीं मिल गए, वरना आपके घर जाना पड़ता।”

“म...मेरे घर! क...क्यों?”

“बताऊंगा। पहले आप बताइए कि आपने जो जानकारी प्रभु को दी वो आपको कैसे पता चली-अखबार से-टीवी से, रेडियो तो आप भी नहीं रखते होंगे?”

“मुझे जानकारी रेडियो से ही पता चली।”

“य...यानी आप रेडियो रखते हैं?”

“हां!”

“कमाल है। रेडियो के कद्रदान आज भी मौजूद हैं। भई, वाह! मैं तो समझता था कि रेडियो का शौक केवल मेरे को है... खैर, तो आपको रेडियो पर जानकारी मिली...कब?”

“सुबह की न्यूज में।”

“यानी घंटा भर पहले?”

“जी।”

“और आप दौड़-दौड़कर प्रभु को खबर देने चले आए।”

“खबर सुनकर मैं बुरी तरह चौंक गया था।घबरा गया था।”

“दोस्त जो ठहरे। एक दोस्त का दोस्त के लिए फिक्रमंद होना बनता भी है। आपका घर पास ही में है?”

“हां!”

“आपका दोस्त तो हिल स्टेशन गया था। कैसे मालूम चला कि वह लौट आया है।”

“मैंने प्रभु को फोन लगाया था। फोन से ही पता कि वह रात में हिल स्टेशन से लौट आया था।”

“फिर तो फोन पर ही रेडियो से मिली जानकारी आपने प्रभु को ट्रांसफर कर दी होगी।”

“हां!”

“वीर को मैंने उसी विषय पर बातचीत करने के लिए बुलाया था।” बीच में प्रभु बोला।

"आप अपनी ट्रिप बीच में छोड़कर क्यों चले आए हैं।" राणावत उससे मुखातिब हुआ।

"क्योंकि मुझे वासु मर्डर केस में बेवजह उलझाया जा रहा था। मैं...तो साला कुछ दिन वहां सुकून से बिताने गया था पर...वहां की पुलिस ने मुझे उस व्यक्ति के कत्ल के केस में उलझा दिया, जिसे मैं जानता तक नहीं!"

"फिर वासु के साथ आपकी फोटो कैसे खींची?"

"ये मैं बताऊं?"

"फोटो में वासु के साथ मैं होता तो पूछने की क्या जरूरत थी?"

"मैं हजार बार कह चुका हूं कि न ही मैं वासु को जानता हूं और न ही ये कि उसके साथ मेरा फोटो कैसे खिंचा।" प्रभु झल्लाया।

"आपको पता है?"

"मुझे कैसे पता होगा?" वीर उछल पड़ा।

"आप प्रभु के दोस्त हैं तो...।"

"आप कुमार की बात क्यों कर रहे हैं?" प्रभु गुस्से में बोला- "सीधे-सीधे कहिए कि आपको भी लगता है कि वासु की हत्या में मेरा हाथ है?"

"और आपके दोस्त वीर का भी है।"

"क्या! दोनों चौंके।"

"वासु की हत्या में हाथ।"

"ये आप क्या कह रहे हैं?" वीर हड़बड़ाकर बोला।

"मैं ठीक कह रहा हूं।"

"बढ़िया!" प्रभु क्रोध में व्यंग्य से बोला- "आप तो हिल स्टेशन के इंस्पेक्टर के भी चाचा निकले। वह तो केवल मुझे ही वासु मर्डर में लपेट रहा था। आपने तो मेरे दोस्त, जो वहां था भी नहीं, को भी लपेट लिया-बढ़िया।"

"मैं साबित कर सकता हूं।" राणावत विजयी मुस्कान बिखेरता हुआ बोला।

"क...क्या साबित-साबित कर सकते हैं?" वीर ने हड़बड़ाकर पूछा। "यही कि वासु के मर्डर में आप दोनों का हाथ है।"

"अच्छा! करो साबित?" प्रभु चैलेंज भरे स्वर में बोला। जबकि वीर बेचैन दिखा।

राणावत ने बारी-बारी से दोनों को मजे लेने वाले अंदाज में घूरा, फिर बोला-"वीर की बहन करनी का अफेयर वासु से चल रहा था। वीर को ये पता लगा। वह क्रोध में पागल हो गया। उसने तुम्हें बताया। फिर तुम दोनों ने प्लान बनाकर वासु को खत्म कर दिया।"

"ये.....ये आप क्या बेसिर पैर की बातें किए जा रहे हैं?" प्रभु चीख पड़ा।

"मैं जो कह रहा हूं, इस बात के सिर भी है और पैर भी, धड़ भी है।" कहते हुए राणावत ने बेचैन दिख रहे वीर की तरफ देखा।

प्रभु की दृष्टि भी वीर पर ही आ ठहरी थी।

"इंस्पेक्टर साहब जो कह रहे हैं, उसमें कितनी सच्चाई है वीर?" प्रभु ने पूछा।

"ज...जरा भी नहीं!"

“अच्छा!” राणावत फौरन बीच में कूदा-”तुम्हारी बहन करनी का वासु से अफेयर नहीं था?”
वीर बगलें झांकने लगा।
“बोलो था या नहीं?”
“था।”
“तुम्हें पता नहीं था?”
“था।”
“पसंद था”
“नहीं था।”
“फिर......।”
“फिर क्या?
“यही वो वजह थी कि जो वासु के मर्डर की वजह बनी।”
“ऐसा कुछ नहीं है!” वीर झल्ला पडा !
“आपने वासु को नहीं मरवाया?”
“अ...आप ये बात इसीलिए कह रहे हैं कि वासु मेरी बहन करनी से प्यार करता था...और ये बात मुझे नागवार गुजरी। ऐसा कौन भाई होगा जिसे यह सब पसंद आएगा?”
“श....शायद कोई नहीं!” राणावत हड़बड़ाया।
“फिर?”
“पर हर भाई वो कदम नहीं उठाता जो आपने उठाया।”
“गलतफहमी है आपकी।”
“आपके लिए वैसा करना कोई नई बात तो है नहीं! बहरहाल आपका पुराना तजुर्बा है।”
“क्या?”
“क्या? याद कीजिए।”
राणावत ने उसे घूरा। चेहरे के भावों को पढ़ने की चेष्टा करता जान पड़ा।
“चलो मैं मदद करता हूं। आपकी बड़ी बहन का भी अफेयर किसी के साथ...।”
“सबकी तरह आपको भी लगता है कि...।” एकाएक वीर रुका, फिर बोला-”अ....आपको ये सब किसने बताया?”
ईडियट! जो बात शुरू में ही पूछनी चाहिए थी, वो अब पूछ रहा था।
राणावत ने बताया।
“करनी पागल है।” वीर झल्ला कर बोला।
“यानी वो सब झूठ था?”
“सच है। पर दीदी के बॉयफ्रेंड के एक्सीडेंट में मेरा कोई हाथ नहीं था।”
“मैंने ऐसा कब कहा?”
“इशारा तो इसी तरफ था आपका। तभी तो बोले कि मुझे पुराना तजुर्बा है।”
“तुमने दीदी के लवर के साथ जाकर मारपीट नहीं की थी?”

"की थी। जब कई बार समझाने पर वो नहीं माना तो करनी पड़ी थी। और वो भी इसलिए की थी क्योंकि मैं अपनी बहन के लिए फिक्रमंद था। उसकी ताउम्र की सलामती चाहता था। पर वो प्यार में अंधी थी। उसे कुछ न दिखता था। कुछ न सूझता था। वह उस गैर बिरादरी के, आवारा लड़के के साथ जीने-मरने की कसमें खाती थीं।"

"लड़का आवारा न होता तो शादी कर देते?"

वीर हड़बड़ाया।

"इन सब बातों का जिक्र किसलिए इंस्पेक्टर साहब?" बीच में नाराज स्वर में प्रभु ने टोका-"क्या ये सब बातें करना जरूरी है जिन्हें बीते सालों गुजर गए।"

"जरूरी नहीं है।" राणावत सोचकर बोला-"खैर, मैं टु द प्वाइंट आता हूं। मौजूदा केस में हाल-फिलहाल मिली जानकारी के आधार पर वासु के कत्ल में आप दोनों का ही हाथ नजर आता है। वासु की हत्या ऑनर किलिंग है।"

"कोई और नजर न आए तो अपराधी वो जो नजर आए।"

राणावत शांत रहा।

प्रभु ही बोलता चला गया-"आपकी जानकारी में तो ये भी तो है कि वासु वुडालैंड गया था होटल से। पता कीजिए कि वह वहां क्यों गया था- किससे मिलने गया था? कत्ल की गुत्थी वहीं सुलझेगी। पर नहीं! वासु के कमरे में मेरी फोटो क्या मिल गई आप लोग तो नहा धोकर मेरे पीछे पड़ गए। मेरे दोस्त को भी घसीट लिया।"

"हिल स्टेशन की पुलिस वो सब भी पता करने की कोशिश कर रही है।"

" शुक्र है। मैं तो सोचता था आप पूरी तरह मुझे ही कातिल माने बैठे हैं?" प्रभु राहत की सांस लेते हुए बोला।

"ऐसा होता तो आप इस समय सोफे पर नहीं जेल की सलाखों के पीछे होते मिस्टर प्रभु सोनकर।" राणावत संजीदगी से बोला-"पर अभी आपको राहत नहीं मिलने वाली।"

"मतलब?"

"करनी का कहना है कि हिल स्टेशन जाने से पहले तुम वीर से मिलने उसके घर गए थे। तब वीर ने तुमसे वासु को सबक सिखाने की बात की थी। की थी या नहीं?"

"हां!"

"फिर भी आप अभी तक वासु को 'नहीं जानते' भजते रहे।"

"मैं सच में वासु से अपरिचित था। हिल स्टेशन जाते वक्त वीर ने सिर्फ यह कहा था कि वासु नाम के एक लड़के के साथ करनी का अफेयर है-उसे सबक सिखाना है। तब भी मुझे पता नहीं था कि वह वासु कौन है। मैंने कहा भी था कि हिल स्टेशन से लौटकर देखता हूं। "

"उससे पहले वीर ने वासु का कभी जिक्र नहीं किया?"

"कैसे करता! मुझे भी उसी दिन ही पता चला था।" वीर बोला।

"हिल स्टेशन पर जब पुलिस ने वासु का नाम लिया था तो आपके जेहन में यह न आया कि वह वासु की बहन करनी का बॉय फ्रेंड हो सकता है ?"

"नहीं आया था।"

“क्यों?”
“अब इस पर मेरा क्या अख्तियार है?”
“होना तो चाहिए था पर... खैर, आपका हिल स्टेशन जाने का प्रोग्राम पहले से था या अर्जेंट में बना?”
“आपका शक अभी भी दूर नहीं हुआ।”
“हुज्जत नहीं, प्लीज।”
प्रभु ने लम्बी-गहरी सांस भरकर छोड़ी।
“पहले से था।” फिर बोला।
“कितना पहले से?”
“लगभग पंद्रह दिन पहले। मेरा इरादा तो तभी था जाने का पर तमन्ना के पास वक्त की कमी थी।”
“क्या करती है आपकी तमन्ना?” राणावत ने यह नहीं पूछा कि कौन तमन्ना। मतलब वह जानता था कि वह प्रभु की गर्लफ्रेंड थी।
हिल स्टेशन की पुलिस की भेजी जानकारी से वह जानता था।
“वह समर होटल में सिंगर है।”
“ओह वैसे वह होटल से कुछ दिनों की छुट्टी ले सकती थी?”
“छुट्टी ली तभी तो वह जा पाई थी।”
“मेरा मतलब पंद्रह दिनों पहले.....।”
“उसने अर्जी दी थी पर छुट्टी मिली नहीं तब। होटल में दस दिन लगातार उसकी सख्त जरूरत थी। कोई साहेबान वहां आकर ठहरे थे जिन्हें तमन्ना के गीत बेहद पसंद थे। वे बिना नागा किए उसे सुनते थे। उनकी ही फरमाइश पर होटल वालों ने तब तमन्ना को छुट्टी न दी थी। दस दिन बाद जब वे साहेबान चले गए तो हफ्ते भर की छुट्टी मिल गई।”
“तब तो तमन्ना जी को सुनना पड़ेगा। कभी मौका मिला तो अपनी ये हसरत जरूरी पूरी करूंगा। बहरहाल आप वासु को बाई फेस नहीं जानते थे?”
प्रभु ने अनिश्चय के भाव से उसे देखा। तभी राणावत का फोन बजा।
✠✠✠
सब-इंस्पेक्टर तिवारी राणावत के कहने पर करनी के थाने से जाने के बाद करनी द्वारा बताए गए वासु के एड्रेस पर जा पहुंचा था। वह इलाका तिलक नगर में आता था और वह मध्यमवर्गीय लोगों का रहने का माकूल ठीया था।
तिवारी को 145/224, ए ब्लॉक ढूंढने में जरा भी दिक्कत पेश न आई। इस घड़ी वह जिस गली में बाइक से उतर रहा था, उसी में सबसे आखिर में गली के मोड़ पर था 145/224, यानी वासु का घर। और इस घड़ी 145/224 के सामने लोगों की काफी भीड़ जमा थी।
लोग पेपर, टीवी के जरिए वासु के मर्डर की खबर पाकर ही आए होंगे, तिवारी ने सटीक अंदाजा लगाया। पर शायद थोड़ा संशय था। इसलिए एक लड़की को रोककर पूछा। संशय खत्म हो गया। वही बात थी। उसने बाइक साइड में खड़ी कर दी थी और लम्बे-लम्बे

डग भरता भीड़ के पास पहुंचा। सबका ध्यान उसकी ओर खिंचा। वह वर्दी में था शायद इसलिए।

वह भी उन्हीं की तरह रंग-बिरंगे कपड़ों में होता तो कौन ध्यान देता-शायद कोई नहीं!

उसने वासु के घर के सदस्यों के बारे में पूछा तो पता चला कि वासु के मां-बाप का कई साल पहले इंतकाल हो चुका था। उसकी परवरिश उसकी विधवा चाची ने की। घर में सदस्य के नाम पर वासु की चचेरी बहन और थी बस।

"मुझे उनसे बात करनी है।" तिवारी ने कहा तो लोगों ने उसे घर के अंदर पहुंचाया।

अंदर एक 50 साल की महिला रो रही थी। उसे कुछ महिलाओं ने घेर रखा था। वे सभी महिला को ढांढ़स बंधा रही थीं। वह खुद भी गमगीन लग रही थी।

महिला के पास ही 16-17 वर्षीय एक सुंदर सी लड़की बैठी थी।

उसका चेहरा भी आंसुओं से तर था।

महिला व लड़की ही वासु की चाची व बहन होंगी। तिवारी ने एक बार फिर सटीक अंदाज लगाया।

तिवारी की खाकी वर्दी का ही कमाल था कि सबका ध्यान उसकी तरफ हुआ।

"मुझे इनसे कुछ बात करनी है।" तिवारी ने कहा। उसका इशारा समझ सारी महिलाएं उठकर बाहर चली गईं। तिवारी को अंदर छोड़ने आए शख्स ने तिवारी के लिए एक कुर्सी, चाची के पास डाल दी।

"इनके लिए भी।" तिवारी ने कहा तो वहां एक और कुर्सी डाल दी गई।

दोनों कुर्सियों पर बैठ गए।

चाची ने खुद को काफी हद तक संभाल लिया था, पर आंसू रह रहकर निकल आते थे।

चाची-भतीजे का बहुत गहरा रिश्ता जान पड़ता था। होता क्यों न! चाची ने वासु को बचपन से पाला था। दोनों के बीच मां-बेटे जैसा जुड़ाव था।

सांत्वना के चंद बोल बोलने के बाद तिवारी ने पूछा-"वासु आपको तो बताकर गया होगा कि वह हिल स्टेशन क्यों जा रहा है?"

महिला ने इंकार में गर्दन हिलाई।

"प्रोग्राम कब, कैसे बना, इस बारे में भी नहीं बताया होगा फिर तो?"

"न...नहीं बताया था।"

"यानी उसकी हिल स्टेशन यात्रा के बारे में आपको कुछ पता नहीं?" तिवारी बारी-बारी से मां-बेटी पर नजर डालते हुए बोला।

"न...नहीं!"

तिवारी सोच में पड़ गया।

"आप दोनों के बीच कुछ अनबन थी?" फिर पूछा।

"अनबन! मां-बेटे में क्या अनबन होगी?" महिला ने चौंककर कहा।

"ये मुझे नहीं पता।"

"पर हम दोनों के बीच अनबन जैसा कुछ नहीं था। वो तो मेरे लिए श्रवण कुमार था।"

"फिर भी आपको बताकर नहीं गया?"

“हो सकता है हिल स्टेशन जाने का प्रोग्राम जल्दी में बना हो।”

रचना-वासु की चचेरी बहन ने कहा।

“क्यों? एकदम खड़े पैर तैयारी का क्या मतलब? कोई घूमने फिरने जाता है तो हफ्तों पहले तैयारी करता है।”

रचना हड़बड़ाई।

“इरादा घूमने-फिरने का नहीं रहा होगा।”

“फिर क्या रहा होगा?”

रचना को जवाब न आया।

तिवारी के दिमाग में वासु के हिल स्टेशन पहुंचकर वुडालैंड जाने वाली बात घूम गई।

“वुडालैंड में आपके जान-पहचान का कोई रहता है क्या?” उसने पूछा।

“वुडालैंड?”

“आपको नहीं पता?”

“न..नहीं पता?”

“न..नहीं!”

“वुडा लैंड हिल स्टेशन पर ही है। वासु वहां गया बताया जाता है।”

“....पर मेरी जानकारी में तो वहां हमारा कोई परिचित नहीं रहता।”

“कोई वासु का परिचित हो?”

“जहां तक मुझे पता है वासु का भी कोई परिचित वहां नहीं है।”

“अच्छा!” तिवारी ने पलभर सोचा-”वासु हिल स्टेशन कब गया था?”

“ह...हमें नहीं पता।”

“क...क्यों? “ तिवारी चौंका।

बीच में रचना बोली-”शायद संडे को गए होंगे।”

“मतलब आज के चार दिन पहले?”

“हां!”

तिवारी की जानकारी में भी वासु आज से चार दिन पहले हिल स्टेशन पहुंचा था। अगले दिन उसकी लाश मिली थी।

“कैसे जाना?”

“अ...अनुमान लगाया।”

“कैसे...?”

“क्योंकि चार दिन पहले यानी संडे को भइया घर से निकले थे फिर वापस नहीं आए। दूसरे दिन टीवी पर भी बता रहे थे कि वे संडे को ही हिल स्टेशन पहुंचे थे और अगले दिन उनकी तो....।” रचना का चेहरा बिगड़ने लगा था।

कुछ पल खामोशी से बीते।

“जाते वक्त वासु बैग वगैरह भी तो ले गया होगा। आपने पूछा नहीं, कहां जा रहा है?”

“घर से तो खाली हाथ गए थे। जैसे रोज जाते थे।”

“रोज जाते थे। कहां?”

“कासगंज।”

“क्यों?”

“वहां उनकी फोटोग्राफी की दुकान है-वासु फोटो स्टूडियो के नाम से।”

“वासु फोटोग्राफर था?”

“हां!”

“वह घर से ही रोज आता-जाता था स्टूडियो या कासगंज में रूम लेकर रहता था?”

“घर से ही आते-जाते थे।”

“रोज?”

“हां! वैसे वे शादी-वादी की पार्टियाँ भी अटैंड करते थे। फोटोग्राफी के लिए जाते थे तब जरूर तीन-चार दिन घर नहीं आते थे।”

“शादी तो रात भर का प्रोग्राम होता है फिर तीन-चार दिन क्यों लग जाते थे?”

“कई बार कई प्रोग्राम एक साथ ही वन बाई वन मिल जाते थे न। दूसरे कई बार फोटोग्राफी के लिए पार्टी अटैंड करने के लिए दूर जाना पड़ता था।”

“ठीक-ठीक! पर तब वासु फोन करके तो बता ही देता होगा कि वह घर कब तक पहुंचेगा।”

“हां पर कई बार फोन नहीं भी करते थे।”

“क्यों?”

“पूछने पर बताते थे कि फोन करने तक का टाइम नहीं मिला।”

“यानी वासु के दो-तीन दिन तक बाहर रहने, फोन न आने पर आप चिंता नहीं करती थीं?”

रचना ने मां की तरफ देखा।

“सच कहूं तो यह सच बात है।”

“इसलिए जब संडे से वासु घर न आया तो आपको चिंता नहीं हुई?”

“ऐसा नहीं है।”

“मतलब इस बार चिंता हुई?”

“कई बार होती थी। तब मैं खुद ही फोन कर लेती थी।”

“अच्छा! पर इस बार क्यों फोन लगाकर वासु कहां है, कैसा है जानने की कोशिश न की?”

“की थी।”

“यानी फोन लगाया था?”

“हां! संडे को जब भइया रात में घर न आए तो मैंने उनका फोन लगाया था पर फोन स्विच्ड ऑफ आ रहा था।”

“कैसे लगता जब वह लाश बन चुका था। पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के मुताबिक वासु का मर्डर रात 8-9 बजे के बीच हुआ था।”

“आपको चिंता न हुई?”

“काम के वक्त भइया अक्सर फोन स्विच्ड ऑफ रखते थे।”

"इसलिए चिंता न हुई, क्योंकि यह सामान्य बात थी।"
"है तो ऐसा ही।"
"अगले दिन....तो ट्राई किया होगा।"
"न..नहीं!"
"क्यों?"
"बस यूं ही। फिर क्या मालूम था कि....।" रचना का मुंह बिगड़ने लगा।
"अच्छा! फिर कब फोन लगाया या नहीं लगाया?"
"परसों शाम को लगाया था।"
"फोन स्विच्ड ऑफ आ रहा होगा?"
"हां!"
"फिर भी चिंता न हुई?"
"हुई तभी तो फोन लगाया।"
"फोन स्विच्ड ऑफ आ रहा था तो कहीं ये तो नहीं सोचा कि वासु बहुत बिजी है इसलिए फोन नहीं पिक कर रहा है।"
"ह...है तो सही ऐसा ही।" रचना हिचकिचाते हुए बोली।
"पर कल सुबह मैंने दुकान का चक्कर लगाया था पर दुकान में ताला पड़ा था। सोचा था शायद वे लौट आए हों। कई बार वे दुकान पर ही चले आते थे। मैंने गौरव का नंबर भी ट्राई किया था कि शायद उसे कुछ पता हो।"
"गौरव कौन?"
"भइया का असिस्टेंट है, दुकान में साथ काम करता है। कई बार भइया अकेले ही पार्टी अटैंड करने चले जाते थे। उनके पीछे गौरव ही दुकान संभालता था।"
"अच्छा! उसका नंबर लगा?"
"कहां! उसका भी नंबर कई बार ट्राई किया पर नहीं लगा। सोचा शायद भइया के साथ ही है वो, फिर भी आसपास की दुकानों पर भी पता किया था पर उन्हें भी कुछ पता नहीं था।"
"हूं!" तिवारी ने पल भर सोचा।
"वह संडे को घर से दुकान के लिए निकला था और पहुंच गया हिल स्टेशन। वैसे घर से कितने बजे निकला था?"
"रोज की तरह ग्यारह बजे। साढ़े ग्यारह बजे तक हर हालत में दुकान पर पहुँच जाते थे। कासगंज है ही कितनी दूर।"
"क्या पता दुकान पहुंचा ही न हो? हिल स्टेशन होटल में उसकी आमदगी (पहुँचने का वक्त) 5 बजे दर्ज है। एयरपोर्ट से होटल पहुँचने में आधा घंटा लगता है। उस हिसाब से वासु हिल स्टेशन साढ़े 4 बजे पहुँचा।"
"भइया! प्लेन से हिल स्टेशन पहुँचे थे?" रचना ने हैरानी से मां की तरफ देखा। मां का भी वही हाल था।
"हां! हिल स्टेशन की पुलिस की जानकारी के हिसाब से।"

“प्लेन से जाना तो बहुत महंगा होगा...। क्या भइया अफोर्ड कर सकते थे!” पता नहीं रचना ने पूछा या बताया।

“अफोर्ड किया तभी तो प्लेन से हिल स्टेशन पहुँचा।”

“पर भइया बिल्कुल फिजूलखर्चा पसंद नहीं करते थे। कहीं जाना हो तो सस्ता वाहन ढूंढते थे। पहुँचने में भले ही देरी हो जाए पर पैसे ज्यादा खर्च न हों। कई बार तो वे कासगंज पैदल गए हैं।”

“फिर तो जरूर कोई बहुत ही अर्जेंट काम आ गया होगा।”

“ए...ऐसा अर्जेंट काम क्या हो सकता है?”

“हुआ होगा तभी तो उसने आनन-फानन तैयारी की और किराए की चिंता न करते हुए, जबकि बकौल तुम्हारे वह हमेशा इसकी चिंता करता था, प्लेन से हिल स्टेशन जा पहुंचा।”

“आपने बीच में कहा था भइया वुडालैंड गए थे?”

“वहां की पुलिस की जानकारी के मुताबिक वासु टैक्सी से वुडालैंड ही पहुंचा था।”

“हो सकता है वो वुडालैंड उतरे हों पर आगे कहीं और जाकर किसी से मिले हों।”

“कोई उतरे कानपुर में तो मिलने क्या लखनऊ जाएगा। लखनऊ ही जाना है तो कानपुर में उतरेगा ही क्यों?”

रचना को जवाब न सूझा।

तिवारी ने गला खंखारा। सकुचाते हुए पूछा-”वासु की कोई गर्लफ्रेंड थी?”

“ग..गर्लफ्रेंड।” चाची ने चौंक कर पहले उसे, फिर रचना को देखा।

“भइया की कोई गर्लफ्रेंड नहीं थी।” आगे जवाब रचना ने दिया। “शायद हो, पर आपकी जानकारी में न हो?”

मां-बेटी ने एक-दूसरे की तरफ देखा।

“हो सकता है गर्लफ्रेंड की वजह से ही उसे एकाएक हिल स्टेशन जाना पड़ा हो, इसलिए आप लोगों को इंफार्म नहीं किया। ऐसे मामलों में अक्सर इस प्रकार का गोल-माल रखा जाता है।”

“ह...होना तो नहीं चाहिए ऐसा।” चाची बोली-”हमारा वासु ऐसा नहीं है। पर...पर अगर ऐसा है तो हमें इस बारे में कुछ नहीं पता।”

“हूं! क्या वासु की किसी से दुश्मनी थी जिससे जान से जाने का खतरा हो।” तिवारी ने करनी का नाम नहीं लिया और बात घुमा दी।

“मेरा बेटा तो बहुत ही सीधा-साधा था। अपने काम से काम रखने वाला जेंटल लड़का था। उसकी किसी से क्या दुश्मनी हो सकती है? फिर हम उतने अमीर भी नहीं हैं कि पैसे की वजह से हमारा कोई दुश्मन हो।”

तिवारी ने रचना की तरफ देखा।

“म..मां ठीक कह रही है।”

“शायद हो पर आपको पता न हो। जैसे यह नहीं पता कि वासु हिल स्टेशन क्यों गया?”

दोनों सकपकाईं। जवाब न सूझा।

“बहरहाल कोई तो दुश्मन था वरना कत्ल जैसी जघन्य वारदात क्यों घटती।”

दोनों चुप ही रहीं। एक-दूसरे का मुंह ताकती रहीं।

"अच्छा आप प्रभु सोनकर के बारे में क्या कहती हैं? टीवी पर उसके बारे में सुना-देखा ही होगा?"

"ह...हां!"दोनों के मुंह से एक साथ निकला।

"क्या वो कातिल हो सकता है?"

"अ...अब ह...हम क्या कहें?"

"पूरे मामले में फिलहाल वह ही पहला और आखिरी सस्पेक्ट के तौर पर सामने है। पर उसका कहना है कि वह वासु को जानता तक नहीं था। जबकि होटल के उस कमरे की, जिसमें वासु ठहरा था, तलाशी में वह फोटो मिला, जिसमें वह वासु के साथ है। टीवी पर देखा होगा वह फोटो।"

"ह..हां!"

"पर प्रभु का इस बात पर जोर है कि जब वह वासु को जानता नहीं था तो भला उसके साथ फोटो क्यों खिंचवाएगा।" तिवारी ने दोनों पर नजरें गड़ाते हुए पूछा-"क्या कभी वासु ने प्रभु सोनकर का दोस्त के रूप में आपसे जिक्र किया?"

"नहीं।"

"सोचकर जवाब दीजिए।"

"भइया ने इस नाम के किसी आदमी का कभी जिक्र नहीं किया।

वैसे भी उन्हें फ्रैंड बनाना ज्यादा पसंद नहीं था। एक-दो दोस्त हैं, वे मुहल्ले के ही हैं। वे खुद को अपने काम में बिजी रखना ज्यादा पसंद करते थे।"

"यानी प्रभु सच कह रहा है।"

"हमें नहीं पता कि सच क्या है और झूठ क्या है।" तभी एक बुजुर्ग जो काफी देर से तिवारी के पीठ पीछे कुर्सी पर विराजमान थे और तिवारी ने उनकी तरफ तवज्जो नहीं दी थी, ने गला खंखारा।

तिवारी उनकी तरफ पलटा, घूरा।

"कुछ कहना चाहते हैं?" उसने बूढ़े के चेहरे के भाव पढ़ते हुए पूछा।

"ह...हां!"

"कहिए।"

"पता नहीं उस बात का कुछ मतलब है या नहीं पर...।"

"आप कहिए तो पहले। कुछ मतलब है या नहीं है तभी तो पता चलेगा।"

"अभी आपने जिस प्रभु सोनकर का जिक्र किया, जिसका जिक्र टीवी पर भी हुआ था, उसे संडे को मैंने हमारी गली में देखा था।"

"क्या!"तिवारी चौंका, फौरन सीधा हुआ। मां-बेटी को भी हैरत हुई थी। पता नहीं क्या सोच बैठी थीं।

"आपने उसे इस घर के बाहर वाली गली में देखा था?" तिवारी उत्तेजित लगने लगा था।

"हां!"

"आपको पक्का यकीन है, जिसे आपने देखा था, वो प्रभु सोनकर ही था।"

"पक्का... तो नहीं कह सकता। मैं तब जल्दी में था, उस पर बस एक उड़ती सी नजर ही डाली थी।"

"ओह।" तिवारी ने पलभर सोचा।

"क्या वो आपके घर आया था-वासु से मिलने?"

मां-बेटी से मुखातिब होकर वह बोला।

"ऐसा होता तो ये बात हम शुरू में ही न बताते।"

"हूं!" तिवारी गंभीर नजर आ रहा था। कुछ पल खामोश बैठा रहा फिर उठ बैठा।

"अच्छा चलता हूं। सहयोग के लिए शुक्रिया।"

"मेरे बेटे को जिसने भी मारा हो, आप उसे पकड़कर उसके किए की सजा जरूर दिलवाइएगा इंस्पेक्टर साहब।" चाची आंखों में आंसू भरकर करुण स्वर में बोली।

तिवारी ने आश्वासन में केवल 'हां' में गर्दन हिलाई। इसके अलावा उस घड़ी वो कर भी क्या सकता था।

फिर जब वह घर से बाहर गया तो मोबाइल निकालकर कोई नंबर पंच करके फोन कान से लगाकर बाइक की तरफ बढ़ गया।

✠✠✠

राणावत ने फोन कान से लगाकर केवल हां- हूं में बात की, फिर फोन जेब में रख लिया। पर चेहरे पर एकाएक उत्पन्न हुई विशेष चमक साफ-साफ बता रही थी कि फोन पर उसको कुछ खास पता चला है।

पर जब राणावत ने दोनों पर बारी-बारी पैनी विजयी नजर डाली तो प्रभु पूछ बैठा-"क्या बात है? आप इस तरह मुझे क्यों देख रहे हैं, जैसे जाल में फंसने पर हिरण को शिकारी देखता है।"

राणावत धीरे से कातिलाना ढंग से मुस्कराया।

फिर बोला-"आपका इस बात पर बहुत जोर है कि आप वासु को नहीं जानते। है न?"

"और आप लोगों का भी इसी बात पर जोर है कि मैं वासु को जानता हूं। मेरा उससे बाकायदा गहरा याराना था।" प्रभु नाराजगी में बोला।

"मुझे सूचना मिली है कि हिल स्टेशन जाने से पहले आप वासु के घर के आसपास देखे गए थे?"

राणावत उसकी बात नजरअंदाज करते हुए बोला।

"क्या?" उछला प्रभु।

"आपको वासु के घर के आसपास देखा गया था।" राणावत को यह जानकारी कुछ देर पहले फोन पर तिवारी ने दी थी, साथ ही कहा था कि इस बारे में पक्का नहीं है क्योंकि गवाह को संदेह था कि उसने जिसे देखा था, वह प्रभु नहीं भी हो सकता था। पर राणावत ने यह बात जाहिर न करके पूरी बात कॉन्फिडेंस के साथ कही, जबकि यकीन उसे भी नहीं था कि वासु के घर के आसपास देखा गया वह शख्स प्रभु ही था।

"मैं वासु के घर के आसपास देखा गया था?" प्रभु ने गुस्से में कहा।

"हां!"

“नॉनसेंस।”
“वो शख्स हमारी पहुँच में है जिसने आपको वासु के घर के आसपास देखा था।”
प्रभु के साथ वीर भी हड़बड़ाया।
“ये झूठ है।”
“आप हिल स्टेशन जाने से एक दिन पहले तिलक नगर नहीं गए थे।”
“तिलक नगर। ह...हां...वहां तो गया था।”
“फिर...।”
“क्या फिर?”
“यही कि वासु के घर के आसपास जिस शख्स को देखा गया था वो आप ही थे।”
“मैं फिर कहूंगा ये झूठ है।”
“अरे! अभी तो स्वीकार किया है कि तिलक नगर गए थे।”
“तिलक नगर गया था। यह मैं अभी भी कहता हूँ कि मैं
तिलक नगर गया था।”
“आपको पता नहीं वासु का घर भी तिलक नगर में ही है।”
“क्या!” प्रभु चौंका फिर संभलकर बोला-”ह...होगा। पर मैं वासु से मिलने नहीं गया था। मैं तो उसे जानता तक नहीं।”
“यानी उसके घर के आसपास होना महज एक इत्तेफाक है।”
“और क्या!”
“कमाल है।”
“इसमें क्या कमाल है? क्या इत्तेफाक होते नहीं?”
राणावत कुछ नहीं बोला, सोचता रहा।
“अच्छा, आप तिलक नगर क्या करने गए थे?”
“बताना जरूरी है।”
“छुपाना चाहते हैं तो कोई बात नहीं।” राणावत जब मूड में हो तो मामूली शख्स भी उससे बहस करता रहे उसे फर्क नहीं पड़ता था पर जब मूड ऑफ हो, जो बहुत कम होता था, तो सामने वाला केवल जवाब ही देता था, सवाल करने की सोचने की भी हिम्मत नहीं पड़ती थी। इस समय वह नार्मल मूड में ही जान पड़ता था।
“मैं दरअसल बाबर से मिलने गया था।” आखिर प्रभु बोला। “बाबर से! व..वो अभी जिंदा है!”
“मैं मुगल बादशाह बाबर की बात नहीं कर रहा।....मेरे ट्रक ड्राइवर का नाम बाबर है।”
“अच्छा! क्या बाबर का घर उसी गली में है जिसमें वासु का घर है?”
“जब आप कह रहे हैं कि मैं वहां देखा गया तो जाहिर है उसी गली में होगा। पर यकीन मानिए मुझे यह बात पता नहीं थी।”
“ऐनी वे। बाबर से क्या काम था?”

“कुछ माल की अर्जेंट डिलीवरी होनी थी। उसी सिलसिले में उससे बात करने गया था।”

“ऐसी सिच्युऐशन में आप हर बार अपने ड्राइवर के घर जाकर बात करते हैं?”

“फोन पर बात नहीं हो पा रही थी। दूसरे ड्राइवर आउट ऑफ स्टेशन हैं?”

“कितने ट्रक हैं?”

“पांच!”

“हूं! किसका माल था? क्या था?”

“मनोहर लाल का। उसका फ्रिज बनाने का कारोबार है। पता होगा? आखिरकार वे बड़े बिजनेसमैन हैं।”

राणावत ने ‘हां’ में गर्दन हिलाई।

“बाबर भी आउट ऑफ स्टेशन था। पर रात को फोन करके उसने अपनी आमदगी के बारे में बता दिया था। इसलिए सुबह जब मनोहर लाल ने माल डिलीवरी के लिए मुझसे बात की तो मैंने बाबर से सम्पर्क साधा पर कई बार ट्राई करने पर भी फोन न मिला, तो मुझे बाबर के घर जाना पड़ा।”

“आप डील कैंसिल नहीं करना चाहते थे?”

“बाबर उपलब्ध न होता तो कैंसिल करनी पड़ती।”

“हूं! फोन पर सम्पर्क क्यों न हुआ?”

“क्या इसमें भी कोई भेद है?” प्रभु चिढ़ा।

“क्या पता?”

“हद हो गई।”

“बताइए।”

“बाबर के फोन की बैटरी डिस्चार्ज थी।”

“क्यों?”

प्रभु ने उसे गुस्से में घूरा।

“क्योंकि...।” फिर गुस्से को पीते हुए सामान्य मुद्रा में बोला-”रात को मेरे से फोन पर बात करके वो सो गया था। सुबह दस बजे तक सोता रहा। याद नहीं रहा कि फोन डिस्चार्ज है।”

“रात को आपसे बात की तब तो चार्ज था ...।”

“थोड़ी बैटरी थी, जो बात करते-करते खत्म हो गई। सफर से लौटा था इसलिए ध्यान न दिया, सीधा सोने चला गया। खाना रास्ते से खाकर आया था।”

“हूं! ये सब बातें आपको कैसे पता?”

“मैं उससे घर जाकर उससे मिला तो उसने खुद-ब-खुद सारी बातें बताईं।”

“बाबर के घर का पता और उसका फोन नंबर दीजिए।”

प्रभु ने एड्रेस व फोन नंबर दिया।

“आप हिल स्टेशन की पुलिस को बिना बताए रामनगर क्यों भाग आए?”

“वो मुझे एक ऐसे केस में फंसाना चाहती थी जिससे मेरा दूर-दूर तक का कोई संबंध नहीं था। मुझसे गलती हुई जो वहां घूमने गया। साला सारा मूड ही खराब कर दिया। अभी भी चैन नहीं है।”

एकाएक राणावत उठ बैठा।

“फिलहाल तो मैं चलता हूं...जरूरत पड़ी तो फिर तकलीफ देने आऊंगा।”

वह लम्बे-डग भरता हुआ दरवाजे की ओर बढ़ गया।

पर दरवाजे पर पहुंचकर ठिठका-पलटा।

“जब तक केस हल नहीं हो जाता रामनगर छोड़कर कहीं मत जाना।” उसने सख्त लहजे में कहा। दोनों चुप बैठे रहे।

फिर वह बाहर निकल गया। बाहर आते ही उसने तिवारी को फोन लगाया।

✠✠✠

पुलिस जीप सूनी सड़क पर सरपट दौड़ी जा रही थी। तिवारी ड्राइव कर रहा था। उसकी बगल वाली सीट पर राणावत बैठा था।

प्रभु के घर से निकलकर राणावत ने तिवारी को, जो उस घड़ी तिलक नगर में ही था, बाबर के घर का पता बताकर उससे पूछताछ करने के लिए बोला था। पर तिवारी जब बाबर के घर पहुंचा तो पता चला वह अभी लौटा नहीं था।

फिर वह सीधा थाने पहुंचा जहां राणावत उसका वेट कर रहा था। फिर दोनों कासगंज के लिए निकल पड़े थे। इरादा था गौरव से मिलने का।

“तुम्हें नहीं लगता तिवारी कि इस केस में इत्तेफाक कुछ ज्यादा ही हो रहे हैं।” राणावत बोला।

“मतलब, सर?”

“मैं प्रभु सोनकर की बात कर रहा हूं। वह और वासु दोनों एक ही दिन हिल स्टेशन पहुंचे- एक ही होटल में, आमने-सामने कमरे में ठहरे। दोनों ही शाम को बाहर गए। बाहर जाने की बात प्रभु ने बाद में स्वीकारी-पहले घोंट गया। यहां रामनगर में प्रभु बाबर से मिलने उसी गली में गया जिसमें वासु का घर है। हर बार दोनों की मौजूदगी। तुम क्या सोचते हो इस बारे में?”

“ऐसे तो लगता है कि प्रभु दोषी हो सकता है पर...।”

“पर क्या?”

“प...पर ये सारे इत्तेफाक...सच में इत्तेफाक भी हो सकते हैं।”

राणावत ने उसे देखा।

“इतने सारे इत्तेफाक!”

“क्या बड़ी बात है।”

“हूं!”

“अगर प्रभु ही दोषी है तो हमें मालूम होना चाहिए कि उसे वासु के हिल स्टेशन जाने के प्रोग्राम के बारे में पता था, जबकि हमें अभी यही नहीं पता कि वासु का हिल स्टेशन जाने का प्रोग्राम कब बना था- पहले से था या जल्दी में बना।”

“अगर प्रभु को दोषी मानकर चलो तो...वासु का हिल स्टेशन जाने का क्या प्रोग्राम पहले से था। तभी तो उसे पता लगा।”

“वासु के क्रिया-कलाप से तो नहीं लगता कि पहले से था।”

“अर्जेंट में प्लान बनने की क्या नौबत आ गई थी?”

“ये तो खोजबीन से ही पता चलेगा।”

“हूं! वैसे, प्लान अर्जेंट में बना हो या पहले से प्लांड हो, पर वासु के व्यवहार से-मतलब, यात्रा के बारे में उसने घर वालों को कुछ नहीं बताया, जबकि उसकी चाची-मां उसे श्रवण कुमार बताती हैं। कुछ न कुछ ऐसी बात तो जरूर थी जो... शायद गैर-कानूनी था। छिपाने वाली बात होगी।”

तिवारी ने सामने नजर रखते हुए धीमें से ‘हां’ में कई बार मुंडी हिलाई।

जीप कासगंज के भीड़-भाड़ वाले इलाके‘मार्केट’ में प्रवेश कर चुकी थी। उस घड़ी दोपहर हो रही थी पर आसमान में काले-काले बादलों की वजह से धूप का नामो निशान नहीं था।

जीप, कुछ देर बाद सड़क के किनारे रोकी गई।

कासंगज का वह हमेशा-भीड़ से भरा रहने वाला मार्केट था।

दोनों जीप से उतरे।

“वासु की दुकान उसी मार्केट में है...है न?” जीप से उतर कर राणावत घूम कर जीप से उतर चुके तिवारी के पास पहुंचकर बोला।

“हां!” तिवारी ने सामने दुकानों पर निगाह दौड़ाते हुए कहा।

एकाएक राणावत की निगाहें एक दुकान पर ठहरीं।

“वो रही।” वह फौरन बोला।

तिवारी ने फौरन उसकी तरफ देखा।

“दुकान तो बंद है।”

“उम्मीद तो ऐसी ही थी।”

“क्यों?”

“भई दुकान का मालिक अभी ताजा-ताजा मरा है... वो भी कत्ल से... ऐसे में क्या अच्छा लगता है।”

तिवारी ने ‘न’ में गर्दन हिलाई।

“चलो गौरव के घर चलते हैं।”

वासु की बहन से ही उन्होंने दुकान का व गौरव के घर का पता मालूम किया था।

101/126 डी, ब्लॉक कांसगंज के सामने जीप आकर रुकी। जीप वहीं छोड़कर दोनों पुलिसिए घर के गेट पर पहुंचे।

राणावत ने बेल पुश की। वेट किया।

दोबारा बेल बजाने के लिए हाथ उठाया पर फौरन गिराया क्योंकि जरूरत नहीं थी बेल बजाने की। दरवाजा खुल चुका था।

दरवाजा एक 45-46 साल की मोटी महिला ने खोला। पर दरवाजे पर पुलिस देखकर हड़बड़ा गई।

"आप गौरव की मां हैं?" राणावत शालीनता से बोला।

"जी!"

"गौरव घर पर है?"

"बात क्या है सर?" वह थोड़ी भयभीत जान पड़ी।

"बात उसी से करेंगे। क्या वह घर पर है?"

"ज...जी...अंदर है।"

महिला एक तरफ हट गई। दोनों पुलिसिए भीतर आ गए। महिला के तन पर लिबास बता रहे थे, वह विधवा है। तभी गौरव अपने कमरे से बाहर निकला। पर पुलिस पर नजर पड़ते ही वह चौंका

"तुम ही गौरव हो?" राणावत की उस पर नजर पड़ी तो उसने पूछा।

"हां..हां!"

"हमें तुमसे कुछ बात करनी है।"

"कि...किस बारे में?"

"यहां आकर बैठो।"

वह आकर एक फाइबर की कुर्सी पर विराज गया।

दोनों पुलिसियों ने भी कुर्सियां संभाल ली। मां खड़ी रही।

"तुम कहीं जा रहे थे?" राणावत ने उसके तन पर नए कपड़े देखे तो पूछा।

"नहीं। मैं कानपुर से लौटा हूं अभी-अभी। वहां मेरी बुआ की लड़की की शादी थी।"

"तुम अकेले गए थे?"

"कुछ दिनों से मेरी तबियत सही नहीं थी इसलिए मैं नहीं गई थी।" जवाब मां ने खुद दे दिया।

"हूं!"

एकाएक महिला को कुछ याद आया।

वह किचिन की तरफ बढ़ते हुए बोली-"मैं चाय का इंतजाम कर...।"

"अरे नहीं, नहीं....। तकलीफ मत किजिए।" राणावत ने फौरन मना किया।

महिला वापस बैठ गई। उसने दोबारा नहीं पूछा। शायद उसने भी केवल फॉर्मल्टी वश ही पूछा था।

तुम्हें वासु के बारे में पता लगा होगा?" राणावत ने मुद्दे की बात शुरू की।

"ह...हां! अभी लौटा तो मां ने बताया।" वह गंभीर स्वर में बोला।

चेहरे पर फैले भाव साफ बता रहे थे कि वह इस बात को जानने के लिए व्यग्र था कि आखिर पुलिस क्यों आई है- उससे क्या बता करनी चाहती है?

"तुम कानपुर कब गए थे?" राणावत ने कुछ रुककर पूछा।

"उसी दिन जिस दिन वासु सर हिल स्टेशन गए थे। मैंने उनसे चार-पांच दिन की छुट्टी मांग ली थी।"

“यानी वासु ने तुमसे हिल स्टेशन जाने का जिक्र किया था?”
राणावत सीधा हुआ।
“न..नहीं।”
“फिर...तुमने यह कैसे कहा कि उसी दिन जिस दिन वासु सर हिल स्टेशन गए थे...।”
“वो तो आज जब मां ने सारी घटना बताई तो समझा कि उस दिन वासु सर हिल स्टेशन गए थे।”
“यानी तुम्हें नहीं पता था कि वासु उस दिन हिल स्टेशन जाने वाला था?”
“मुझे कैसे पता होता, जब उन्होंने कुछ बताया नहीं।”
“ओह...” कुछ पल के लिए राणावत का उत्साह ठंडा पड़ गया।
कुछ पल सोचा फिर पूछा-”हिल स्टेशन जाने से पहले वासु घर से दुकान पर पहुँचा था?”
“हां!”
“उस दिन ऐसा क्या हुआ कि उसका हिल स्टेशन जाने का प्रोग्राम बन गया।”
“...मुझे नहीं पता।”
“उसके दुकान पर आने के बाद क्या-क्या हुआ? वह कितनी देर दुकान पर रुका, क्या किया...वगैरह-वगैरह, सब बताओ... अच्छी तरह याद करके....?”
गौरव सोचने लगा।
“वासु सर रोज की तरह ही साढ़े दस के आसपास दुकान पर पहुँचे थे। मैं उनसे पहले दुकान पर पहुंचता था। दुकान खोलने की जिम्मेदारी मेरी ही थी।”
“ठीक-ठीक! आगे?”
“और आधे घंटे तक ही वे दुकान पर रुके थे फिर चले गए थे।”
“कहां?”
“पता नहीं। बताया ही नहीं।”
“पूछा था?”
“मौका ही नहीं मिला। मैं काम में बिजी था ध्यान नहीं दिया।”
“तुम्हारे कहने का मतलब वासु तुमसे बिना कुछ कहे दुकान से चला गया?”
“हां!” कहते-कहते रुका गौरव।
“क्या हुआ?”
“उन्हें शायद किसी का फोन आया था?”
“क्या? किसका?”
“ये नहीं पता। मैंने यूंही सर उठाकर उनकी तरफ देखा तब वे फोन पर किसी से बात कर रहे थे।”
“वो क्या बात कर रहा था...सुनाई दिया था कुछ?”
“मतलब?”
“उसके हाथ में कोई बैग वगैरह था?”
“शायद नहीं।”

“शायद या पक्का?”
“कह नहीं सकता।”
“तुमने अपनी छुट्टी की बात कब की थी?”
“उनके दुकान में पहुँचते ही।”
“वो क्या बोला था?”
“कुछ पल सोचा फिर बोले कि ठीक है।”
“यानी तुम्हारी छुट्टी मंजूर कर ली?”
“हां!”
“हर बार ऐसा ही होता था?”
“क्या?” वह अचकचाया।
“जब तुम छुट्टी मांगते थे तो मिल जाती थी। ये नहीं कहता था कि चार दिन की जगह दो दिन की छुट्टी ले लो काम का हरजा होगा...।”
“कहते तो थे।”
“पर उस दिन कुछ न कहा?”
“है तो ऐसा ही।”
“हूं!” राणावत सोचने लगा।
वो कुछ क्षण खामोशी से गुजरे।
“वासु की किसी से कोई दुश्मनी वगैरह थी क्या?”
“न...नहीं तो।”
“शायद तुम्हें जानकारी न हो?”
“फिर मुझे कैसे पता होगा?”
“ठीक-ठीक! दुकान पर कभी कोई झगड़ा हुआ था, जैसा अक्सर दुकानदार-ग्राहक के बीच में हो जाता है, क्योंकि ग्राहक के मन माफिक का काम न हुआ... काम में कोई कमी रह गई या ग्राहक ने पैसे नहीं दिए, या उधारी को लेकर... कुछ भी... कुछ भी कारण से कभी झगड़ा हुआ हो याद करके बताओ?”
गौरव ने सोचा।
“ऐसी झड़पें तो एक-दो बार हुई थीं, पर उनकी वजह से कोई दुश्मन नहीं बन सकता।”
“क्यों नहीं बन सकता। आजकल हमारे आसपास जिस प्रकार का सामाजिक माहौल क्रिएट है-बेसब्री का, खुदगर्जी, स्वार्थपन का झूठ, उसमें सब कुछ संभव है। लोग नाकाबिल बात पर इतने उग्र हो जाते हैं कि मरने-मारने पर उतारू हो जाते हैं। अखबार ऐसी खबरों से अटे पड़े रहते हैं।

एक मां समान मौसी का उसकी सगी बहन के लड़के ने, जिसे उसने बहन के मरने के बाद छाती से लगाकर पाला-पोसा-बड़ा किया, उसी ने उसकी बेरहमी से हत्या कर दी, क्योंकि मौसी ने लड़के को लैपटॉप के लिए पैसे देने से इंकार कर दिया था। एक वृद्ध प्रोफेसर की हत्या उसी के मोहल्ले के दो पढ़े-लिखे लड़कों ने महज इसलिए कर दी क्योंकि वृद्ध कई बार उन लड़कों को समय-समय पर सही-अच्छी नसीहतें देता रहता था।

एक पान विक्रेता की हत्या इसलिए कर दी गई क्योंकि उसने ग्राहक से उधारी के पैसे उसके दोस्तों के सामने मांगने की भूल की थी।

एक छोटे बच्चे ने खेत से एक गन्ना तोड़ लिया तो किसान ने उसे मार-मारकर अधमरा कर दिया। आगे अस्पताल तक पहुँचने में ही बच्चे की मौत हो गई।"

गौरव हड़बड़ाया।

"ऐसे ढ़ेरों उदाहरण हैं जहां पर देखा जाए तो वजह कुछ नहीं थी- थी भी तो मामूली थी। पर वो कत्ल की वजह मानी गई।"

"ऐसी झड़प तो उनकी किसी के साथ नहीं हुई थी। एक-दो बार वो भी कई महीने पहले काम को लेकर जरूर हुई थी, पर बाद में ग्राहक संतुष्ट हो गए थे। बात दरअसल काम को लेकर नहीं थी, बल्कि वे पैसे कम देना चाहते थे, क्योंकि उनके पास पूरे पैसे थे ही नहीं। मामला समझने पर वासु सर ने कम पैसे ही ले लिए थे। फिर मामला खत्म हो गया था। पर...।"

"पर क्या..?"

"पर एक शख्स था, जिसको लेकर वे कभी-कभी टेंस हो जाते थे।"

"अच्छा...। कौन?"

"रतन भटनागर।"

"यह कौन हुआ?"

"वह भी फोटोग्राफर था। साल भर पहले हमारी दुकान के पास ही उसकी भी दुकान थी।"

"स्टूडियो था?"

"हां रतन स्टूडियो के नाम से।"

"बात क्या थी। वासु उसे लेकर क्यों परेशान हो जाता था?"

"उसने वासु सर से पचास हजार रुपए उधार लिए थे। उसकी मां की तबियत बहुत खराब थी। उन्हीं के इलाज के लिए उसे रुपयों की जरूरत थी। पास में दुकान...एक ही प्रोफेशन में होने के नाते दोनों के दरम्यान काफी अच्छे संबंध बन गए थे।"

"यानी वासु ने उसे पचास हजार रुपये दिए?"

"हां!"

"पर वासु की परेशानी की क्या वजह थी?"

"रतन ने दो-तीन महीने में रकम लौटाने का वादा किया पर लौटाई नहीं।"

"इसमें कौन सी बड़ी बात है। अक्सर आदमी समय पर इंतजाम नहीं...।"

"जानता हूं। पर उसने आगे भी रकम न लौटाई बल्कि नए-नए बहाने बनाने लगा। लुकने-छिपने लगा। वासु सर समझ गए कि वह सही व्यक्ति नहीं है। मैंने सर को रतन से ही एक-दो बार झड़पते हुए देखा था।" गौरव कुछ रुककर बोला-"जब वह ज्यादा ही टाल मटोल करने लगा तो वासु सर ने पुलिस में जाने की धमकी दी।"

"ठीक! फिर?"

“पर वो पट्ठा तो बड़ा ही शातिर निकला। सर से कुछ दिनों का टाइम मांगा कि इतने समय में रकम लौटा देगा पर...।”

“पर क्या...?”

“पर वो तो गधे का सींग बन गया, ढूंढे न मिला।”

“ओह...आई सी।” राणावत के होंठ गंभीर मुद्रा में गोल हुए।

“हो सकता है। बाद में पैसे दे गया हो... तुम्हें पता न चला हो।”

काफी देर से खामोश बैठे तिवारी ने कहा।

“नहीं दिए थे। आज से लगभग पंद्रह दिन पहले ही सर से मेरी इस संबंध में बात हुई थी।”

“पंद्रह दिन तो कुल वाकया होता है। हो सकता है इन्हीं पंद्रह दिनों के दरम्यान रतन पैसे वापस कर गया हो।”

गौरव सकपकाया।

“ए...ऐसा होता तो... वासु सर ने मुझे बताया नहीं।”

“वासु को तुम्हें बताना जरूरी था?”

“जरूरी तो नहीं था। पैसा उन्होंने दिया था, उनका था। जैसे हर बार रतन की बात मुझसे शेयर करते थे, उस हिसाब से तो रुपये मिले होते तो जिक्र जरूर करते।”

“रुपये मिल गए हों और वासु ने तुम्हें न बताया हो। कारण कुछ भी रहा हो....क्या ये बहुत भारी मिस्टेक है?”

गौरव ने सकपकाते हुए ‘न’ में मुंडी हिलाई।

“फिर?”

“मैंने तो अपना अंदेशा जाहिर किया था।”

“रतन के गायब होने पर वासु ने खोजबीन तो जरूर की होगी, बहरहाल उसके पचास हजार रुपयों का मामला था।”

“हां! पर पता नहीं लगा कि वह कौन लोक में चला गया।”

“तुम्हारे बताने के हिसाब से तो लगता है कि वासु को रतन के घर का पता मालूम नहीं था। होता तो उसकी जरूर कोई खोज खबर लगती....।”

“ह..हां!”

“पचास हजार की बड़ी रकम केवल दोस्ती की खातिर दे दी... आगे पीछे कुछ न सोचा, जबकि मैंने तो सुना था, वासु चमड़ी चली जाए पर दमड़ी न जाए जैसा इंसान था।”

“ह...है तो ऐसा ही।”

“फिर भी रकम देते वक्त आगे-पीछे कुछ न सोचा?” राणावत बोला।

“उन्हें शायद उस पर भरोसा था। दूसरे, मां की तबियत खराब वाली बात ने ज्यादा कुछ सोचने न दिया।”

कुछ क्षण खामोशी से कटे।

“तुम्हें मालूम है रतन का एड्रेस?” राणावत ने पूछा।

“मुझे मालूम होता तो मैं वासु सर को न बताता।”

"हूं! तुम्हें वासु के फोन का नंबर तो पता होगा?"
"हां!"
"बताओ।"
उसने बताया।
"तुम्हें अभी वासु के घर जाना होगा-अफसोस जताने।"
"ह..हां!"
राणावत उठ बैठा।
"तो जाओ। बातचीत के लिए शुक्रिया।"
फिर वह लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ दरवाजे की ओर बढ़ गया।
तिवारी पीछे लपका।
बाहर जब दोनों जीप में बैठे तो राणावत ने गाड़ी स्टार्ट कर रहे तिवारी से कहा-"मोबाइल कम्पनी से हमें पता चल जाएगा कि हिल स्टेशन जाने से पहले वासु ने किस से बात की थी?"
"आपको लगता है वासु के हिल स्टेशन जाने... उसकी हत्या में उस फोन वाले का कोई हाथ हो सकता है, जिसने उस दिन वासु से फोन पर बात की थी?"
"क्या पता? कुछ हो भी सकता है-नहीं भी। अभी तो इन्वेस्टीगेशन जारी है। जो भी हाथ लगता है। उसे खंगालना तो पड़ेगा ही।"
तिवारी की गर्दन स्वमेव ढंग से हिली।
"अभी क्या थाने चलें?" फिर उसने पूछा।
"रतन नाम की कड़ी मुझे खटक रही है, इसे ढूंढना पड़ेगा। इसलिए वासु की दुकान...स्टूडियो पर चलो।"
"वहां क्यों, वो तो बंद है।"
"रतन कभी उसके पास वाली दुकान में उसका पड़ोसी हुआ करता था, वहां खोजबीन से शायद कुछ पता चले।"
"हूं!"
फिर तिवारी ने जीप आगे बढ़ा दी।
शीघ्र ही वे मनचाही यानी वासु की दुकान के पास थे। वासु की दुकान के आगे एक और फोटो स्टूडियो था। उनकी जानकारी में वहीं कभी रतन का डेरा जमता था।
दोनों उस दुकान में पहुँचे। दुकान के अंदर दो-तीन लड़कियां मौजूद थी, जिनकी फोटो खींचने की तैयारी में जुटा था फोटोग्राफर। पर पुलिस को देखकर लपक कर उन दोनों के पास पहुंचा।
"क..क्या बात है सर?" वह खींसें निपोरते हुए आदर भाव से बोला।
"तुम्हारा नाम श्याम जी है?" राणावत ने पूछा। बाहर बोर्ड में 'श्यामजी फोटो स्टूडियो' लिखा उसने पढ़ा था।"
उसने 'हां' में मुंडी हिलाई।
"तुम इस दुकान में पांच महीने से हो?"

उसने 'हां' में मुंडी हिलाई।

"तुमसे पहले इसमें रतन भटनागर अपना फोटो स्टूडियो चलाता था-मालूम?"

उसने फिर मुंडी हिलाई पर 'न' में।

"मुंह में जबान नहीं है। है तो उसका भी इस्तेमाल कर।"

वह हड़बड़ाया।

"न...नहीं। वह फौरन सकपकाये स्वर में बोला-"नहीं पता।"

"क्यों?"

वह फिर हड़बड़ाया, जोर से थूक गटकी।

"ये तो मालिक को पता होगा।" फिर हिम्मत करके बोला।

"मालिक?"

"दुकान का।"

"ओह! पता बताओ।"

"किसका?"

"अरे, मालिक का। इस दुकान के मालिक का।"

"वो तो ऊपर ही रहते हैं।"

"ऊपर...किसके?" राणावत चौंका।

"इस दुकान के ऊपर उनका रेजीडेंस है।"

"अच्छा।"

दुकान से सटकर पतली छोटी गैलरी जैसी, जिसमें मुश्किल से एक इंसान के जाने लायक रास्ता था। श्याम जी उन दोनों को वहीं लाकर छोड़ गया। दोनों गैलरी के अंत में पहुंचे तो ऊपर की सीढ़ियां बनी थीं।

दोनों चढ़कर दरवाजे के सामने ठिठके। दरवाजा उस घड़ी केवल उढ़का था। उन्हें लगा बंद है। पर जब दस्तक देने के लिए दरवाजे पर हाथ रखा तो हल्के धक्के से ही दरवाजा खुल गया। वे दोनों भीतर घुस गए।

बाहर आसमान में घने बादल थे, जो बढ़ते ही जा रहे थे।

अंदर कमरे में लाइट ऑन थी, पर कमरे में कोई नजर नहीं आया।

कमरा भी अस्त-व्यस्त हालत में था। हर चीज बेतरतीब ढंग से बिखरी पड़ी थी। लगता नहीं था वहां कोई रहता है- रहता भी है तो केयरलैस जान पड़ता था।

राणावत ने घूम कर पीछे देखा तो बेड पर एक बुजुर्ग सोता दिखाई दिया। उसके ऊपर सीलिंग फैन चालू था। बुजुर्ग बेसुध जान पड़ता था। जमीन पर शराब की कई बोतलें बिखरी पड़ी थीं। एक बोतल जिसमें शराब बाकी थी, बुजुर्ग के साथ पलंग पर शरीर से सटी पड़ी थी। दोनों में गहरा याराना जान पड़ता था।

"ये तो नशे में टुन्न लगता है।" तिवारी ने उसकी हालत का अवलोकन करते हुए कहा।

राणावत ने आगे बढ़कर उसे झकझोरते हुए कहा-"मिस्टर वर्मा! मिस्टर वर्मा!" श्याम जी ने उसे बता दिया कि दुकान मालिक का नाम देवेन वर्मा है।

पर वर्मा के शरीर में कोई हलचल न हुई।

राणावत ने कई दफा उसे झकझोरा-पुकारा पर वह टस से मस न हुआ। साला कुंभकरण!

"मुझे नहीं लगता ये उठेगा।" तिवारी मुस्कराया।

राणावत के चेहरे पर खीझने के भाव थे।

उसने फिर प्रयास किया।

"मिस्टर वर्मा! मिस्टर वर्मा। उठिए।"

इस बार कामयाबी मिली। बूढ़े ने आंखें खोलीं। शराब के नशे के कारण उसकी आंखें अभी लाल थीं। पता नहीं कब दारू पी थी? कब सोया था?

"मिस्टर वर्मा! उठिए!" उसे जागा पाकर राणावत ने दोगुने उत्साह से कहा- "मुझे आपसे कुछ बात करनी है।"

बूढ़े ने सामने वर्दीधारियों को देखा तो उठने लगा। तिवारी ने उसकी मदद की।

"हमें आपसे कुछ पूछना है।" वह उठकर बैठ गया तो राणावत ने कहा।

"क... क्या?" वह खुद पर कंट्रोल कर बोला। पर आवाज लड़खड़ा रही थी।

"अ...आप होश में हैं?" उसकी खुलती-बंद होती आंखों की वजह से राणावत ने शायद पूछा।

"प...पता नहीं।"

क्या आदमी था!

उसका शरीर भी हिल-डुल रहा था, पता नहीं किस समय फिर ढेर हो जाता।

"अ..आप रतन को जानते हैं?" राणावत ने शीघ्रता से पूछा।

"क..कौन रतन?"

"रतन भटनागर, जो साल भर पहले आपकी दुकान में अपना फोटो स्टूडियो खोले था और तकरीबन सात महीने रहा था। याद है?"

"ह...हां!"

"यानी होश में है...बढ़िया।" राणावत मुस्कुराया। उसे लग रहा था कि बूढ़ा होश में नहीं हैं। हालत देखकर तो कोई भी यही अनुमान लगाता।

"हमें उसका एड्रेस चाहिए मिस्टर वर्मा। आप सुन रहे हैं?"

वर्मा बीच-बीच में आंखें मूंद लेता था।

"हां!"

"क्या हां?"

"स..सुन रहा हूं।"

"तो रतन भटनागर का एड्रेस बताइए।

वर्मा ने गरदन हिलाई। पता नहीं चला कि हां में हिलाई या न में।

"बताइए?"

"म...मुझे पता नहीं।"

"क्यों?" राणावत खीझने लगा-"दुकान किराए पर देते समय किराएदार का नाम-पता वगैरह मालूम करना तो जरूरी है उसकी आइडेंडिटी के लिए।"

“हां!”
“क्या हां?”
“जरूरी है, पर... मैंने नहीं लिखवाया।”
“पूछा तो होगा?”
“हां! पर अ...अब याद नहीं।”
“लिखकर क्यों न रखा?”
“जरूरी नहीं समझा। भला बंदा था।”
“उसके माथे पर लिखा था वह भला बंदा है।”
वर्मा हड़बड़ाया, लगा अब पूरी तरह सचेत है, पर अगले ही पल पुरानी हालत में आ गया।
“सूरत देखकर, बंदा कैसा है- पता करने का डिप्लोमा-डिग्री है आपके पास।”
“ए..ऐसा कुछ नहीं है।”
“फिर?”
“व... वो दरअसल....उसे लेकर वासु आया था। वासु मेरा पुराना कस्टमर-भला बंदा था।”
“वासु के बारे में पता है-उसके साथ हिल स्टेशन पर क्या हुआ?”
उसने हां में मुंडी हिलाई।
“छापे में पढ़ा था।”
“छापे में?”
“अ...अखबार में।”
“ठीक! फिर भी आपको एड्रेस वगैरह नोट करके रखना चाहिए था। कल को वो आपके साथ कोई दगा करके भाग जाता तो आप क्या करते? कैसे ढूंढते उसे?”
“वासु था न।”
“वासु बीच में दुकान छोड़कर कहीं चला जाता तो?...दूसरी जगह...मुम्बई-दिल्ली शिफ्ट हो जाता तो?”
“वासु को घर का एड्रेस मालूम होता...नहीं?” बीच में तिवारी ने पूछा।
“न.. नहीं।”
“क्या नहीं?”
“मुझे वासु के घर का पता नहीं मालूम?”
“फिर भी वासु की जुबान को गारंटी मानकर एक नए बंदे को दुकान दे दी। वह कोई गलत आदमी निकलता,गलत धंधा करता तो आप पर भी तो आफत आती या नहीं आती।”
“क्या फर्क पड़ता।”
“क्या बोला!” राणावत चौंका।
“जो आफत मुझ पर पड़ चुकी है, उससे बड़ी तो न पड़ती। फिर क्या फर्क पड़ता।”
“क्या आफत पड़ी आप पर?”
वर्मा गमजदा जान पड़ा। उसने हाथ के इशारे से सामने दीवार पर लगी एक तस्वीर की तरफ इशारा किया।

दोनों की नजरें एक ओर उठीं।

दीवार पर एक 15-16 साल के लड़के की मुस्कराते हुए फोटो टंगी थी उसमें माला पड़ी थी।

"वो मेरा बेटा राजकुमार था। व..वह सच में राजकुमार था। मां तो उसे जन्म देते ही स्वर्ग सिधार गई थी। उसे मैंने ही छाती से लगा कर पाला था। मां-बाप दोनों का प्यार दिया था। तन-मन धन सब लगा दिया उसकी परवरिश में। वह...वह भी बड़ा होनहार निकला। हाईस्कूल में पूरा स्कूल टॉप किया। मैं बहुत खुश था। उसे आगे पढ़ा-लिखाकर एक काबिल आदमी बनाना चाहता था। पर दो साल पहले...।" बूढ़े के चेहरे की उदासी बढ़ने लगी। एक दिन वह दरिया चला गया अपने दोस्तों के साथ। मुझे खबर तक न हुई। खबर हुई तो ये कि वह दरिया में डूब गया। मैं इतना बदनसीब कि उसकी लाश भी नसीब न हुई।"

बूढ़े की आंखों से आंसू टपकने लगे।

दोनों पुलिसिए भी खामोश थे। शायद दुखी भी।

कुछ पल वहां खामोशी छाई रही।

बूढ़े ने ही आंखें पोंछीं और बोला- "मेरे जीने का वही एकमात्र सहारा था। उसके जाने के बाद मैं बिल्कुल अकेला हो गया। खुद को शराब में डुबो दिया। अब इसमें ही डूबता-उतराता जिंदगी की अंतिम घड़िया गिन रहा हूं। पता नहीं वो घड़ी कब आएगी जब अपने बेटे के पास पहुंचूंगा। ऐसे आदमी को भला कौन सी आफत डराती, जो खुद ही मरने का ख्वाहिशमंद हो।"

राणावत ने गहरी सांस छोड़कर 'आह' सी भरी। अफसोस जाहिर किया। उसे तसल्ली बंधाई, फिर बोला-"एक बात कहूं अगर बुरा न मानें तो।"

बूढ़े ने उसकी तरफ देखा।

"क्या?"

"मैं समझ गया हूं, आप अपने बेटे से बेइंतहा प्यार करते थे और उसके न रहने पर आप पर क्या बीत रही है, ये मैं समझ सकता हूं, क्योंकि मैं भी एक बच्ची का बाप हूं। पर दुनिया में कई ऐसे बच्चे हैं जो अपने मां-बाप के प्यार से महरूम हैं। जिन्हें प्यार की सख्त जरूरत है। कोई उन्हें प्यार करे तो उनके जीवन में भी खुशियों की बहार आ जाए। आप किसी बच्चे को गोद ले ले। तो उसका भी जीवन सुधर जाएगा। आपको राजकुमार मिल जाएगा।"

"मेरा राजकुमार कहीं नहीं मिल सकता।"

"आप निराशा में डूबे हैं इसलिए ऐसा कह रहे हैं। वरना प्यार से... अपनत्व से किसी भी बच्चे को देखेंगे तो उसमें आपका राजकुमार ही नजर आएगा।"

बूढ़ा सोचने लगा।

राणावत उठ बैठा। तिवारी भी उठा।

दोनों वहां से मायूस होकर लौटे।

बाहर हल्की बूंदा-बांदी शुरू हो गई थी।

जीप के पास पहुंचकर तिवारी से कहा-" हमें आसपास वालों से पूछताछ करनी चाहिए। शायद रतन के बारे में कोई कुछ बता सके। आखिरकार रतन यहां कई महीने रहा है तो किसी न किसी को तो उसके बारे में पता होगा।"

"हां! तुम शायद ठीक कहते हो।"

तभी राणावत का फोन बजा। उसने जेब से फोन निकालकर बात की। चेहरे पर उदासी के भाव तारी हो रहे थे।

"क्या बात है सर?" तिवारी ने उसे गंभीर देखा तो पूछा।

"घर से फोन था। लकी की तबियत खराब है। उसे तेज बुखार है।"

तिवारी को पता था कि राणावत की बीवी कुछ सालों पहले स्वाइन फ्लू की चपेट में आकर मर चुकी थी। उसकी पांच-छ साल की छोटी बच्ची थी, जिसकी देखभाल आया के जिम्मे थी।

"आप घर चले जाइए। इधर मैं देख लूंगा।"

तिवारी हमदर्दी से बोला।

राणावत ने कुछ सोचा, फिर कहा- "ठीक है।"

फिर तिवारी के कहने पर राणावत जीप लेकर चला गया। आगे तिवारी ने खोजबीन शुरू की। उसने वहां आसपास की लगभग सब दुकानों पर जाकर जांच-पड़ताल की।

नतीजा सिफर।

अंत में सड़क के उस पार एक चाय की दुकान पर वो पहुंचा। अधेड़ उम्र के दुकानदार से पूछा रतन भटनागर के बारे में, तो वो भी कुछ खास न बता सका।

"मैं जानता हूं रतन भइया कहां रहते हैं?"

तिवारी ने चौंककर अपने पीठ पीछे देखा। पीछे एक 11-12 साल का लड़का खड़ा था। वह सस्ती सी शर्ट-पैंट पहने हुए थे। हाथ में चाय की केतली थी। वह दुकानदार का बेटा था और अभी चाय सप्लाई करके आया था।

"य...ये मेरा बेटा है साब।" दुकानदार खीसें निकालते हुए बोला। उसके काले चेहरे पर लाल-पीले दांत चमक उठे। उनकी चमक इतनी भद्दी थी कि दिन में भी अंधेरा कर दें। कम्बख्त! मुंह तक साफ नहीं रख सकता था, ऊपर से मुंह बंदर की तरह। हंसते हुए पक्का गोरिल्ला लगता था।

"त...तुम जानते हो रतन का पता?" तिवारी ने उत्साहित होकर लड़के के कंधों को पकड़कर पूछा।

"हां!" लड़के ने जवाब दिया।

"कैसे?"

"क्या?"

"अरे पता! और क्या!"

"अच्छा वो! वो....एक्च्यूली।" लड़के ने गर्व से अकड़कर ऐसे कहा जैसे खुद को बहुत इंटेलीजेंट साबित करने की कोशिश कर रहा हो।

“उस दिन अपने एक फ्रेंड के यहां उसके बर्थ डे पार्टी में जाना था, तभी रतन भइया अपनी बाइक से आए। वे घर वापस जा रहे थे। मैंने ही पूछा कि वे कहां जा रहे हैं। उन्होंने बताया। वहीं पर मुझे भी जाना था सो उनके साथ गया था।”

“अरे रतन कहां जा रहा था.... ये तो बताओ।”

“शास्त्रीनगर...।”

“रतन शास्त्री नगर में रहता...।”

“हां!” लड़का बीच में बोला।

“पर शास्त्रीनगर तो बहुत बड़ा है।”

“हां!”

“फिर कैसे पता चलेगा कि वह शास्त्री नगर में कहां रहता...।”

“पहले मेरी बात खत्म तो होने दीजिए।” लड़का थोड़ी झल्लाहट से बोला। वर्दी का रौब उस पर जरा भी नहीं जान पड़ता था।

“स...सॉरी।”

“इट्स ओके।” लड़के ने कंधे उचकाकर ऐसे कहा जैसे एहसान कर रहा हो।

“गो अहेड।”

“क्या?”

“आगे बोलो।”

“हम जब शास्त्रीनगर पहुंचे तो उन्होंने मुझे मेरे दोस्त के घर पर ड्राप कर दिया। तब मैंने यूंही पूछ लिया था कि वे कहां रहते हैं। उन्होंने बताया कि 126/127 बी ब्लॉक में रहते हैं।”

“अच्छा। पर... काफी वक्त बीत गया है, तुम्हें एड्रेस सही पता है?”

तिवारी को खुशी हुई पर शंका भी जागी।

“अपुन की याददाश्त के बारे में अंगुली मत उठाओ साब! अपुन की याददाश्त एकदम कड़क है।” लड़का ड्रामेबाज भी था।

तिवारी को हंसी आ गई।

“चैक करता हूं। कड़क है कि नहीं।”

“क्या?” लड़का-सकपकाया।

“याददाश्त।”

“कैसे?”

“चल।”

“क...कहां?” लड़का पहली बार घबराया।

“डर मत! मेरे साथ शास्त्रीनगर चल और रतन का पता बताकर अपनी याददाश्त कड़क है पर मुहर लगा।”

लड़के ने बाप की तरफ देखा।

“उ...उसने पता बोल तो दिया है स...साब।” बाप ने फौरन घिघियाते हुए बेटे की तरफदारी करते हुए कहा-”उसे कहां झमेले में फांसते हो... रहने दो न साब?”

तिवारी ने कुछ पल सोचा फिर बोला-"ठीक है।"

एकाएक वह लड़के से मुखातिब हुआ और पूछा-"तुमने जो एड्रेस बोला, वो रतन भटनागर का ही है न?"

"मुझे नहीं पता वे रतन भटनागर थे या पंडित। मैं तो इतना जानता हूं कि कुछ महीने पहले श्यामजी वाली दुकान में उनका रतन फोटो स्टूडियो था।"

लड़का उसी रतन की बात कर रहा था जिसे वह तलाश करता फिर रहा था।

वहां से तिवारी एक ऑटो से शास्त्रीनगर पहुंचा।

आगे 126/127 बी ब्लॉक ढूंढने में उसे कोई दिक्कत पेश न आई।

वह एक पुरानी दो मंजिला इमारत थी, जिसकी मालिक एक लेडी टोनी डिसूजा थी। वह एक वृद्ध क्रिश्चियन औरत थी। वह नीचे फ्लोर पर एक बड़े से कमरे में अकेली रहती थी। पति कई साल पहले मर गया था। बेटा विदेश में नौकरी करता था, शादी बनाकर वहीं रहता था।

साल-दो साल में एक-आध चक्कर जरूरी समझता था तो लगा जाता था।

इमारत के अन्य भागों में किराएदार रहते थे। किराए में आई रकम,जो 10 हजार के ऊपर थी,से बुढ़िया का खर्चा आराम से चलता था।

रतन भी उस इमारत में पांच महीने पहले किराए पर था। तिवारी ने सोचा था कि वह रतन के घर आ गया, पर यहां आकर पता चला कि वह कहीं और जगह से आया था और वहां किराए के कमरे में रहता था।

बाहर से थोड़ी-बहुत जानकारी लेकर वह टोनी डिसूजा से मिलने उसके कमरे में जा पहुंचा।

डिसूजा इस उम्र में खूब सज-धज कर रहती थीं। जींस की पैंट, शर्ट उसकी पसंदीदा ड्रेस थी। लड़कों की तरह छोटे-छोटे बाल रखती थी।

नाखूनी, क्रीम-पाउडर वगैरह का भी खूब इस्तेमाल करती थी। बाहर घूमने पर सर पर गोल-सा हेट व आंखों पर दबंग स्टाइल वाला बड़े लैंस वाला काला चश्मा लगाना कभी नहीं भूलती थी। वह एक जिंदा दिल औरत थी, जिसका शगल था-जियो जी भरके।

उस घड़ी जब तिवारी उसके कमरे पर पहुंचा-एक किराएदार उसे कमरे तक छोड़ आया था। वह घुटनों से नीचे तक झालन वाली हाफ कुर्सी पर बैठी नाखूनों पर नेलपालिश पोत रही थी। उठी तभी जब काम समाप्त कर लिया।

"नमस्ते।" वह गोरी-चिट्टी महिला मुस्कराई।

"ज...जी मैं....।"

"मुकेश तिवारी...।" तिवारी ने कहना चाहा तो वह बीच में मुस्कराकर बोली।

"कैसे जाना?" तिवारी चौंका।

"तुम्हारी वर्दी पर लगी तुम्हारी नेम टेग से।"

"ओह...।" तिवारी झेंप गया।

"क्या काम था?" फैशनेबल बूढ़ी लेडी ने उस पर नजरें गड़ाते हुए कहा।

"म...मुझे आपसे कुछ बात करनी थी।"

"करो।"

"क्या!"

"अरे बात और क्या?"

तिवारी हड़बड़ाया।

"क्या यहीं?"

"किसी पार्क में चलूं?" बुढ़िया के चेहरे पर शरारती अंदाज प्रकट हुए। तिवारी सकपका गया, कुछ बोल न सका।

"आओ भीतर बैठकर बात करते हैं।" बुढ़िया भीतर चली गई।

तिवारी पीछे से लपका।

दरवाजा अपने आप उढ़क गया।

फैशनेबल लेडी एक सोफे पर विराजमान हो गई। तिवारी उसके सामने वाले सोफे पर बैठ गया।

"अब करो।" वह बोली।

"क...क्या?"

"बात भई, तुम तो अभी यंग हो और अभी से भूलने की बीमारी।"

बुढ़िया के सामने पता नहीं क्यों वह असहज महसूस कर रहा था।

"य...ये पूरा घर आपका है?" अंततः उसने पूछा।

"हां!"

"इ...इतने बड़े घर में आप अकेली रहती हैं?"

"अकेली कहां! इस घर में दस कमरे हैं मेरा रेजीडेंस छोड़कर और सभी में किराएदार रहते हैं। 25-30 होंगे। कुछ सिंगल हैं, कुछ फैमिली वाले।"

"म...मेरा वो मतलब नहीं था।"

"फिर?" बुढ़िया सीरियस हुई।

"म...मैं आपकी अपनी फैमिली की बात कर रहा हूं।"

बुढ़िया के चेहरे पर रंग उतरने लगा। हंसमुख, चंचल दिखने वाली औरत गंभीर हो गई थी।

"मेरे हसबैंड की दो साल पहले जांडिस से डेथ हो गई। लाइफ में कभी फीवर तक नहीं हुआ। खूब हट्टा-कट्टा था तुम्हारे माफिक। पर एक दिन बीमार पड़ा और हास्पिटल पहुंचा तो पता चला कि उसे जांडिस है। डॉक्टर दो महीने कम्प्लीटली बेड रेस्ट के लिए बोला पर वो नहीं माना। शायद डॉक्टर की बात सीरियसली न लिया। फिर (जांडिस) पीलिया को सब साधारण समझते हैं, हम भी समझे। पर एक हफ्ते बाद जब वो ज्यादा बीमार हुआ और हास्पिटल गया तो पता चला कि उसे हैपेटाइटिस-बी है, जो कि एक लाइलाज बीमारी है। मैंने तो सपने में भी नहीं सोचा था कि ऐसे हट्टे-कट्टे मैन को सडनली इतनी घातक बीमारी हो जाएगी। ऐसा शायद स्मोकिंग की वजह से हुआ। शराब खूब पीता था। मना किया तो बोलता था अब तक कुछ हुआ। पर जब हुआ तो टोटल टवेंटी डेज में सब कुछ हो गया। पैसे का मुँह न देखा। पानी माफिक बहाया पैसा, पर उसे

बचा न सकी। सुना था कि डैथ सडनली आकर चौंका देती है। उस घड़ी पहली बार महसूस किया।”

औरत कुछ पल गंभीर बैठी रही। तिवारी ने भी कुछ नहीं कहा।

“कोई बच्चा...आईमीन कोई लड़का-लड़की तो होगी?” कुछ देर में तिवारी ने पूछा।

“एक सन है। वो फोरेन में रहता है। वहीं जॉब करता है। शादी भी वहीं बना लिया।”

“यहां तो आता रहता होगा?”

“दो साल से तो नहीं आया।”

“क्यों?” तिवारी हैरान हुआ।

“वहीं नौकरी है-छोकरी है। फिर पुराने-यूजलेस सामान की तरफ कौन देखता है।” औरत का दर्द होठों पर आ गया। आंखें कुछ पल के लिए डबडबा गई थीं। फिर संभली-“पर मुझे कोई दुःख नहीं। हसबैंड की डेथ का जरूर हुआ था। पर सुख-दुःख तो लगा ही रहता है। जिंदगी एक सफर है और सफर में हादसे क्या बड़ी बात है। सफर पूरा करना...मंजिल तक पहुंचना। हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। जीवन के भी सुख-दुःख दो पहलू हैं। एक पहलू होगा तो कैसे चलेगा या चलेगा?”

तिवारी ने झिझकते हुए ‘न’ में गर्दन हिलाई।

कुछ देर पहले बुढ़िया उसे सनकी लग रही थी। अब पता नहीं क्यों उसकी नजरों में उसके लिए इज्जत के भाव थे, सम्मान के भाव थे, शायद उसकी जिंदादिली की वजह से।

औरत ने प्रैक्टिकल बात कही थी पर सोलह आने सच बात कही थी।

जिंदगी एक सफर है और सफर में हादसे क्या बड़ी बात है। नहीं है बड़ी बात!

एकाएक तिवारी को याद आया कि वह वहां किसलिए आया है। उसने पहलू बदला और बोला-”आप अपने किराएदारों का लेखा-जोखा तो रखती होंगी?”

“व्हाट डू यू मीन लेखा-जोखा?” औरत ने आंखें चौड़ी कीं।

“म...मतलब उनके नाम-पते। किसका किराया पेमेंट हो गया-

किसका रह गया वगैरह-वगैरह की डिटेल तो...।”

“अच्छा वो...! वो तो रखती हूं-रखना पड़ता है। हिसाब में भूल चूक न हो इसलिए रखना पड़ता है, नहीं तो रिश्तों में खराबी आ सकती है। किराएदार कहेगा मैंने पेमेंट कर दिया... मैं कहूंगी नहीं दिया। है न?”

“सही कहा आपने।”

तभी दरवाजा खुला। तिवारी की तवज्जो उधर गई। अंदर एक लड़की आई।”

“मेरी मेड है। खाना-पीना, झाडू-पोंछा सब यही करती है। बड़ी प्यारी बच्ची है।” टोनी डिसूजा मुस्कराकर बोली। साथ ही साथ लड़की को दो कॉफी बनाने को भी बोला। तिवारी ने मना भी किया पर लेडी नहीं मानी।

मेड फौरन किचिन में चली गई।

“अभी आप बोली थीं कि आप अपने किराएदारों के नाम-पते, पेमेंट के बारे में डिटेल रखती हैं, क्योंकि रिलेशंस अच्छे बने रहें इसके लिए हिसाब साफ रखना जरूरी है।” तिवारी ने याद दिलाया।

“हां!”
“फिर तो रतन के बारे में आप हमें बहुत कुछ बता सकती हैं।”
“कौन रतन?”
“जो आपके यहां किराएदार हैं।”
“मेरे यहां दो रतन...।”
“दो।”
“हां एक है रतन राय और दूसरा रतन भटनागर।”
“भटनागर...मुझे रतन भटनागर के बारे में...।”
“पर वो तो महीनों पहले ही यहां से चैक आउट हो गया।”
“क्या?”
“साला! यहां से भी भाग गया। भाग ही गया होगा वरना वासु पता लगा लेता। या हो सकता है वासु को पहले से ही पता था कि रतन यहां रहता है। इसलिए उसे यहां से भागना पड़ा हो।”
“अच्छा!” तिवारी ने अपने उत्तेजना पर काबू पाते हुए पूछा-”अब वह कहां रहता है?”
“मुझे कैसे मालूम होगा।” लेडी ने अनभिज्ञता से कंधे उचकाए।
“ये तो पता होगा कि वह यहां रहने के लिए कहां से आया था?”
टोनी डिसूजा सोचने लगी।
“याद आया?” जब थोड़ी देर हो गई तो तिवारी ने पूछा।
“क्या?”
“मैंने आपसे रतन भटनागर के बारे में कुछ पूछा था।”
“नहीं है।”
“याद नहीं है। आपकी इस डिटेल में-डायरी आदि में होगा जिसमें आप हिसाब-किताब रखती हैं।”
“वैसे, बात क्या है?”
शुरू में ही पूछने वाली बात अब याद आई।
“पहले जो मैंने कहा उसकी जहमत उठाइए-प्लीज।”
बुढ़िया उठी। चलकर एक मेज के पास पहुंची। मेज की दराज से एक डायरी निकाल लाई।
“इसमें रखती हैं डिटेल?” तिवारी ने आशा भरे स्वर में पूछा।
“हां!”
“देखिए।”
बुढ़िया ने डायरी खोली। कुछ पन्ने पलटे फिर बंद कर दी।
“क्या हुआ?” बुढ़िया को सोचते पाकर तिवारी ने पूछा।
“याद आया।” वह सोचते हुए बोली।
“क्या पता? बताइए।”
“नहीं।”

"क्या नहीं?" तिवारी के माथे पर बल पड़े।
"पता नहीं।"
"फिर क्या याद आया?" उसे खीझ होने लगी।
ये याद आया कि मैंने डायरी के कुछ पन्ने फाड़कर फेंक दिए।"
"क्या!"
"उन्हीं पन्नों में रतन भटनागर के बारे में डिटेल थी।"
तिवारी का मन बाल नोचने का होने लगा।
"प...पन्ने क्यों फाड़ दिए?" एकाएक उसका स्वर तेज हो गया।
"उन पन्नों में यहां से जाने वाले किराएदारों की डिटेल थी। जब किराएदार ही नहीं तो उसकी डिटेल रखने से क्या फायदा।"
कम्बख्त बुढ़िया! पन्ने न फाड़ती तो कौन-सा पहाड़ टूट पड़ता। कुछ देर बाद।
"क...कब किया ये कारनामा?" तिवारी ने खीझते हुए पूछा।
"कारनामा...कौन सा?"
"अरे, ये पन्ने कब फाड़े थे?"
"परसों।"
"परसों? क... कहां फेंके थे पन्ने?" तिवारी के मन में अभी भी आस थी।
"आग में।"
"क्या!" तिवारी न चाहते हुए भी चीख सा पड़ा।
"हां, मैंने पन्ने आग के हवाले कर दिए।"
बहुत अच्छे!
तिवारी ने खुद पर बड़ी मुश्किल से काबू किया।
"डायरी मुझे दिखाइए..प्लीज।" उसे शायद अभी भी उम्मीद बाकी थी।
बुढ़िया ने डायरी उसे थमा दी। उसने बारीकी से मुआयना किया।
पर बुढ़िया की बात सच थी। कुछ पन्ने उस डायरी से गायब थे।
"अ...आप याद कीजिए... शायद याद हो कि रतन भटनागर कहां का रहने वाला था?" डायरी वापस करते हुए तिवारी ने लुटे-पिटे वाले अंदाज में पूछा।
बुढ़िया ने फौरन इंकार में सर हिलाया।
सोचकर...!
"मुझे सच में याद नहीं है। होता तो जरूर बताती।"
तभी मेड दो कप कॉफी ले आई।
तिवारी की कॉफी पीने की बिल्कुल इच्छा नहीं हो रही थी पर वो मना न कर सका।
जिंदगी एक सफर है... हादसे क्या बड़ी बात हैं। लफ्ज उसके जेहन में घूमे तो गुस्सा, हताशा कम होने लगी।
दोनों चुपचाप कॉफी पीते रहे।
"वैसे बात क्या थी?" कॉफी के बाद लेडी ने पूछा।

तिवारी ने संक्षेप में बताया। उसके कहने के साथ से रतन का हाथ वासु मर्डर में हो सकता था। क्योंकि वह वासु के पचास हजार रुपए न लौटाने की नियत रखता था।

लेडी सारी बात सुनकर सन्न रह गई।

"इतना बड़ा शातिर दिखता तो नहीं था रतन।" लेडी हैरानी से बोली-"यहां छ महीने के करीब रहा। कभी कोई चालाकी नहीं की।

जेंटलमैन के माफिक पेश आता था, बिहेव बढ़िया करता था। पेमेंट टाइम पर देता था।"

"शातिर ऐसा न करें तो शातिर कैसे?"

"य...यानी पक्का है कि वासु को उ...उसी ने मारा?"

"प..पक्का तो नहीं है। अभी केवल अंदेशा है।"

तिवारी दो मिनट बाद वहां से नमस्ते बोलकर निराश होकर रुख्सत हुआ।

अभी वह इमारत के बाहर आया ही था कि एक व्यक्ति उसके पास लपकते हुए पहुंचा।

"न...नमस्ते सर।" पास पहुँचते ही वह बोला।

तिवारी उसकी तरफ घूमा। तिवारी के लिए वह अपरिचित इंसान था।

"नमस्ते।"

वह उसी की उम्र का बंदा था।

"म...मुझे आपको कुछ बताना है।" वह बोला।

"क्या?" तिवारी ने उसे घूरा।

"अभी कुछ देर पहले मैंने आपकी व मिसेज टोनी डिसूजा की बातें सुनीं...।"

"क्यों?"

वह हड़बड़ाया।

"वो...यू ही...इत्तेफाकन। मैं मिसेज टोनी डिसूजा से मिलने गया था... कभी... मिलने चला जाता हूं। बहरहाल उनका किराएदार हूं इस नाते...।"

"ठीक! आगे।"

"मैं रतन भटनागर के बारे में कुछ बता सकता हूं।"

"अच्छा!" तिवारी के चेहरे पर रौनक लौटने लगी।

"त...तुम्हें पता है उसका एड्रेस?" तिवारी ने जल्दी से पूछा।

"ये तो मुझे नहीं मालूम। पर....।"

"पर क्या?"

"जब वो यहां रहता था तो एक लड़की उससे कभी-कभी मिलने आती थी।"

"तो?"तिवारी की आंखें सिकुड़ीं।

"वह रतन की प्रेमिका थी।"

"ओह...।" तिवारी के होठ गोल हुए।

"पूछने पर रतन ने ही बताया था।"

"रतन तुम्हारा दोस्त था?"

"दोस्त तो नहीं था पर... एक जगह किराएदार होने की वजह से ताल्लुकात ठीक थे।"

"तुमने कभी उससे ये नहीं पूछा कि वह कहां का रहने वाला है?"

उसने हिचकिचाते हुए ‘न’ में गर्दन हिलाई।
“क्यों?”
व्ह जवाब न दे सका।
“खैर... तुमने उसकी प्रेमिका का जिक्र क्यों किया?”
“मुझे लगा। शायद उसे पता हो कि रतन कहां का था? अब कहां है?”
“ह...हां, ऐसा हो सकता है। लवर को रतन ने ये सब जरूर बताया हो सकता है।” तिवारी सोचते हुए बोला।
“तभी तो मैंने बताया।”
“पर उस लड़की को कहां ढूंढेंगे? मालूम है उसका एड्रेस?”
“हां!”
“स..सच!” तिवारी उत्साह में बोला।
“हां सर। अभी तीन दिन पहले ही मैं ओम नगर एक काम के सिलसिले में गया था, तब उसे एक घर में जाते देखा था। और अब तो वह शादीशुदा भी है।”
“अच्छा।”
“हां! रतन उस लड़की से शादी करने का ख्वाहिशमंद था, यानी शादी बनाकर वह ओमनगर में रहता है।
“पता बोलो। लड़की का नाम मालूम हो तो वो भी बोलो।”
उसे बताया गया।
“तुम्हारा क्या नाम है?” न जाने क्या सोचकर तिवारी ने उससे पूछा।
“जी...मोहन लाल।”
आगे तिवारी ओमनगर पहुंचा। शास्त्रीनगर से ओमनगर टैक्सी से आधे घंटे की दूरी पर था।
मोहन लाल द्वारा बताए गए पते को ढूंढने में उसे कोई खास दिक्कत पेश न आई।
जब वह पते पर पहुंचा तो वह घर का दरवाजा अंदर से बंद था। उसने कॉल बेल बजाई। वेट किया।
क्षण भर बाद गेट खुला। खोलने वाली एक युवती थी, जो बेहद खूबसूरत थी। पुलिस को देखकर पहले तो वह हड़बड़ाई, फिर संभलकर बोली-”ज...जी कहिए।”
“आप रीता जी हैं।” तिवारी ने मोहनलाल द्वारा बताया नाम लिया।
“ज...जी हां!” वह चौंककर बोली-”बात क्या है?”
“रतन की पत्नी।”
“नो। आई एम वाइफ ऑफ अभिषेक सिंह।”
तिवारी हड़बड़ाया। कहीं वह गलत एड्रेस पर तो नहीं आ गया था या गलत शख्स से... लेकिन नाम तो वहीं है। तिवारी ने सोचा। कहीं रतन ही तो अभिषेक नहीं बन गया। खुद को छिपाना चाहता है?”
“आपके पति फोटोग्राफर हैं? तिवारी ने एक और तीर छोड़ा।
“न...नहीं तो। वह बैंकर हैं। एक प्राइवेट बैंक में क्लर्क हैं।”

रतन की बैंक में जॉब कब लगी, वो तो फोटोग्राफर था।
“कब लगी नौकरी बैंक में?”
“जी! श...शुरू से।”
“शुरू से मतलब?”
“दो साल से।”
कहीं सच में वह गलत जगह तो नहीं आ गया। मोहन लाल ने उसे फंसाया हो। पर वो भला क्यों? फिर पुलिस से!
नहीं-नहीं। उसकी इतनी मजाल नहीं हो सकती है।
कुछ क्षण ऊहापोह में वह खड़ा रहा।
“अ...आप रतन को जानती तो होंगी?”
“रतन!”
तिवारी को कुछ याद आया। वह जल्दी से बोला-”रतन भटनागर।”
अब रीता चैंकी। तिवारी ने उसके चेहरे पर आए भाव पढ़ लिए।
“रतन भटनागर, जो कासगंज में पांच महीने पहले फोटो स्टूडियो चलाता था। खुद भी एक फोटोग्राफर था-जिसके साथ आपका कभी जबरदस्त अफेयर था।”
रीता परेशान दिखने लगी।
“ह...हां!” क्षण भर बाद हिचकिचाते हुए उसने स्वीकार किया। “बढ़िया।” तिवारी की बांछे खिल गई। उसके जी में जी आया। वह कितनी उम्मीद से आया था, मना कर देती तो कैसे चलता। जबरदस्ती हां नहीं बुलवाया जा सकता था। उसके लिए किसी प्रमाण की-सबूत की जरूरत पड़ती, जो फिलहाल उसके पास नहीं था।
“ब...बात क्या है?” उसने घबराई आवाज में पूछा।
“अगर हम इत्मिनान से बैठकर बातें करें तो कैसा रहेगा? मैं ज्यादा वक्त नहीं लूंगा।”
“ठ..ठीक है। अंदर आइए।” वह सोचकर बोली और एक तरफ हट गई। तिवारी भीतर घुस गया। लड़की ने दरवाजा उढ़क दिया।
अंदर दोनों एक-एक कुर्सी पर विराजमान हो गए। लड़की ने चाय-नाश्ते के लिए पूछना जरूरी नहीं समझा।
“आपने बताया कि आपके पति अभिषेक सिंह हैं, जो बैंक में कार्यरत हैं, पर अफेयर तो आपको रतन के साथ था। शादी करने का प्लान भी था फिर की क्यों नहीं?”
“आपको ये सब कहां से पता चला?” रीता ने उलटा सवाल किया। ?
“कहीं से तो लगा तभी तो मालूम है...ना।”
लड़की समझ गई, वह बताना नहीं चाहता। फिर उसने नहीं पूछा।
“आपने बताया नहीं?” कुछ देर लड़की बोली नहीं तो तिवारी बोला।
“वो बात बीत गई है।”
“बताने में कोई हर्ज नहीं है?”
“आप यही सब जानने...?”

“हुज्जत करेंगी तो ज्यादा टाइम लगेगा जो कि आपको कबूल नहीं होगा। वैसे मेरे पास टाइम की कोई कमी नहीं है।”

“मैं तो शादी करना चाहती थी।” लड़की ने बताना ही ठीक समझा- ““पर वही धोखेबाज निकला।” लड़की के चेहरे पर क्षणभर के लिए नाराजगी के चिन्ह दिखाई दिए।

“रतन ने क्या धोखा दिया?”

“मेरे साथ प्रेम का ढोंग करता था। -बड़े-बड़े वादे करता था, जबकि मैं उसे सच में दिल से चाहती थी पर वह मेरी भावनाओं से खेलता रहा।”

“ये सब बातें पहले पता नहीं लगीं?”

“जानबूझकर कौन ओखली में सर डालता है...या डालती है?”

तिवारी हड़बड़ाया फिर संभलकर ‘न’ में मुंडी हिलाई।

“बहरहाल पता कब लगा वो हरजाई है?” तिवारी ने पूछा।

“मुझे बिना बताए... मुझे छोड़कर न जाने कहां चला गया।”

“अ...अरे कहां?”

“पता नहीं।”

“ऐसी क्या बात हो गई थी?”

“मुझे क्या मालूम।”

“फोन भी न किया।”

“कुछ दिनों बाद आखिरकार किया न।”

“फोन किया?”

“हां! ये बताने के लिए कि वह मुझे प्यार नहीं करता...टाइम पास कर रहा था।... मैं उसे भूल जाऊं।”

“आप पर तो बिजली टूटी होगी।”

“कोई समझ भी नहीं सकता कि मेरी क्या हालत हुई थी। उस दुःख के भंवर से मैं कैसे निकली, मुझे खुद नहीं पता। -शायद ईश्वर ने हेल्प की।”

“हूं!”

“फिर कभी फोन नहीं आया?”

“किया भी नहीं।”

“कई बार ट्राई किया पर नहीं लगा। स्विच्ड ऑफ बताता रहा।”

“यह वाकया पांच महीने पहले का है?”

“हां!”

“फोन पर आपने पूछा नहीं कि एकाएक वह कहां, क्यों गायब हो गया?”

“मेरी एक भी नहीं सुनी। बस अपनी सुनाकर फोन काट दिया।”

“वो नंबर तो आपके पास अब क्या होगा?”

“कुछ दिन रखा। पर कोई फायदा नहीं था डिलीट कर दिया।”

“फिर आपने भी वक्त के साथ समझौता कर लिया। उसे भुलाकर अभिषेक से शादी कर ली।”

“क्या करती? घर वालों ने लड़का पसंद कर लिया। जिस नाव के सहारे मैं नदी क्रास करना चाहती थी, उसका तो वजूद ही खत्म सा हो गया था। लड़का अच्छी पोस्ट पर था-बढ़िया था। मैंने भी हां कर दी। धोखेबाज इंसान की कब तक कोई राह देख सकता है। और फायदा भी क्या है?”

रीता ने सच्ची बात कही।

“बहरहाल आपने अभिषेक से शादी कर ली?”

“हां! वे बहुत अच्छे पति हैं। हमारी शादी को एक महीना ही हुआ है, पर लगता है कि जैसे हम दोनों एक-दूसरे को वर्षों से जानते हैं।”

रीता नार्मल लग रही थी।

“ये तो अच्छी बात है। वैसे, रतन के एकाएक यूं गायब होने के पीछे क्या वजह हो सकती है। कुछ आइडिया है?”

“न... नहीं।” वैसे आपने अभी तक ये नहीं बताया कि आप ये सब क्यों पूछ रहे हैं?”

तिवारी ने पूरी बात बताई। रीता को मीडिया के जरिए वासु मर्डर के बारे में पहले से ही मालूम था।

“वासु से पैसे लेने वाली बात रतन ने आपको बताई थी?”

“न..नहीं। मुझे इस संबंध में कुछ नहीं पता।”

“हूं!” तिवारी ने गंभीर होकर कहा-”आप रतन को कैसे और कब से जानती थीं?”

मैं कई साल अपने बुआ के गांव में रही, वहीं पढ़ी। रतन भी उसी गांव का था।”

“अच्छा!”

“हां! पर हम लोगों के प्यार की शुरूआत इंटर की परीक्षाओं के दरम्यान हुई। परीक्षा खत्म होने के बाद मैं रामनगर वापस लौट आई।

तीन साल बाद कॉलेज से सहेलियों के साथ कासगंज फोटो खिंचवाने गई तो संयोग से रतन की दुकान में जा पहुंची। हम दोनों एक दूसरे को देखकर चौंक पड़े। फिर बाद में मुलाकातों का दौर शुरू हुआ और प्यार बढ़ने लगा। पर 4 महीने बाद ही वह मुझे धोखा देकर गायब हो गया।”

“आपकी बुआ के गांव का नाम क्या है? कहां है?”

रीता ने बताया। तिवारी को अंततः बड़ी सफलता हाथ लगी।

“वासु को जानती थी?” कुछ क्षण मौन रहने के बाद तिवारी ने पूछा-”वह रतन का दोस्त था। उसी के रिकमेंडेशन पर वो दुकान किराए पर मिली थी?”

उसने ‘हां’ में सर हिलाया।

“वासु को आप दोनों के अफेयर के बारे में मालूम होगा?”

“य...ये तो नहीं पता।” उसने अनभिज्ञता से कंधे उचकाए।

“वासु के बारे में भी रतन ने ही बताया था कि दुकान मिलने में वासु ने मदद की। कभी फेस टू फेस मैं मिली नहीं उससे।”

“और कोई ऐसी बात आपको याद आ रही है जो मुझे बताने लायक हो...मेरे काम की हो।”

“ह...है तो सही,” वह हिचकिचाते हुए बोली-”पर पता नहीं आपके काम लायक है या नहीं।”

“क्या है?” तिवारी ने नजरें उसके चेहरे पर गड़ा सी दीं। उसे परेशानी होने लगी। तिवारी ने नजरें नीची कर लीं।

“रतन ने एक बार बताया था कि वासु की बहन का अफेयर वासु के असिस्टेंट...।”

“गौरव....।” तिवारी ने याद दिलाया।

“हां! उसी से है।”

“अच्छा।” तिवारी सोच में पड़ गया। शायद इस बात में अपने मतलब का प्वाइंट ढूंढ रहा था। चेहरे की हल्की चमक भी बता रही थी कि उसके दिमाग में जरूर कुछ ऐसा चल रहा था कि जो उसके फेवर में दिखता जान पड़ रहा था।

“रतन ने ये अफेयर वाली बात वासु को बताई होगी?” तिवारी ने पूछा।

“पता नहीं। मैंने इस बारे में पूछा नहीं। फिर एक हफ्ते बाद तो रतन ही गायब हो गया।”

“रतन वासु की बहन को कैसे जानता था?”

“जब दोस्त थे तो वासु ने ही मिलवाया होगा। बहन गाहे-बगाहे दुकान पर तो आती ही रहती थी।”

“हूं! अच्छा, ये तो आपको पता ही है कि रतन के गायब होने के बाद वासु भी उसे बड़ी शिद्दत से ढूंढ रहा था। क्या वासु आपसे कभी मिला?”

“न...नहीं।”

“हूं! यानी उसे आपके बारे में मालूम नहीं। रतन ने कभी आपका जिक्र नहीं किया वरना वह आपसे आकर जरूर मिलता।”

“मुझसे मिलने की क्या जरूरत थी। रतन उसका दोस्त था तो उसे रतन के घर का एड्रेस मालूम होगा।”

“होना तो चाहिए।” तिवारी सोच भरे स्वर में बोला।

कुछ पल बाद वह उठ बैठा।

“बातचीत के लिए थैंक्स।” वह बोला और दरवाजे की ओर बढ़ गया।

“आपसे एक विनती है।”

वह ठिठका-पलटा। हैरानी से रीता को देखा।

“क्या?”

“प्लीज दोबारा यहां न आइएगा। आए तो रतन का जिक्र बिल्कुल भी न करें। अब मैं किसी की पत्नी हूं। अपने पति के साथ खुश हूं। मेरे पति को रतन के साथ मेरे अफेयर के बारे में पता चला तो...।” रीता हाथ जोड़े डबडबाई आंखों से बोली।

“मैं समझता हूं। कोशिश करूंगा।” वह बोला और दरवाजा पार कर गया।

पीछे रीता धम्म से कुर्सी पर बैठ गई। सिसकने लगी।

अपनी लाड़ली बिन मां की बच्ची को हास्पिटल ले जाकर, डॉक्टर को दिखाकर, दवा वगैरह लेकर वापस घर में छोड़कर राणावत थाने पहुंचा।

तभी एक हवलदार उसके केबिन में पहुंचा। एक फाइल उसकी तरफ बढ़ाकर अदब से बोला-"सर, रिपोर्ट आ गई।"

राणावत ने घंटा भर पहले उसे वासु का नंबर देकर मोबाइल कंपनी भेजा था ताकि पता लगा सके कि हिल स्टेशन जाने से पहले वासु ने किससे फोन पर बात की थी। हवलदार अभी-अभी मोबाइल कंपनी से ही लौटा था।

राणावत ने फाइल ले ली। हवलदार रुख्सत हो गया। वह कॉल लिस्ट देखने लगा।

एकाएक वह सीधा हुआ तनकर बैठ गया। चेहरे पर चमक छाने लगी थी।

✠✠✠

"अ...आप फिर...।" प्रभु भड़ककर बोला।

वह उस घड़ी तमन्ना के साथ तफरीह में मशगूल था जब राणावत ने ड्राइंगरूम में कदम रखा। राणावत आकर उसके सामने वाले सोफे पर विराजमान हो गया।

"कबाब में हड्डी बनने के लिए माफी चाहूता हूं पर क्या करूं हमारा काम करने के लिए जहां सोल्यूशन नजर आता है वहां हाथ-पांव मारना ही पड़ता है।"

"और आपको वो सोल्यूशन खासकर,खासकर क्या! केवल मुझमें ही नजर आता है?" प्रभु झुंझलाया।

"आप गलत सोचते हैं। हम और भी जो संभावना नजर आ रही है उन सबकी जांच-पड़ताल कर रहे हैं।"

प्रभु कुछ ढीला पड़ा।

"ठीक है। यहां कैसे आए?" स्वर मे कुछ नरमी दिखी।

"जीप से।"

"अ...अरे मेरा मतलब काम से था।"

"काम... वही पूछताछ।"

"सुबह तो की थी।"

"दोबारा करने पर कोई पाबंदी है?"

प्रभु हड़बड़ाया।

"न... नहीं।" फिर बोला।

राणावत ने पहलू बदला।

"ये वहीं मोहतरमा हैं जिनकी सुबह आपने तारीफ की थी... मिस तमन्ना?" राणावत ने तमन्ना को देखा।

"हां! आप जिस काम के लिए आए हैं वो कीजिए।" प्रभु की नाराजगी दिखने लगी।

"ओह हां!" राणावत तुरंत संभलकर बोला-"हमारी जानकारी में वासु को हिल स्टेशन जाने से पहले कोई फोन आया था। बात करने के तुरंत बाद वह दुकान से निकल गया था और फिर चार बजे के आसपास उसकी मौजूदगी हिल स्टेशन के उस होटल में दर्ज है, जहां वह और आप ठहरे थे।"

"तो?"
"मुझे लगता है वासु का हिल स्टेशन जाने का और उस फोन का जरूर कुछ न कुछ कनेक्शन है-या हो सकता है।"
"तो पता कीजिए न।"
"वही करने तो आया हूं।"
"यहां!" प्रभु चौंका।
"यहां कैसे पता चलेगा इंस्पेक्टर साहब।" तमन्ना भी हैरान होकर बोली।
"कनेक्शन के बारे में दो ही लोग बता सकते हैं।-एक तो खुदा को प्यारा हो गया, उससे हम पूछ नहीं सकते। बचा दूसरा, जिसने फोन किया था। मैं उसके सामने बैठा हूं।"
"क्या?" दोनों चौंके।
"अ... आपका मतलब व... वो फोन मैंने वासु को किया था। म... मैं भला एक अजनबी आदमी को फोन क्यों करूंगा... किसलिए करूंगा?" प्रभु झल्लाते हुए बोला।
राणावत ने एक नंबर बोला।
"ये नंबर आपका है।" फिर पूछा।
वह सकपकाया।
"हां!"
"यही नंबर इस वासु की फोन कॉल में दर्ज है। देखें।" राणावत ने एक रिपोर्ट जेब से निकालकर उसकी तरफ बढ़ाई।
प्रभु ने लिस्ट हाथ में पकड़ी, देखी, वापस कर दी। वह कुछ परेशान दिखने लगा था।
"अब कुछ कहेंगे इस बारे में।" रिपोर्ट वापस जेब में रखते हुए राणावत ने कहा।
"आप गलत सोच रहे हैं कि इस नंबर से मैंने वासु को फोन किया।"
"अ.... अरे जब फोन आपका है तो बात कौन करेगा क्रिस गेल?"
"मैं भला उससे क्यों और क्या बात करूंगा, जबकि मैं तो उसे जानता नहीं था।"
"फिर कौन करेगा बात?"
"जिसके पास फोन होगा।"
राणावत ने उसे घूरा।
"क्या कहना चाहते हैं?"
"दरअसल बात ये है कि जो नंबर आप बता रहे हैं, वो नंबर वाला फोन मैंने किसी को दे दिया था।"
"अ... अरे! किसको?" राणावत चौंका।
"अपने ड्राइवर को।"
"ड्राइवर नहीं रखते।"
"गलत सुना है।"
"यानी ड्राइवर रखते हैं?"
"नहीं।"
"क्या! अभी तो बोला कि...।"

“एक्चुयली बात ये है कि मैं परमानेंट ड्राइवर नहीं रखता, पर जब ड्राइवर की जरूरत हो तो रख लेता हूं, क्योंकि खुद ड्राइवर करने का मूड नहीं होता।”

“ड्राइवर क्या हलवाई की दुकान पर मिलते हैं कि जब जी चाहा उठा लिया।”

“है तो ऐसा ही।”

राणावत ने उसे घूरा।

“यानी हलवाई की दुकान पर ड्राइवर मिल जाता है। जब आप चाहते हैं। नहीं?”

“हलवाई की दुकान पर तो नहीं पर... हार्डवेयर की दुकान पर जरूर मिल जाता है।”

“खुलकर बताइए।” राणावत ने आंखें सिकोड़कर असमंजसता में कहा।

“मेरा ड्राइवर, मेरा खानदानी ड्राइवर है पापा के जमाने से।”

“जो हार्डवेयर की दुकान पर पाया जाता है?”

“हां! क्योंकि दुकान उसी की है।”

“अच्छा! फिर भी ड्राइवरी करता है।”

“जब मुझे जरूर महसूस होती है तो बुला लेता हूँ।”

“पेमेंट भी जब-तब की ही देते होगे, जब जरूरत भी जब-तब वाली होती है।”

“न..नहीं। पेमेंट पूरे महीने की।”

“ए...ऐसा क्यों।” वह चौं का।

“वो हमारा पुराना मुलाजिम है।”

“इसलिए।”

“हां!”

“महीने में ड्राइवर की जरूरत न भी पड़े तो भी पेमेंट पूरी?”

“हां!”

“ये तो दरियादिली है।”

“नहीं। हमारे संबंध ऐसे हैं इसलिए। मेरे पापा जब इस शहर में नए-नए आए थे और इधर-उधर ठीये की तलाश में भटक रहे थे तो उन्होंने ही बहुत मदद की थी। बाद में पापा ने खूब तरक्की की और उन्हें अपना ड्राइवर रख लिया। बाद में उनकी जब हार्डवेयर की दुकान रखने की इच्छा हुई तो पापा ने मदद की, पर ड्राइवर उन्हें ही रखा। पापा को भी ड्राइवर की जब-तब ही जरूरत होती थी, पर वे भी उन्हें पूरे महीने की पेमेंट देते थे। मैंने भी यह परम्परा बरकरार रखी है।”

“आज के जमाने में ऐसा करना भी दरियादिली है। खैर! तो आपने अपना फोन अपने ड्राइवर.... क्या नाम है उसका?”

“जगन।”

“हूं! तो आपने अपना फोन जगन को दे दिया... क्यों?”

“क्यों क्या! दे दिया।”

“कुछ तो रीजन रहा होगा।”

“म... मैं नहीं बता सकता।” प्रभु ने तिरछी नजरों से तमन्ना की ओर देखा।

“मिस्टर प्रभु सोनकर! आप भूल रहे हैं कि आप एक मर्डर में फंसे हैं।”

“मैंने कोई मर्डर नहीं किया।” वह चीखा।

“अभी ये क्लीयर होना बाकी है।” राणावत पहली बार सख्त हुआ-”बताइए क्या बात थी?”

“ब...बात तो कोई नहीं थी पर...।” प्रभु ढीला पड़ा।

“कम ऑन...। अब बता भी दो, वरना इंस्पेक्टर खामखां तुम पर शक करेंगे।” तमन्ना ने बीच में कहा।

“बात दरअसल ये है कि...।” प्रभु हिचकिचाते हुए बोला-”एक तो मैं फोन दूसरा लेने की सोच रहा था। दूसरे... मैं उस दिन बहुत खुश था इसलिए खुशी में फोन जगन अंकल को दे दिया।”

“उसे ही क्यों?”

“क्योंकि तब वो ही मेरे पास थे। और जो खुशी मुझे मिली शायद उन्हीं की वजह से मिली।”

“यानी आपने उस दिन... अच्छा ये किस दिन की बात है जब आपको ऐसी अनोखी खुशी मिली?” राणावत ने रुककर पूछा।

“मेरे हिल स्टेशन जाने के दो दिन पहले।”

“ड्राइवर की जरूरत क्यों पड़ी थी?”

“क्योंकि मेरा मूड खुद ड्राइवर बनने का नहीं था।”

“अच्छा गए कहां?”

“शहर के बाहर मेरा फार्म हाउस है वहां!”

“आप फार्म हाउस गए थे?”

“नहीं। पहुंच ही नहीं पाया।”

“क्यों?”

“क्योंकि.... क्योंकि मेरा मूड चेंज हो गया।”

“अचानक!”

“हां! फार्म हाउस जाने से पहले मैं रास्ते में तमन्ना से मिलने चला गया।”

“पहले फार्म हाउस अकेले जाने का प्लान था?”

“हां!”

“ठीक! आगे बताइए।”

“फिर वो खुशी तमन्ना के रूम पर ही मिल गई, जिसके अहसास को तलाशने मैं फार्म हाउस जा रहा था।”

“खुशी कैसे मिली?”

प्रभु ने तमन्ना की ओर देखा। तमन्ना का चेहरा लाल हुआ पड़ा था।

“किस से।”

“किससे?”

“किससे नहीं। किस से। चुम्बन से।”

“इसमें क्या बड़ी बात है। आप दोनों प्रेमी-प्रेमिका हैं, जल्द शादी करने वाले हैं फिर... किस-विस तो आपस में चलता ही रहता है। आजकल तो ये फैशन है कि दिन में एक-दूसरे को किस तो करना ही करना है।”

“हमारे बीच ऐसा नहीं है। तमन्ना की शर्त थी कि शादी से पहले हम दोनों अपनी-अपनी हदों में रहेंगे। पर उस दिन मेरी रिक्वेस्ट पर इसने मुझे किस करने दिया था इसलिए मैं बहुत खुश था। क्योंकि मेरे जीवन का ये पहला किस था।”

“मुझे पता नहीं था, 70-80 के दशक का एक प्रेमी जोड़ा आज भी बना हुआ है। बहरहाल आपने इसी खुशी की वजह से फोन अपने ड्राइवर को दे दिया।”

“हां!”

“खुशी होना तो समझ में आता है पर फोन देना...।”

“सच मानिए इसमें कोई पेच नहीं है। फोन देना मेरे ज्यादा एक्साइटमेंट का नतीजा था।”

“हूं! अभी जगन को बुलाएंगे तो वे आएगा?”

“जरूर आएंगे।”

“तो बुलाइए।”

प्रभु ने अपना फोन निकाला और जगन का नंबर मिलाकर बात की।

दस मिनट बाद जगन वहां हाजिर था।

जगन 57-58 का दुबला-पतला पर लम्बा मामूली शक्लो- सूरत का इंसान था। तन पर सस्ती सी पैंट के ऊपर सस्ता लंबा सफेद कुर्ता था। सिर के बाल छोटे व खिचड़ी थे यानी कुछ सफेद-कुछ काले। चेहरा क्लीन शेव था।

“तो तुम्हारा नाम जगन है?” राणावत ने पूछा।

“ज...जी।” जगन वहां पुलिस को देखकर कुछ सकपकाया था।

“जगन अंकल! इंस्पेक्टर साहब आपसे कुछ पूछना चाहते हैं बस।”

प्रभु ने उसका हौसला बढ़ाया।

उसने सूखे होठों पर जुबान फेरी। डरता जान पड़ा।

डरने की जरूरत नहीं है। जो पूछें वो बता दो।”

उसने हां में गर्दन हिलाई।

“इधर देखो... मेरी तरफ।” राणावत ने कहा।

जगन उसकी तरफ घूमा।

“वासु मर्डर की जानकारी है?”

“ह...हां! साब।” वह डरकर बोला।

“होगी जब पूरे रामनगर को है, तो तुम्हें भी होगी।” राणावत शांत स्वर में बोला- “तब तो तुम्हें यह भी पता होगा कि तुम्हारे साब प्रभु पर कत्ल का शक....।”

“पर बेटू निर्दोष है। उसने कुछ नहीं किया स... साब। बे...बेटू किसी को नहीं मार सकता, मैं जानता हूं। मैंने इसे गोद में खिलाया है।” जगन बोला।

“बेटू कौन?”

"ये मुझे प्यार से बेटू कहते हैं।" जवाब प्रभु ने दिया।

"हूं! जगन! वासु के हिल स्टेशन जाने से पहले उसे एक फोन आया था। हमें लगता है वासु के मर्डर में उस फोन का अहम रोल हो सकता है।"

"ह...हो सकता है।" जगन सोच भरे स्वर में बोला।

"हमने वो नंबर पता कर लिया है, जिससे वासु को फोन आया था।"

"कर लिया होगा। आपके लिए ये क्या बड़ी बात है।"

"सही कहा। और वह नंबर है।" राणावत ने नंबर बताया।

"तुम्हें तो मालूम होगा ये नंबर किसका है?"

"म...मुझे कैसे...म...।" कहते जगन बुरी तरह चौंका।

उसने हैरानी से प्रभु की तरफ देखा।

"यानी मालूम है।" राणावत मुस्कराया।

"य...ये नंबर तो बेटू का है।" उसके गले से फंसा सा स्वर निकला।

"सही फरमाया। पर बेटू का कहना है कि इस नंबर का फोन तुम्हारे पास है।"

"म... मेरे पास।" वह बुरी तरह उछला। उसने पलटकर एक बार फिर हैरानी से प्रभु की ओर देखा।

"अंकल। उस दिन जो फोन मैंने आपको दिया था, उसी का नंबर ये है जो अभी इंस्पेक्टर साहब ने बताया।"

प्रभु ने याद दिलाया। जगन की हालत खराब जान पड़ने लगी।

कुछ पल खामोशी से गुजरे।

"तुम कुछ कहोगे फोन के बाबत?" राणावत ने जगन के चेहरे पर नजरें गड़ा दीं।

"म...मैं क्या कहूं?"

"ये भी मैं बताऊं।"

"म...मैंने वासु से बात नहीं कि साब।" वह रुआंसा हो गया।

"जब फोन तुम्हारे कब्जे में है तो बात किसने की होगी? बच्चन साहब ने!" राणावत का स्वर थोड़ा टाइट हुआ।

"प... पर मैं कैसे बात कर सकता हूं?"

"क्यों...क्या तुम गूंगे हो?मुंह में जुबान नहीं है?"

"फोन नहीं है।"

"क्या बोला।"

"म...मेरे पास वो फोन नहीं है।"

सब चौंके। गिद्ध की तरह सबकी निगाहें उस पर चिपकीं।

"फिर कहां गया?"

"गायब हो गया।"

सत्यानाश!

"गायब हो गया! कैसे? जादू के जोर से... कि डाबरा-आबरा बोलकर फूंक मारी और फोन गायब!" राणावत का लहजा एकदम सख्त हो गया। जिसके लिए वो फेमस था।

"मेरा मतलब गुम हो गया।"

"कैसे?"

"पता नहीं।"

"कब गुम हुआ?"

"य... ये भी पता नहीं।"

"म... मतलब?"

"जिस-दिन बेटू ने फोन गिफ्ट किया था, उसके अगले दिन पता चला?"

"तब तक तो तुम्हारे पास था न?"

वह हिचकिचाया।

"पता नहीं।"

"क्या?"

"मैं बेटू को घर छोड़कर अपने घर चला गया था। दुकान पर ग्राहकों की भीड़ थी। लड़का 10 वर्षीय है, वो ठीक से नहीं संभाल पा रहा था तो मैं ग्राहकों को निपटाने लगा। जिसमें रात के नौ-दस कब बज गए पता नहीं चला। फिर खाना खाकर फोन का ख्याल आया तो मैंने कपड़ों में तलाशा,बीवी-बच्चे से पूछा पर वो न मिला।"

"हूं! यानि तुम्हें क्लीयर नहीं पता कि फोन कब गायब हुआ?"

"ह...हां!"

"तमन्ना जी के यहां से प्रभु को वापस घर लाने के दौरान रास्ते में कहीं रुके थे?किसी से मिले थे?"

"मि...मिला तो किसी से नहीं पर एक रेस्टोरेंट में खाना खाया था।"

"दोनों लोगों ने?"

"हां!"

"प्रभु को घर छोड़कर तुम अपने घर पैदल गए होगे?"

"हां! घर पास में ही है।"

"शाम के वक्त तुम्हारी वापसी हुई थी।"

"हां!"

"कोई तुमसे उसी दौरान टकराया होगा...भिड़ा होगा?"

"भीड़-भाड़ वाला इलाका है। टकराना-भिड़ना तो आम बात है।"

"यानी हो सकता है उसी दौरान तुम्हारी जेब से किसी ने फोन मार दिया। फिर तुम घर पहुँचे। काम में बिजी रहे। फोन पास में होता तो कभी न कभी तो जेब में जाता। फोन से टकराता तो फोन की बाबत याद आ ही जाता- नहीं?"

"ह...हां!"

"पर.. वो ऐसा क्यों करेगा?"

"मुझे फंसाने के लिए।" प्रभु फौरन उत्तेजित स्वर में बोला-"अब सब क्लीयर हो गया। कोई मुझे फंसाना चाहता है। तभी न जाने कैसे उसने मेरी व वासु की साथ वाली तस्वीर तैयार की और वासु के हिल स्टेशन वाले होटल के कमरे में प्लांट कर दिया ताकि पुलिस

की तवज्जो मेरी ओर जाए। पहले मेरा फोन चुराकर वासु को फोन किया ताकि पुलिस का शक मेरी ओर बढ़ जाए। किसी की नजर मेरी हर एक्टिविटीज पर बहुत पहले से रही होगी।"

"अगर ऐसा है तो साजिशकर्ता को आपके फोन की जरूरत रही होगी पर आपने संयोग से अपना फोन जगन को दे दिया और साजिशकर्ता के लिए जगन से फोन हासिल करना सरल हो गया।"

"और क्या!"

"आपके दिमाग में ऐसा कोई शख्स है, जो आपके खिलाफ साजिश रच सकता है?" राणावत ने सोचकर पूछा।

प्रभु सोच में पड़ गया।

फिर मुंडी 'न' में हिलाई।

तभी राणावत का फोन बजा। उसने काल रिसीव की। बात की और रुख्सत हो गया।

✠✠✠

राणावत थाने पहुंचा। वहां तिवारी को वेट करते पाया।

"हिल स्टेशन जाने से पहले वासु को प्रभु के फोन से फोन आया।

था। आप उसी से मिलने गए थे। क्या रहा?"

जवाब में राणावत ने पास खड़े हवलदार को देखा। वही मोबाइल कंपनी गया था और फोन के बाबत रिपोर्ट लाया था।

राणावत ने प्रभु के यहां का सारा घटनाक्रम बताया।

"उसे लगता है कि कोई उसे फंसाना चाहता है।"

"ऐसा हो तो सकता है।"

राणावत खामोश रहा। फिर उसने उससे उसकी प्रोग्रेस पूछी तो तिवारी ने पूरी बात बताई।

"रतन का पता चल गया।" राणावत चौंका। चेहरे पर चमक उभरी।

"मैं अभी उसके गांव से ही आ रहा हूं।"

"गुड।"

"रतन भटनागर एक गांव का रहने वाला है। गांव रामनगर से लगभग बीस किलोमीटर दूर पर है।"

"एक मिनट।" तिवारी को टोका राणावत ने- "गांव जब पास में था तो वह यहां कमरा किराए पर लेकर क्यों रहता था? चाहता तो वाहन से रोज आ-जा सकता था।"

"बीस किलोमीटर आपको कम लगता है। उसे ज्यादा लगता होगा।, या उसका अपना माइंड सैट था। उसे यहां किराए पर रहना पसंद था। उसकी एक वजह ये भी हो सकती है कि उसकी घर वालों से ज्यादा पटती नहीं थी।"

"क्यों?"

"कोई खास वजह नहीं है। शायद उसके व्यवहार-विचार घर वालों से नहीं मिलते थे। केवल मां से ही थोड़ा-बहुत स्नेह था उसे।"

"तभी मां की तबियत ज्यादा खराब होने पर उसने वासु से रुपये मांगे थे।"
"ये बात झूठ है।"
"क्या मतलब?" राणा ने हैरानी से उसे देखा।
"मां की इतनी तबियत कभी खराब नहीं हुई कि हास्पिटल जाना पड़े।"
"ओ....आई सी।"
" न ही रुपयों की बाबत किसी को घर में जानकारी है।"
"कैसे होगी? जब रुपये घर में किसी को दिए ही नहीं पर... इतनी बड़ी रकम उसने वासु से उधार ली क्यों? वो भी झूठ बोलकर। क्या ऐसा उसने पहले भी कभी किया था?"
"ऐसी तो कोई बात सामने नहीं आई।"
"हूं! उसकी बाबत क्या पता चला?" कुछ क्षण सोचने के बाद राणावत ने पूछा।
"विस्फोटक खबर है।"
"क्या?"
"वह हिल स्टेशन पर है।"
"व..वहीं जहां वासु गया था...।"
"और वहीं मारा गया।"
एक बार फिर खामोशी छा गई।
"क्या रतन भटनागर का वासु मर्डर में हाथ हो सकता है?" फिर राणावत ने गंभीर मुद्रा में पूछा।
"हो सकता है। उसके पास वजह भी है।"
"हूं! अगर वो कातिल है या उसने कत्ल करवाया है, तो प्रभु निर्दोष है पर उसके खिलाफ भी कुछ बात है जिन्हें वो इत्तेफाक कहता है।"
"सच क्या है पता नहीं। पर ऐसा हो सकता है।"
"यानी वासु के कमरे में मिली वह फोटो प्लांट की गई थी ताकि पुलिस का ध्यान प्रभु की ओर जाए। उसका फोन जानबूझकर चुराया गया, जिससे वासु को फोन भी इसलिए किया गया ताकि उस पर शक और पुख्ता हो। पर इन बातों से प्रभु को गिरफ्तार नहीं किया जा सकता।"
"साजिशकर्ता का मकसद ऐसा करके हमार ध्यान भटकाने भर का हो सकता है। जिसमें वो काफी देर तक कामयाब भी है।"
"तुम्हें लगता है, रतन ही वासु मर्डर के पीछे और प्रभु के खिलाफ साजिश रचने वाला है?"
"लगता तो है।"
"रतन हिल स्टेशन पर रह रहा है। क्या वो प्रभु के बारे में जानता होगा?"
"जानता होगा तभी तो वो फोटो तैयार कर पाया।"
"इसका मतलब तो हुआ कि रतन को प्रभु के हिल स्टेशन जाने के बारे में मालूम था?"
"होगा। तभी तो उसने उसे फंसाने के लिए प्लान रचा।"
"वासु का, प्रभु का एक साथ हिल स्टेशन आकर अपने रुपये ले ले।"

"वो रामनगर क्यों नहीं आया?"

"बहुत बिजी होगा।"

"उसके फोन करते ही वासु हिल स्टेशन निकल गया। वेट नहीं किया, ये नहीं कहा कि अगले दिन आ जाएगा।"

तिवारी हड़बड़ाया।

"फिर तो जरूर ऐसी बात की होगी कि वासु को उसी दिन हिल स्टेशन जाना पड़ा।"

"ऐसी क्या बात कही होगी?"

तिवारी जवाब नहीं दे पाया।

"ऐसा रतन ने इसलिए किया क्योंकि उसी दिन प्रभु हिल स्टेशन पहुंचने वाला था, जिसे वो वासु की हत्या में फंसाने वाला था। यानि रतन की नियत डांवाडोल हो गई थी। वह पैसे नहीं लौटाना चाहता था।

लेकिन... एक मिनट मान लिया जाए कि ऐसा ही सच है। लेकिन वह तो हिल स्टेशन पर था। उसे प्रभु के बारे में,उसके हिल स्टेशन जाने के प्रोग्राम के बारे में कैसे पता चला? कैसे उसने वहीं बैठै-बैठे वासु व प्रभु की तस्वीर तैयार कर ली? कैसे वहीं बैठे-बैठे प्रभु का वो फोन, जो उसने जगन को दिया था, चुरा लिया।"

"ये काम उसने अपने मददगार से करवाए होंगे।

"मददगार। कौन?"

"गौरव!"

"गौरव!" राणावत चौंका।

तिवारी ने रीता द्वारा बताई गई गौरव व वासु की बहन के अफेयर के बारे में नहीं बताया था।

पर अब वो बात बताई।

राणावत सोच में पड़ गया।

"पर ये तो क्लीयर नहीं है कि वासु को भी अपनी बहन व गौरव के प्यार के बारे में पता था?"

"ह...हां! पर मुझे लगता है कि रतन ने वासु को भी बताया होगा।

वासु ने गौरव को हड़काया होगा-मेरी बहन से दूर रहना, वाली धमकी जारी की होगी।"

"नौकरी पर से क्यों न निकाला?"

"गौरव ने माफी मांग ली होगी। फिर वासु भी प्रेमी था।-प्रेमियों की बात समझता था। गौरव की पहली गलती थी।

गौरव की माफी ने उसे ज्यादा कड़ा कदम नहीं उठाने दिया होगा।"

"ठीक! आगे।"

"पर गौरव अपना अफेयर खत्म नहीं करना चाहता होगा। वैसे भी प्रेमी इतनी आसानी से अपनी राह नहीं बदलते। या ये कहें कि प्यार के आकर्षण का जादू रास्ते बदलने नहीं देता। पर वासु की वजह से खुलकर उस रास्ते पर चल भी नहीं सकता था।"

"तुम कहना चाहते हो कि गौरव को वासु अखरने लगा था।"

"हां! ऐसे में उसकी मुलाकात रतन से हुई होगी। दोनों ही वासु से परेशान थे। दोनों की परेशानी एक थी। हल एक था। सो दोनों मिल गए होंगे।"

"दोनों मिले कहां?" रामनगर में या हिल स्टेशन पर।"

"संभावना तो यही ज्यादा है कि रतन ही रामनगर आया होगा। घर वालों ने बताया भी था कि वह एक-दो बार घर आया था। हो सकता है रामनगर भी गया हो और वहीं गौरव उससे टकराया हो। दोनों ने अपना-अपना दुःखड़ा रोया हो। फिर वासु को खत्म करने का प्लान बनाया हो। कवर अप के लिए प्रभु को बलि का बकरा बनाया हो।"

"हूं! बलि के बकरे के लिए प्रभु को ही क्यों चुना?"

"जरूर गौरव को वासु व वीर की बहन करनी के अफेयर के बारे में मालूम होगा। वीर और प्रभु दोस्त है, यह भी मालूम होगा। हो सकता है गौरव को प्रभु के हिल स्टेशन जाने के प्रोग्राम के बारे में भी पता हो किसी तरह से। और इसी वजह से प्लान बनाकर वासु को भी हिल स्टेशन बुलाया गया हो।"

"हालांकि कई बातें उलझाऊ हैं। ये दूर की कौड़ी लग रही है। फिर भी इस नए विचार पर विचार तो करना ही होगा। गौरव और रतन दोनों को खंगालना पड़ेगा। गौरव को हम खंगालेंगे और रतन को हिल स्टेशन के हमारे साथी।"

✠✠✠

गौरव सुबह नाश्ता करके, तैयार होकर कहीं जाने वाला था।

तभी कॉलबेल बजी।

उसने दरवाजा खोला तो सामने पुलिस को देखकर चौंका।

"अ...आप...।"

"तुम कहीं जा रहे थे?" राणावत उसकी नई ड्रेस देखता हुआ बोला।

"ह...हां!"

"कहां?"

"एक स्टूडियो में असिस्टेंट की जगह खाली है। वहीं नौकरी के लिए जा रहा था। वासु सर का स्टूडियो तो अब खुलेगा नहीं।"

"हूं! वैसे, हम तुम्हारा थोड़ा टाइम लें तो कोई हर्ज तो नहीं है?"

राणावत ने शालीनता से पूछा।

"न...नहीं। आइए।" वह हिचकते हुए बोला और एक तरफ हट गया। राणावत व तिवारी दोनों अंदर घुस गए।

तभी किचिन से गौरव की मां निकली। पुलिस को देखकर उसके चेहरे पर हैरानी के भाव आए।

तीनों कुर्सियों पर बैठ गए।

"गौरव! तुमने कहा था कि तुम चार दिन अपनी बुआ के यहां कानपुर में रहे। जहां बुआ की बेटी की शादी थी। एम आई राइट?"

राणावत ने उससे पूछा।

"ज... जी... हां!"

“साबित कर सकते हो?”
गौरव हड़बड़ाया।
“क..क्या?”
“कि तुमने चार दिन वाकई में कानपुर में अपनी बुआ के यहां गुजारे।”
“और कहां...।”
“ये साबित कर सकते हो?”
“अ...आप कहना क्या चाहते हैं?” गौरव के माथे की सलवटें बढ़ी।
“हमें शक है कि वासु की हत्या में तुम्हारा भी हाथ...।”
“क्या!” गौरव उछलकर खड़ा हो गया- “य...ये आप क्या कह रहे हैं?”
“बैठ जाओ। बैठकर बात करो।”
वह हैरान-परेशान बैठ गया। वैसे ही भाव उसकी मां के चेहरे पर भी थे।
“य...ये आप क्या कह रहे है इंस्पेक्टर साहब।” मां बीच में लपककर बोली।
“समझ में नहीं आया? कमाल है। बोला तो मैंने हिन्दी में ही था।”
“म...मैं भला... मैं भला वासु सर को क्यों मारूंगा? क्या भला होगा मेरा?” गौरव कुछ नाराजगी से तेज स्वर में बोला।
“कुछ तो भला होगा तभी तो किया होगा।”
“म...मैंने कुछ नहीं किया। मेरा ऐसा करके कुछ भला नहीं होना था।”
“मेरा बेटा सच कह रहा है इंस्पेक्टर साहब। वो भला वासु की हत्या क्यों करेगा? उसे कोई लाभ नहीं है। वासु के मरने से उसकी बनी-बनाई नौकरी और चली गई।” मां ने तरफदारी की।
“वैसी नौकरी मिलना कोई मुश्किल काम नहीं है।”
“हां! लेकिन वासु की हत्या में मेरा कोई हाथ नहीं है। मेरा कोई भला नहीं हुआ वासु सर के मरने से।”
“एक तो हुआ।”
“क्या!” वह चौंका। नजरें पुलिस वालों के चेहरे पर स्थिर हो गईं।
“तुम्हारे और वासु की बहन के रास्ते का सबसे बड़ा कांटा निकल गया।”
गौरव एकदम से कुछ नहीं बोल पाया। मां ने भी चौंककर उसकी तरफ देखा।
“अ..आपको ये मालूम है?”
“मालूम है तभी तो बोला।”
“क...कैसे है?”
“ये जरूरी नहीं है कैसे। कबूल करो ये सही है।” राणावत ठंडे मगर सख्त लहजे में बोला।
उसने हां में मुंडी हिलाई।
“और ये बात वासु को पता चल गई थी?”
“हां!”

राणावत ने तिवारी की तरफ देखा। तिवारी के चेहरे पर विजेता की सी चमक उभरी थी।

"उसने क्या किया था? तुम्हें डांटा था? वार्निंग जारी की थी कि मेरी बहन से दूर रहो वरना तुम्हारी सेहत के लिए अच्छा नहीं होगा।"

"ए..ऐसा कुछ नहीं किया था।" गौरव कड़वे स्वर में बोला।

"फिर...?"

"उन्होंने मुझसे पूछा था कि क्या मैं उनकी बहन से सच में प्यार करता हूं। शादी करना चाहता हूं? तो मैंने हां कर दी थी। वे हमारी शादी के लिए तैयार थे।"

राणावत ने तिवारी की ओर देखा तो तिवारी को अवाक पाया।

"हमारे अफेयर के बारे में मां को भी पता है। वो छुपा नहीं है। हमने कोई जुर्म नहीं किया जो छुपाएं।"

मां ने न पूछने पर भी हां में मुंडी हिलाई।

"वे जिंदा होते तो हमारी शादी महज वक्त की बात होती।"

"त...तुम सच कह रहे हो?" राणावत ने अजीब सी खीझ, जैसी हारने वाले शख्स को होती है, से पूछा।

"आप वासु सर की मां-बहन से पूछ सकते हैं। उन्हें भी सब पता है।"

इसके बाद उन्हें कुछ पूछना उचित नहीं लगा। दोनों बेसब्री से वहां से रुख्सत हुए।

"ये थ्योरी तो गड़बड़ा गई।" बाहर आकर राणावत मायूस होकर बोला।

"क्या पता अभी भी झूठ बोल रहा हो।" राणावत ने उसे घूरा।

"मुझे नहीं लगता।"

✠✠✠

पुलिस की वो जीप, जिसमें इंस्पेक्टर बहादुर सिंह व कमल नैन सवार थे, कमल नैन ड्राइव कर रहा था। धीमी गति से घनी आबादी वाले खूबसूरत वुडालैंड के बाजार से गुजर रही थी।

दोपहर थी उस घड़ी।

रामनगर से राणावत ने उन्हें रतन भटनागर को खोजने का काम सौंपा था। उपलब्ध जरूरी सारी जानकारी भेजी थी। रतन भटनागर का फोटो भी, जो तिवारी ने उसके घर से प्राप्त किया था, उन्हें भेजा गया था। घर वालों को तिवारी ने सख्त हिदायत दी थी कि वे किसी भी प्रकार से रतन को खबरदार करने की कोशिश न करें वरना उसका परिणाम घर वालों को भुगतना पड़ेगा।

पर रतन का एड्रेस कि वुडालैंड में वह कहां रहता है, पता नहीं हो सका था।

वुडालैंड पहुंचकर दोनों पुलिसियों ने फोटो की सहायता से रतन भटनागर को ढूंढने का काम शुरू किया।

घण्टा-दो घण्टा बीत गए पर नतीजा सिफर। इस घड़ी वे वुडालैंड की एक रिहायशी बस्ती में थे। सड़क के दोनों तरफ सुंदर-सुंदर इमारतें खड़ी थीं। वहां किराए पर कमरे भी सस्ते-महंगे दोनों तरह के,आसानी से उपलब्ध हो जाते थे। मिल जाते थे।

दोनों काफी थक चुके थे।
एक इमारत के सामने पहुंचकर कमल नैन ने जीप रोकी। बहादुर सिंह के इशारे पर कमल नैन जीप से उतरा। लम्बे-लम्बे डग मारकर इमारत के गेट पर मौजूद वाचमैन के पास पहुंचा। वाचमैन पर पुलिस की वर्दी का रौब तुरंत गालिब हुआ। उसने उठकर जोरदार सैल्यूट मारा। कमल नैन ने हाथ जोड़कर उसका अभिवादन कबूल किया और उसे रतन की फोटो दिखाकर पूछा- “इस शख्स को यहां कहीं आसपास कभी देखा है।”
वाचमैन ने फोटो पर नजरें गड़ाईं।
“देखा है?” कमल नैन ने पूछा।
“किसे?”
“अबे इस तस्वीर को!”
“ह...हां!”
“सच!”
“हां!”
“कब?”
“अभी। आपने ही तो दिखलाई तस्वीर।”
“अबे।” कमल झल्लाया- “इस तस्वीर में जो है उसे देखा कभी?”
“देखा है न साब।”
कमल नैन ने उसे घूरा। शायद चैक कर रहा था कि अभी भी तो मजाक नहीं कर रहा था।
“देखा है?” फिर पूछा- “कहां?”
“उस सामने वाली बिल्डिंग में।” वाचमैन ने हाथ उठाकर सड़क पार दूसरी इमारत की तरफ इशारा करते हुए कहा।
“उस बिल्डिंग में?” कमल नैन की थकावट उतरने लगी।
“हां साब।”
“पक्का?”
“क्या बिल्डिंग! व.... वो तो साब एकदम पक्का है।”
“अबे ईडियट। फोटो वाले शख्स को तूने उस बिल्डिंग में देखा है, ये पक्का है या नहीं?”
उसने खींसें निपोरी।
बड़ा ढीठ था हरामी।
“दांत क्यों फाड़ रहा है?” कमल नैन ने घुड़का- “मैंने कोई जोक सुनाया क्या?”
उसकी हंसी रुकी।
“किया तो आपने मजाक ही था साब।” वह ढिठाई से बोला।
“क्या!” कमल नैन ने दांत पीसे।
“आप बोला न साब कि फोटो वाले आदमी को देखने-पहचानने में मेरे को कोई लोचा, मुगालता,धोखा तो नहीं हुआ।”
“ऐसा मैं कब बोला?”

“मतलब तो यही था साब।”

“तो क्या गलत था।”

वह हिचकिचाया।

“मतलब तो गलत ही था।” फिर सकपकाये स्वर में बोला- “जब मैं उसे अक्सर देखता हूं तो कैसे मेरे मगज में लोचा,कैसा मुगालता, कैसा धोखा...।”

“तू क्या बोला? तू उसे अक्सर देखता है।”

“जब वह सामने वाली बिल्डिंग में रहता है तो आते-आते अक्सर दिखेगा नहीं साब क्या!”

“ठीक! ठीक!” कमल नैन हुज्जत से बचने के लिए जल्दी से बोला- “इस वक्त तो होगा?”

“कहां?”

“अरे बिल्डिंग में और कहां!”

“पता नहीं।”

“क्यों, देखा नहीं?”

“उसके आने-जाने का कोई टाइम फिक्स नहीं है। सुबह जाता है। दोपहर को लौटता है। शाम को... रात को... अगले दिन लौटता है। या घर से ही दोपहर को निकलता है।”

“ऐसा क्यों?”

“नहीं मालूम।”

“थैंक्स।”

कमल नैन ने आकर वो सारी जानकारी जीप में बैठे ऊंघ रहे बहादुर को ट्रांसफर की। वह तन गया। आलस फौरन दूर हो गया। भई, काम की जानकारी जो मिल गई थी।

“आओ देखते हैं।” फिर वह जीप से उतरकर वाचमैन द्वारा बताई गई इमारत की तरफ बढ़ गया।

कमल नैन भी लपका।

दोनों लम्बे-लम्बे डग मारकर उस दो मंजिला मकान के दरवाजे के पास पहुंचकर ठिठके। वहां कोई वाचमैन जैसी सुविधा उपलब्ध नहीं जान पड़ती थी।

वह मकान एक रिटायर्ड आर्मी वाले का था। वह अपनी फैमिली में अकेला था। सरकार की तरफ से पेंशन व किराए,मकान के अधिकांश कमरों में किराएदार रहते थे, से होने वाली आय से वह राजा की सी जिंदगी गुजारता था।

बहादुर सिंह ने बेल पुश की।

क्षणभर बाद दरवाजा खुला। दरवाजा खोलने वाला नौकर सामने पुलिस को देखकर हड़बड़ाया।

“ये यहीं रहता है?” बहादुर सिंह ने उसे रतन की फोटो दिखाई। नौकर ने फोटो पर पूरी दृष्टि डाली।

“ह...हां! ब...बात क्या है?”

“पता चल जाएगी।” बहादुर सिंह उसे हाथ से परे करते हुए भीतर दाखिल होते हुए बोला- “उसका कमरा किधर है? चल बता।”

नौकर सोच में पड़ गया। फिर उसने गाइड बनने में ही भलाई समझी।

वह उन दोनों को लेकर ऊपरी मंजिल के गलियारे में पहुंचा। गलियारे के दोनों तरफ कमरे थे। ऊपर का पोर्शन किराए के लिए ही बना जान पड़ता था।

नौकर गैलरी में चलते-चलते रुका।

"क्या हुआ?" बहादुर सिंह ने पूछा।

"यही है।"

"क्या?"

"कमरा।"

"रतन का कौन सा है? वो बता। तू तो कमरों के सामने खड़ा है।

कैसे पता चलेगा कि कौन-सा कमरा रतन का है।"

नौकर हड़बड़ाया फिर जल्दी से एक कमरे की तरफ उसने इरादा किया।

"निकल ले।"

"कहां?"

"अबे यहां से हिल! नीचे जा।" बहादुर सिंह ने घुड़का।

नौकर फौरन हिला।

आगे बढ़कर बहादुर सिंह ने दरवाजे पर दस्तक दी।

"कौन?" भीतर से फौरन मर्द की आवाज में पूछा गया। फिर जवाब का इंतजार किए बिना दरवाजा खोलने के लिए कोई आगे बढ़ा। चप्पलों की हल्की आवाज स्पष्ट सुनाई दी।

क्षणिक देर में दरवाजा खुला। खोलने वाला पुलिस को देखकर सकपका गया। जबकि दोनों पुलिसिए भी चौंके। दरवाजा खोलने वाला रतन नहीं था। क्या नौकर उन्हें गलत कमरे का पता बताकर गया।

"ज...जी कहिए।" जब कुछ देर खामोशी रही तो दरवाजा खोलने वाले ने पूछा।

"त..तुम...?" बहादुर सिंह ने पूछा।

"मैं राकेश हूं।"

"इस कमरे में तुम रहते हो?"

"जी।"

वह सोच में पड़ गया।

"तुम्हारे साथ में कोई और रहता है?" तभी कमल नैन ने पूछा।

"हां!"

"कौन ये?" कमल नैन ने फौरन तस्वीर उसके सामने की। राकेश परेशान दिखने लगा।

"क्या हुआ?"

"ब...बात क्या है सर?"

"पहले बोलो, ये फोटो वाला तुम्हारे साथ रहता है?"

राकेश ने हां में गर्दन हिलाई।

"बढ़िया।"

"वो अंदर है?"
"न...नहीं।"
बहादुर सिंह ने उसे घूरा।
"मैं सच कह रहा हूं। वह हड़बड़ाया।
बहादुर सिंह हाथ से उसे परे हटाते हुए भीतर घुसा। कमल नैन भी अंदर आ गया। दोनों ने पूरे कमरे को वहीं खड़े-खड़े खंगाल सा दिया।
दोनों वहां पड़ी कुर्सियों पर बैठ गए।
"कहां गया?" बहादुर सिंह ने दरवाजे के पास खड़े राकेश से पूछा।
"क..कौन?"
"रतन...तेरा रूम पार्टनर?"
"फ...फील्ड में।"
"फील्ड में? यहां आकर बैठो।"
वह उनके पास खाली पड़ी कुर्सी पर बैठ गया।
"फील्ड में कहां?"
"वो एक पार्टी के साथ है।"
"पार्टी!"
"वह गाइड है।"
"अच्छा!" दोनों पुलिसिए चौंके।
"अ..आपको मालूम है?"
"सब मालूम है।"
"सब क... क्या?" वह सकपकाया।
"पता चल जाएगा। पहले वो बोलो जो मैंने पूछा।"
"क्या?"
"रतन गाइड कब बना?"
"यहां आकर पहले तो वो फोटोग्राफी का काम ही करता था, फिर पता नहीं दिमाग में क्या आया। एक दिन बोला कि वह गाइड बनेगा। इसमें पैसा ज्यादा है। सो सारे हिल स्टेशन की सारी जानकारी इकट्ठा करने लगा और सच में गाइड बन गया।"
"तुम्हारा उससे क्या कनेक्शन है?"
"क...कुछ खास नहीं। बस एक ही जगह से हैं तो दोस्त हैं बस।"
"यानी तुम भी रामनगर के हो।"
"ज...जी।"
"रतन यहां कैसे पहुंचा? तुम्हारी मदद से।"
"ह...हां! छः महीने पहले मैं रामनगर गया तो वह मुझे मिला। बोला वहां काम-धंधा ठीक से नहीं चल रहा। उसकी इच्छा मेरे साथ हिल स्टेशन आने की थी।... मैं ले आया। दो साल हम कॉलेज में साथ पढ़े।....उसी दौरान की वाकफियत थी।"
"तुम हिल स्टेशन पर कब से हो?"

“त...तीन साल से।”
“तुम क्या करते हो?”
“ग...गाइड हूं।”
“ओह। तो तुम कमरे पर क्या कर रहे हो?”
“मेरी तबियत कल से थोड़ी खराब थी इसलिए मैं यहां हूं वरना मैं भी फील्ड में होता।”
“तुम्हारा किसी होटल से भी कान्टेक्ट होगा जैसा अमूमन गाइडों का होता है। होटल में ठहरने वाले को अगर हिल स्टेशन घूमने के लिए गाइड की जरूरत हो तो उसका इंतजाम होटल की तरफ से होता है... ऐसा कुछ?”
“हां!”
“कौन होटल से?”
“चांद-सितारा।”
“कोई और भी है?”
“हां! मून लाइट, रतन लाइट।”
“सारे होटलों से एक साथ तुम्हारे लिए कॉल आए तो क्या करोगे?”
“सब का सेवा दूंगा।”
“एक ही समय पर। कैसे?”
“हमारा गाइडों का एक ग्रुप है। इसमें चार-पांच गाइड हैं।”
“ओह...।”
“रतन तुम्हारे ही ग्रुप में है?”
“हां!”
“तब तो तुम्हें पता होगा कि वह इस समय कहां पर है?”
वह हिचकिचाया।
“बोलो।”
“क्या बात है सर?”
बहादुर सिंह ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला पर पता नहीं क्या सोचकर केवल सांस भरकर रह गया। राकेश की निगाहें उसी पर जमी हुई थीं।
“अच्छा।” फिर क्षणिक देर में बहादुर सिंह पुनः बोला- “कोई वासु नाम का शख्स एक हफ्ते पहले यहां रतन से मिलने आया था? सोचकर जवाब दो।”
“ह...हां!” वह सोच भरे स्वर में बोला।
“आया था?”
“हां!”
होटल से वासु रतन से मिलने ही वुडालैंडर आया था तब तो।
“फिर क्या हुआ था?” बहादुर सिंह ने कमल नैन की तरफ चमकदार नजरों से देखा फिर राकेश से मुखातिब होते हुए पूछा।
“कब?”

"अरे, जब वासु यहां आया था तब! उसके व रतन के बीच क्या हुआ... कैसी बातें हुईं....?"
"अच्छा वो।"
"हां वो।"
"प...पहले तो दोनों में नार्मल बातचीत होती रही पर फिर वासु चिल्लाने लगा।"
"क्या चिल्ला रहा था?"
"मैं बाथरूम में नहा रहा था।.. काम पर से लौटा था थका था।
इसलिए...."
"ठीक-ठीक! आगे।"
"उसके चिल्लाने की आवाज सुनकर मैं बाहर आया...।"
"तब तो तुमने वासु को देखा होगा?"
"हां!"
"पर ये कैसे जाना कि चिल्लाने वाले शख्स का नाम वासु था?"
बीच में कमल नैन ने दिमाग चलाया।
"रतन कह रहा था- "वासु चुप रहो। प्लीज शांत होकर बात करो।"
"अच्छा।"
"खैर, तो तुमने वासु को देखा था।" बातचीत का सिरा बहादुर सिंह ने फिर पकड़ा और जेब से वासु-प्रभु के साथ वाली तस्वीर उसे दिखाते हुए पूछा- "पहचानो कौन है वासु?"
राकेश ने वासु वाले चित्र पर अंगुली रख दी। यानी वहां पहुंचने वाला शख्स वासु ही था।
"और क्या बातें सुनीं?"
"कुछ नहीं।"
"क्यों?"
"क्योंकि फिर बातें हुई ही नहीं।"
"अरे क्यों?"
"रतन उसे लेकर बाहर चला गया था।"
"बाहर कहां?"
"रतन लौटा तो मैंने पूछा था। वह वासु को बातचीत के लिए एक रेस्टोरेंट में ले गया था। यहां उसका चीखना-चिल्लाना वह अफोर्ड नहीं कर सकता था। मकान मालिक आर्मी का रिटायर्ड ऑफिसर है। उसे शोर- गुल बिल्कुल पसंद नहीं।"
"ये न पूछा कि मामला क्या था? वासु कौन था? कहां से,क्यों आया था?"
"पूछा था। पर वो बोला कि ये उसका पर्सनल मैटर है।"
"बताया नहीं।"
"मैंने पूछा नहीं। व...वैसे...आपको तो पता होगा...मामला क्या था?"
"वासु भी रामनगर का था। वह फोटोग्राफर था। रतन ने उससे पचास हजार रुपये साल भर पहले उधार लिए थे पर वापस नहीं किए। वासु रतन का यहां का एड्रेस जानकर

यहां उससे रुपये ही लेने आया था। रतन ने जो बात कहकर रुपये लिए थे, वो भी झूठी निकली।"

"ओह।" राकेश के माथे पर बल पड़े।

"यहां वासु जिस दिन आया था, उसके अगले दिन उसकी लाश एक झरने में अटकी पाई गई। मैटर मीडिया में खूब छाया था। मालूम होगा?"

"उसके अगले दिन मैं एक काम से दिल्ली चला गया था। जहां से कल शाम को ही लौटा।" राकेश एकाएक गंभीर हुआ और बोला-

"वासु की हत्या में क्या रतन का हाथ...?"

"अभी कुछ कह नहीं सकते। हो भी सकता है और नहीं भी। फिलहाल तुम रतन को फोन करो और पता करो वह कहां है। हो सके तो यहीं बुला लो।"

राकेश को आर्डर फालो करना पड़ा।

"व... वह पार्टी से फारिग होकर यहीं आ रहा है।" राकेश फोन जेब में रखते हुए बोला।

"बढ़िया।"

रतन दस मिनट बाद कमरे में पहुंचा। दरवाजा केवल उढ़का हुआ था। दरवाजे का पल्ला शायद ठीक से चौखट से मिला नहीं था। दरवाजे और चौखट के बीच हल्की सी झिर्री थी, जिसे रतन ने देख लिया था शायद। तभी दस्तक नहीं दी, सीधे दरवाजा खोलकर भीतर प्रविष्ट हो गया।

पर भीतर पुलिस को देखकर वह बुत बन गया।

"आइए, तशरीफ रखिए।" बहादुर सिंह बोला।

उसके शरीर में हरकत हुई। पहले उसने प्रश्नसूचक नेत्रों से राकेश की ओर देखा, फिर आगे बढ़कर, राकेश द्वारा खाली की गई कुर्सी पर बैठ गया। राकेश उसे देखकर अपनी कुर्सी से उठ बैठा था और अपने लिए एक स्टूल उठा लाया था। उस घड़ी वह उसी स्टूल पर बैठा था।

"और सुनाओ। तुम्हारा गाइड वाला काम कैसा चल रहा है?"

बहादुर सिंह उसके चेहरे पर नजरें गड़ाए बोला।

"ज....जी बढ़िया चल रहा है।" उसने खुद को कंट्रोल कर कहा। वह असमंजस में पड़ा जान पड़ रहा था।

"गुड! वैसे, पहले तो तुम फोटोग्राफर थे। लगता है वो धंधा कुछ ठीक नहीं चल रहा था। तभी तुमने गाइड वाला अपना लिया। राइट?"

"ज...जी।"

"अच्छा,अभी कुछ दिन पहले हिल स्टेशन पर झरने में अटकी हुई एक लाश मिली थी। मालूम होगा? बहरहाल मीडिया में यह खबर खूब छाई थी। अभी भी है।" बहादुर सिंह पहलू बदलकर बोला। ऱतन के चेहरे पर परेशानी के बादल उमड़ते साफ दिख रहे थे।

"ज...जी।" वह बोला।

"वह लाश वासु नाम के एक शख्स की थी। जानते हो उसे?"

रतन ने बेचैनी से पहलू बदला। लगा उसकी परेशानी बढ़ने लगी हो।

दोनों पुलिसियों के साथ राकेश की नजर भी उस पर गड़ी सी थी।
"अगर तुम्हें याद न आ रहा हो तो मैं कुछ मदद करूं?"
जब काफी देर रतन न बोला तो बहादुर ने कहा।
"अ... आप!"
"हां मैं। भई, जब मुझे जवाब जानना है तो मदद कौन करेगा... सचिल तेंदुलकर?"
रतन बगलें झांकने लगा।
"ठीक है। मदद करता हूं। मैं जिस वासु की बात कर रहा हूं, वह रामनगर का था। एक हफ्ते पहले रामनगर से यहां हिल स्टेशन आया था। एक होटल मं ठहरा था, जहां से शाम को वह वुडालैंड पहुंचा था। आगे यहां... तुम्हारे इस कमरे में तुमसे मिलने आया था। क्यों मिलने आया था, यह तुम्हें पता होगा या ये भी बताऊं।"
रतन को थूक गटकना मुश्किल हो गया।
"अ..आपको... पता है ये?" वह बड़बडाया।
"ईडियट! पता नहीं होता तो यहां तक कैसे पहुंचते? कैसे वो सब बता रहे होते।"
बहादुर सिंह ने घूरा।
"ब...बता रहे हैं त... तो पता ही होगा।" उसने राकेश की तरफ देखा।
"अब बोलो?"
"क्या?" रतन फिर हड़बड़ाया।
"मैंने क्या पूछा था?"
"व... वो म... मेरा परिचित था।" आखिरकार रतन ने कबूल किया।
"परिचित ही था कि दोस्त भी था?"
"दोस्त भी था।"
"बढ़िया दोस्ती निभाई तुमने। दोस्त से झूठा बहाना करके रुपये ऐंठे और धोखा देकर वहां से भाग कर यहां आकर बस गए।" बहादुर सिंह ने व्यंग्य किया।
रतन नजरें चुराने लगा।
"वासु, वो पैसे के लिए ही तुमसे यहां मिलने आया था?"
उसने 'हां' में मुंडी हिलाई।
"प... पर मैंने रुपए बदकिस्मती के चलते नहीं बल्कि मजबूरीवश लिए थे।"
"झूठ बोलकर?"
"सच बोलने पर पैसे मिलने की कोई ज्यादा उम्मीद नहीं दिखती थी जबकि जरूरत सख्त थी।"
"फिर लौटाए क्यों नहीं?"
"लौटाने लायक कर नहीं सका। वहां काम-धंधा भी अच्छा नहीं चल रहा था। फिर राकेश मिला और यहां के बारे में बताया तो यहां चला आया। इस उम्मीद से कि यहां कर्ज उतारने लायक रकम इकट्ठा कर लूंगा।"
"ऐसी क्या मजबूरी थी?"

रतन हिचकिचाया।

"बोलो।" बहादुर सिंह सख्त हुआ।

"व...वो दरअसल मुझे जुआ खेलने की लत थी। शौक था। और मैं एक क्लब में, जो अवैध रूप से जुए का धंधा करता था, ये जुआ खेलने जाता था। एक दिन मैं बहुत रुपया,लगभग 1 लाख जीता, पर और जीतने के चक्कर में वो सारा हार गया। अपने पल्ले से भी हार गया। जीतने वाले मेरी खिल्ली उड़ाने लगे। मुझे बुरा लगा। मुझे मालूम था क्लब का मालिक जुआ खेलने के लिए पैसा उधार देता है। उस वक्त मैं तिलमिलाया हुआ था। आगे-पीछे कुछ न सोचा और क्लब से रुपया उधार लिया। पर लक खराब था, वो सारा पैसा भी हार गया।" साँस लेने के लिए वह रुका। फिर पुनः बोला- "बाद में तय समय पर पैसा न लौटाने की सूरत में क्लब वालों की धमकियां मिलने लगीं। वार्निंग मिलने लगी कि अगर कुछ दिन के अंदर सारा पैसा न लौटाया तो परिणाम अच्छे न होंगे। मैं जानता था, क्लब का मालिक बहुत डेंजरस आदमी है। उसकी धमकी को मैं लाइटली नहीं ले सकता था। पर पैसा कहां से दूं सोच नहीं पा रहा था। काम धंधा वैसे भी ठीक से नहीं चल रहा था। टेंशन ने उसमें और इजाफा कर दिया। वह लगभग बंद सा हो गया।"

एकाएका मुझे वासु का ख्याल आया। वह मुझसे कई बार कह चुका था कि कोई प्राब्लम हो तो उसे बताए। मुझे दुकान भी उसके माध्यम से मिली थी। हम बाद में काफी अच्छे दोस्त बन गए थे।"

"ठीक...ठीक..। आगे।"

"मैंने वासु से पैसे मांगने की सोची पर बड़ी रकम के मिलने की उम्मीद कम थी। वासु, चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए, सोच वाला शख्स था।"

"तभी तुमने मां की बीमारी वाला झूठा बहाना बनाया।"

"बनाना पड़ा। वरना पैसा नहीं मिलता और मैं जान से जाता।"

"वासु ने तुम्हें पैसा दिया। तुमने क्लब वालों को दिया...राइट?"

"हां!"

"फिर जब वासु का पैसा तुम न लौटा पाए तो वो भी पैसा दो- पैसा दो की रट लगाने लगा?"

"हां! पर पैसे का कोई इंतजाम नहीं हो पा रहा था, जबकि वासु पुलिस में जाने की धमकी देता था।"

"और तुमने घबरा कर जगह बदल ली।"

"जगह बदलने की वजह ये भी थी कि मुझे लगता था कि यहां आकर मैं ढेर सारा पैसा कमाऊंगा और कर्जे से मुक्त हो जाऊंगा।"

"यहां तुम कई महीने से हो। वासु का कर्ज उतारने लायक पैसा कमा लिया होगा। फिर उसे लौटाया क्यों नहीं? रामनगर क्यों नहीं गए?"

वह चुप रहा।

"वासु यहां आया था तब तो उसका पैसा दिया होगा?"

"न..नहीं।"

“अरे क्यों?” बहादुर सिंह चौंका।
“मैंने पिछले महीने तक जितना कमाया वो सब क्लब वाले को देना पड़ा।”
“पर तुमने तो कहा था कि वासु के रुपए लेकर क्लब वाले को दे दिए थे।”
“ह...हां! पर वो आधी किश्त भी नहीं थी।”
“वासु से तुमने पचास हजार रुपए लिए थे?”
“बाइक भी बेची थी।”
“फिर भी आधी किश्त भी नहीं भर पाए। क्लब से कितना रुपया लिया था?”
“एक लाख।”
“फिर तो आधी से ज्यादा किश्त जमा हो गई।”
“मैं भी ऐसा ही सोचता था। पर ये बात मुझे बाद में मालूम पड़ी कि क्लब वाले 10 परसेंट ब्याज लेते हैं।”
“10 परसेंट भी इतना ज्यादा नहीं है कि...।”
“...प्रतिदिन।”
“क्या बोला?” बहादुर सिंह चौंका।
“ब्याज महीने के हिसाब से नहीं बल्कि दिन के हिसाब से लगता था।”
“यानी एक लाख का एक दिन का ब्याज 10 हजार रुपया...।”
“हां!”
“फिर तो, फिर तो अभी तो यह रकम लाखों में पहुंच गई हो गी?”
पहुंच जाती। पर वासु से पचास हजार रुपए लेकर, अपनी बाइक बेचकर व थोड़ा-बहुत पास में जो पैसा था वो सब मिलाकर एक लाख क्लब वालों को दिया। सोचा था थोड़ा-बहुत शेष रह जाएगा तो बाद में दे दूंगा पर उनके रूल के मुताबिक मैं रकम कभी अदा नहीं कर पाऊंगा। न देने की हिम्मत नहीं थी.. न ही है। क्लब के मालिक के पैरों पर गिरकर माफी मांगी। सिच्युएशन समझाई तो उसने रहम किया। एक लाख रुपए बीस दिन में ही वापसी मिलने के बावजूद मेरे पर एहसान करने हुए बोला कि ब्याज प्रतिदिन न होकर महीना वार होगा।”
“पहले एक दिन का ब्याज दस हजार था। अब एक महीने का 10 हजार ब्याज।”
“हां!”
“यह रकम तो तुमने लौटा दी थी।”
“वो तो बीस दिन का ब्याज था।”
“अंधेर है।”
“तुम्हें पैसा लेते वक्त उसके बाबत जानकारी करनी चाहिए थी।” पहली बार कमल नैन बोला।
“होश में कहां था। होता तो... कर्ज ही न लेता।”
“बहरहाल तुम यहां पांच महीने से हो। अभी तुमने बताया था कि पिछले महीने तुम क्लब के कर्जे से मुक्त हो चुके हो।” बहादुर सिंह ने बातचीत का सिरा फिर पकड़ा।
“हां!”

“फिर तो वासु का पैसा लौटा दिया होगा?”

उसने ‘न’ में सर हिलाया।

“वासु को कैसे कन्विंस किया?”

“सब सच-सच बताना पड़ा।”

“वह मान गया।”

“मान गया तभी तो टला।”

“पहले ही बता देते सब सच।”

“हिम्मत नहीं पड़ी।”

“क्यों?”

उसे जवाब न सूझा।

“खैर, तुम वासु को कौन से रेस्टोरेंट में लेकर गए थे, जहां तुमने सब सच-सच बताया था?”

“ड...डार्लिंग।”

“अच्छा...। तुम वहां कितनी देर रुके थे?”

“आधा घंटा।”

“आधा घंटा! यहां से डार्लिंग रेस्टारेंट आने-जाने में आधा घण्टा लगता है। यानी कुल मिलाकर एक घण्टा स्पेंड हुआ पर तुम दो-ढाई घण्टे में वापस लौटे थे।”

रतन ने राकेश की तरफ देखा। राकेश परे देखने लगा।

“ तो मैंने कब कहा कि मैं एक घण्टे में लौट आया था।” वह थोड़ा तल्खी से बोला।

“अब बराय मेहरबानी करके यह भी बताओ कि बाकी समय कहां पर स्पेंड किया?”

“आपको क्या लगता है वासु की हत्या में मेरा हाथ है?” एकाएक वह नाराज होकर बोला।

“हमने कब कहा! हम तो इन्वेस्टीगेशन कर रहे थे। मरने से पहले वासु से मिलने वाले आखिरी शख्स तुम थे तो...।”

“मैं आखिरी क्यों?” वह थोड़ा भड़का-”मेरे पास से जाने के बाद अन्य किसी से उसके मिलने पर कोई रोक लगी थी?”

“इस मनमानी जगह पर जहां वह पहली बार आया बताया जाता है, उसके लिए तुम्हें छोड़कर सब अजनबी थे। भला वो अजनबियों से क्यों मिलेगा?”

रतन हिचकिचाया। फिर संभलकर बोला-”क्या पता,-कोई और भी हो परिचित?”

बहादुर सिंह के जेहन में प्रभु सोनकर का चित्र घूम गया।

“लगता तो नहीं ऐसा। खैर, रेस्टोरेंट से वह कहां गया था।? कुछ बात हुई थी इस बारे में?”

“वापस होटल जाने को कह रहा था।”

“कहां? जहां वो ठहरा था?”

“और कहां?”

“हूं! वो टैक्सी में गया होगा फिर तो?”

"उतनी दूर, रात में क्या पैदल जाएगा?"
"यानी टैक्सी में गया। टैक्सी का नम्बर याद है?"
"नहीं।"
"क्यों?"
वह हड़बड़ाया।
"अजीब सवाल है।"
"क्यों?"
"अब मुझे क्या मालूम था कि आगे टैक्सी के नम्बर की जरूरत पड़ने वाली है। होता तो जरूर नम्बर नोट करता।" वह चिढ़े स्वर में बोला।
बहादुर सिंह ने उसे घूरा।
"अच्छा, अब ये बताओ कि बाकी का एक-डेढ़ घण्टा कहां स्पेंड किया?"
वह बगलें झांकने लगा।
"बोलो।"
"म..मैं नहीं बता सकता।"
"यह जानते हुए भी कि मामला एक मर्डर का है?" बहादुर सिंह सख्त लहजे में बोला।
वह तेजी से सोच रहा था।
कुछ पल खामोशी से कटे।
"अब बोलो भी!" बहादुर सिंह झल्ला कर बोला।
"व...वो दरअसल मैं एक-डेढ़ घंटा सोना के पास था।" अन्ततः उसने हिचकिचाते हुए बताया।
"सोना कौन?"
"म...मेरी दोस्त।"
"यानी लड़की।"
"ज...जी।"
"सिर्फ दोस्त है या प्रेमिका?"
"कुछ भी समझ लीजिए।"
"हूं! ये तुम्हें कहां मिल गई?"
"वासु को विदा कर जब चला तो वहीं रेस्टोरेंट के पास ही वह आ गई।"
"रेस्टोरेंट के पास ही रहती है।" बीच में राकेश बोला।
"हां! वह भी गाइड है। अपने काम से फारिग होकर घर जा रही थी। मुझे देखा तो बातें करने लगी। फिर घर चलने को कहा तो...तो मैं उसके घर पर चला गया।"
"लड़की की ख्वाहिश भला कौन टाल सकता है।" बीच में कमल नैन ने तफरी ली।
रतन उसे घूरा भर फिर परे देखने लगा।
"आप चाहे तो उससे कन्फर्म कर सकते हैं।" क्षणभर बाद रतन बहादुर सिंह से मुखातिब होकर बोला।

“उससे क्या होगा? वह तुम्हारी दोस्त है। प्रेमिका है। वह तो वही बोलेगी जो तुमने उसे पट्‌टी पढ़ाई होगी।”

“म...मैं भला उसे पट्‌टी क्यों पढ़ाऊंगा?”

“अपना क्राइम छुपाने के लिए।”

रतन ने गहरी सांस भर कर छोड़ी।

“यानी आपको लगता है कि वासु को मैंने मारा?” फिर तीखे स्वर में बोला।

सब शांत रहे।

“तो फिर गिरफ्तार कर लीजिए।”

एकाएक बहादुर सिंह उठा।

“चलें।” बोला।

“क...कहां?” रतन बुरी तरह हड़बड़ा गया।

“जेल जाने को नहीं कह रहा हूं। रेस्टोरेंट चलो। जो तुमने कहा, उसकी तस्दीक भी तो जरूरी है। या नहीं है?”

रतन उठ बैठा। कमल नैन अपने अफसर को खड़ा देखकर पहले ही खड़ा हो गया था।

रात की उस घड़ी डार्लिंग रेस्टोरेंट खूब जग-मग-जग-मग दिख रहा था।

तीनों उसके सामने पहुंचे।

“लड़की का पता बोलो।” बहादुर सिंह ने कहा।

“कौन लड़की?” रतन की समझ में नहीं आया।

“सोना, तुम्हारी गर्लफ्रेंड, जो इस रेस्टोरेंट के आसपास ही कहीं रहती बताई...।”

रतन ने फौरन सोना का एड्रेस बताया।

बहादुर सिंह ने कमल नैन को इशारा किया। उसने समझदार गर्दन हिलाई और जीप की तरफ बढ़ गया।

वे दोनों लम्बे-लम्बे डग भरते हुए रेस्टोरेंट में दाखिल हुए। उस वक्त वहां काफी भीड़-भाड़ थी। हॉल की लगभग हर टेबल फुल थी। फिर भी एक टेबल खाली थी। वे दोनों वहीं जम गए।

“यहां आए थे तो कुछ खाया-पिया भी होगा या....?”

बहादुर सिंह ने सब पर एक उड़ती नजर डाली और फिर रतन के चेहरे पर नजरें गड़ाते हुए सामान्य स्वर में पूछा।

“ह....हां!” उसने उत्तर दिया।

“क्या?”

“कॉफी।”

“कॉफी किसने सर्व की थी, कुछ याद है?”

“वेटर ने।”

“ये तो मुझे भी पता है कि कॉफी वेटर ही सर्व करता है। मैनेजर थोड़े ही सबके पास जा-जाकर कॉफी, चाय, खाना सर्व करेगा। मेरे कहने का मतलब था कि जिस वेटर ने कॉफी सर्व की थी, क्या वो याद है?”

"ह...हां!" उसने हिचकिचाते हुए कहा।
"कैसे? एक हफ्ता हो गया है।"
"मैं यहां अक्सर आता रहता हूं।"
"तभी! शायद इसलिए तुम वासु को बातचीत के लिए यहां लाए थे। खैर, जब वेटर को पहचानते हो तो बुलाओ उसे।"
रतन की नजरें हाल में खाना-कॉफी वगैरह सर्व कर रहे वेटरों पर फिरने लगी।
फिर एक वेटर पर नजरें स्थिर हो गईं। यह संयोग ही था कि तभी वेटर ने भी उसकी ओर देखा। वह मुस्कराया। रतन ने पास आने का इशारा किया।
"लगता है तुमसे अच्छी तरह परिचित है?"
"अक्सर आता रहता हूं, इसलिए.. लगभग सभी से जान-पहचान है।"
"तभी तुम्हें देखकर मुस्कराया था।"
तभी वेटर उनके पास पहुंचा। पर रतन के साथ पुलिस वाले को देखकर थोड़ा सकपकाया। शायद पहले उसकी नजर पुलिस पर नहीं पड़ी थी।
"इधर देखो।" वेटर को रतन की तरफ घूरते पाकर बहादुर सिंह ने उसका ध्यान अपनी ओर आर्कषित किया।
वह घूमा।
"ज...जी।"
"इन्हें पहचानते हो?"
"ह..हां! ये रतन साब हैं।"
"कैसे पहचाना?"
उसने खीसें निपोरी।
"मैंने कोई जोक सुनाया?" सिंह ने घुड़का।
वह सिमट गया।
"व...वो रतन साब यहां अक्सर आते रहते हैं न...इसलिए।"
"यहां तो कई लोग अक्सर आते जाते होंगे।सबको पहचानते हो-बाई फेस-शक्ल से?"
वह हड़बड़ाया।
"क्या हुआ?"
"सबको तो नहीं पहचानता हूं...।" वह सहमकर बोला।
"फिर रतन को कैसे पहचाना?"
"व...वो लड़की है न... मेरे पड़ोस में ही रहती है... उसकी वजह से...।"
"कौन लड़की?"
"स...सोना। इनकी गर्लफ्रेंड है। य... ये अक्सर उनके यहां...।"
"ठीक! ठीक!" बहादुर सिंह ने बीच में टोका- "अब याद करके बताओ एक बात।"
"क्या?" वह चौकन्ना हुआ।
"एक हफ्ते पहले लगभग इतने समय ही तुम्हारे रतन साब एक शख्स के साथ रेस्टोरेंट में आए थे।"

वेटर ने सोचा।

"ह...हां! व...वो वासु था।

"तुम्हें उसका नाम कैसे पता?" बहादुर आंखें सिकोड़कर बोला-

"क्या रतन ने उससे तुम्हारा परिचय कराया था?"

"न...नहीं।"

"फिर?"

"व... वो अगले दिन छापे में पढ़ा... टीवी में देखा न साब।"

"क्या?"

"वासु की लाश के बारे में।"

"लाश का चेहरा स्पष्ट नहीं था, फिर कैसे पहचाना कि रात में रतन के साथ आया शख्स ही वासु है?"

"खबर में वह फोटो भी तो छपा था, जो होटल में वासु के कमरे में बरामद हुआ था।"

बहादुर सिंह को ध्यान आया कि वासु के बारे में जब खोजते हुए वे उस होटल में पहुंचे थे और वासु के कमरे की तलाशी लेते वक्त जब उसके व प्रभु के साथ वाला फोटो बरामद किया था तो न्यूज में वह फोटो भी छापा गया था। शायद उससे कुछ पता चलता- तब ये पता नहीं था कि प्रभु उसी होटल में ठहरा था। वो तो होटल वालों ने न्यूज पढ़कर और फोटो देखकर पुलिस को प्रभु के बारे में इन्फार्म किया था। पुलिस ने भी फोटो के बारे में होटल वालों से पहले पूछताछ नहीं की थी, जबकि शायद करनी चाहिए थी। पर पता नहीं कैसे यह भूल हो गई। "हूं! अब ध्यान करके बताओ कि उस रात रेस्टोरेंट से वासु व रतन साथ-साथ गए थे या एक-एक करके तो पहले कौन गया था? दूसरा कितनी देर बाद गया था?"

रतन ने बेचैनी से पहलू बदला।

"पहले तो वासु साब ही गया था फिर... फिर रतन साब मिनट भर बाद यहां से रुख्सत हुए थे।" वेटर दिमाग पर जोर डालते हुए बोला।

"रतन का कहना है कि वासु टैक्सी से गया। उसे रेस्टोरेंट के गेट पर पहुंचते ही टैक्सी में बैठ कर-जाते देखा था?"

"ब...बात क्या है साब?" पहला सवाल आखिर में पूछ रहा था ईडियट।

"हमें शक है, उसकी हत्या में रतन का हाथ हो सकता है।"

वेटर अवाक् रह गया। उसने एक नजर उसी मुद्रा में रतन पर भी डाली थी। रतन बेचैन नजर आ रहा था।

"अब बोलो?"

"क्या?"

"किधर ध्यान है?" बहादुर सिंह खीझा।

"ह...हां! द.. देखा तो था साब।"

"क्या?"

वह फिर हड़बड़ाया।

“क्या हर आने-जाने वाले को वाच करता है... या केवल जाने वाले को?”
“ए...ऐसा तो कुछ नहीं है साब।” वह मिमियाने लगा।
“फिर?”
“व...वो बस इत्तेफाकन हुआ। मेरी नजर एकाएक गेट की ओर उठ गई थी।”
“हूं! क्या तुमने गाड़ी का नंबर वगैरह भी देखा था।”
“न...नहीं। मैंने तो बस एक उड़ती हुई नजर ही गेट पर डाली थी।”
“उतने में ही जान लिया कि टैक्सी में जाने वाला वासु ही था?”
“व... वो क्या है कि मैंने रतन साब को अकेले बैठे, गेट की तरफ देखते पाकर गेट की तरफ देखा था।”
“उसी से जान गया कि जाने वाला शख्स वासु था।”
“ह...हां!”
“चेहरा देखा था?”
“नहीं।”
“फिर भी तू बोला कि जाने वाला वासु था। वो कोई और शख्स भी हो सकता था। वासु टायलेट वगैरह भी तो गया हो सकता था। इसलिए रतन तुझे अकेला दिखा।”
“अब... मैं क्या कहूं साब?”
“आप बात को बेवजह घसीट रहे हो।” काफी देर से खामोश बैठे रतन ने नाराजगी से इंटरफियर किया।
बहादुर सिंह ने उसे घूरा।
वह परे देखने लगा।
“तू जा।” फिर न जाने क्या सोचकर उसने वेटर को रुख्सत कर दिया। तभी कमल नैन वापस लौटा। उसने बताया कि सोना ने वही बताया जो रतन ने बताया था, यानी एक-डेढ़ घण्टा वो उसके पास ही था।
रतन ने चैन की सांस ली।
“उसके कबूल करने से क्या होता है। है तो वह उसकी लवर ही न।
उसे इसने पहले से ही पट्टी पढ़ा रखी होगी।” बहादुर सिंह उसे शक की नजरों से देखता हुआ बोला।
“य..ये गलत बात है।” रतन झल्लाया- “मैंने सच-सच बताया है।”
“सच क्या है-आगे आएगा न।”
“यहां बाहर की तरफ एक सी सी टीवी कैमरा लगा है, जो गेट की तरफ है। शायद आने-जाने वाले वाहनों पर नजर रखने के लिए लगाए गए हैं। शायद हमारी कुछ मदद करें।” एकाएक कमल नैन बोला।
बहादुर सिंह उछलकर खड़ा हो गया।
“आओ, देखते हैं।”
फिर दोनों-बल्कि तीनों, रतन को भी साथ जाना पड़ा, रेस्टोरेंट के मैनेजर से मिले, अपनी बात कही तो वह फौरन उन्हें एक ऐसे कमरे में ले गया जहां कई कम्प्यूटर रखे थे।

वहां बैठे लोग सीसीटीवी कैमराज की वो फुटेज, जो कम्प्यूटरों की स्क्रीन पर दिखती थी, उस पर नजर रखते थे। -रिकार्डिंग भी रखते थे।

मैनेजर के कहने पर वहां मौजूद एक शख्स ने एक सीडी रिकार्डिंग फुटेज-जिसमें उस दिन की रिकार्डिंग थी, जब रतन व वासु वहां आए थे, कम्प्यूटर में रखकर चलाई।

रात के आठ के वक्त की फुटेज देखी जा रही थी। खासकर तब की जब वासु उठकर बाहर गया। उसके गेट पर पहुंचते ही एक टैक्सी वहां पहुंची, जिसे वासु ने हाथ देकर रोका था, फिर उसमें बैठकर चला गया। पर टैक्सी का नम्बर साफ नजर आ रहा था। नम्बर पर जूम किया गया तो नम्बर स्पष्ट हो गया।

"त..तो ये नंबर है उस टैक्सी का।" बहादुर सिंह बोला- "हमें इस टैक्सी को खोजना होगा।"

✠✠✠

एक बढ़िया गेस्ट हाउस में शादी का मण्डप बना था। वर-वधू फेरे लेने की तैयारी कर रहे थे। 50-60 मेहमान भी सजे-धजे कुर्सियों पर विराजमान थे। तभी गेट पर पुलिस की जीप आकर रुकी। उसमें से इंस्पेक्टर शिववीर सिंह राणावत, सब-इंस्पेक्टर तिवारी व कुछ सिपाही तेजी से उतरे और मण्डप की तरफ बढ़ने लगे।

मण्डप के सामने मेहमान दो कतारों में कुर्सियों पर विराजमान थे। बीच में काफी जगह आने-जाने के लिए छोड़ दी गई थी। पुलिस वाले उसी जगह को,जहां पर हरी कालीन बिछी थी,रौंदते हुए मण्डप तक पहुंचे।

"ये शादी रोक दो।" राणावत गरजा।

हर कोई चौकन्ना सा हो गया। आखिर क्या बात हो गई। सब सोचने लगे।

पण्डित मंत्र पढ़ना भूल गया, जबकि वर-वधू भी भौंचक्के रह गए। वर के रूप् में प्रभु सोनकर था। वधू के रूप में तमन्ना थी।

"क...क्या हुआ इंस्पेक्टर?" प्रभु खड़ा होकर गुस्से में बोला।

"मैं आपको एक और जिंदगी बरबाद नहीं करने दूंगा।" राणावत ने यह बात तमन्ना पर डालकर कही।

"य...ये आप क्या कह रहे है इंस्पेक्टर साहब?" तमन्ना भी हैरान थी।

"मैं सच कह रहा हूं तमन्ना जी! ये शादी आपकी बरबादी है।"

"क्..क्यों?"

"आप ये क्या बकवास किए जा रहे हैं?" झल्ला पड़ा प्रभु।

"बकवास नहीं, हकीकत है क्योंकि तुम्हारा खेल अब खत्म हुआ।

तुम्हारा मुकाम अब जेल है। आगे फांसी।"

"क्या! तमन्ना बुरी तरह चौंकी। उसने हकबका कर प्रभु को देखा।

लोग आश्चर्य से अपनी-अपनी जगह से उठकर मण्डप को घेरने से लगे थे।

"म..मेरा मुकाम जेल क्यों होगा?" प्रभु ने तल्खी से पूछा।

"आगे फांसी।"

"प...पर क्यों?"

"तुम्हें पता नहीं?"
"अ..अरे क्या!"
"हमने पता कर लिया है कि वासु को किसने मारा?"
"कि...किसने?"प्रभु के चेहरे पर हवाईयां साफ देखी जा सकती थीं।
"आपने....आपने मिस्टर प्रभु सोनकर! वासु को आपने मारा।"
"य...ये झूठ है-स... सरासर झूठ है।" प्रभु भी गुस्से में चिल्लाया।
"अब चीखने-चिल्लाने के ड्रामे से कुछ नहीं होगा। सब कुछ क्लीयर है।"
"क्या क्लीयर है।"
"ये कि वासु को आपने ही मारा है। आपके साथ जो इत्तेफाक जुड़े थे, वे सब इत्तेफाक नहीं थे।" राणावत धाराप्रवाह बोलता चला गया- "आपको वासु के हिल स्टेशन जाने का प्रोग्राम पता था। वह हिल स्टेशन क्यों जा रहा था-किससे और क्यों मिलने जा रहा था-ये भी पता था। तभी तो आप प्लान बनाकर उसके पीछे ही हिल स्टेशन जा पहुंचे।
उसी होटल में ठहरे, जिसमें वह ठहरा ताकि उसे वाच कर, मुनासिब वक्त मिलने पर उसका काम तमाम कर सको। बोलो मत बीच में- और वो मौका आपको उसी दिन मिल गया। वासु वुडालैंड गया जहां उसे रतन भटनागर से मिलना था। आप उसके पीछे-पीछे वहां पहुंचे। उस पर नजर रखी। बाद में जब वासु उस रेस्टोरेंट से, जहां वो रतन से मिलकर वापस होटल जाने के लिए सड़क पर टैक्सी के लिए पहुंचा, तो आप जिस टैक्सी में बैठे, किसी का वेट कर रहा हूं, बोलकर वेट कर रहे थे, वासु के सामने लाकर खड़ी करवा दी। हालांकि वासु टैक्सी में पहले से ही आपके बैठने से सकपकाया था। न बैठने का मन बनाया था, पर आपने अपने आग्रह पर उसे बिठा लिया था-यह कहकर कि आप भी उसी होटल के पास ही जा रहे थे। टोको मत-जबकि पहले आपने कहा था कि आप लेक पर घूमने गए थे फिर ख्याल बदल गया इसलिए लौट आए थे। जबकि हकीकतन आप लेक गए ही नहीं थे। अपनी ही टैक्सी में बिठाकर होटल की तरफ रवाना हो गए थे, पर वासु बीच में लेक पर जाने के लिए उतरा तो आप भी उतर गए थे। उसके बाद आप होटल पहुंचे पर वासु नहीं। सुबह उसकी लाश मिली थी।"
प्रभु को काटो तो खून नहीं।
"हिल स्टेशन की पुलिस ने न सिर्फ रतन को ढूंढ लिया है बल्कि उस टैक्सी ड्राइवर को भी ढूंढ लिया है, जो आप को व वासु को वुडालैंड से होटल ले जाने के लिए चला था, पर दोनों को लेक पर जाने वाले रास्ते पर ड्राप किया था।"
कुछ पल सन्नाटा छाया रहा।
"आपने काम तो बढ़िया किया था मिस्टर प्रभु।" राणावत व्यंग्य से बोला- "पर वासु के होटल वाले कमरे में मिली वह फोटो आपके गले की फांस बन गई। वह न होती तो आपके बारे में शायद पता ही न चलता। अभी तक फोटो वाला रहस्य बना हुआ था, वो भी सुलझ गया।"
"क्या?" न चाहते हुए भी प्रभु के मुंह से निकल गया।

"अभी तक हम अनुमान लगा रहे थे, पर अब क्लीयर हो गया है कि वह फोटो वासु खुद अपने साथ हिल स्टेशन ले गया था।"

"य..यानी आपका मतलब वासु मुझसे परिचित था। हमने साथ फोटो खिंचवाई?"

"नहीं। वासु आपसे परिचित नहीं था। होता तो वुडालैंड में डार्लिंग रेस्टोरेंट से होटल की वापसी के लिए आप वाली टैक्सी में बैठते हुए आपको देखने के बाद भी हिचकिचाता नहीं।"

"फिर फोटो कैसे खिंची?" तमन्ना ने पूछा।

"इत्तेफाकन।"

"इत्तेफाक!"

"हां! अमूमन ऐसा हो जाता है कि हम किसी स्थान पर फोटो खिंचवाते हैं तभी कोई वहां से गुजरता है या वहीं खुद खड़ा होकर फोटो खिंचवाने लगता है तो वह भी फोटो में आ जाता है। उस फोटो को गौर के देखने पर यह बात साफ पता चलती है।"

"पर...वासु उस फोटो को अपने साथ हिल स्टेशन क्यों ले गया?"

"ले नहीं गया इत्तेफाकन गई। वह उस फोटो को डायरी में रखकर भूल गया होगा और सफर के दौरान डायरी साथ लेता गया-अक्सर लोग ले जाते हैं। ऐसे वह फोटो उसके साथ चली गई। या ये कहो कि मिस्टर प्रभु की किस्मत खराब थी इसलिए फोटो साथ में चली गई। वह न होती तो इनके बारे में पता ही न चलता शायद।" रुककर राणावत विजयी मुस्कान के साथ बोला- "वैसे, इन जिरहों का अब कोई मतलब नहीं है। हमें वो स्थान का पता भी चल गया है, जहां वासु को मारकर जलाया गया था और वहां एक ऐसी चीज मिली है, जो आपके गुनाहगार होने पर मोहर लगाती है।"

"क्या?" मरी-सी आवाज लगी प्रभु की।

"आपकी ट्रांसपोर्ट कम्पनी का वो कार्ड, जिन्हें आप जैसे लोग जेबों में रखते हैं और रेवड़ियों की तरह बांटते हैं। अपनी शान दिखाने के लिए।" प्रभु की हालत बड़ी दयनीय हो चली थी।

सबकी नजर उस पर पड़ी थी।

पर तमन्ना बौखलाई सी थी।

"लेकिन प्रभु वासु को क्यों मारेगा? इसकी उससे क्या दुश्मनी है?"

वह बौखलाकर बोली। उसने प्रभु की ओर देखा नहीं था वरना शायद न पूछती।

"दोस्ती की खातिर। वो कहते हैं न कि जिगरी दोस्त, दोस्त की जरा सी भी प्राब्लम देख नहीं सकता।"

"मैं...मैं कुछ समझी नहीं।"

"वासु, वीर की बहन से प्यार करता था और ये बात वीर को बुरी लगी थी।"

"तो वासु को वीर द्वारा मारा जाना चाहिए। भ..भला प्रभु क्यों उसे मारेगा?" तमन्ना बीच में बोली।

"ठीक कहा। पर अभी मैंने कहा था न कि दोस्त की प्राब्लम भी तो खुद की प्राब्लम होती है न। यू नो जिगरी दोस्तों में ऐसा होता है।"

तमन्ना प्रभु की नजरें प्रभु पर केन्द्रित थीं।
प्रभु को काटो तो खून नहीं।
वीर अवाक खड़ा था।
पर यह क्या!
एकाएक उसके चेहरे पर मुस्कान उभरी। बड़ी ही रहस्यमय मुस्कान। फिर वह जोर-जोर से ठहाका लगाने लगा। सब चौंक पड़े।
"इ...इसे क्या हुआ?" किसी ने कहा।
"ल...लगता है पकड़े जाने के डर से सदमा लगा है।" दूसरा बोला।
प्रभु कुछ देर पागलों की भांति ठहाके लगाता रहा।
फिर रुका।
"आप लोग सोच रहे होंगे कि मैं सदमें की वजह से पागलों की तरह हंस रहा हूं... है न?" प्रभु बड़ी ही कातिलाना मुस्कान बिखेरते हुए बोला- "पर नहीं। यह सच नहीं है। सच तो यह है कि मैं अपने प्लान की कामयाबी की वजह से खुश हो रहा हूं।"
"खुश!... प्लान...!" सब हैरत में पड़ गए।
"हां प्लान।"
"क...कैसा प्लान?" राणावत की आंखें सिकुडीं।
"खुद को इंटेलीजेंट, दिमागदार साबित करने का प्लान।"
सब असमंजस में पड़े थे। किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था।
"कहना क्या चाहते हो?" राणावत ने ही पूछा।
किसी जादूगर की तरह ड्रामेटिक अंदाज में वह बोला- "दो-तीन साल पहले मुझे जासूस बनने का शौक चढ़ा। उसकी वजह थी-मैं जासूसी नॉवेल, नाटक, फिल्में, कहानियां बचपन से ही खूब पसंद करता था। शायद इसी वजह से मेरे मन में जासूस बनने का शौक उत्पन्न हुआ। मैंने जासूसी सिखाने वाली कई संस्थाओं से संपर्क किया, पर सभी ने मुझे यह कहकर रिजेक्ट कर दिया कि मैं जासूस नहीं बन सकता। मुझमें वैसा दिमाग नहीं है। मुझमें इंटेलीजेंसी नहीं है, काबिलियत नहीं है।" कहते-कहते प्रभु के चेहरे पर जुनूनी व्यक्ति की तरह का गुस्सा तारी होने लगा था- "मैंने उसी दिन ठान लिया था कि मैं साबित कर दूंगा कि मुझमें भी दिमाग है... काबिलियत है। पर मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि ये साबित कैसे करूं। फिर... इसी उधेड़बुन में काफी समय गुजर गया। और फिर कुछ महीने पहले वो अवसर मिला।
"कैसा अवसर?"
"मैंने वीर की बहन करनी को वासु के साथ एक रेस्टोरेंट में देखा था। मैं देखते ही समझ गया था कि दोनों के बीच लव वाला चक्कर है। सोचा वीर को पता चला तो दोनों पर गाज गिरेगी। वीर को यह सब बिल्कुल पसंद नहीं। बड़ी बहन के साथ जो हादसा पेश आया था, वो मैं भूला नहीं था। मैंने सोचा कि वासु के बारे में पहले पता करूंगा कि वह कैसा लड़का है। अगर सही निकला तो वीर को समझा-बुझाकर उन दोनों की शादी करवा दूंगा।" रुककर पुनः वह बोला- "फिर मैंने वासु के बारे में पता किया। वह अच्छा लड़का

था। उसके अलावा मुझे वासु व रतन के बीच जो पैसों को लेकर लफड़ा था, वो भी पता चला।"

"कैसे?" बीच में राणावत ने पूछा।

"क्या?"

"रतन व वासु के बीच पैसों को लेकर जो लफड़ा था वो कैसे पता चला?"

"वासु के पास वाली दुकान के मालिक से।"

" यानी मिस्टर वर्मा से।"

"हां!"

पर पूछताछ के दौरान वर्मा ने प्रभु का कोई जिक्र नहीं किया। पियक्क्ड़ आदमी है।

पता नहीं प्रभु के साथ हुई बातचीत वाली बात याद भी हो गी कि नहीं। होती तो बताता शायद।

सर को झटका देकर बोला राणावत- "मिस्टर वर्मा को कैसे पता थी यह बात?"

"उन्हें वासु ने ही बताई थी। मैं वासु के बारे में पता करने गया था। मुझे मालूम था, दुकान का मालिक दुकानदार के बारे में काफी जानकारी रखता है।"

"वासु की दुकान कैसे पता की?"

"उसे वाच किया न रेस्टोरेंट से। वह सीधा दुकान में ही गया था।"

"ठीक! आगे।"

"आगे एक घटना संयोग से घटी। मैं यूं ही मूड ठीक करने गार्डन क्लब में पहुंचा हुआ था। वहां एक व्यक्ति मैनेजर के सामने गिड़गिड़ा सा रहा था, जबकि मैनेजर उस पर खूब लाल-पीला हो रहा था। उनकी बातचीत से मुझे पता चला कि गिड़गिड़ाने वाला शख्स रतन था। मुझे लगा कि ये कहीं वही रतन तो नहीं है, जो वासु से पैसा लेकर गायब है।"

"ये वाक्या कब का है?"

"महीने भर पहले का।"

"फिर?"

"मैंने उसका पीछा किया तो वह अपने एक दोस्त राकेश के पास पहुंचा। उन दोनों का शाम की फ्लाइट से हिल स्टेशन जाने का प्रोग्राम बना था, जहां वे वुडालैंड में रहते थे। पहले मैंने सोचा कि जाकर वासु को रतन के बारे में बताऊं पर तभी दिमाग के किसी कोने में खुद को दिमागदार साबित करने का अंकुर फूटा। दिमाग ने कहा तेरे पास खुद को काबिल साबित करने का मौका है। मैं भी तेजी से सोचने लगा। सालों से दबी चिंगारी आग बनने लगी। और फिर पूरा प्लान बना लिया।"

"वासु की हत्या करने का।"

"हां! लेकिन...।"

"लेकिन...क्या?"

"लेकिन वो सब ड्रामा था।"

"ड्रामा था! मतलब?" राणावत चौंका- "तुम्हारे कहने का मतलब, वासु की हत्या एक ड्रामा थी।"

“और नहीं तो क्या?” मुस्कराया प्रभु- “मैं क्या इतना पागल था कि किसी की हत्या कर खुद को दिमागदार साबित करता।”

“तो सुनिए। प्लान के मुताबिक मैंने वासु का मण्डे को, जिस दिन वह घर से दुकान के लिए निकला था, अपहरण करवा लिया था।”

“अ...अपहरण। पर वासु तो दुकान पहुंचा था, आगे हिल स्टेशन भी...।”

“पहले सुनिए तो...।”

“ठीक है। बोलो।”

प्रभु ने बोलना शुरू किया- “मैंने वासु का अपहरण करा कर अपने फार्म हाउस में कैद कर लिया। फिर मैंने प्लान के मुताबिक अपने एक आदमी, जिसे मैंने वासु का रूप दिलवा रखा था, को वासु की दुकान पर भेजा। फिर उसे अपने उस फोन से, जिसे मैंने दिखावे के तौर पर जगन अंकल को गिफ्ट कर दिया था, जो उनके पास से रास्ते में ही चुरा लिया था, नकली वासु को फोन किया। ये चाल केवल पुलिस को उलझाने के लिए चली थी। ऐसी चाल और भी मैंने चली जो उलझाऊ थी। जिससे पुलिस का मुझ पर शक तो जाए पर मैं फंसूं न।”

“पर फंस तो गए।” तिवारी बोला।

“वो तो मेरे ही प्लान का हिस्सा था। मैं खुद को एक्सपोज न करता तो सबको मेरी काबिलियत के बारे में कैसे पता चलता। अब जब यह सारा वाक्या न्यूज में आएगा तो सबको-उनको भी, जिन्होंने मुझे अपनी संस्थाओं से यह कहकर बाहर कर दिया था कि मुझमें दिमाग नहीं है,मेरे दिमागदार होने का पता चलेगा। वो भी जानेंगे कि मैंने कैसे दो-दो जगह की पुलिस को चक्करगिन्नी बनाया था।”

“ठीक है। आगे बोलो।” राणावत ने सख्त लहजे में कहा। “आगे.... नकली वासु को हिल स्टेशन पहुंचकर वुडालैंड आना था, जहां उसे रतन से मिलना था और फिर मुझे, जो कि वुडालैंड पहुंच चुका था, एक टैक्सी लेकर वहां पहुंचना था, जहां दोनों बातचीत के लिए आते। इसके लिए तमन्ना की कॉफी में बेहोशी की दवा भी मिलाई थी। आगे बढ़ने के लिए तमन्ना की बेहोशी जरूरी थी।”

“तुम्हें पता था दोनों डार्लिंग रेस्टोरेंट में होंगे?”

“यकीन तो था, क्योंकि वासु रतन से उसके रेजीडेंस पर जो बातें जिस अंदाज में करने वाला था, रतन उन्हें वहां अफोर्ड नहीं कर सकता था। सो उसे कहीं बाहर आना ही था उसके रेजीडेंस से, डार्लिंग रेस्टोरेंट ही वह मुनासिब जगह थी।”

“त..तुम्हें ये सब पता था?”

प्रभु मुस्कराया।

“रतन के एड्रेस का पता था। प्लान बनाते वक्त मैंने नेट से उस एरिया की सारी जानकारी हासिल कर ली थी।”

“हूं! खैर, आगे।”

“मैं टैक्सी लेकर पहुंचा और नकली वासु को उसमें बिठाकर चला गया। मुझे मालूम था गेट की तरफ एक सीसीटीवी कैमरा लगा है, जिसमें टैक्सी का नम्बर आदि जरूर आएगा

और उसी से पुलिस मुझ तक पहुंचेगी, पर कितने वक्त में, ये देखने वाली बात थी। खैर, फिर हम दोनों बारी-बारी से जानबूझकर लेक जाने के लिए रास्ते में उतर गए।"

"वासु और रतन की मीटिंग का मकसद था कि पुलिस को लगे कि वासु सच में रतन से मिलने हिल स्टेशन आया था.. क्यों?"

"और क्या। बहरहाल पुलिस को छकाना भी तो था। पर ये कहीं जाकर जाहिर न किया कि वासु को रतन के हिल स्टेशन पर होने के बारे में पता कैसे चला?"

"हां ये तो सस्पेंस था। पर अब तो पता है न।"

"हूँ।" राणावत ने गंभीरता से हुंकार भरी और बोला- "तुम दोनों लेक जाने वाले रास्ते पर उतर गए।"

"फिर?"

"मैंने अपने एक आदमी भुल्लन को पहले ही हिल स्टेशन भेजा था, जिसे एक लाश का इंतजाम करना था। उसने एक आदमी से अस्पताल से वासु की कद काठी की लाश वार्डबॉय को रुपए देकर हासिल की, जला दिया और हमें सौंपी। हमने लाश का चेहरा तेजाब से बिगाड़ा। तेजाब नकली वासु ने वुडालैंड पहुंचकर खरीदा था। फिर उसने लाश को अपने कपड़े पहनाकर आगे झरने के पानी में डाल दिया था। जलाया इतना ही था कि थोड़ी-बहुत पहचान, जो कि कपड़ों से होनी थी बनी रहे ताकि आगे पुलिस जब लाश की खोजबीन करे तो उसे पता चले वो लाश वासु की है।" सांस लेने के लिए रुका पट्ठा, फिर बोला- "नकली वासु बना मेरा वह आदमी उसी रात ट्रेन से रामनगर के लिए रवाना हो गया क्योंकि वहां उसका काम पूरा हो गया था। लाश जहां जलाई थी, वहां मैंने अपना विजिटिंग कार्ड भी जानबूझ कर प्लांट किया था, ताकि देर-सवेर जब पुलिस वहां पहुंचे तो मेरे बारे में जानकर फूली न समाए।" राणावत ने उसके व्यंग्यात्मक चेहरे को घूरा।

"वासु के होटल वाले कमरे में उसकी व तुम्हारे साथ वाली फोटो मिली थी, वो भी प्लान के मुताबिक ही रखी ही होगी। पर वो खिची कैसे?"

प्रभु ने तिवारी की तरफ ऐसे देखा जैसे किसी मूर्ख को देख रहा हो। वह मुस्कराया फिर राणावत की तरफ देखकर बोला-"नहीं समझे।"

"समझ गया।"

"क्या?"

"फोटो में तुम और नकली वासु थे।"

"सही समझे। फोटो का मकसद ही था कि पुलिस मुझ तक पहुंचे। मेरी गतिविधियों के बारे में जानबूझकर मुझ पर शक करे। मुझे भी केस में इन्वोल्व समझे। और अंततः जब मुझ तक पहुंचे तो सारा खेल जानकर दंग रह जाए।"

"ये तुम्हें महंगा भी पड़ सकता है।"

"क्यों?"

"भले ही तुमने किसी की हत्या नहीं की पर पुलिस के साथ जो खेल खेला है, उसके लिए...।"

"वासु कहां है?" तिवारी की बात बीच में काटकर राणावत ने कहा।

“वह जिंदा है- सही सलामत है।”

“कहां है?”

“मेरे फार्म हाउस में है।”

“चलो और मुझे वासु को दिखाओ।”

“प...पहले शादी हो जाने...।”

“शादी कुछ देर में भी हो जाएगी।” राणावत ने इतने सख्त लहजे में कहा कि प्रभु को कुछ कहते न बना।

फार्म हाउस शहर के एकदम बाहर पहाड़ की एक ऐसी चोटी पर स्थित था, जिसके आसपास जंगल था। पीछे लहराता सागर था।

मुख्य सड़क से उस फार्म हाउस तक जो रास्ता जाता था, वो ईंट- पत्थरों का था। रात को हुई बारिश की वजह से हर तरफ ठंडक भरा, खुशनुमा माहौल था। पेड़-पौधे, धरती सब धुले-धुले से लग रहे थे। पुलिस जीप इस समय ईंट-पत्थरों वाले रास्ते पर मध्यम गति से आगे बढ़ रही थी। रास्ते के दोनों तरफ ऊंचे-ऊंचे पेड़ खड़े थे, जो बारिश के पानी से धुले खुश नजर आ रहे थे। ऐसा जान पड़ता था कि वे आगन्तुकों का स्वागत कर रहे हों।

जीप, तिवारी ड्राइव कर रहा था। बगल वाली सीट पर राणावत बैठा था गंभीर। पीछे की सीट पर था- प्रभु सोनकर।

आधे घंटे बाद जीप जंगल में स्थित फार्म हाउस के गेट पर पहुंचकर रुकी। सब उतरे।

फार्म हाउस 10 फुट की ऊंची दीवार से चारों तरफ से घिरा हुआ था। दीवार के ऊपर तीन-चार फीट की ऊंचाई तक कंटीले तार लगे थे, जिन पर रात के वक्त बिजली का करंट दौड़ाया जा सकता था।

सब आयरन गेट के सामने पहुंचे। उस पर बड़ा सा ताला लटक रहा था।

राणावत ने प्रश्नसूचक नेत्रों से प्रभु को देखा।

“गोली कहीं बाहर गया होगा।”

“गोली कौन?”

“वासु की निगरानी के लिए जिसे रखा...।”

“ठीक-ठीक! पर वह वासु को अकेला छोड़कर कहीं क्यों चला गया?”

“ये तो मेरा अनुमान है। हो सकता है भीतर ही हो।”

“तो उसे फोन लगाओ। बुलाओ उसे। वो ताला खोले।”

प्रभु हिचकिचाया।

“क्या हुआ?”

“वो फोन नहीं रखता।”

“क्या?”

“उसे फोन रखना पसंद नहीं।”

“बड़ा अजीब इंसान है।” तिवारी अचरज से बोला- “आज के जमाने में तो बच्चों के पास भी फोन होते हैं।”

"फिर ताला कैसे खुलेगा। 'सिम-सिम ताला खुल जा' कहना पड़ेगा या गला फाड़कर चिल्लाना पड़ेगा-'आबरा-डाबरा'।"

"ऐसा कुछ नहीं करना पड़ेगा। मेरे पास इसकी चाबी है न। यहां आने से पहले मैंने चाबी ले ली थी कि शायद जरूरत पड़ जाए।"

राणावत ने उसे घूरा।

"ठीक है। खोलो।"

"क्या?"

"अरे ताला और क्या?"

प्रभु ने जेब से चाबी निकाल कर ताला खोला, फिर दरवाजा। सब अंदर प्रविष्ट हुए।

अंदर पक्की ईंटों का रास्ता फार्म हाउस तक जाता था। आसपास फूलों की क्यारियां थीं। दीवार के किनारे लगभग चारों तरफ, अशोक के डिंडोला प्रजाति के छाते की आकृति के, खूबसूरत पेड़ खड़े थे। चारों तरफ अजीब सी खामोशी थी। तीनों इमारत के मुख्य गेट पर पहुंचे। वह लकड़ी का गेट था। उस पर भी ताला पड़ा था। प्रभु ने वह भी खोला। फिर सब इमारत के अंदर घुस गए।

"कहां है वासु?" चारों तरफ नजरें दौड़ाई राणावत ने।

"उ...उधर, उस कमरे में।" प्रभु एक सामने वाले दरवाजे की ओर बढ़ता हुआ बोला।

"पुलिस के साथ मजाक कर अच्छा नहीं किया। वासु के अपहरण के चार्ज के साथ-साथ मैं तुम पर कानून के साथ धोखाधड़ी करने का भी चार्ज लगाऊंगा। हर संभव कोशिश करूंगा कि तुम्हें ज्यादा से ज्यादा सजा हो, ताकि आगे कोई व्यक्ति सनक या जुनून का शिकार न बने।" राणावत आगे बढ़ते हुए गुस्से में बोला।

प्रभु कुछ नहीं बोला पर वह बेचैन जरूर नजर आ रहा था। उसने आगे बढ़कर दरवाजे पर लटक रहे ताले को खोला फिर अंदर घुसा। दोनों पुलिसिए भी अंदर आए।

"क..कहां है वासु?" कमरे में चारों तरफ नजर दौड़ाते हुए राणावत ने पूछा।

जबकि प्रभु हकबकाया खड़ा था।

"ब...बोलो।" राणावत ने घुड़का।

"यहीं था। इ...इसी कमरे में।"

"यहां था तो कहां चला गया! क्या हवा बनकर खिड़की के रास्ते छूमंतर हो गया?" राणावत ने दांत पीसे।

"हो सकता है द... दूसरे कमरे में हो।"

"हूं! चलो... देखते हैं।"

उन्होंने सारी बिल्डिंग खंगाल डाली पर उन तीनों के अलावा वहां कोई इंसान नहीं था।

"वासु तो यहां कहीं नहीं है। न ही तुम्हारा वह गोली है...।" बिल्डिंग के बाहर आकर राणावत ने प्रभु को घूरते हुए कहा।

"व... वो यहीं थे। पर... अब नहीं हैं।"

"ये तो मुझे भी पता है। पर है कहां?"

प्रभु को थूक निगलना मुश्किल जान पड़ने लगा।

राणावत उसके नजदीक पहुंचा।
"तुम्हारा खेल खत्म हुआ मिस्टर प्रभु सोनकर। तुम्हें पुलिस को जितना उलझाना था उलझा दिया। अब जेल जाने की तैयारी करो। मैं वासु की हत्या करने के इल्जाम में तुम्हें गिरफ्तार करता हूं।"
प्रभु उछल पड़ा।
"ये...ये आप क्या कह रहे हैं? वासु जिंदा है।"
"जिंदा है तो कहां है?"
"ग.. गोली को पता होगा।"
"गोली कहां है?"
प्रभु बगलें झांकने लगा।
"उसका एड्रेस तो होगा।"
प्रभु ने इंकार में गर्दन हिलाई।
राणावत मुस्कराया।
"तुमने सच में कमाल का दिमाग पाया है। पुलिस को बहुत छकाया है। पर अब नहीं। अब तुम्हारी एक भी झूठी स्टोरी नहीं चलेगी। अब तुम्हारा मुकाम जेल होगा और आगे फांसी।"

प्रभु को जेल में बंद हुए पूरा दिन हो गया था। वह सारे वक्त 'मैं निर्दोष हूं' भजता रहा। इसी दौरान उससे तमन्ना व वीर मिलने आ चुके थे। कुछ और भी मिलने वाले आए थे। सब उसे ढांढस बंधाकर लौट गए थे। तमन्ना व वीर ने तो उसके लिए बड़ा वकील करने की भी बात की थी, जो उसका केस लड़कर उसे आसानी से इस केस से बरी करा लेगा।
थाने में प्रभु ने बताया था कि उसने जो कुछ कहा, वो सब सच है। उसने गोली-भुल्लन दो लोगों को अपने साथ मिलाया था, पर उनका एड्रेस नहीं मालूम। पुलिस को यह बात गले नहीं उतरी। भुल्लन को नकली वासु जिस डॉक्टर ने बनाया, उसके बारे में प्रभु ने जो बताया, वो फर्जी निकला। उस नाम का डॉक्टर पूरे रामनगर में भी नहीं था। हिल स्टेशन पर जिस वार्डबॉय से लाश खरीदने की बात प्रभु ने बताई थी, वह भी झूठी निकली।
तिवारी ने शाम को लॉकअप में बंद प्रभु को ये सारी जानकारी दी तो वह सन्न रह गया। उसके चेहरे पर परेशानियों, बेचैनियों के बादल स्पष्ट रूप से उभरते दिखे थे।
"मैं...मैं सच कह रहा हूं, इंस्पेक्टर साहब!" आखिरकार प्रभु हैरान होकर बोला- "म...मैंने जो कुछ बताया वो अक्षरशः सच है।"
"तुम अभी भी यह बात कह रहे हो जबकि...तुम्हारी एक भी बात साबित नहीं हुई।" तिवारी उसे घूरकर बोला, फिर गहरी सांस भरकर छोड़ते हुए बोला- "मेरी मानो तो अपना जुर्म कबूल कर लो। इसी में तुम्हारी भलाई है।"
"जो जुर्म मैंने किया ही नहीं उसके लिए फांसी का फंदा अपने गले में डाल लूं। इसमें मेरी कौन सी भलाई है?" प्रभु भड़क गया।
"तुम शुरू से ही हमें गुमराह करते रहे हो। तुम पर विश्वास करना नामुमकिन है।"

“व... वो तो मैंने खुद को दिमागदार साबित करने के लिए बोला था।

“अगर ऐसा है तो वासु को पेश करो। बच जाओगे।”

“क...कहां से पेश करूं? जब मुझे खुद ही नहीं मालूम कि वह एकाएक कहां चला गया?”

“फिर तो तुम्हारा बचना नामुमकिन है।” कहकर तिवारी वापस जाने के लिए पलटा।

“म... मेरी एक मदद कर सकते हैं?” तभी प्रभु सोनकर जल्दी से बोला।

“क्या?” वह पलटा।

“मुझे लगता है... मेरे खिलाफ साजिश हुई है।”

“अच्छा!” तिवारी मुस्कराया- “वैसे, लगने में कुछ बुराई नहीं है।”

“मेरी बात तो सुनिए प्लीज।”

“सुन रहा हूं। बोलो।”

“आप किसी अच्छे काबिल डिटेक्टिव को मेरे लिए हायर कर सकते हैं?”

“क्योंकि तुम्हें लगता है कि तुम्हारे खिलाफ साजिश हुई है?”

“हां, यूं एकाएक वासु का, गोली... सबका गायब होना, मुझे परेशान कर रहा है। जबकि कल शाम को ही मैं फार्म हाउस में वासु से मिला था। इसके अलावा वासु के चेहरे का फेसमास्क बनाने वाला डॉक्टर व हिल स्टेशन पर लाश बेचने वाले वार्ड बॉय का भी पता नहीं चल रहा।”

“पता तो तब चलेगा न जब कोई होगा।”

“प्लीज मेरी बात का यकीन कीजिए।”

“कल शाम तुम उस वासु से मिले थे, जिसकी दस दिन पहले हत्या हो गई। कौन मानेगा यह बात?”

“म... मेरा यकीन कीजिए। मैं कल शाम वासु से अपने फार्म हाउस पर मिला था।”

“फिर गया कहां?”

“पता होता तो जेल में होता?”

“पता तो है। वासु अब...” तिवारी ने अंगुली छत की तरफ की-

“...ऊपर है। और ऊपर भेजने का शुभ कार्य भी तुमने ही किया। पर बड़े ढीठ हो, स्वीकार नहीं कर...।”

प्रभु ने गहरी सांस भरकर छोड़ी।

“आप मेरे लिए कोई जासूस हायर कर दें तो मैं उसकी सारी फीस भरने अलावा... अ..आपको भी एक लाख रुपए दूंगा।” प्रभु झिझकते हुए बोला।

तिवारी ने उसे घूरा। कुछ पल सोचता रहा।

“मुझे तो नहीं लगता कोई साजिश-वाजिश हुई है। तुम ये ड्रामा करके हमें फिर उलझाना चाहते हो।”

“म....मैं जानता हूं मुझ पर किसी को भी यकीन करना मुश्किल होगा। मौजूदा हालात ही ऐसे बन पड़े हैं। लेकिन...अपना बचाव करना हर आदमी का मौलिक अधिकार है। आप मेरी इतनी सी मदद करेंगे तो बड़ा अहसान होगा।”

तिवारी सोच में पड़ गया।

"अपने वायदे से मुकर तो नहीं जाओगे?" फिर तिवारी बोला।

"नहीं। कसम से। जो कहा है वो पूरा करूंगा। मुझ पर यकीन कीजिए।" प्रभु हसरत भरी नजरों से तिवारी को देखते हुए बोला।

"ठीक है। मैं करता हूं कुछ इंतजाम। पर मुझे लगता नहीं कुछ फायदा होगा।" इतना कहकर तिवारी लॉकअप से बाहर निकल गया।

पीछे प्रभु के चेहरे पर राहत के हल्के भाव स्पष्ट नजर आ रहे थे।

✠✠✠

कॉलबेल बजी। बड़ी ही मधुर ध्वनि उस फ्लैट के अंदर बजी। वह 'गोपाल अपार्टमेंट' नाम की बहुमंजिला इमारत थी। उसी इमारत की तीसरी मंजिल के, 110 न. फ्लैट के सामने एक सांवली पर खूबसूरत लड़की खड़ी थी। उसने ही बेल पुश की थी।

उसने घड़ी सलवार कमीज पहना हुआ था उसने। सीने पर कपड़ों के मैचिंग करता दुपट्टा डाला हुआ था। पैरों में सैंडिल्स थे। पीठ पर स्कूल बैग झूल रहा था। कलाई पर गोल्डन कलर की चेन वाली रिस्ट वाच भी पहनी हुई थी। दो चोटियां थी, जिनमें लाल फीता था। उम्र थी 14-15 साल। हाई स्कूल की छात्रा जान पड़ती थी।

बेल बजाने के कुछ क्षण उपरांत दरवाजा खुला।

दरवाजा खोलने वाला एक 18 वर्षीय सांवला लड़का था। उसके फूले मसल्स, चौड़ी उभरी छाती ये बात बताती थी। बाल काले व घुंघराले थे। उस घड़ी वह लोअर(लाउंसर) व हाफ बाजू वाली ब्लेक मूमेंट्स की बनियान (इनर) पहने था।

दरवाजा खोलते ही जैसे ही उसकी नजर लड़की पर पड़ी वह चौंक पड़ा। दोनों एक-दूसरे को देखकर मुस्कराये। परिचित जान पड़े।

उनका मिलन एकदम फिल्मी था।

लड़की स्कूल गोइंग गर्ल थी। एक दिन रास्ते में कुछ लड़के उसे छेड़ रहे थे। मौके पर घुंघराले बालों वाला लड़का पहुंच गया। उसने लड़कों की धुनाई कर लड़की को बचाया। लड़की ने थैंक्यू बोला। लड़का पहली ही मुलाकात में उस पर फिदा हो गया। एक ही बार और मुलाकात हुई। लड़की का भी रुझान लड़के की तरफ था तो दोनों के मन में फूटा प्यार का अंकुर पौधा बनने लगा।

ये घटना लगभग महीने भर पहले ही घटी थी और आज लड़की उसके फ्लैट के सामने खड़ी थी। ऐड्रस लड़के ने ही बताया था वो भी बिना पूछे। जबकि लड़की ने अपने एड्रेस के बारे में कुछ नहीं बताया था। ऐसा ही होता है। लड़का ऐसे मामलों में जल्दबाजी करता है और लड़की समझदारी से धीरे-धीरे बाजी खेलती है।

कुछ भी हो लड़का लड़की को अपने फ्लैट के दरवाजे पर देखकर बहुत खुश था। दिल बल्लियों सा उछल रहा था।

लड़की की हालत बता रही थी कि वह स्कूल से सीधी वहां पहुंची थी।

"ह...हाय।" मुंह बाए खड़े लड़के ने जब उस पर नजरें गड़ा दीं, मुंह सिल दिया तो लड़की मुस्करा कर बोली।

“ह...हाय।” लड़का हड़बड़ाया फिर संभलकर बोला- “आप यहाँ अचानक?”

“हाँ, आना पड़ा।”

“आ...आओ अंदर आओ।”

दोनों अंदर पहुंचे।

दरवाजा उढ़का दिया गया।

“ब... बैठिये।” लड़की को एक सोफे पर बैठने के लिए लड़के ने बोला।

लड़की सोफे पर बैठ गयी। उसके सामने ही वह भी बैठ गया। लड़की ने चारो तरफ सरसरी नजर ड्राइंग रूम पर दौड़ाई। बड़ा ही शानदार ड्राइंगरूम-पूरा फ़्लैट था।

क्या लेंगी? लड़के ने ऐसे पूछा जैसे शबरी ने राम से पूछा हो।

“ज...जी।”

“म...मेरा मतलब था- ठंडा...गरम... वैसा कुछ?”

कुछ भी चलेगा।

“ कुछ भी चलेगा – ठीक, मैंने अभी कॉफ़ी बनाई थी।”

“ वो चलेगी।”

लड़की ने हाँ में गर्दन हिलाई।

लड़का फौरन उठा और किचिन में जा घुसा।

तभी दूसरे कमरे में लाल लोअर (पलॉउन्सर) काली मूमेंट्स की हॉफ बाजू की बनियान इनर- पहने दूसरा लड़का निकला वह 19 साल का था – गोरा-चिट्टा, स्वस्थ, तन का मालिक, पर ज्यादा डोले-शोले रखने का शौक़ीन नहीं था। बाल काले, लंबे घने थे जिन्हें वो बीच से काढ़ता था। माथे पर पतला सिंदूर के रंग का तिलक लगता था। उस घड़ी भी लगा रखा था। कुल मिलाकर वह मोहनी सूरत वाला था। जो भी देखता था मोहित हुए बिना नहीं रह सकता था।

उसने हाथ में कॉफ़ी का मग थाम रखा था। लड़की उसे जानती थी। सांवले लड़के ने ही बताया था उसके बारे में।

गोरा लड़का अजनबी लड़की को देखकर हड़बड़ाया।

“न...नमस्ते।” लड़की ने खड़े होकर पुनः हाथ जोड़े।

“न...मस्ते।”

तभी सांवला लड़का दो कॉफ़ी के मग लेकर आया। गोरे लड़के को सवालिया नजरों से अपनी ओर ताकते हुए देखा तो कुछ इशारा किया।

“य...ये निशा है।”

“अ...ओह...।” शायद सांवले लड़के ने गोरे लड़के को उसके बारे में पहले से बता रखा था।

फिर तीनो सोफों पर बैठकर ख़ामोशी से कॉफ़ी पीते रहे।

कॉफ़ी ख़त्म हुयी तो लड़की ने गला खँखारा।

“म...मैं आपसे एक मदद के लिए आई थी।” वह झिझकते हुए बोली।

“म...मदद! क्या?” सांवले लड़के ने फौरन पूछा।

“हाँ! पर अपने लिए नहीं- अपनी एक सहेली के लिए।”

“बात क्या है?” गोरे लड़के ने गंभीर स्वर में कहा।

“साथ ही कॉलेज में पढ़ती है – गरीब है। घर में केवल माँ ही ऐसी है जो दूसरों के घरों में काम करके उसका-सबका भरण-पोषण करती है।”

“बाप नहीं है।”

“है! पर वही तो सबसे बड़ी समस्या है।”

“कैसे?”

“वह शराबी है – जुआरी है- काम धाम कुछ नहीं करता। माँ जो भी कमाकर लाती है, वह उड़ा लेता है। न देने पर मारपीट करता है। माँ को वृद्धा पेंशन मिलती है, वो भी नहीं छोड़ता। दोनों उससे बहुत दुखी-परेशान हैं। मेरी सहेली कई महीनो से स्कूल फीस तक नहीं भर पायी। एक बार मैंने फीस भरकर उसका नाम कटने से बचाया था। पर मेरे पास भी इतनी मनी नहीं है कि मैं हर बार ऐसा कर पाऊँ। मेरे घर की भी हालत अच्छी नहीं है वर्ना मैं कुछ करती। निशा रुककर पुनः बोली- अब हालात ये हैं कि मेरी सहेली कॉलेज से अपना नाम खुद कटवाना चाहती है। पढ़ने की इच्छा होते हुए भी वह पढ़ाई छोड़ना चाहती है। पर मैं चाहती हूँ... वो खुद चाहती है कि पढ़े पर शराबी बाप की वजह से...। लड़की बात अधूरी छोड़कर दोनों चेहरों को ताकने लगी। दोनों लड़के ही गंभीर थे।

“फ़िलहाल अगर कॉलेज की फीस भर दी जाये तो तुम्हारी सहेली का नाम नहीं कटेगा पर – आगे फिर वही समस्या खड़ी होगी। शराबी बाप फिर प्रॉब्लम क्रिएट करेगा।” गोरे लड़के ने सोच भरे स्वर में कहा।

“असली समस्या वह शराबी बाप ही है। उसका ही कुछ करना पड़ेगा।” सांवला लड़का गुस्से में बोला। लड़की ने भी हाँ में गर्दन हिलाई।

“ उन्हें पुलिस के पास जाना चाहिए था।” गोरा लड़का बोला।

“गयी थी। पर पुलिस वाले उनकी नहीं सुनते। पैसे मांगते हैं। ज्यादा कहो तो डांटकर भगा देते है।”

पुलिसवालों के रवैये से वो भी वाकिफ थे। अमीरों की हाँ हुजूरी करने वालों के पास गरीबों की फरियाद सुनने का कहाँ वक्त होता है। होता भी है तो कौन जहमत उठाता है।

“हूँ!”

मैं बस इतना चाहती हूँ कि शराबी बाप माँ-बेटी को तंग न करे। उनकी मदद न करे तो कम से कम परेशान भी न करे।

“ठीक है। कुछ करते हैं हम...।

शाम गहरा रही थी।

देसी शराबी के ठेके (अड्डे) पर उसके चाहने वालों की अच्छी-खासी भीड़ सी दिख रही थी- पुलिस के उस हुक्म के बावजूद कि ठेके के आस-पास भीड़ न दिखे, लोग शराब खरीदकर घर ले जाकर पियें।

जबकि वहां तो पीने वालों के लिए कुर्सियां,टेबल, चारपाइयां, वगैरह सब उपलब्ध था। ठेके वालों ने ठेके के साथ अंडा-समोसा, चाट, दालमोठ, ठंडा पानी आदि की भी दुकान

खोल रखी थी। शराबियों को पीने के साथ खाने के लिए भी तो कुछ चाहिए कि नहीं। पर सारी चीजों के उनके निर्धारित मूल्य के दोगुने-तिगने दाम से भी ज्यादा वसूले जाते थे। पर पीने वालों को कोई फर्क नहीं पड़ता था। वे तो खुश थे कि उनके मतलब की हर चीज वहां उपलब्ध है।

उसी ठेके पर चारपाई पर बैठा दारू पी रहा था शिवतरन। उम्र 65 – 66 साल – एकदम दुबला पतला- मरियल सा। एक झापड़ लगाओ तो फौरन बेहोश। पर दारू पीने के बेहद शौक़ीन। और कुछ मिले न मिले दारू जरूर मिलनी चाहिए। उसके दिन की शुरुआत दारू से होती थी। जितनी दारू वह पी जाता था,लोगों के लिए हैरानी, आश्चर्य का विषय था, क्योंकि वह खूब दारु पीकर भी कैसे आराम से चलता-फिरता था – चटर-पटर बातें करता था। ज्यादा नशा होने पर वहीं ठेके पर ही ढेर हो जाता था।

ये उसकी रोज की कहानी थी। ठेके वालों ने उसके लिए एक चारपाई रिजर्व सी कर दी थी।

भई, वह उसका परमानेंट ग्राहक था। ग्राहक भगवान होता है। कैसे वो भगवान की नाकदारी कर देता – मुश्किल था।

“शिवतरन। तेरे 1000 रु हो गए उधारी के... कब देगा?” 60 वर्षीय हट्टे-कट्टे ठेकेदार मंगू ने नशे में झूमते शिवतरन के पास आकर कहा।

“द...दे दूंगा। तू तो रोज-रोज य...याद दिलाता है। म...मुझे भू...भूल...भुलक्कड़ समझा है क्या?” शिवतरन ने आँखें तरेरते हुए नाराजगी में कहा।

“तूने परसों पैसे देने को बोला था। याद है?”

“ह...हाँ! तो परसो दे दूंगा न।”

“वो परसों दो दिन पहले गुजर गया। समझा।”

“म...मैं तो नहीं गुजर गया।”

“तेरा क्या भरोसा?”

शिवतरन ने उसे नशे में डूबी आँखों से घूरा।

“त...तू चिन्ता मत कर। प...पैसे देकर गुजरूँगा।”

“गुजरूँगा। अरे पैसे कब दोगे?”

“कब?”

“जब...ह...हो जायेंगे।”

“कब हो जायेंगे।

“य...ये क्या पता।”

“य...ये नहीं चलेगा।” मंगू झल्लाया – मैं तेरे साथ कितनी रियायत करता हूँ उसका तो लिहाज कर।”

“क...क्या रियायत करता है?” वह भी अकड़ा- “स...सबको अद्धा 60 रुपये का देता है। मुझे भी 6...60 का देता है। अलग से जो ख...खाता हूँ....उसका दुगना...तिगुना... च...चार्ज वसूलता है। ब...बड़ा आया रियायत वाला।”

“मैं तुम्हें उधार पिलाता हूँ।”

"त...तो पैसे नहीं देता क्या। त...तेरे पैसे क...कभी मारे हैं तो बता?"

ज्यादा पी लेता है तो तेरे ढेर होने के लिए तुझे चारपाई देता हूँ, जबकि यहाँ मैं किसी को टिकने नहीं देता।

उसकी अकड़ कम हुयी।

"ह...हाँ...। ये तो रियायत... तेरी म...माननी पड़ेगी।"

शिवतरन गर्दन हिलाकर नम्र स्वर में बोला। फिर चहककर बोला – तू...तू फ़िक्र न कर। म...मैं तेरे पैसे ज...जल्दी ही दे दूंगा।"

"हूं! ठीक है।" मंगू वहां से हट गया।

कुछ देर बाद शिवतरन ठेके से लड़खड़ाते हुए निकला और कोई पुराना फ़िल्मी गीत गुनगुनाता हुआ अपने घर की तरफ चल पड़ा।

उसके घर जाने वाला रास्ता एकदम सुनसान था।

आसपास खूब पेड़-पौधे, झाड़-झंकाड़ था। अँधेरा भी होने लगा था।

वह इलाका रामनगर के बाहर का इलाका था और लगभग ग्रामीण इलाका जैसा दिखता था। वह नशे में झूमता हुआ गाना गुनगुनाता हुआ आगे बढ़ा जा रहा था।

अचानक वह हड़बड़ाकर ठिठक गया।

एक विचित्र आकृति उसके सामने आ खड़ी हुयी थी। वह बेहद काली थी। मुंह बहुत ही भयानक था- राक्षस की तरह।

शिवतरन का नशा पलभर में हवा हो गया था। थूक निगलना मुश्किल लग रहा था।

"त...तुम कौन हो ?" उखड़ी सांसो को बड़ी मुश्किल से कंट्रोल कर उसने पूछा। दिल की धड़कनों की स्पीड बड़ी तेज थी। लगता था कि पसलियों को तोड़ ही डालेगी।

"यमदूत।" आकृति ने भैंस की सी डकार ली।

"य...यमदूत ?" शिवतरन की धड़कनो की गति और बढ़ गयी।

"हाँ, यमदूत। मुझे यमराज ने तुम्हें सीधे रास्ते पर लाने के लिए भेजा है।" आकृति गुस्से में भैंस की डकार में बोली – तेरी आदतें बहुत ख़राब हो गयी हैं। तू इंसान को इंसान नहीं समझता। जिसकी मदद करनी चाहिए तू उन्हें परेशान करता है- सताता है।

"आपको... गलतफहमी हुयी है...महाराज।" वह मिमियाया।

"नालायक। मूर्ख। तेरी इतनी हिम्मत कि तू मुझसे झूठ बोले। हमें सब पता है। तू अपनी सज्जन, सुशील बीवी को-बेटी को बेवजह तंग करता है। तुझे उनकी देखरेख करनी चाहिए पर तू उनके साथ मारपीट करता है-उनसे पैसे छीनकर दारू पीता है,जुआ खेलता है। तुम जैसे पापी को ठीक करने के लिए यमराज ने भगवान भोलेनाथ, जिसकी तेरी बीवी बहुत बड़ी भक्त है, के आदेश पर मुझे भेजा है।

"भ...भोलेनाथ का तो...मैं...मैं भी भक्त हूँ महाराज।"

तू भक्त नहीं है। भक्त होता तो अपनी बीवी-बेटी को तंग न करता। आज तेरी दुष्टता का मजा चखाकर ही रहूँगा। आकृति उसकी ओर बढ़ी।

वह पलटा, भागना चाहा पर फ्रिज हो गया। सामने वैसी ही एक और आकृति खड़ी थी।

“तू हमसे भाग रहा है मूर्ख। हमसे बचकर कोई नहीं भाग सकता।

“म…मुझे माफ़ कर दो महाराज।” एकाएक वह हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाने लगा- आइन्दा कोई गलती नहीं करूँगा। अपनी बीवी-बेटी को कभी तंग नहीं करूँगा…द…दारू को तो हाथ भी नहीं लगाउँगा। जुआ की तरफ तो देखूंगा भी नहीं।”

“इसी में तेरी भलाई है। पर जितनी गलती की है उसकी सजा तो भुगतनी ही पड़ेगी।”

“न…नहीं!”

दोनों आकृतियों ने उसकी जमकर ठुकाई की।

“आइंदा तेरी कोई शिकायत मिली तो सजा दोगुनी मिलेगी।” दोनों आकृतियों ने दर्द से छटपटाते-कराहते हुए शिवतरन से कहा और अंधेरे में गुम हो गई।

आज पूरा एक हफ्ता हो गया… लेकिन शराबी बाप ने माँ-बेटी को बिल्कुल भी परेशान नहीं किया। अब तो वह खुद भी सुधर गया है। चाय की एक दुकान खोल ली है, घर गृहस्थी का पूरा ख्याल रखता है।

“कैसे किया ये चमत्कार?” निशा ने सामने बैठे दोनों छोरों से पूछा।

इस वक्त वह उनके फ़्लैट पर मौजूद थी।

दोनों छोरे मुस्कुराए।

“कुछ नहीं। बस यमदूत बनकर गए उसे डांटा-समझाया-थोड़ी मरम्मत की, बस।” धर्मा मुस्कुराकर बोला।

तभी कॉलबेल बजी।

सबकी नजर एक साथ दरवाजे की ओर उठी।

“कम इन। द डोर इज ओपन।” दरवाजा केवल उढ़का हुआ था इसलिए गोरा लड़का बोला।

तुरन्त दरवाजा खोलकर एक वर्दीधारी अंदर आया।

वह सब-इंस्पेक्टर तिवारी था।

जहाँ निशा की आँखें सिकुड़ी वहीं वे दोनों मुस्कुराकर खड़े हुए।

“अ…अरे… सर आप।” गोरा लड़का उत्साह से मुस्कुराकर बोला।

“गुड मॉर्निंग।” तिवारी आगे बढ़ते हुए प्रसन्न मुद्रा में बोला।

“गुड मॉर्निंग।”

“आईए…बैठिए…सर।”

तिवारी आगे बढ़कर सोफे पर बैठ गया।

तभी निशा उठ बैठी।

“अच्छा… मैं चलती हूँ।” वह दरवाजे की ओर बढ़ गई। धर्मा जरूर लपककर पीछे गया और उसे दरवाजे तक छोड़कर दरवाजा पुनः बंद किया, वापस आकर अपनी जगह बैठ गया।

तिवारी को कॉफ़ी पेश की गई। कॉफ़ी पीते-पीते तिवारी ने लड़की के बारे में पूछा तो गोरे लड़के ने बताया।

सांवले लड़के की तरफ देखकर तिवारी मुस्कुराया, जबकि वह झेंप गया।

कॉफ़ी खत्म होने के बाद तिवारी गंभीर मुद्रा में बोला- " वैसे मैं भी एक काम से ही आया था।"

"आप बिना काम के कभी आते भी हैं।"

"क्या काम है ?" गोरे लड़के ने सीरियस टोन में पूछा।

तिवारी बताने लगा।

"लो... मैं ले आया जासूस।" तिवारी गोरे लड़के के साथ लॉकअप में बंद प्रभु सोनकर से मुखातिब होकर बोला। प्रभु अंदर बैठा था, उछलकर खड़ा हो गया और उनके पास आकर तिवारी के पीछे दायें-बायें देखता हुआ बोला – "क...कहाँ है?"

"तुम्हारे सामने ही तो है।"

अब प्रभु ने चौंककर गोरे लड़के को देखा और बिदक गया।

"य...ये...।"

"हाँ!"

"मेरी जान पर बनी है और आपको मजाक सूझ रहा है।" वह भड़का।

"म...मैं मजाक कर रहा हूँ।" तिवारी सकपकाया।

"और नहीं तो क्या। इस जरा से पिद्दी से लड़के को लेकर आ गए और कह रहे हैं कि ये जासूस है।"

गोरे लड़के की उम्र से अक्सर लोग धोखा खा जाते थे।

"अगर तुम इसकी ऐज देखकर ऐसा कह रहे हो तो बहुत बड़े मुगालते में हो। यह दिखने में तो छोटी उम्र का लड़का ही है, पर जासूसी में पक्का बुजुर्ग है। बड़े-बड़े दिमागदार को केस हल नहीं कर पाए वो इसने किये हैं, हमारी यानी पुलिस की भी कई बार जटिल केसों को हल करने में मदद की है।"

अब प्रभु ने उसे गौर से देखा।

"ए...ऐसा।"

"हाँ! लोग इसे यूँ ही सीआईडी नहीं कहते।"

"सीआईडी ?"

"हाँ! ये सीआईडी ही है- अपने आप में पूरी टीम है। वैसे सीआईडी का मतलब है चेतन इंद्र दीक्षित।

"प...पर मैंने तो आज तक ये नाम नहीं सुना।"

"वो इसलिए क्योंकि ये प्रोफेशनल जासूस नहीं है। पत्रकार बनना चाहता है, उसी की पढ़ाई कर रहा है। नॉवेल भी लिखता है। जासूसी का शौक है इसलिए पार्टटाइम में वह भी कर लेता है।"

"य...ये इतना काबिल है?" प्रभु को आश्चर्य हुआ।

"तुम्हारी सोच से ज्यादा काबिल है।"

प्रभु सोच में पड़ गया।

फिर बोला – "ठीक है। पर मैं क्या इसी तरह बात करूंगा।"

तिवारी ने हवलदार को बुलवाकर लॉकअप खुलवाया। चेतन भीतर घुस गया। वह भी।

उस समय राणावत थाने में नहीं था, न ही घण्टा दो घण्टा आने वाला था। वह अपनी बेटी को लेकर अस्पताल गया था। तिवारी ने फोन पर यह बात बात कन्फ़र्म कर ली थी, तभी चेतन को वहां लेकर आया था। उसका कारण था कि राणावत चेतन को जरा भी पसंद नहीं करता था – उससे चिढ़ता था। पिछले कई केसों में (सीआईडी) उसने पुलिस की मदद की थी,वो भी तिवारी के कहने पर। तिवारी की सीआईडी से पुरानी वाकफियत थी राणावत पहले उसे परखना चाहता था। बाद के केसों में मदद इसलिए स्वीकारी क्योंकि पुलिस की किरकिरी हो रही थी। पुलिस केसों को हल नहीं कर पा रही थी। हल हुए केसों का सारा क्रेडिट सीआईडी को मिला था। इसी बात से राणावत के मन में उसके लिए चिढ़न पैदा हुयी थी।

ये बात सच थी कि चेतन जासूसी का काम शौकिया कर लेता था। उससे जो आमदनी होती थी उससे उसका रहने-खाने आदि के खर्चे आराम से चलते थे।

इस काम में उसका जिगरी दोस्त धर्मा-सांवला, घुंघराले बालों वाला लड़का भी मदद करता था। धर्मा-चेतन दो जिस्म एक जान थे। दोनों ही एक गाँव से बिलांग करते थे। गाँव से उन्हें मज़बूरी में आना पड़ा था। हालाँकि आना तो वैसे भी था पर जैसे आए वैसे नहीं आना चाहते थे, पड़ा। हालात ही कुछ ऐसे बन पड़े।

शहर आकर उन्होंने खुद को व्यवस्थित किया। उसी दौरान उनकी मुलाकात तिवारी से हुई। तिवारी पहले उसी क्षेत्र में तैनात था जहां उनका गांव पड़ता था। गांव में हुए एक मर्डर को साल्व करने में चेतन ने उनकी मदद की थी। तबसे दोनों में काफी याराना था। उसे सीआईडी नाम भी तिवारी ने ही दिया हुआ था।

चेतन व धर्मा की दोस्ती की नींव भी गांव के उसी मर्डर केस के दौरान ही पड़ी थी, जो आगे अब तक एक मजबूत बिल्डिंग के रूप में स्थापित हो चुकी थी – इसके बावजूद कि दोनों के स्वभाव में जमीन-आसमान का अंतर था। जहां चेतन गंभीर स्वभाव का था, वहीं धर्मा चंचल था, गुस्सैल भी बहुत था। गुस्से में साक्षात् काल नजर आता था – पर दोनों एक-दूसरे को खूब चाहते थे। एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करते थे- विश्वास करते थे।

भीतर पत्थर के ऊंचे-स्थान, जहां कैदी लोग लेटने-सोने आदि का काम करते थे, पर सब बैठ गए।

“तिवारी साहब ने तुम्हें मेरे इस जेल तक के सफर के बारे में बता ही दिया होगा।” प्रभु भूमिका बांधते हुए बोला – “कि मैं यहाँ कैसे पहुंचा।”

“हाँ!” चेतन ने कहा।

“तो फिर बताओ तुम्हें क्या लगता है?”

“मुझे लगता है... पुलिस सच कह रही है।”

“क्या।” प्रभु चौंका- “पुलिस मुझे वासु का कातिल मान रही है – मेरी सारी बातों को ड्रामा बता रही है – मालूम?”

“मेरे कहने का वो मतलब नहीं था।” चेतन ने फौरन कहा – “मेरे कहने का मतलब था कि अभी आप जो कह रहे हैं कि आपके खिलाफ साजिश हुयी है, वो भी सच है। मतलब,

दोनों में से कौन सच है, ये तो खोजबीन से ही पता चलेगा।"

"हूं!" प्रभु ने गहरी साँस भरकर छोड़ी।

"तुम्हें मेरी बात से इत्तेफाक है या नहीं?" फिर उसने पूछा।

"है तभी तो यहां हूँ।" चेतन ने पहलू बदला- "अच्छा मेरे कुछ सवालों के जवाब दीजिये।"

"पूछो।"

"आपका कहना है कि आपने खुद को दिमागदार साबित करने के लिए वासु के मर्डर का झूठा प्लान रचा। सोचा ये था कि जब पुलिस मामले की खोजबीन करती हुयी आप तक पहुंचेगी वो भी इसलिए क्योंकि आपने सारा प्लान इस ढंग से रचा था, कुछ पॉइंट ऐसे छोड़े थे, जिनकी वजह से पुलिस आप पर शक करती और आपको केस में इन्वाल्व समझकर इन्वेस्टिगेशन करती और अन्ततः आप तक पहुँच जाती जैसा कि आपका प्लान ही था, तो आप सबको अपना प्लान बताकर हैरत में डाल देते – अपने दिमाग का लोहा मनवा लेते और पहले से अपहरण कर रखे वासु को पुलिस के समक्ष उपस्थित कर देते। पुलिस आपकी बात समझ लेती – मामला खत्म। जो आपने किया हो सकता था, उसके लिए कानून आपको छोटी-मोटी सजा भी देता पर आपको वो कबूल थी।"

"हाँ!"

"लेकिन ऐन उस वक्त पर जब आप वासु मर्डर से बरी होने वाले थे, मामला उलट गया। आपको सच साबित करने वाली आपकी मजबूत और एकमात्र कड़ी वासु बकौल आपके गायब हो गया या कर दिया गया और जो भी कड़ियां थी वो भी गायब।"

"ह...हां! मेरे खिलाफ साजिश रचने वाले ने न सिर्फ वासु को गायब किया बल्कि गोली, भुल्लन, डॉक्टर, वार्ड बॉय आदि को भी गायब कर दिया।"

" आपने अपने प्लान के बारे में किसी को बताया था – जिक्र किया था?" चेतन ने गंभीरता से पूछा।

"नहीं!"

"सोचकर बताइए। शायद बताया हो?"

प्रभु सोचने लगा।

"न...नहीं!" अन्ततः उसने न में सर हिलाया।

"फिर साजिशकर्ता को आपके प्लान की भनक कैसे लगी? उसे प्लान पता था – मौजूदा हालात चीख-चीखकर ये कह रहे हैं। तभी तो वह आपके खिलाफ इतनी तगड़ी पुख्ता साजिश रच पाया।"

प्रभु बेहद गंभीर दिख रहा था। तेजी से सोचता जान पड़ रहा था।

"डायरी से।" एकाएक वह चौंककर बोला।

"डायरी से। कैसी डायरी?"

"जि...जिसमें मैंने सारा प्लान लिख रखा था।"

"आपने सारा प्लान डायरी में लिख रखा था?"

“ह...हां! मैंने सोचा था कहीं कोई गड़बड़ी न हो, इसलिए सारा प्लान मैंने एक डायरी में लिख रखा था।”

“जोकि अब गायब है।” तिवारी बोला।

ये बात उसने पुलिस को भी बताई थी। पुलिस ने उसके घर जाकर चेक किया था पर डायरी कहीं नहीं मिली थी। तब पुलिस ने यही माना था कि ये भी उसकी (प्रभु) कोई चाल है।

“ह...हां! पर दो दिन पहले मेरे कमरे में थी। मैंने खुद देखी थी।”

चेतन की नजर बराबर उसके चेहरे पर थी।

“मेरी डायरी किसी प्रकार साजिशकर्ता के हाथ लग गई और उसने मेरा बैंड बजा डाला। पता नहीं उसकी मेरे से क्या अदावत थी।”

“आपका ये भी कहना है कि दो दिन पहले फार्महाउस पर वासु के साथ मिले थे?”

“हां। ये सच है।”

“वासु वहां किडनेप कर रखा गया था तो जाहिर है, उसके खाने-पीने, रहने की सुविधा के भी इंतजाम किये होंगे?”

“हाँ!” प्रभु हिचकिचाया।

“पर पुलिस को खोजबीन में वहां ऐसा कोई चिन्ह-सबूत नहीं मिला जो ये बात साबित करे।”

“क....कैसे मिलेगा? साजिशकर्ता बहुत शातिर है। उसने कहीं कोई ऐसा सबूत नहीं छोड़ा, जो मुझे निर्दोष साबित करने में मददगार साबित हो।”

“आपने पुलिस को बताया था कि भुल्लन हिल स्टेशन से वापस रामनगर चला आया था। आगे कहीं अर्जेंट काम से चला गया था?”

“हाँ गोली ने मुझे बताया था।”

“उससे संपर्क करने का कोई जरिया नहीं है?”

उसने ‘न’ मे मुंडी हिलाई।

“जब सब सबूत गायब कर दिए साजिशकर्ताओं ने तो उसे क्या छोड़ा होगा?”

कुछ पल खामोशी से कटे।

“पुलिस, खासकर राणावत का कहना है कि ये सब आपकी बनी बनाई बात है।”

प्रभु गुस्से मे दिखा।

“उनका कहना है कि हिल स्टेशन पर मिली लाश वासु की ही लाश है। उन्होने कन्फ़र्म कर लिया है। लाश के दाएं पैर मे छ: अंगुलियां थी। वासु के भी दाएं पैर मे छ: अंगुलियां थी। उसके घर वालों से यह बात पता चली।”

“ये..ये... महज इत्तेफाक है। वरना सच यही है कि मैंने वो लाश खरीदी थी।

“आपको पहले से पता थी ये बात?”

“क...कौन सी बात?”

“यहीं कि वासु के दाएं पैर मे छ: अंगुलियां थी?”

“न...नहीं।”

“म…मामला सच मे बेहद उलझाऊ है।”

कुछ पल सब शांत रहे।

“आपकी डायरी दो दिन पहले आपके घर में थी?” सोचकर बोला चेतन –”पर अब नहीं।”

“हाँ! दो दिन बहुत होते है। किसी को मेरी डायरी मिली और न जाने उसकी मुझसे क्या अदावत थी कि उसने मेरे खिलाफ इतनी तगड़ी साजिश रच दी।”

चेतन ने ‘न’ मे मुंडी हिलाई।

प्रभु हड़बड़ाया।

“क्या?”

“अगर आपकी बात सच है कि किसी ने आपके खिलाफ साजिश रची तो ये बात गलत है कि दो दिन पहले ही साजिशकर्ता डायरी से रूबरू हुआ, क्योंकि दो दिन मे इतनी तगड़ी साजिश रचकर उसे इतनी शिद्दत से अंजाम दे पाना नामुमकिन है।”

“फिर…?”

“जरूर साजिशकर्ता को डायरी के बारे में पहले से पता था।”

“त… तो उसने दो दिन पहले डायरी क्यों गायब की?”

“ताकि पुलिस के सामने आप अपने निर्दोष होने के बारे में एक भी सबूत पेश ना कर सके। साजिशकर्ता की पूरे मामले पर नजर थी। वह सही मौके की तलाश कर रहा था। जैसे ही सही मौका आया, उसे सारे सबूतों के साथ डायरी भी गायब कर दी।”

प्रभु चक्कर मे पड़ गया।

“त..तो… फिर ऐसा ही होगा।” फिर बोला।

“अगर यह सच है तो…।” चेतन दिमाग पर ज़ोर डालते हुये बोला- “मुझे लगता है कि पुलिस की बात सच है।”

“क..क्या…क्या?” प्रभु चौंका।

“यही कि हिल स्टेशन पर मिली लाश वासु की है।”

“यह कैसे हो सकता है? व… वासु को दो दिन पहले मैंने फार्म हाउस पर देखा था।”

चेतन ने उसे गौर से देखा।

“ये भी सच हो सकता है।”

“अरे! य…ये दोनों बातें कैसे सच हो सकती है?”

प्रभु ने हड़बड़ाकर कर उसे देखा।

“आपने पुलिस से पूछताछ मे बताया कि गोली, भुल्लन आपसे काम मांगने आए थे।” उसकी बात पर ध्यान दिये बगैर चेतन कहता चला गया- “पर बातचीत के दौरान आपको लगा कि दोनों आपके प्लान को कामयाब बनाने मे मददगार बन सकते है। ये दोनों आप से तब मिले जब आप डायरी में मुकम्मल योजना लिख चुके थे और दो ऐसे लोगों की तलाश में थे, जो वासु को किडनेप करके उन पर नजर रख सकते- आगे उनसे मे एक को वासु कि शक्ल देकर हिल स्टेशन भेजकर पूरा खेल, खेल सकते। एम आई राइट?”

“य…यस।”

“मुझे लगता है कि वे दोनों अनजाने में आपसे नहीं टकराये थे, बल्कि योजनबद्ध तरीके से आपसे काम मांगने के बहाने आकर मिले थे। उन्हे अहसास था, बातचीत के दौरान वे आपको प्रभावित कर देंगे। आप उन्हे अपने प्लान मे शामिल कर लेंगे।”

“य... यानी उन्हें साजिशकर्ता ने भेजा?”

“लगता तो ऐसा ही है। साजिशकर्ता, जो कि आपकी डायरी पहले ही पढ़ चुका था और उसे मालूम था इस समय आप ऐसे दो लोगो की तलाश में है, जो आपके प्लान को पूरा करवा सकें। उसने उसी बात का फायदा उठा कर गोली-भुल्लन को आपके पास भेजा। उन्होने आपको बातों से प्रभावित किया। आपने उन्हें अपने प्लान में शामिल कर लिया। इस तरह साजिशकर्ता का पहला चरण पूरा हो गया। उसका दूसरा चरण था कि हर काम ऐसे हो कि वक़्त आने पर आप खुद को निर्दोष साबित ना कर पाये। इसके लिए उसने गोली-भुल्लन के पास फोन आदि की मौजूदगी नहीं होने दी। फोन द्वारा आपस मे बातचीत होती तो उसका रिकॉर्ड होता, जो आपकी बात को सच साबित करने के लिए एक सबूत का काम कर सकती थी। इसके अलावा भुल्लन ने बड़ी चालाकी से वासु का फ़ेसमास्क बनवाने की ज़िम्मेदारी ले ली थी और निभाई भी थी। उसका मक़सद था कि बनाने वाले डॉक्टर के बारे में आपको पता ना चले। उसने केवल डॉक्टर का नाम बोला था। जो अब पता चला कि वो फर्जी था। हिल स्टेशन पर लाश का इंतजाम करने भी भुल्लन गया था। उसने लाश का इंतजाम कैसे, किससे किया आपको सही-सही कुछ नहीं पता। जो पता है या बताया गया वो सब फर्जी है। कुल मिलाकर साजिशकर्ता ने अपनी सारी चालें बहुत ही चालाकी से, सुनियोजित ढंग से चली। आपको आपके ही प्लान के जरिए उसमें फंसा दिया। ऐन वक़्त पर वो सारे सबूत, जो होते तो आपका निर्दोष होना महज वक़्त की बात होती, पर अब वक़्त ही वक़्त की बात है, उसने गायब कर दिये, जो कि पहले से ही निर्धारित जान पड़ता है। आपके दिमाग में जो जानकारी पहुंचाई, वो सब फर्जी निकली। गोली-भुल्लन पर आपने अत्यधिक विश्वास कर लिया इसलिए मात खा गए।”

“म...मुझे क्या पता था कि मेरे साथ ही गेम हो रहा है। मैं तो ये सोचकर खुश था कि मेरा गेम सही चल रहा है।” अवाक बैठा प्रभु सोनकर उसी मुद्रा में बोला।

कुछ खामोशी तैरी।

“प...पर वो लाश वासु की नहीं है।” एकाएक जोरदार ढंग से बोला प्रभु।

“अ...आप अभी भी ऐसा समझ रहे है।” मुस्कुराया मोहनी सूरत वाला।

“मैं परसों ही उससे फार्म हाउस पर मिला था।”

“वो नकली वासु था।”

“क... क्या! नकली!” उछला प्रभु।

“जब असली दस दिन पहले मर चुका है तो नकली ही होगा।”

“मैं समझ नहीं पा रहा हूँ तुम क्या कहना चाहते हो?” झुंझलाया था प्रभु।

“मैं समझाता हूँ।” चेतन भूमिका बांधते हुये बोला-”अब जब साजिशकर्ता को आपको वासु के मर्डर में फंसाना था, तो उसे किसी तरह से वासु को हिल स्टेशन पहुँचाकर, आगे लाश बनाकर आपको सौंपना होगा। गोली-भुल्लन उसके ही आदमी थे। उसके लिए यह

ईजी रहा होगा। एक तरफ आपके साथ रहकर आपके प्लान को कामयाब बनवाने का नाटक करते रहे जबकि असल में वे साजिशकर्ता के लिए काम कर रहे थे। आपको फांसी के फंदे तक पहुंचाने का इंतजाम कर रहे थे। खैर, इसके बाद जब तक पुलिस आप तक न पहुँचती तब तक आपकी नजर में वासु को जिंदा भी रखना था, ताकि आप आश्वस्त रहें कि वासु सही सलामत है और आपका खुद को दिमागदार साबित करने वाला प्लान सक्सेस हो रहा है। इसके लिए उन्होने दूसरे शख़्स को, जो मेरे हिसाब से भुल्लन ही होगा, अर्जेंट काम बता कर कहीं चला गया था, को वासु बनाकर फार्म हाउस भिजवाया। आप दो दिन पहले उसी से मिले होंगे।"

प्रभु मुंह बाए चेतन को देख रहा था। तिवारी का भी कुछ कुछ ऐसा ही हाल था।

"अब आप सोचकर बताइये कि आपने खुद को दिमागदार साबित करने वाला प्लान- अच्छा प्लान, थोड़ा- थोड़ा रोज बना रहे थे, लिख रहे थे या पहले दिमाग मे बना लिया था और डायरी मे एक दिन में ही लिखा था?"

"प्लान के बारे में कई दिन से सोच रहा था। जब पूरा प्लान बना लिया तभी तो उसे डायरी मे लिखने का सोचा।...सोचा कहीं कोई मिस्टेक ना हो जाए।...भूल-भाल ना हो जाए इसलिए डायरी मे सारा प्लान लिख लिया था।"

"यानी एक दिन में ही?"

"हाँ!"

"ठीक! प्लान डायरी मे कब लिखा था- बहुत सोचकर जवाब दीजिएगा।"

प्रभु सोचने लगा।

"हिल स्टेशन जाने से लगभग 10-11 दिन पहले।"

"गोली-भुल्लन डायरी में प्लान लिखे जाने के कितने दिनों बाद आपसे आकर मिले?"

"पाँच-छ: दिन बाद।" प्रभु सोनकर बोला।

"आपने प्लान लिखा, उसके पाँच-छ: दिन बाद। राइट!"

"हाँ!"

चेतन बेहद गंभीर नजर आ रहा था। काम के वक़्त वो गंभीर ही रहता था बाकी टाइम मस्त।

"यानी इन्हीं पाँच-छ: दिनों के बीच आपकी डायरी किसी के हाथ लगी और उसने अपना गेम प्लान कर गोली-भुल्लन को आपके पास भेजा।"

प्रभु बहुत उत्तेजित होने लगा था।

"हूं!" बक़ौल आपके आपकी डायरी आपके बेडरूम के अंदर रखी राइटिंग टेबल की दराज में रखी थी।"

"हाँ!"

"अब बहुत ध्यान लगाकर, याद करके बताइये कि डायरी मे प्लान उतारने व गोली-भुल्लन के आपके पास आने के दरम्यान, जो पाँच-छ: दिनों का गैप था, उस दौरान आपके घर में कौन कौन आया था?"

"त... तुम्हें लगता है उ...उन्हीं मे से कोई साजिशकर्ता है?" प्रभु ने बैचेन स्वर मे कहा।

“मौजूदा हालात इसी तरफ इशारा कर रहे है।”
प्रभु ने बैचेनी से पहलू बदला।
तभी तिवारी ने गला खंखारा।
चेतन ने उसकी तरफ नजरें उठाई।
“हो सकता है कि भुल्लन व गोली सच मे प्रभु से काम मांगने आए हो।” तिवारी बोला- “बाद मे साजिशकर्ता के हाथ डायरी लगी। उसने गोली-भुल्लन को प्रभु से से ज्यादा पैसा देकर अपनी तरफ किया हो?”
“आप ये कहना चाहते है कि डायरी मे प्लान उतारे जाने के दरम्यान व गोली-भुल्लन के प्रभु से मिलने के बीच जो पाँच छः दिनों का वक़्त है, उसमे साजिशकर्ता के हाथ डायरी नहीं लगी बल्कि बाद मे लगी।”
“हाँ!”
“हूं!” चेतन सोच मे पड़ गया।
फिर प्रभु से मुखातिब होते हुये बोला- “आपने उन दोनों को प्लान के बारे में उसी दिन बताया था।”
“ह...हाँ!”
“आपने उन्हें परखने की कोशिश न की कि वो कैसे आदमी है?”
प्रभु सकपकाया।
“म...मुझे तो ठीक लगे थे। फिर मैंने तो सपने में भी नहीं सोचा था कि आगे मेरे साथ...।”
“ठीक-ठीक! भुल्लन को फेसमास्क वाला काम कब सौंपा था?”
“उसी दिन। उसने ही कहा था कि इस काम में वक़्त लगेगा।”
“वो ये काम अपने किसी परिचित से अच्छी तरह से करवा लेगा- ये भी बोला था?”
“हाँ...हाँ!”
चेतन ने तिवारी की तरफ देखा।
“अब तो पक्का हो गया है की दोनों को साजिशकर्ता ने ही भेजा था। किसी नए आदमी को प्रभु के प्लान मे शामिल होने के लिए वक़्त लगता। मतलब...वे कहते, सोचकर बताऊंगा...या इंकार कर देते-रिस्क का काम है। पर उन्होने ऐसा नहीं किया, ये इसलिए क्योंकि वे पहले से ही तैयार होकर आए थे।”
“वे पहुंचे हुये क्रिरमिनल होंगे तभी तुरंत राजी हो गए होंगे।” तिवारी बोला।
“ह...हाँ! फिर भी...उनका इतनी जल्दी प्रभु के प्लान से जुड़ना जंचता नहीं।”
तिवारी ने हिचकिचाते हुये हां में गर्दन हिलाई।
“अब याद कर बताइए, इन पाँच-छः दिनों के दरम्यान आपके घर कौन-कौन आया था?”
प्रभु दिमाग पर ज़ोर डालने लगा।
✠✠✠
चेतन तिवारी के साथ लॉकअप से बाहर निकलकर गलियारे में आया। दोनों गुफ्तगू करते हुए जब राणावत के केबिन के पास से निकले तो ठिठक गए। राणावत अपने केबिन में

था। पता नहीं कब आ गया था। वो जलती नजरों से दोनों को घूर रहा था।

तिवारी चेतन व प्रभु की इस मुलाक़ात को गुप्त रखना चाहता था, केवल तब तक जब तक वे बातें करेंगे। इसके आगे की उसे परवाह नहीं थी। फिलहाल उसका उद्देश्य पूरा हो चुका था। फिर भी वो नहीं चाहता था कि चेतन की मुलाक़ात राणावत से हो।

"वो..वो इ...इसे मैं लाया था।" राणावत को चेतन की तरफ घूरते पाकर अंतत: तिवारी बोला। स्वर मे आत्मविश्वास की कमी नजर आ रही थी।

"क्यों?" राणावत ने अब उसकी तरफ देखा।

"प्र...प्रभु ने बोला था।"

"प्रभु कौन?" राणावत बनावटी सोचभरी मुद्रा में बोला –"हमारा नया एसीपी है?"

"प्र...प्रभु सोनकर।"

"तुम उसके कहने पर इसे यहां लेकर आए?" राणावत का गुस्सा छुप ना सका-"व...वह कोई पुलिस का अफ़सर है...मिनिस्टर है...नेता है...?"

"न...नहीं।"

"फिर?"

"अपनी बेगुनाही साबित करने का सबको हक़ है।" तिवारी हिम्मत जुटाकर निडरता से बोला।

"अ...ओह हां!" तिवारी को घूरते राणावत की मुख-मुद्रा एकदम बदली और वह व्यंग्य से बोला-"मुझे ये बात मालूम नहीं थी। बताने के लिए शुक्रिया।"

कुछ पल खामोशी से कटे।

"तुम्हें लगता है कि प्रभु, जो मेरे खिलाफ साजिश हुई-साजिश, भज रहा है, सही है?"

तिवारी को जवाब नहीं सूझा।

"तुम इधर आओ।" फिर राणावत ने चेतन को बुलाया।

चेतन उसके पास पहुंचा।

"बैठो।" वह कुछ नरमी से बोला। चेतन एक विजिटिंग चेयर पर बैठ गया।

तिवारी अपनी जगह खड़ा रहा।

"हूं!" अपनी कुर्सी की पुश्त से पीठ टिकाकर राणावत गंभीर टोन में नजर चेतन के चेहरे पर टिकाते हुये बोला-"तो प्रभु ने तुमसे मिलने की इच्छा जाहीर की...तुम दोनों एक दूसरे को पहले से जानते हो? जानते ही होंगे जब...?"

"नहीं।"

"क्या, नहीं?"

"हम पहले से एक दूसरे को नहीं जानते हैं।"

"फिर...?" राणावत ने आंखे चौड़ी की।

"उसे एक जासूस की जरूरत थी।"

"जो उसके खिलाफ हुई साज़िश का पर्दाफाश कर सके...राइट?"

"ह...हां!"

“और पूरे रामनगर में तुम ही एक काबिल जासूस हो...। हर साज़िश का पर्दाफाश करने की तुम्हारे पास गारंटी है,डिग्री है,भारत सरकार का प्रमाण पत्र है...नहीं?”

चेतन ने बैचेनी से पहलू बदला।

“प्रभु ने जासूस उपलब्ध कराने की इच्छा तिवारी से जाहिर की थी और उन्होने मुझे प्रभु से मिलवाया। वे बता चुके हैं।”

“तिवारी को केवल तुम ही सबसे काबिल लगे।” राणावत ने गुस्से में तिवारी की और देखा और व्यंग्य से बोला-”लगे होंगे। तभी तो वह तुम्हें यहां लाया। बहरहाल तुम प्रभु से मिले?”

“ह...हाँ!”

“उससे बातें हुई?”

“हां!”

“हूं! तो तुम्हें क्या लगा?” राणावत उसके चेहरे पर नजरें गड़ाये हुये बोला।

“म...मुझे लगता है...।” चेतन हिचकिचाते हुये बोला-”...वैसा हो सकता है?”

“कैसा हो सकता है?”

“प्रभु के खिलाफ साज़िश हुई हो।”

“लेकिन जब उसने अपने प्लान के बारे मे किसी को बताया नहीं था तो किसी के कान मे क्या आकाशवाणी हुई थी कि प्रभु ये करने जा रहा है।”

“आप डायरी को भूल रहे है।”

“वो जो उस स्थान पर नहीं मिली जहां बक़ौल प्रभु, होना चाहिए थी।”

“मिली नहीं...इसका मतलब ये नहीं कि डायरी वहां थी नहीं। जैसे अन्य सबूत गायब कर दिए गए, वैसे डायरी भी गायब कर दी गई।...ये बड़ी बात नहीं है।” चेतन का आत्मविश्वास लौटता दिख रहा था।

“ऐसा कुछ नहीं था। पकड़े जाने पर ये सारी बातें उसने अपने मन से बना ली थी और ‘मेरे खिलाफ साज़िश हुई’-‘साज़िश हुई’, भजने लगा।

“अ...आपको लगता है उसने ये सारी बातें खड़े पैर बना ली...?”

“वो कितना शातिर है मैं जानता हूँ।”

चेतन कुछ नहीं बोला।

“वो पक्का घाघ है। वो हमें शुरू से ही गुमराह करता आ रहा है। जबकि हकीकत यही है कि उसने अपनी दोस्ती की खातिर वासु को मारा। उसे लगता था कि उसकी करतूत उजागर नहीं होगी।”

“हो सकता है कि जो आप कह रहे हैं वही सच हो।” एकाएक चेतन ने कहा तो राणावत के चेहरे की चमक बढ़ी पर चेतन आगे बोला –”पर एक मिनट अगर ये मान ले कि प्रभु जो कह रहा है वो...वो सच है तो....।”

राणावत ने उसे गुस्से से घूरा, फिर न जाने क्या सोचकर सामान्य स्वर मे बोला –”दो दिन पहले प्रभु ने डायरी सही सलामत देखी थी, पर अब वो वहां नहीं है। इसका मतलब हुआ कि इन्हीं दो दिनों के अंदर किसी के हाथ डायरी लगी.... उसे प्रभु का प्लान पता

चला... और उसने आबरा-डाबरा मंत्र पढ़कर डायरी व अन्य सबूत गायब कर दिए। तुम ये कहना चाहते हो?"

"डायरी दो दिनों के अंदर गायब हुई, इसका ये मतलब नहीं कि साज़िशकर्ता को डायरी के बारे में इन्हीं दो दिनों के दरम्यान पता चला।"

"मतलब?' राणावत ने उसे घूरा।

"मतलब ये कि उसे डायरी के बारे में,उसमे लिखे प्लान के बारे में पहले से पता था।"

"कैसे?"

"पता नहीं। पर.... सच यही है।"

"साजिशकर्ता ने डायरी पहले गायब क्यों न की?"

चेतन ने उसकी तरफ ऐसे देखा जैसे वो किसी मूर्ख की तरफ देख रहा हो।
राणावत हड़बड़ाया।

"साज़िशकर्ता ने हर काम एकदम सही समय पर किया। डायरी पहले गायब कर देते तो उसके प्लान मे, जो कि निर्विध्न जा रहा था, बाधा उत्पन्न हो जाती।"

"तुम्हें शायद ये पता नहीं कि हिल स्टेशन पर मिली लाश वासु की ही है।" एकाएक राणावत मुस्कुराया।

"मालूम है।"

"म...मालूम है फिर भी....फिर भी तुम्हें लगता है कि प्रभु जो कह रहा है वो सच है? जबकि वह कह रहा है कि दो दिन पहले अपने फार्म हाउस पर वह वासु से मिला था।"

"ये बात भी सच हो सकती है।"

राणावत ने उसे तीखी नजरों से घूरा फिर बोला- "यानी हफ्ते भर पहले मर चुका आदमी जिंदा होकर लौट आया। लौटा भी तो अपने घर न गया, बल्कि फार्म हाउस में पहुँच गया, कैद होने के लिए।"

"मैंने कब कहा कि हफ्ते भर पहले मर चुका वासु जिंदा होकर फार्म हाउस लौट आया। वो जिंदा होता तो घर जाने से पहले सीधा पुलिस के पास जाता।"

"फिर?"

"दो दिन पहले प्रभु ने जिस वासु को फार्म हाउस में देखा वो नकली वासु था।"

"न...नकली वासु?"

"हां!"

"जो कहना चाहते हो खुलकर कहो।"

तब चेतन ने जो ख्यालात प्रभु से शेयर किए थे वही सब बताए।

"हूं! यानि प्रभु ने खुद को दिमागदार साबित करने के लिए ही वासु का अपहरण करके उसे अपने फार्म हाउस में कैद करके रखा। गोली-भुल्लन के साथ मिलकर अपने प्लान को अंजाम दिया। जबकि हकीकतन गोली-भुल्लन उसे फँसाने का काम कर रहे थे। उन्हें साज़िशकर्ता ने भेजा ही इसलिए था, पर भुल्लन को वासु बनाने के लिए उसने फ़ेसमास्क वाला काम उसे ही क्यों सौंपा, खुद क्यों न किया...?"

“वह खुद को ज्यादा एक्सपोज नहीं करना चाहता था। या ये कहें कि उसे उन दोनों पर विश्वास हो गया था।”

“जबकि वे दोनों उसके लिए एकदम नए बंदे थे। नए बंदों पर ऐसा विश्वास?”

“अपने प्लान में जिन्हें शामिल करता, उन पर विश्वास तो करना ही पड़ता। फिर उसे क्या पता था कि उसके खिलाफ भी कोई प्लान रच सकता है। उसे डबल क्रॉस कर सकता है।”

“तब तो प्रभु बिल्कुल भी दिमागदार नहीं है।”

चेतन हड़बड़ाया।

“खैर, तुम्हारा कहना है कि हिल स्टेशन पर असली वासु को मारकर उसकी लाश को ही प्रभु को सौंपा गया। तब उसने लाश क्या पहचानी नहीं होगी?”

“उसे मौका ही नहीं दिया गया। साज़िशकर्ता के अनुसार ही नकली वासु बने भुल्लन ने जैसे ही लाश उसे सौंपी, उसके चेहरे पर तेजाब डालकर खराब कर दिया। दूसरे, रात के वक़्त ने भी उसका सहयोग किया।”

“जो लाश लेकर पहुंचा था, उसे तो देखा होता?”

“देखा होता तो बताता नहीं।”

“मतलब?”

“वो टैक्सी के बाहर नहीं निकला था। भुल्लन ने आगे बढ़कर लाश टैक्सी की डिक्की से निकाली थी और प्रभु के पास लेकर आया था। फिर टैक्सी वाला टैक्सी लेकर चला गया था। पैसे का पेमेंट उसे पहले ही कर दिया गया था।”

“ये भी साज़िशकर्ता के प्लान का ही एक हिस्सा था ताकि आगे चलकर प्रभु लाश सौंपने वाले के बारे में कुछ ना बता पाये।”

“और क्या! उसे केवल नाम बताए गए थे-डॉक्टर का.... लाश सौंपने वाले का.... जो फर्जी निकले। निकलना ही था। जब इतनी तगड़ी साज़िश रची थी तो इस बारे में कैसे भूल की जाती।”

“ये सारी थ्योरी तुम्हारे दिमाग की उपज है, वरना प्रभु का ख्याल कुछ हटकर था।”

“हां!” हिककिचाते हुये बोला चेतन।

“प्रभु को भी बताई होगी?”

“ह... हां!”

“बढ़िया। अब तो वह बब्बर शेर बन गया होगा। किसी कीमत पर स्वीकार नहीं करेगा कि वासु को उसने मारा।”

चेतन चौंका।

“अ....आपको अभी भी लगता है कि वासु को प्रभु ने मारा? व...वो जो कह रहा है वो सब झूठ है।उसके खिलाफ कोई साज़िश नहीं हुई?”

“लगता क्या है, यही सच है। तुमने कुछ ज्यादा दिमाग लगाकर एक नई बात सोच ली...। अच्छी बात है, पर इसका मतलब ये नहीं है कि इससे हकीकत बदल जाएगी।”

“ह...हकीकत है क्या?”

“हकीकत यही है कि वासु को प्रभु ने ही मारा है, बाकी सब बातें सिर्फ कल्पनाएं है।”

“क्यों?”

“सीधी सी बात है। करनी व वासु के अफेयर की बात प्रभु को वीर से पता लगी। उन्हें ये बात नागवार गुजरी। वे वासु को सबक सिखाने का मौका ढूँढने लगे। उसी दौरान उन्हें वासु व रतन के बीच के लफड़े का पता चला। रतन हिल स्टेशन पर वुडालेंड में रहता है, ये पता चला। ये बात प्रभु खुद ही स्वीकार कर चुका है। फिर वासु के हिल स्टेशन जाने का प्रोग्राम पता चला तो प्रभु भी उसके पीछे-पीछे वहां जा पहुंचा।”

“उसे रामनगर में भी तो सबक सिखाया जा सकता था।”

“हां! पर प्रभु को हिल स्टेशन पर सबक सिखाना मुनासिब लगा होगा, क्योंकि वहां वासु के कत्ल की सुई रतन की तरफ घूमती। वह सेफ रहता। पर वासु के कमरे मे मिली उस फोटो ने उसके सारे मंसूबे पर पानी फेर दिया। फोटो की वजह से ही वह पुलिस की नजरों मे चढ़ा। आगे इंवेस्टिगेशन में फंस गया। जिन पॉइंट्स को वह अब कहता है कि उसने जानबूझ कर छोड़े, गलत है। वे पॉइंट उसकी लापरवाही की वजह से छूटे। पकड़े जाने की वजह से वह बौखलाया हुआ है और अनाप-शनाप बक रहा है।”

“वह फोटो वासु के पास आई कहां से? सबसे बड़ी बात, वह फोटो खिंची कैसे? प्रभु तो उससे परिचित नहीं था।”

“क्या पता हो। प्रभु तो हकीकत स्वीकार करेगा नहीं। वासु अब जिंदा नहीं है। पर एक बात है जो ये साबित कर सकती है।”

“क्या?” चेतन ने चौंककर उसे देखा। यही हाल तिवारी का भी था।

“हिल स्टेशन पर वुडालेंड के डार्लिंग रेस्टोरेन्ट से जब वासु रतन से मिलकर सड़क पर आया था और वह टैक्सी उसके पास पहुंची थी, जिसमे प्रभु पहले से मौजूद था। तब वासु टैक्सी में पहले बैठने से हिचका था पर जब पीछे बैठे पैसेंजर को देखा था तो बैठ गया था।”

चेतन उसे अभी भी घूर रहा था।

“तो?” उसने पूछा।

“इस बात से साफ हो जाता है कि दोनों एक दूसरे से परिचित थे। एक बात और है जिससे यह साबित हो जाता है।”

“कौन सी?”

“रात की उस घड़ी वासु का लेक जाने के लिए रास्ते में उतरना। चूंकि प्रभु उसका परिचित था,उसके साथ था, इसलिए वह रात की उस घड़ी वहां जाने को तैयार हुआ वरना अनजान व्यक्ति के साथ परदेश में ऐसा कोई नहीं करता।”

“लेक पर जाने का प्लान वासु का ही था...आपको मालूम होगा?”

“हां! ये बात टैक्सी ड्राइवर ने बताई थी।”

“और जो मुनासिब वक़्त प्रभु चाहता था वासु को सबक सिखाने के लिए, वो किस्मत से वासु ने ही लेक पर जाने की बात कहकर उपलब्ध करा दिया।”

“अगर वो दोनों आपस में परिचित थे तो ये बात वासु के घर वालों को-दोस्तों वगैरह को तो पता होनी चाहिए?”

“ये जरूरी नहीं है कि हमारे हर परिचित के बारे में हमारे घरवालों को, दोस्तों आदि को पता हो। क्या तुम्हारे हर परिचित को तुम्हारे जानने वाले जानते है?”

चेतन हड़बड़ा कर जवाब न दे सका।

“फिर उन दोनों की जान-पहचान नई-नई हुई होगी, जिसकी पहल खुद प्रभु ने की होगी, क्योंकि उसे वासु को सबक सिखाने के लिए उसकी नज़दीकियाँ हासिल करनी होंगी। उसी दौरान वह फोटो खिंची होगी जिसके बारे में प्रभु को पता नहीं होगा या होगा भी तो वह इसलिए स्वीकार नहीं कर रहा होगा क्योंकि उसकी जानकारी में उसकी व वासु की वाकफियत के बारे में कोई नहीं जानता है।”

“हूं! पर वासु वह फोटो लेकर हिल स्टेशन क्यों गया?”

“जानबूझकर नहीं ले गया। फोटो अनजाने में वहां पहुंची। वह डायरी में रखी थी और डायरी लेकर वह गया।”

“वासु ने अपनी इस ट्रिप के बारे में घर वालों को बताया क्यों नहीं?”

“वह नहीं चाहता होगा कि रतन के साथ उसका जो लेन-देन है उसके बारे में उन्हे पता लगे।”

“वासु को रतन के बारे में कैसे पता चला कि वह वुडलैंड मे है?”

“ये बात तो वासु ही बता सकता था। बहरहाल पता चला होगा तभी तो वह वहां पहुंचा।”

“आपकी बातों से लगता है कि प्रभु व वीर दोनों ही वासु मर्डर से जुड़े है। माना दोनों दोस्त है पर प्रभु वासु का मर्डर वीर के कहने पर क्यों करेगा?”

“दोस्ती हद से ज्यादा हो तो ये बड़ी बात नहीं होती। एक दोस्त दूसरे दोस्त के लिए जान भी दे सकता है और ले भी सकता है। तुम्हें तो अच्छी तरह मालूम होगा।” राणावत मुस्कुराया।

उसका इशारा चेतन व धर्मा की दोस्ती की तरफ था।

उनकी दोस्ती वैसी ही थी जैसी राणावत ने बयान की थी।

“पर वीर तो इस बात से इंकार कर रहा है कि प्रभु ने उसके कहने पर वासु को मारा है।”

“स्वीकार करेगा तो प्रभु फांसी के फंदे पर नहीं झूल जाएगा। उसे खुद भी जेल की हवा खानी पड़ेगी।”

“आपने तो प्रभु के खिलाफ सारी थ्योरी बना रखी है।”

“मैंने नहीं बनाई। यही सच है।”

एकाएक चेतन उठ बैठा।

“अब चलूँगा।” वह बोला।

“बिल्कुल। वैसे...।” वह कुर्सी पर सीधा होता हुआ बोला-”अब क्या ख्याल है?”

“किस बारे में?”

"प्रभु के बारे में। तुम अभी भी उसकी इस बात से कि उसके खिलाफ साज़िश हुई है, इत्तेफाक रखते हो या...।"

"आपकी थ्योरी जानदार है पर...।"

"यानी तुम उसके लिए खोजबीन करोगे?" चेतन को चुप देखकर वह बोला।

चेतन चुप रहा।

"व्यर्थ ही रहेगा।" एकाएक वह ठिठका और बोला-"प्रभु ने तुम्हें कितने मे हायर किया है?"

"दो लाख।"

"फिर तो व्यर्थ नहीं रहेगा।" वह मुस्कुराया –"वह पैसा पहले से लेना। बाद में कौन देगा। वह तो स्वर्ग सिधार चुका होगा।"

"सलाह के लिए... शुक्रिया। चलता हूं।"

"बेस्ट ऑफ लक।"

"थैंक यू"

चेतन दरवाजे की ओर लंबे-लबे डग भरता चला गया।

✠✠✠

आधा घंटा पहले जोरदार बारिश होकर हटी थी। इस घड़ी दोपहर के तीन-साढ़े तीन बजे थे। बारिश की वजह से हर तरफ धुला-धुला ठंडा-ठंडा मौसम था।

आसमान में काले-काले बादलों के कुछ टुकड़े इधर-उधर गश्त सी लगा रहे थे। उनका इरादा फिर से बरसने का जान पड़ता था।

ऐसे में एक काले रंग की पल्सर बाइक सड़क पर मध्यम गति से दौड़ी जा रही थी। उस पर चेतन व धर्मा सवार थे। बाइक धर्मा चला रहा था।

कुछ देर बाद बाइक एक आयरन गेट के पास रुकी। गेट के ऊपर लगे बड़े से बोर्ड पर बड़े-बड़े हर्फ मे लिखा था-जीवन ट्रांसपोर्ट।

बाइक साइड मे खड़ी कर दोनों गेट पर पहुंचे।

गेट पर मरियल सा चौकीदार था, जो फाइबर की कुर्सी पर बैठा था पर गेट खुला था।

"मुझे जीवन साब से मिलना है।" फिर भी चेतन ने चौकीदार से पूछा।

वह तंबाकू रगड़ रहा था। उसे होंठ के नीचे दबाने के बाद कहा-"वो अंदर ऑफिस में है।"

"शुक्रिया।"

दोनों अंदर घुस गए।

अंदर बहुत जगह थी। जमीन पर पक्की लाल ईटें बिछी थी। बाउंड्री के किनारे-किनारे पेड़-पौधे लगे थे। एक ट्रक खड़ा था, जिसमें जीवन ट्रांसपोर्ट लिखा था। दोनों ने थोड़ा ठिठककर चारों ओर नजरें घुमाई। एक तरफ ऑफिस के बाहर बरामदे में लाल गमले थे, जिसमें सुंदर-सुंदर फूल के पौधे लगे थे और काफी फूल भी थे। दो-तीन गमलों में मनी प्लांट भी लगी थी, जो बहुत सुंदर लग रही थी। बारिश की बौछारों ने उस सबकी सुंदरता मे चार चाँद लगा दिये थे। देखने मात्र से मन में खुशी के भाव भरते जान पड़ते थे।

चेतन ने दरवाजे पर हाथ रखा तो पता चला वो केवल उढ़का हुआ था। चेतन ने दरवाजा खोला। भीतर कुर्सी पर बैठे 36-37 वर्षीय लंबे-चौड़े शख्स ने, जो सिगरेट के धुए से छल्ले बना रहा था, फौरन उस ओर देखकर कहा-"कहिए।"

"य....यहीं से?"

वह हड़बड़ाया, फिर उन्हे गौर से देखते हुये सिगरेट का अंतिम कश लेकर उसे ऐशट्रे में डालकर कहा-"भीतर आओ।"

दोनों भीतर पहुंचे।

"बैठो।"

दोनों मेज के इस पार पड़ी विजिटिंग चेयरों पर ढेर हो गए।

"अब कहो।" वह बोला।

"आप ही जीवन है-जीवन ट्रांसपोर्ट के मालिक?" चेतन ने पूछा।

"हां! मैं ही जीवन हूं।"

"आप प्रभु से वाकिफ होंगे?"

"कौन प्रभु?" उसने भवें सिकोड़ी।

"प्रभु सोनकर-आपके चाचाजी का लड़का।" उसकी भौहें और सिकुड़ी।

"क्यों पूछ रहे हो?"

"पहले बताइये..जो मैंने कहा वो सच है?"

उसने 'हां' में मुंडी हिलाई।

"प्रभु के वर्तमान हालातों से भी वाकिफ होंगे।"

"हां!"

"वो एक कत्ल के इल्ज़ाम मे जेल में है।"

"म...मालूम है।"

"उसे जेल मे बंद दो दिन हो गए। आप उससे मिलने तक नहीं गए। आपका कज़िन है इस लिहाज से...।"

"मैं दस दिन से बाहर था, आज ही लौटा हूं। घर ही नहीं गया, सीधे ऑफिस चला गया।"

"घर क्यों नहीं गए?"

"जरूरत नहीं समझी।"

"अ...अरे क्यों?"

"बीवी,बच्चो को लेकर मायके चली गई। उसकी सहेली की शादी है। कल फोन कर मुझे उसने बताया था।"

"इसलिए...खैर, पर प्रभु से मिलने तक न गए?"

उसने चेतन को घूरा।

"तुम कौन हो और ये सब क्यों पूछ रहे हो?" जवाब मे जीवन ने सवाल किया।

"आपको प्रभु का पूरा मामला तो पता ही है?"

“पूरा पता है-कह नहीं सकता।” जीवन रुककर बोला-”जितना तुल्लू ने बताया उतना ही पता है।

“तुल्लू?” कौन?

“बाहर बैठा वाचमेन।”

“लगता तो उल्लू जैसा है।” बीच मे धर्मा मुस्कुरा कर बोला। पर तभी जीवन ने उसकी तरफ घूरा तो उसकी मुस्कुराहट लुप्त हो गई।

“क्या बताया तुल्लू ने?” चेतन ने पूछा।

जीवन ने बताया--थोड़ा-बहुत कम इधर-उधर था बस।

“तुम लोग आखिर हो कौन? क्यों ये सब पूछताछ कर रहे हो?” जीवन थोड़ा झल्लाया।

“प्रभु को लगता है उसके खिलाफ तगड़ी साजिश हुई है। उसे फंसाया गया है। और इसलिए उसने हमें अपने साजिशकर्ता की खोज के लिए हायर किया है।”

“तुम्हें...तुम कौन हो?”

“जासूस।”

जीवन ने हैरानी से दोनों की तरफ देखा।

“शक्ल से तो नहीं लगते।” फिर वह बोला।

“क्यों-जासूसों के सर पर क्या सिंग होते है जिसे देखते ही पता चल जाता है की ये जासूस है, क्योंकि उसके सर पर सिंग होते है।” धर्मा ने चुटकी ली।

जीवन को शायद ये बात बुरी लगी पर बोला नहीं।

“हूं!” कुछ देर बाद बोला-”पर तुम मेरे पास क्यों आए हो?”

“आप नहीं चाहते कि प्रभु के साथ इंसाफ हो?” धर्मा बोला।

वह हड़बड़ाया।

“म...मैं भला ऐसा क्यों नहीं चाहूँगा? मैं तो चाहता हूं, किसी के साथ बेइंसाफ़ी न हो।”

“ये तो बड़े नेक ख्याल है आपके।”

“क्यों, नहीं होने चाहिए?”

“बिल्कुल होने चाहिए। ऐसे नेक ख्याल हर शख्स के हो जाए तो दुनिया में रामराज्य स्थापित हो जाए।” चेतन ने गला खँखारा। बोला-”मैं आपको पूरा मामला बताता हूं।”

“क्यों? मुझे क्या जरूरत है?”

“आगे सामने आएगा न।”

चेतन ने पूरा मामला बताया। अपनी नई थ्योरी भी समझाई, जिससे साबित होता था कि प्रभु के खिलाफ वाकई साज़िश हुई है।

“डायरी में उतारे जाने व गोली-भुल्लन के उसके पास आने के दरम्यान जो पाँच-छ: दिन का वक़्त है, मेरे ख्याल से इन्हीं दिनों के बीच प्रभु के घर जो-जो पहुंचे, उन्हीं में से है कोई साज़िशकर्ता।”

“हो सकता है, पर मुझसे क्या चाहते हो?” जीवन गंभीर दिखने लगा था।

“उन पाँच -छ: दिनों के दरम्यान प्रभु के घर मिलने जो लोग पहुंचे, उनमें से एक आप भी है।”

“क्या?” वह उछल पड़ा।

“हां!”

वह बैचेन नजर आने लगा।

“ये...ये ठीक है कि मैं उससे मिलने उसके घर गया था पर मैं भला उसे क्यों फंसाऊंगा?”

“वजह तो है।” चेतन ने धीमे से कहा।

“वजह है। क्या?”

“बताऊंगा। पहले आप बताइये कि आप अभी तक प्रभु से मिलने क्यों नहीं गए। वो तो आपका कज़िन है।”

“क्योंकि हमारे संबंध उतने आत्मीय नहीं है जीतने होते हैं या होने चाहिए।” कुछ रुककर बोला जीवन।

“क्यों?”

जीवन ने क्षणभर सोचा।

“मेरे पापा गांव से रामनगर रोजगार की तलाश मे आए थे। उनकी मेहनत, विश्वास और लगन से उन्होने शहर में अपना मुकाम बनाया था। तब मेरे चाचा- प्रभु के पापा, गांव में रहकर खेती-बाड़ी का काम देखते थे। वे हाईस्कूल तक ही पढ़े थे। पढ़ाई में उनका मन जरा भी नहीं लगता था। सारा दिन मटरगश्ती करते थे-खेती बाड़ी का काम भी ढंग से नहीं संभालते थे। उनका मन शहर आने का हुआ तो मेरे पापा उन्हे भी शहर ले आए। काम धंधे पर लगाया। यहां उनका मन लगा। वे धीरे-धीरे सफलता की सीढ़िया चढ़ने लगे। इधर मेरे पापा की हार्ट-अटैक से अचानक डेथ हो गई। बाद में पता चला जब बैंक का नोटिस आया कि पापा ने अपना मुकाम हासिल करने के लिए बैंक से कर्जा ले रखा था। पापा के न रहने से धंधा भी चौपट हो गया और ऊपर से बैंक का भारी कर्जा। घर-मकान, जो कुछ था, अब बैंक का कर्ज उतारने मे चला गया। हम सड़क पर आ गए। तब तक चाचा जी ने खूब तरक्की कर ली थी। हमें सहारे की जरूरत थी। माँ के कहने पर मैंने चाचा जी से कुछ रुपया उधार लिया। धंधा-पानी करके फिर से जड़ जमाने की कोशिश की पर फ़ेल हो गया। तय समय पर चाचा जी का रुपया वापस नहीं कर पाया तब उसका असली चेहरा सामने आया। वे पैसो को लेकर हम पर दबाव बनाने लगे, जबकि हमारी खस्ता हालत की उन्हे पूरी मालूमात थी। उन्होने किसी बात का जरा भी लिहाज नहीं किया। वे हमें धमकाने लगे। सबके सामने बेइज़्ज़त करने लगे। केवल उल्टी-सीधी बातें ही नहीं करते थे बल्कि गालियों से नवाजते थे। माँ को भी नहीं बख्शते थे। हम मजबूर थे-चुपचाप सब सुनते थे-सहते थे।”

“चाचा जी के इस रूप के बारे में पता होता तो उनसे रुपए कभी उधार नहीं लेता। पर अब क्या हो सकता था। एक तरफ हम अपने हालातों से परेशान थे, दूसरी तरफ चाचा का बुरा व्यवहार हमें मारे डालता था। हालातों से लड़ भी लेता पर चाचा जी का रवैया बर्दाश्त से बाहर हो रहा था। मेरे संस्कार ऐसे थे कि मैं उनसे लड़ नहीं सकता था। उन्हें जवाब तक नहीं दे सकता था। खैर जब मुझे कुछ ना सुझा तो मैंने बैंक से कर्जा लेकर फिर से

धंधा शुरू किया। इस बार किस्मत से भगवान ने हम पर तरस खाया। हमारा धंधा चल निकला। धंधे में खूब बरकत हुई। मैंने बैंक का कर्जा व चाचा जी का कर्जा सब चुका दिया। पर चाचा जी का, वो दिल को छलनी करने वाला, व्यवहार न भूल सका। पर रिश्ता हमने नहीं तोड़ा था। बुरे वक़्त में चाचा जी ने ही हमे कंगाल, भिखारी और भी ना जाने क्या-क्या कहकर हमसे रिश्ता तोड़ दिया था। जोड़ने की हमने भी कोशिश नहीं की।"

"बाद में प्रभु के पेरेंट्स की कार एक्सिडेंट में मौत हो गई।" चेतन बोला।

"हां रिश्तो में कटु व्यवहार होते हुये भी मैं व माँ उनके घर गए।"

"सामाजिकता के नाते,इंसानियत के नाते?"

"कुछ भी समझो।"

"हूं! पर-मन में गुस्सा तो जरूर रहा होगा। अभी भी होगा?"

"तुम सच कह रहे हो पर मैंने कभी जाहिर नहीं किया।"

"पर रिश्ता तोड़कर तो जाहिर कर दिया न।"

"तोड़ने की शुरुआत मैंने नहीं की थी।" जीवन ने रुककर बात आगे बढ़ाई-"फिर रिश्ता जोड़े रखने की कोई वजह भी नहीं थी। या थी?"

चेतन को जवाब नहीं आया।

"खैर, इसलिए आप प्रभु से मिलने नहीं गए।"

"हां!"

"पर प्रभु से तो आपकी मुलाक़ात होती रहती थी।"

"सम-टाइम। गाहे-बगाहे।"

"मतलब?"

"प्रभु का स्वभाव उसके पापा से थोड़ा अलग था। हालांकि उसके पापा के जीवित रहते हम लोगों में कभी मुलाक़ात नहीं होती थी। पर उनकी डेथ के बाद जब प्रभु एक-दो बार मिलने आया तो मैं भी एक-दो बार उससे मिला। मिलने पर जाना कि वो भी अपने पापा की तरह ही ऐंठ,गुरूर-घमंड वाला है।"

"इसलिए आपने प्रभु से ज्यादा मेल-जोल नहीं बढ़ाया और इसलिए आप दोनों के बीच उतनी आत्मीयता नहीं है, जितनी रिश्तों में होनी चाहिए। नहीं?"

"हां!"

"पिछली बातें-बुरी बातें याद आते ही मन में गुस्सा भरने लगता होगा... आज भी और मन बदला लेने का करता होगा?"

"ब...बदला। तुम कहना क्या चाहते हो?" जीवन चौंका।

"उस दिन आप प्रभु के घर गए तो वहां आपके हाथ उसके प्लान लिखी डायरी लग गई और..मन में बदला लेने की वर्षो से दबी इच्छा जाग गई...।"

"ए...ए..ऐ...ऐ..तुम क्या अनाप-शनाप बकते जा रहे हो।" जीवन गुस्से में हैरान होकर बोला-"प्रभु के घर पर मुझे कोई डायरी नहीं मिली और न ही मेरे मन मे उसके लिए बदला जैसा कुछ था। गुस्सा था या है तो वो प्रभु के पापा को लेकर था। क्यों था-बता ही चुका हूं।"

चेतन गंभीरता से जीवन के चेहरे को वाच कर रहा था।

चेहरा आईना होता है। मन में क्या है, सब बता देता है। बस पढ़ना आना चाहिए।

“हो सकता है आप झूठ बोल रहे हो।” चेतन चेहरे पर नजरें गड़ाए था।

“म...मैं झूठ क्यों बोलूँगा?”

“सच बोलोगे तो फंस नहीं जाओगे।”

“तुम तो प्रभु के जेल जाने के लिए सीधे-सीधे मुझे ही जिम्मेदार ठहरा रहे हो जबकि...मैं तुम्हारे हर सवाल का सही-सही जवाब दे रहा हूं। चाहू तो न दूं, तुम्हें यहां से बाहर निकाल दूं।”

“निकालिए।” धर्मा मुस्कराया।

चेतन ने फौरन उसकी जांघ पर हाथ रखकर शांत रहने का इशारा किया।

“आप जो कह रहे हैं वो एकदम सच है।” चेतन शांत स्वर मे जीवन से मुखातिब होकर बोला-”आप हमसे बात कर रहे है, हर सवाल का जवाब दे रहे है आपकी मेहरबानी है लेकिन....।”

“लेकिन?”

“लेकिन हमसे बात न करके...हर सवाल का जवाब न देकर आप खुद को शक के दायरे में करवा रहे है। ये बात आप बखूबी समझ सकते है।”

“हां! इसलिए अपना टाइम खोटा कर रहा हूं।”

वो ऐसे बोला जैसे एक मिनट भी खाली न रहता हो। जबकि घंटा भर से खाली ही था। ग्राहक का क्या पता-कब आता-कब जाता, न आता। फिर भी बैठना तो था ही।”

“फिर भी मैं कहूँगा कि आपने हमें वक़्त देकर मेहरबानी की।” जीवन नरम पड़ा।

“इतनी बात की है तो थोड़ी और करने की मेहरबानी कीजिये।”

“ठीक है।”

“आप उस दिन प्रभु के घर...।”

“उन पाँच -छ: दिनों के दरम्यान क्या मैं इकलौता शख्स था जो प्रभु के घर गया था?” बीच मे टोका जीवन ने।

“नहीं।”

“फिर सारी पूछताछ मेरे से ही क्यों?”

“ऐसा नहीं है। सबसे पूछताछ होगी। बहरहाल आप... हुज्जत न कीजिये प्लीज़।”

“ठीक है। गो अहेड।”

“आप उस दिन प्रभु के घर गए थे तो सीधे उसके बेडरूम में चले गए थे। जबकि आपने शुरू में कहा था कि आप दोनों के बीच संबंध उतने अच्छे नहीं थे, गहरी आत्मीयता नहीं थी। ऐसे में आपको ड्राइंगरूम में बैठकर प्रभु का इंतजार करना चाहिए था, जैसा कि हर मेहमान को करना चाहिए।”

“ह...हां!” जीवन हड़बड़ाया पर तुरंत संभल गया।

“व...वो दरअसल प्रभु का बेडरूम ड्राइंगरूम के पास ही है। उसका दरवाजा खुला था। मैंने सोचा प्रभु बेडरूम में है इसलिए मैं बेडरूम में चला गया।”

“जहां आपने दस-मिनट लगा दिये, जबकि प्रभु बेडरूम में नहीं था। वह उस समय बाथरूम मे था। यह बात बेडरूम में घुसते ही घर की मेड ने आकर बताई थी।”

“हां!”

“फिर भी आप बेडरूम में गए। न सिर्फ गए बल्कि दस मिनट लगा दिये।”

“तुम्हें क्या लगता है मैं बेडरूम मे जानबूझ कर गया था। क्योंकि मुझे डायरी के बारे में पहले से पता था?” जीवन ने आंखे तरेरी।

चेतन क्षणभर के लिए सकपकाया।

“फिर आपने बेडरूम में दस मिनट क्यों लगाए? बेडरूम में गए ही क्यों जबकि आपको पता चल गया था कि प्रभु बाथरूम में है? आपको ड्राइंगरूम में ही उसका वेट करना चाहिए था।”

“क्यों? म...मैं कोई अजनबी था-अपरिचित था?”

“नहीं थे तो आपको बेडरूम में घुसकर बैठने का पूरा अख़्तियार था। जबकि आप कह चुके है कि आप दोनों के बीच संबंध उतने घनिष्ठ नहीं थे जितने होने चाहिए। फिर...।”

“तुम तो बाल की खाल निकाल रहे हो। म...मैं तो बस बेडरूम का दरवाजा खुला होने की वजह से यह समझ बैठा था कि प्रभु वहां होगा इसलिए बेडरूम मे चला गया था।”

“जबकि प्रभु वहां नहीं था। कहां था, वो मेड बता चुकी थी। फिर बेडरूम में टिकने का क्या तुक है?”

जीवन ने ठंडी आह भरी।

“तुम्हारी उम्र देखकर कोई नहीं मानेगा कि तुम एक जासूस हो-पर तुम सच में जासूस हो। एक खुरार्ट। बाल की खाल निकालने में माहिर जासूस।”

“तारीफ के लिए शुक्रिया।” चेतन मुस्कुराया-”अब प्लीज़ बताइये।”

क्षण भर सोचने के बाद जीवन बोला-”बेडरूम में वो दस मिनट गुजारने के पीछे वजह थी नॉवेल।”

“न...नॉवेल?”

“उपन्यास।”

“हां! नॉवेल पढ़ने का मुझे बेहद शौक है। जब अंदर मेज पर अपने फेवरेट राइटर का नॉवेल देखा तो खुद को रोक न सका। और जाकर कुर्सी पर बैठकर नॉवेल पढ़ने लगा।”

“ऐसा था तो नॉवेल उठाकर बाहर ड्राइंगरूम में भी पढ़ सकते थे।”

जीवन ने उसकी ओर असहाय होकर देखा।

“पहले कहां मालूम था कि बेडरूम में नॉवेल पढ़कर मैं बहुत बड़ी गलती कर रहा हूं, जिसके लिए मुझे घंटो बहस करनी पड़ेगी-सफाई देनी पड़ेगी। मालूम होता तो...प्रभु के घर ही नहीं जाता।”

“आप नॉवेल के इतने शौकीन है तो सिर्फ दस मिनट ही पढ़ा।”

“क्योंकि मुझे ख्याल आया कि मैं वहां नॉवेल पढ़ने नहीं आया।”

‘दस मिनट बाद प्रभु नहाकर आपसे मिलने बेडरूम में गया तब आपको यह नेक ख्याल आया।”

उसने चेतन को घूरा।

“ख्याल मुझे उसे देखकर नहीं आया। हां ये इत्तेफाक हुआ कि प्रभु उसी समय कमरे में आया। प्रभु ने जब इतना सब बताया तो ये भी बताया होगा कि मैं उपन्यास मेज पर वापस रख रहा था, जब वह कमरे में एंटर हुआ।”

“यानी वो उस घड़ी आपके पास न भी पहुंचता तो भी आप नॉवेल पढ़ना बंद करने वाले थे-बाहर आने वाले थे क्योंकि आपको यह नेक ख्याल आ चुका था कि आप वहां उपन्यास पढ़ने नहीं आए।”

जीवन केवल उसे देखता रहा। चेहरे पर झल्लाहट के भाव उभर रहे थे।

“अच्छा वो कौन सा नॉवेल था? क्या नाम था उसका?”

“तुम्हें लगता है मेरी नॉवेल वाली बात झूठ है?”

“अ...अरे नहीं। सच है तभी तो पूछा।”

“हूं!”

कुछ क्षण खामोशी छाई रही।

“बताइये।” एकाएक चेतन बोला।

“क्या?”

“उपन्यास का नाम।”

“न...नाम।” जीवन दिमाग पर ज़ोर डालते हुये बोला-”न..नाम तो याद नहीं है।”

“कहानी के बारे मे कुछ बताइये।” चेतन ने क्षणभर के लिए, पहले धर्मा से नजरे मिलाई फिर जीवन की ओर देखकर मुस्कुराकर कहा।

“व...वो भी याद नहीं। म...मैंने केवल कुछ पन्ने ही तो पढे थे।”

“राइटर का नाम तो पक्का मालूम होगा। बहरहाल आप बोले थे कि आपके फेवरेट राइटर का नॉवेल था।”

“हां...हां वो तो याद है।” जीवन तपाक से बोला।

“तो बताइये।”

“वेद प्रकाश शर्मा।”

“तो शर्मा जी आपके फेवरेट राइटर है?”

“व...वो तो सबके फेवरेट है।”

“सही कहा। मेरे भी है।” चेतन मुस्कुराया। फिर तुरंत ही सीरियस हुआ और बोला-“अच्छा प्रभु के घर क्यों गए थे?”

“बस यूं ही। वहां से गुजर रहा था तो सोचा उससे मिल लूं।”

“कोई खास मकसद नहीं था?”

“मकसद...मकसद तो था।” जीवन हिचकते हुये बोला-”उसी वजह से प्रभु से मिलना चाहता था।”

“ऐसा क्या मकसद था?”

“मैं प्रभु से कुछ बात करना चाहता था।”

“क्या?”

“म...मैं उससे तमन्ना के बारे मे बात करना चाहता था।”
“तमन्ना-उसकी प्रेमिका। सडनली जेल न गया होता तो अब तक तमन्ना उसकी बीवी होती।”
“हां...वही।”
“वैसे, बात क्या करना चाहते थे?”
जीवन ने पलभर सोचा फिर कहा-”मुझे जब पता चला कि तमन्ना क्लब में गाती है तो मुझे बुरा लगा। मुझे लगा प्रभु को उससे दूर रहना चाहिए।”
“आपने ऐसा क्यों सोचा?”
“क्लब में गाने वाली लड़की का कैरेक्टर क्या सही होगा?”
“जरूरी तो नहीं कि गलत ही हो।”
जीवन हड़बड़ाया।
“ज...जो भी हो...पर मुझे गलत लगा था।”
“ठीक! तो आप प्रभु से यह कहने गए थे कि वह तमन्ना से दूर रहे,कोई रिश्ता न रखे-राइट?”
“हां!”
“पर प्रभु से कहा क्यों नहीं? कहा होता तो उसने बताया होता।”
“नहीं कहा।”
“क्यों?”
“व...वहां...मेरी हिम्मत नहीं पड़ी।”
“अरे क्यों?” चेतन चौंका।
“मन में ख्याल आया कि पता नहीं मेरी बात प्रभु किस ढंग से ले।...उस पर क्या रिएक्शन हो। कहीं नाराज न हो जाए।”
“ऐसा नेक ख्याल पहले न आया?” चेतन ने उसे घूरा था।
“दिमाग में पहले से ही था। मैं शुरू से ही वो बात करने को लेकर दुविधा में था।”
“जो प्रभु के घर पहुँचते ही और बढ़ गई। इतनी कि जो बात करने गए थे वो कह नहीं पाये?”
जीवन इधर-उधर देखने लगा।
“खैर, फिर आप नाश्ता-पानी कर लौट आए?”
“हां!”
“अच्छा, प्रभु का एक क्लब में गाने वाली के साथ अफेयर है,इस बारे में आपको कहां से पता चला? किसने बताया?”
“इस समय तो मुझे याद नहीं, जैसे ही याद आएगा तुम्हें सूचित करूंगा। अपना नंबर देते जाओ।” जीवन पूरी तरह से चिढ़ने लगा था।
तभी गेट पर कोई शख्स प्रकट हुआ। उसने दरवाजा खोला तो सबका ध्यान उस ओर गया।

“उसकी जरूरत नहीं। वो तो मैंने यूं ही पूछा।” एकाएक चेतन उठ बैठा-”बातचीत करने के लिए शुक्रिया।”

धर्मा भी उठ बैठा था।

दोनों वहाँ से लंबे-लंबे डग भरते हुये बाहर आए। गेट पर खड़ा शख्स अंदर आ गया।

दोनों अपनी बाइक के पास पहुंचे।

पास ही में एक ठेले पर भुट्टे भुन रहे थे।

“आओ,भुट्टा खाते है।” धर्मा की नजर उस पर पड़ी तो वह उस ओर बढ़ते हुए बोला।

चेतन पीछे-पीछे चल दिया।

दोनों को ही भुने हुये गरम-गरम भुट्टे, जिसपर नींबू के रस के साथ काला नमक हो, बहुत पसंद थे। ऊपर से ठंडक भरा बिंदास मौसम हो तो क्या कहने! दोनों ठेले के पास पहुंचे। ठेले वाला गरम अंगीठी पर भुट्टे भुन रहा था।

“भुट्टा कैसे दिया?” धर्मा ने पूछा।

“दस रुपए का।” भुट्टे वाले ने भुट्टा अंगीठी से निकाल कर ट्रे मे रखते हुये जवाब दिया।

“क्या?” धर्मा चौंका।

“दस रुपए का।”

“क्या कह रहा है?”

“लगता है आपको कम सुनाई देता है?”

“क्या बोला?” धर्मा ने दाँत पीसे।

“आपको तो सच में कम सुनाई देता है।” भुट्टे वाले ने आंखे फाड़ी।

“मुझे बराबर सुनाई देता है। समझा...।” धर्मा भड़का-”भुट्टा कहीं दस रुपए का मिलता है।”

“यहां मिलता है ना।” उसने खींसे निपोरी।

“पर...इतना महंगा।”

“क्या करे साहब।” भुट्टे वाले ने बड़ी ही मासूमियत से कहा-”इतना महंगा बेचना पड़ता है।”

“क्यों?”

“साब! पेट्रोल जो महंगा है।”

“भुट्टे का पेट्रोल से क्या कनेक्शन? क्या भुट्टा पेट्रोल से भूनते है।” धर्मा ने हैरत से कहा।

“साब! भुट्टा यहां पैदा नहीं होता।”

“यहां नहीं तो कहां होता है। अमेरिका मे?”

“अमेरिका से आया भुट्टा क्या दस रुपए में मिलता? 20-25 रुपए में मिलता। ये भुट्टे दूर-दराज के गाँव से आते है।”

“फिर इतने महंगे क्यों?”

"भुट्टे खुद चलकर नहीं आते साब। उन्हें गाड़ियों में लाया जाता है। गाडियाँ पेट्रोल से चलती है और पेट्रोल कितना महंगा है, सबको पता है। जब भुट्टा हम लोग खरीदते है तो हमसे पेट्रोल का,भाड़ा का सबका पैसा वसूला जाता है।"

"इसलिए तुम हमसे वो भाड़ा, पेट्रोल का खर्चा वसूल कर रहे हो?"

"करना पड़ता है साब।" उसने फिर खींसे निपोरी।

"तेरी गणित अच्छी है।" धर्मा मज़ाकिया टोन में बोला।

"कहां साब! गणित अच्छी होती तो क्या भुट्टे भुन रहा होता। मैं भी आपकी तरह सूट-बूट में घूम रहा होता।"

चेतन शांत खड़ा दोनों की नोक-झोंक का मजा ले रहा था। धर्मा को उसकी बकवास जला रही थी।

"ठीक है।" अब चेतन बोला-"एक भुट्टा दो।"

"ए...एक।" भुट्टे वाले ने चौंककर उसकी ओर देखा-"आदमी दो और भुट्टा एक! ये तो सरासर नाइंसाफी है बॉस।"

"है तो, पर क्या करें!" चेतन उसी के अंदाज मे बोला-"पेट्रोल जो महंगा है।"

"जी।"

"वो बाइक खड़ी देख रहे हो।" चेतन ने अपनी पल्सर की ओर इशारा किया- "उससे हमें जाना है और वो पेट्रोल से चलती है। तुम्हें तो पता ही है कि पेट्रोल कितना महंगा है।"

भुट्टे वाला युवक मुस्कुराया।

"मान गए।" फिर बोला।

"किसे?"

"आपकी नजर और...।"

"भुट्टा सुपर....।" वाक्य चेतन ने पूरा किया। दोनों हंस पड़े। धर्मा भी मुस्कराया।

भुट्टा लेकर दोनों फिर बाइक पर सवार हुये। इस बार बाइक चेतन चला रहा था। धर्मा पीछे बैठा भुट्टा चबा रहा था। बीच-बीच में चेतन को भी चबवा रहा था। दोनों एक ही भुट्टे से एंजॉय कर रहे थे। ऐसी यारी थी उनकी।

बाइक मध्यम गति से भीगी सड़क पर दौड़ रही थी।

"तुम्हें क्या लगता है?" रास्ते में धर्मा ने पूछा-"क्या वो जीवन सोनकर साजिशकर्ता हो सकता है? वैसे, मुझे तो लगता है...वही है।"

"अच्छा है...वही है।"

"अच्छा। कैसे?"

"तुमने सुना नहीं था! नॉवेल का नाम व कहानी के बारे में कुछ नहीं बता पाया था।"

"लेखक का नाम तो बताया था।"

"क्योंकि उसने केवल लेखक का नाम ही पढ़ा था इसलिए वो याद रहा।"

"तुम क्या कहना चाहते हो?"

"मुझे लगता है कि जीवन प्रभु के बेडरूम में भले ही चाहे जैसे पहुंचा हो, हो सकता है कि नॉवेल की वजह से ही मेज के पहुंचा हो, कुर्सी पर बैठा हो पर नॉवेल पढ़ा ही नहीं। उसने यूं ही मेज की दराज खोलकर देखी होगी, शायद और नॉवेलो की तलाश में। संयोग से वो डायरी हाथ लग गई, जिसमे प्लान लिखा था। उसने पूरा प्लान पढ़ लिया। प्रभु आगे क्या करना चाहता है, जान लिया। पुराना गुस्सा तो था ही मन में। उसे हवा लग गई। और उसने बाप की करतूत की सजा बेटे को देने का इरादा बना लिया।

जब प्रभु कमरे में पहुंचा तब तक वो डायरी पढ़कर उसे यथा-स्थान पर रख चुका था। अपना प्लान सोच रहा था। नॉवेल उसने बदख्याली में ही हाथों में उठा लिया होगा। एक नजर उस पर पड़ गई होगी। इसीलिए राइटर का नाम याद रहा।" कुछ रुककर बोला।

"मुझे तो लगता है कि उसने प्रभु से वो बात भी नहीं की जो करने आया था। क्योंकि तब तक उसका माइंड-सैट चेंज हो चुका था। वो प्रभु को फांसी के फंदे तक पहुंचाने का प्लान बनाने लगा था।"

चेतन खामोशी से बाइक चलाता रहा।

"तुम क्या सोचते हो?" धर्मा ने पूछा।

"मे बी, बट अभी तो इंवेस्टिगेशन की शुरुआत है। अभी किसी के प्रति ऐसी मजबूत धारणा बनाना गलत होगा।"

धर्मा ने सहमति में सर हिलाया।

कालबेल बजी।

क्षणभर बाद दरवाजा खुला। दरवाजा खोलने वाला वीर कुमार था और मेहमान थे चेतन व धर्मा, जो जीवन सोनकर के यहां से सीधे वहां पहुंचे थे। उन दोनों को देखकर वीर सोच मे पड़ गया क्योंकि वे उसके लिए नितांत अपरिचित थे।

"आर यू वीर कुमार?" चेतन ने पूछा। वह भी केवल नाम से परिचित था शक्लोसूरत से नहीं।

"यस...पर तुम लोग कौन?"

"मैं चेतन और...ये धर्मा...।" चेतन ने कहा।

"अच्छा। पर मैंने नहीं पहचाना।"

"अभी जान पहचान हुई ही कहां!" धर्मा मज़ाकिया लहजे मे बोला-"जब होगी तो पहचान लेंगे।"

"वो तो ठीक है पर...पता तो चले कि आप दोनों कौन है। मुझसे क्यों मिलना चाहते है?"

चेतन ने गला खंखारा।

"हम आपके दोस्त प्रभु सोनकर के केस के सिलसिले में आपसे कुछ बातचीत करना चाहते हैं।"

वीर चौंका। फिर पता नहीं क्या सोचकर बोला-"ठीक है। अंदर आओ।" वह एक तरफ हट गया। सब भीतर पहुंचे। कुर्सियों पर विराज गए।

"कुछ चाय...कॉफी...।" वीर ने कहना चाहा।

“नहीं, उसकी तकलीफ मत उठाइए।”

“सच में तकलीफ मुझे ही उठानी पड़ती। इस वक़्त घर पर मैं अकेला हूँ। बहन बुआ के यहां मुंबई में है। मेड खाना बनाकर थोड़ी देर पहले ही चली गई।”

चेतन ने कुछ नहीं कहा। ड्राइंगरूम में थोड़ी देर खामोशी छाई रही।

“तुम लोग प्रभु के संबंध में क्या बात करना चाहते थे?” वीर ने मौन तोड़ा।

चेतन ने पहलू बदला।

“आप प्रभु के वर्तमान हालात से तो वाकिफ होंगे ही?”

वीर ने सहमति से गर्दन हिलाई।

“सच में वो बहुत बुरा फंसा। कहां वो खुद को दिमागदार साबित करना चाहता था। कर भी लिया था पर ऐन वक़्त पर पासा पलट गया।”

“यानी आप इस बात से इत्तेफाक रखते है कि उसके खिलाफ साजिश हुई है?”

“और क्या!”

चेतन सोच भरे स्वर मे बोला-”अच्छा,क्या प्रभु ने अपने खुद को दिमागदार साबित करने वाले प्लान के बारे में बताया था? बहरहाल वो आपका जिगरी दोस्त था।”

“नहीं।”

“क्या नहीं?”

“प्लान के बारे में नहीं बताया।”

“बताया होता तो?”

वीर ने प्रश्नचिन्ह निगाहों से उसे देखा।

“मेरा मतलब था कि आप क्या करते? उसे वैसा करने से रोकते या सपोर्ट करते?”

“क...कह नहीं सकता कि क्या करता।” फिर वह हिचकते हुये बोला।

“प्रभु को वासु व आपकी बहन करनी के अफेयर के बारे में पता था। था तो खैर आपको भी। पहले उसे पता चला था। क्या उसने आपको इस बारे में बताया था?”

“न।”

“पुलिस का सोचना है कि प्रभु के खिलाफ कोई साजिश नहीं हुई। पकड़े जाने पर वो मनगढ़ंत कहानियां बना रहा है, जबकि हक़ीक़तन उसने आपकी दोस्ती की खातिर ही वासु को हिल स्टेशन जाकर मारा और इस बारे में आपको भी पता था?”

वीर ने असहाय भाव से गर्दन को हिलाया।

“मैं पुलिस को हजार बार बता चुका हूं कि जैसा वो सोच रही है वो सच नहीं है।”

“सच क्या है?”

“ज...जो प्रभु कह रहा है।”

“यानी उसने अपने जिगरी दोस्त की खातिर...।”

“सबसे पहले मैं तुम्हें बता दूं कि हम जिगरी दोस्त नहीं है बल्कि सिर्फ अच्छे दोस्त है।” वीर झल्लाया।

“ऐसा?”

“हां! और जिगरी दोस्त...कहकर ही पुलिस उल्टे-सीधे अनुमान लगा रही है।”

“पर लोग तो कहते हैं कि...।”

“अफवाहें फैलाना तो आप लोगो का काम ही है।” वीर बीच में लपका।

“यानी आपके और प्रभु के जिगरी दोस्त की जो बात है वो अफवाह है।”

“हां! हममें सिर्फ अच्छी दोस्ती है और जिसकी एक लिमिट है। इसमें एक-दूसरे के लिए जान देने-लेने जैसी कोई बात नहीं है। जिगरी दोस्ती बहुत पवित्र चीज होती है जो कि आज के जमाने में एक दुर्लभ चीज है।”

“ये तो सही बात कहीं आपने। आज के खुदगर्ज जमाने में जिगरी दोस्त वाकई में एक दुर्लभ चीज है।” चेतन सहमति में मुंडी हिलाकर बोला। फिर एकाएक ठिठका,बोला-”आपकी बड़ी बहन के अफेयर के मामले में प्रभु ने पूरी तरह साथ दिया था।”

वीर ने सुलगते नेत्रों से उसे घूरा पर गुस्से पर कंट्रोल करते हुये पूछा-”इस बात का जिक्र क्यों?”

“ब...बुरा लगा तो...सॉरी।” चेतन ने फौरन नम्रता से कहा।

वह नरम पड़ा।

“प्रभु ने साथ दिया था, इसका मतलब ये नहीं कि हम लोगों को मर्डर करना था। मुझे उस लड़के को केवल समझाना था और एक दोस्त होने के नाते प्रभु केवल मेरे साथ था। उसने कुछ भी नहीं किया था। केवल साथ था। लड़का जिद पर अड़ा था। मुझे कुछ गर्मी दिखानी पड़ी। थोड़ी बहुत हाथा-पाई हो गई। बाद में उसका एक्सिडेंट हो गया, जो महज एक दुर्घटना थी।”

“आपकी बहन ने भी तो खुदखुशी कर ली थी।”

“हाँ! वो भी एक ट्रेजडी थी। अब...अब छोड़ो इस बात को।” वीर का धैर्य साथ छोड़ने लगा।

चेतन को भी लगा वो गलत ट्रैक पर है तो इस बात को छोड़ते हुये बोला-”ठीक है। ठीक है।”

एकाएक वीर को कुछ याद आया। दिमाग को झटका देते हुये बोला-”तुम लोग हो कौन और इतनी जांच पड़ताल क्यों कर रहे हो?”

“प्रभु ने हमें अपने साजिशकर्ता को ढूँढने के लिए हायर किया है।”

“त...तुम कौन हो?” वीर गंभीर हुआ।

“डिटेक्टटिव।”

“य...यानि जासूस।” वीर चौंका।

“हां!” चेतन मुस्कुराया।

हर किसी की तरह वीर भी भोली शक्लों की वजह से मात खा गया था।

“हूं!” फिर गंभीर स्वर मे बोला-”मुझे प्रभु पर विश्वास है कि वह सच कह रहा है पर...पर एक बात मेरी समझ में नहीं आई।”

“क्या?”

“प्रभु की डायरी तीन दिन पहले गायब हुई, यानि साजिशकर्ता के हाथ लगी। पर...पर इतने कम समय में उसने इतनी बड़ी साजिश कैसे रच दी?...ऐसा तो कोई जादूगर ही कर सकता है।”

“सही कहा आपने।” चेतन मुस्कुराया-”पर सच ये है कि डायरी भले ही तीन दिन पहले गायब की गई, प्लान के बारे मे साजिशकर्ता को बहुत पहले से पता था।”

“ए...ऐसा।” वीर अवाक रह गया।

“और नहीं तो क्या। आपने खुद अभी कहा कि तीन दिन के भीतर वो कारनामा कोई जादूगर ही कर सकता है।”

“हूं!”

चेतन ने फिर थाने में हुई बातचीत यानी साजिशकर्ता ने क्या-क्या किया, वाले अपने नए खयाल के बारे में उसे तफतीश से बताया।

“साजिशकर्ता तो बड़ा शातिर जान पड़ता है।” पूरी बात सुनकर वीर के मुंह से हैरानी से निकला-”साजिशकर्ता पकड़ा न गया तो प्रभु का फांसी के तख्ते तक पहुंचना महज वक़्त की बात होगी।”

“यू आर राइट।”

“त...तुम कैसे पकड़ोगे साजिशकर्ता को? क...कुछ अनुमान है?” वीर ने चेतन व धर्मा को बारी-बारी से देखा।

“अनुमान तो है।”

“है? क्या?”

चेतन ने प्रकट किया।

वीर सोचने लगा।

चेतन ने गला खंखारा।

“डायरी मे प्लान लिखने और गोली-भुल्लन के प्रभु से मिलने के दरम्यान जो पाँच -छ: दिन का वक़्त है, उसमें प्रभु के घर आने वालों में से एक आप भी है।”

वीर ने चौंककर उसे देखा फिर संभलकर बोला-”जरूर गया हूंगा। मैं प्रभु के घर अक्सर अक्सर आता-जाता रहता हूं।”

“क्योंकि अच्छे दोस्त है?”

“हां! लेकिन...डायरी-वायरी...प्लान...व्लान आदि के बारे में मुझे कुछ जानकारी नहीं थी। ह...होती भी तो मैं भला प्रभु के खिलाफ ऐसी घिनौनी साजिश क्यों रचूंगा?”

“वजह तो है।” चेतन ने धीरे से पलकें उठा कर कहा।

वीर ने हैरानी से उसे देखा। घूरा।

“क्या वजह है?” फिर चिढ़कर कर बोला।

“आपके पिताजी के धंधे में घाटा आया था, जिससे उबरने के लिए उन्होने प्रभु के पापा से कुछ पैसा कर्जा लिया था। पर किस्मत की मार! वो पैसा भी डूब गया और वे कर्जा समय पर लौटा नहीं पाये। प्रभु के पापा सारी दोस्ती भुलाकर उन्हें उल्टी-सीधी बातें

सुनाने लगे, जलील करने लगे-जो आपके पापा बर्दाश्त न कर सके और हार्ट अटैक से परलोकवासी हो गए। बाद में आपने बैंक आदि से लोन लेकर कर्जा पटाया था।"

"किसने बताया ये सब?" वीर ने सपाट स्वर मे पूछा।

"प्रभु ने।"

"उसने ही कहा था कि उसे जेल तक पहुंचाने वाला मैं हूं या हो सकता हूं।"

"उसने तो किसी का नाम नहीं लिया। उसे किसी पर शक नहीं था। बिना किसी आधार के,रास्ते के, इंवेस्टिगेशन बहुत मुश्किल है। जब मैंने बताया कि साजिशकर्ता डायरी मे प्लान लिखने व गोली-भुल्लन के उसके पास आने के दरम्यान जो पांच-छ: दिनों का वक़्त है, उसी में उसके घर आए शख्स में से कोई हो सकता है तो उसने घर आए कुछ लोगों के बारे में बताया था।"

"उसे उन कुछ लोगों के नाम याद रहे, जबकि वक़्त पंद्रह-बीस दिन के ऊपर हो गया है।"

"दिमाग पर ज़ोर डाला न। फिर सामने फांसी का फंदा भी तो दिखता होगा। या नहीं दिखता होगा?"

वीर की गर्दन स्वमेव 'हां' में हिली।

कुछ पल खामोशी छाई रही।

"तुमने मेरे पापा को लेकर जो ट्रेजडी,वजह बताई, उस वजह से मैं साजिशकर्ता...?" वीर ने चेतन को देखा।

"प...पक्का नहीं। लेकिन ...मे बी। बहरहाल आपके दिल में प्रभु के पापा के लिए प्यार तो होगा नहीं?"

"तुमने सही कहा।" वीर सोच भरी मुद्रा में 'हां' में गर्दन हिलाते हुये बोला-"प्रभु के पापा के लिए मेरे दिल में उस घटना के बाद से कभी सम्मान नहीं रहा। उस वक़्त तो मेरे मन में इतना गुस्सा था कि लगता था कि कुछ उल्टा-सीधा कर बैठूँगा। पर...हिम्मत नहीं जुटा सका।"

"तो अब जुटा ली।"

वीर ने एक नजर चेतन पर डाली फिर सामान्य स्वर में कहा-"किसी के सोचने पर कोई पाबंदी नहीं है। पर हकीकत यही है कि मैं इस विचारधारा,बाप की करतूतों का फल बेटे को भोगना चाहिए, का समर्थक नहीं हूं। होता तो प्रभु मेरा दोस्त नहीं, जानी दुश्मन होता।"

"क्या पता हो। पुरानी नफरत दिल में सुलगती रही हो। जब डायरी हाथ लगी तो नफरत को हवा मिल गई और आपने अपना खेल खेल दिया। बहरहाल आप उन पांच-छ: दिनों के दरम्यान-तारीख में कहूं तो 2 से 7 के बीच प्रभु के घर गए थे।"

"ह...हां!"

"कितनी बार?"

"ठीक से याद नहीं।"

“मैं बताता हूं। आप 2 और 3 तारीख को गए थे, यानि दो बार। पहली बार तब जब प्रभु के घर उसके ताऊ का बेटा जीवन आया था। उसके जाने के बाद पहुंचे थे, तब केवल आधे घंटे में प्रभु से बातें करके लौट गए थे। तीन तारीख को जब पहुंचे थे, तब प्रभु घर पर नहीं था। वह तमन्ना को छोड़ने गया था। उस समय मेड किचिन में मौजूद थी। उसके बताने पर आपने प्रभु को फोन लगाया तो आपको पता चला था की तमन्ना को छोड़कर प्रभु घर आ रहा है। वह रास्ते में था।”

“हां! ये सही है।”

“फिर आपने प्रभु के बेडरूम में जाकर उसका वेट किया था। आपका चूंकि अक्सर आना-जाना था-प्रभु से जिगरी-अच्छा याराना था तो मेड ने कुछ नहीं कहा। वह आपसे अच्छी तरह परिचित थी।”

“य...ये बात भी सही है।”

“सही है तो बताइये आप बेडरूम में क्या कर रहे थे, जहां आप बीस-पच्चीस मिनट रहे?”

“अंदर जाकर मैं पलंग पर लेट गया था। आंखें बंद की तो नींद आ गई थी। प्रभु ने आकर जगाया था।”

“नींद की वजह क्या थी?”

वीर ने गहरी सांस भरकर छोड़ी।

“अ...अब मैं क्या कहूं। आ गई तो आ गई।”

“हूं!”

फिर चेतन उठ बैठा। धर्मा भी खड़ा हो गया।

“चलते हैं। समय देने के लिए शुक्रिया।”

दोनों वहां से रुखसत हो गए।

वीर अपनी जगह विचारमग्न बैठा रहा।

बाहर जब दोनों बाइक के पास पहुंचे तो काले बादलों ने आकाश में अपना डेरा पूरी तरह जमा लिया था, रह-रहकर गरज रहे थे। बिजली चमक रही थी। बारिश किसी भी वक़्त हो सकती थी। शहर की जगमग-जगमग लाइटें ऐसे में खूब भा रही थी।

“अब कहां चले?” धर्मा ने बाइक पर बैठते हुये पूछा।

“अभी तो घर चलो।” पीछे बैठते हुये चेतन ने जवाब दिया।

फिर बाइक आगे बढ़ गई। मुख्य सड़क पर आते ही बाइक भारी वाहनों की भीड़ में गुम सी हो गई।”

घड़ी में सुबह के सात बजे थे।

चेतन व धर्मा दोनों ‘मधुमती अपार्टमेंट’ के सामने खड़े थे। दोनों लंबे-लंबे डग भरते हुए रेसेप्शन पर पहुंचे। काउंटर पर एक मोटा लड़का बैठा था, जिससे उन्होने कुछ पूछा और लिफ्ट की तरफ बढ़ गए।

लिफ्ट से वे सबसे ऊपरी मंजिल,सातवी मंजिल पर पहुंचे। लिफ्ट से निकले तो लंबे से गलियारे में आ गए। गलियारे के दोनों तरफ फ्लेट थे।

603,604,605,606,607, वे फ्लेट नंबर पढ़ते हुए आगे बढ़ते हुये 609 नं. फ्लेट के सामने रुके।

आगे बढ़कर चेतन ने बेल पुश की।

अंदर काफी देर तक बेल बजती रही फिर बंद हो गई। नतीजा सिफर।

चेतन ने दोबारा बेल पुश की। इस बार भी बेल बजकर बंद हो गई। अंदर कुछ खटर-पटर की आवाज उभरी।

वेट किया गया।

इस बार दरवाजा खुला। खोलने वाली तमन्ना थी जो नाइट ड्रेस में अलसाई सी लग रही थी।

"गुड मॉर्निंग।" चेतन मुस्कराया।

गेट पर नितांत अजनबी को देखकर पहले वो चौंकी फिर संभलकर बोली-"ग...गुड मॉर्निंग।"

"आपकी नींद में खलल डालने के लिए माफी चाहते हैं।" तमन्ना के स्वर में अनमने से भाव को चेतन ने साफ पढ़ लिया था, इसलिए वह नम्रता से बोला।

"पर क्या करें! देर से आते तो आप क्लब चली जाती इसलिए...।"

"क...कौन हो तुम लोग?" दोनों पर नजर डालते हुये उसने पूछा। माथे पर बल साफ दिखाई दे रहे थे।

"हम प्रभु के दोस्त है।" जवाब धर्मा ने दिया।

"प्रभु।"

"प्रभु सोनकर।" बीच में चेतन बोला।

तमन्ना की आंखे सिकुड़ी।

"प...पर मुझसे क्या काम है?" उसने पूछा।

"कुछ बातचीत करनी है।"

"क्या?"

"जो प्रभु की ज़िंदगी बचा सकती है।"

तमन्ना ने दोनों को घूरा।

"अगर आपको ऐतराज न हो तो अंदर बैठकर बातें करे? थोड़ा समय लगेगा।"

"ठ...ठीक है। कम इन।" तमन्ना ने सोचकर जवाब दिया और दरवाजा खुला छोड़कर भीतरा की तरफ बढ़ गई।

दोनों अंदर घुस गए।

अब वे भव्य ड्राइंगरूम मे थे।

सब सोफ़ों पर विराज गए। दोनों की नजरें पूरे ड्राइंगरूम में फिरी। वह सच में भव्य था। महंगा फ्लेट था। पर एक क्लब में गाने वाली इतने महंगे फ्लेट को अफोर्ड नहीं कर सकती थी। लेकिन प्रभु की होने वाली बीवी जरूर अफोर्ड कर सकती थी।

वह फ्लेट प्रभु ने ही उसे उपलब्ध कराया था। तमन्ना ने गला खंखारा। दोनों की तवज्जो उसकी तरफ गई।

"तुम्हें कैसे पता कि मैं यहां रहती हूं-आठ बजे क्लब जाती हूं?" तमन्ना ने पूछा।

"दरवाजे पर मैंने बोला नहीं था कि हम प्रभु के दोस्त है।"

"तो?"

"समझो।"

तमन्ना सोचने लगी।

"यानी प्रभु ने बताया।" फिर बोली-"पर प्रभु तो जेल में है। फिर उसने तुम्हारा कभी जिक्र नहीं किया।"

"कैसे करता। मुलाक़ात तो कल ही हुई है।"

"कल?"

"हां!"

तमन्ना के चेहरे पर हैरानी के भाव आए।

"आप हैरान न हो, मैं सब समझाता हूं।" चेतन ने फिर सारी बात बताई कि वह प्रभु को कैसे मिला और उसके लिए खोजबीन करता फिर रहा है।

"आपको प्रभु की इस बात से कितना इत्तेफाक है कि उसके खिलाफ साजिश हुई है।" चेतन ने पूछा।

"पूरा।" वह फूल कॉन्फ़िडेंस के साथ बोली।

"खुद को दिमागदार साबित करने के लिए प्रभु ने जो प्लान बनाया था, उसके बारे में आपसे जिक्र किया था?"

"न...नहीं।"

"फिर आप ये बात इतने कॉन्फ़िडेंस के साथ कैसे कह सकती है कि प्रभु जो कह रहा है वो सच है।"

वह हिचकिचाई।

"क्योंकि मुझे उस पर पूरा विश्वास है।" फिर वह संभलकर बोली।

"प्रभु का कहना है कि उसने अपने प्लान के बारे में किसी से जिक्र नहीं किया। जब आप को ही नहीं बताया तो किसी और को क्यों बताएगा पर फिर किसी को उसके प्लान के बारे में पता कैसे चला?'

"तुम्हें जब सब पता है तो ये भी पता होगा कि प्रभु ने वो सारा प्लान डायरी में उतार लिया था ताकि कोई भूल-चूक न हो। या ये कह सकते हैं उसने पहले होमवर्क कर लिया था।"

"ठीक! आगे।"

"पर वो डायरी अपनी जगह से गायब पाई गई थी, जबकि तीन दिन पहले डायरी अपनी जगह थी।"

"यानी वो डायरी किसी के हाथ तीन दिन पहले लगी और उसने इतनी बड़ी साजिश रच दी।" चेतन मुस्कुरा कर बोला।

"अ...और क्या!"

"इतने कम समय में साजिशकर्ता इतनी बड़ी साजिश को कैसे अंजाम दे पाया?"

वह सकपकाई फिर संभलकर बोली-"कर लिया तभी तो सफल हुआ। फिर उसे करना ही क्या था-तीन-चार लोगों को गायब करना क्या बड़ी बात है।"

"सही कहा। पर भुल्लन तो पहले ही कहीं चला गया था-कोई अर्जेंट काम बताकर। उसे तो सामने आकर प्रभु की बात को सिद्ध करना चाहिए।"

"उसे भी साजिशकर्ता ने गायब कर दिया होगा।"

"उस तक वो पहुंचा कैसे होगा?"

"गोली को उसने थामा होगा। उससे ज़ोर जबरदस्ती कर पूछा होगा भुल्लन के बारे में। बहरहाल वह गोली का दोस्त था, उसे पता होगा कि भुल्लन कहां है। फिर उसे थामा होगा। जैसे बाकी सब को गायब किया वैसे भुल्लन को भी गायब किया होगा।"

एकाएक ठिठकी वह फिर बोली-"तुम लोग उसके फ़ेवर में खोजबीन कर रहे हो या उसे फांसी के फंदे पर पहुंचाने के लिए?"

"आप ऐसा क्यों सोच रही है?"

"तुम्हारी बातचीत से ऐसा लगा।"

"ऐसा कुछ नहीं है। हमें लगता है कि प्रभु के खिलाफ साजिश हो सकती है इसलिए हम खोजबीन कर रहे हैं। पर जैसा आप सोच रही हैं कि तीन दिन पहले किसी ने डायरी पढ़ी और प्रभु के खिलाफ साजिश रच दी सही नहीं है।"

"फ़ी...फिर सही क्या है?" उसने चौंककर चेतन के चेहरे पर नजरें गड़ा सी दीं।

चेतन ने अपने ख्यालात के बारे में बताया, जो वह प्रभु को, राणावत को, वीर को व आनंद आदि को बता चुका था।

पूरी बात सुनकर तमन्ना सन्न रह गई।

पर तब तो उछल पड़ी जब चेतन ने धीरे से कहा-"उन पांच-छ: दिनों के दरम्यान आप भी प्रभु के घर गई थी।"

"त...तुम्हें लगता है...मैंने प्रभु के खिलाफ साजिश रची?" तमन्ना बौखलाए स्वर में, थोड़े गुस्से में बोली।

"अरे नहीं। आप गलत समझ रही हैं। भला आप ऐसा क्यों करेगी? ऐसे अपने पैरों पर कुल्हाड़ी कौन मारता है। प्रभु जेल न जाता तो आपका प्रभु की बीवी बनकर करोड़पति बनना महज वक़्त की बात होती।"

"फिर?"

"वो तो मैंने इसलिए कहा कि आप प्रभु के यहां गई थी... दो घंटे तक रुकी थी। उस दौरान कोई ऐसा व्यक्ति वहां पहुंचा हो जिसके बारे में आप हमें बता सकें। प्रभु को तो कुछ खास याद नहीं इस बारे में। वह बहुत डिस्टर्ब चल रहा है-मालूम ही है आपको। वह किसी पर भी शक की अंगुली नहीं उठा रहा। ऐसे में साजिशकर्ता को ढूंढना बेहद मुश्किल है...।"

तमन्ना सोचने लगी।

"जब तक मैं वहां रही तब तक तो वहां कोई नहीं था केवल मेड के अलावा।" फिर सोचकर बोली।

"बीच में प्रभु आपके लिए कोल्ड ड्रिंक, पिज्जा लेने बाजार गया था, जहां से उसे आने-जाने में बीस मिनट लग गए थे। उस दौरान आप बेडरूम में अकेली थी।"

"ह...हां! लेटे-लेटे मुझे हल्की नींद आ गई थी। एक तो क्लब से रात में देर से लौटी थी। कोई खास मेहमान थे जिनकी वजह से मैनेजर के कहने पर मुझे थोड़ा ज्यादा समय वहां स्पेंड करना पड़ा। दूसरे, सुबह के प्रोग्राम के बाद प्रभु मुझे क्लब से सीधे अपने घर ले आया था।"

"हो सकता है उसी दौरान कोई कमरे में पहुंचा हो और डायरी पढ़ी हो?"

"नींद में जरूर थी पर इतनी नहीं कि कोई कमरे में आता और मुझे पता न चलता। प्रभु के कमरे में घुसते ही मैं जाग गई थी और उठ बैठ थी।"

तभी अंदर बेडरूम में हल्की खट-पट की आवाज उभरी।

"आपको किसी पर शक है जो साजिशकर्ता हो सकता है?" चेतन ने सोचकर पूछा।

उसने 'न' में गर्दन हिलाई।

"मेरा वास्ता सिर्फ प्रभु से है। इसके अलावा वीर को जानती हूं, जो प्रभु का अच्छा दोस्त है। ऐसे में मैं किसी पर शक...।"

चेतन ने गले पर हाथ फेरा।

"थोड़ा पानी मिलेगा?" चेतन ने ऐसा मुंह बनाया जैसे गले में कुछ फंस गया हो।

तमन्ना उठकर किचिन मे चली गई।

चेतन बड़ी फुर्ती से उठा और बेडरूम की तरफ लपका। बेडरूम के दरवाजे को धीरे से खोला और भीतर झांका और फिर दरवाजा बंद करके अपनी जगह आकर बैठ गया।

उसकी इस हरकत पर धर्मा भी चौंक गया था।

मन में कौतूहलता ने शोर मचाना शुरू कर दिया था। तभी तमन्ना कांच के गिलास में पानी लेकर लौटी।

"लो।"

चेतन ने फौरन गिलास थामा और गट-गट पानी पी गया।

"थ...थैंक्यू।" गिलास वापस उसे देते हुये उसने आभार प्रकट किया।

फिर वह उठ बैठा।

"अच्छा। चलते है।"

"दोनों वहां से रुखसत हो गए। दोनों फ्लेट से निकलकर गलियारे में आ गए। पीछे तमन्ना द्वारा फ्लेट का दरवाजा बंद किए जाने की आवाज उन्हें साफ सुनाई पड़ी।

"तुमने पानी का बहाना बनाया था, जबकि मकसद था वहां से तमन्ना को हटाना। क्यों मैंने सही कहा ना?" धर्मा ने पूछा।

चेतन मुस्कुराया।

"और तुमने ये सब उसके बेडरूम में जाने के लिए किया था।"

चेतन चुप रहा।

"...पर इस हरकत के पीछे वजह क्या थी?"

"मुझे लगा था कि बेडरूम में कोई है।"

“बीच में बेडरूम से कुछ खट-पट जैसी आवाज उभरी थी-तुमने उसी से ये अंदाजा लगाया था?”

“हां! मुझे लगता है कि जब हम यहां पहुंचे थे तब फ्लेट के अंदर कोई और भी था। फ्लेट का दरवाजा खोलने में तमन्ना को उसी की वजह से देर हुई।”

“तुम्हें बेडरूम में कोई दिखा?”

“न...नहीं।”

“तब तो ये तुम्हारा वहम है। वैसे भी, तमन्ना यहां अकेले रहती है।”

“पर बेडरूम की खिड़की खुली थी।”

“तो? क्या तमन्ना खिड़की खोलकर नहीं लेट सकती?”

“खिड़की क्यों खोली होगी?”

“हवा खाने के लिए।”

“हवा खाने के लिए?”

“और नहीं तो क्या तारे गिनने के लिए?”

“जबकि कमरे में ए.सी. लगा है।”

धर्मा ठिठका।

दोनों लिफ्ट तक पहुंच चुके थे फिर उसमे सवार हो गए। फ़र्स्ट फ्लोर का बटन दबाते ही लिफ्ट नीचे सरकने लगी।

“ह...हो सकता है एसी खराब हो।” धर्मा सोचकर बोला-”या अचानक खराबी आ गई हो और गर्मी की वजह से...।”

“कल पूरे दिन रूक-रूक कर बारिश होती रही। मौसम एकदम ठंडा था।” चेतन ने याद दिलाया।

“हूं! त...तो यूं ही खोल ली होगी बाहर का नजारा करने के लिए।”

“यानी तुम्हें लगता है कि वो मेरा वहम था। कमरे में कोई नहीं था?”

“था तो गया कहां?”

“खिड़की खोलकर गायब हो गया।”

धर्मा ने उसकी तरफ ऐसे देखा जैसा चेतन ने कोई मूर्खतापूर्ण बात की हो।

“तुम्हें लगता है कमरे में जो कोई भी था, उसने खिड़की खोली और नीचे छलांग लगा दी, जबकि तमन्ना का फ्लेट सातवें माले पर है।”

चेतन हड़बड़ाया।

“हो सकता है रास्ते में उसके पंख लग गए हो।” धर्मा ने व्यंग्य कसा-”और वो मल्हार गाता हुआ आकाश में उड़ गया हो।”

लिफ्ट नीचे पहुंची। दोनों बाहर आ गए।

“मैंने यह नहीं कहा कि उसने खिड़की से नीचे छलांग लगा दी होगी।” चेतन ने सफाई दी।

“तो फिर उसने सीढ़ी लगा रखी होगी। पर उतनी लंबी सीढ़ी रामनगर में मिलना तो मुश्किल है। जरूर विदेश से मंगाई होगी या यहीं ऑर्डर पर बनवाई होगी।”

"आओ बिल्डिंग के पीछे चलते है।" चेतन उसकी बात पर ध्यान दिये बगैर आगे बढ़ गया। धर्मा मुस्कुराता हुआ उसके पीछे लपका।

दोनों घूमकर बिल्डिंग के पीछे पहुंचे।

"वो जो कोई भी था, इस रेन पाइप की सहायता से गायब हुआ।" पीछे बिल्डिंग में रेन पाइप लगा था, जो सातवे माले तक जाता था। उसी को देखकर चेतन उत्साह में बोला।

धर्मा को जवाब नहीं आया। वह सोचता रहा फिर पाइप के पास पहुंचकर उसे ऊपर से नीचे तक गौर से देखा।

"तुम्हारा अनुमान गलत है। तमन्ना के कमरे में कोई नहीं था।"

"क...कैसे?"

"तुम्हारे हिसाब से कमरे में जो कोई भी था वो इस रेन पाइप की सहायता से नीचे उतरा-बिना यह परवाह करते हुये कि दिन का वक़्त है, आसपास के फ्लेटों में रह रहे लोगों द्वारा वह देखा जा सकता है। पर...अगर ऐसा होता तो रेन पाइप पर उसके जूतों के, चप्पलों के या पैरों के रगड़ के निशान तो होने ही चाहिए थे?" धर्मा ने बहुत काबिल जासूस की तरह गर्दन अकड़ाकर उसे देखा।

जबकि चेतन गंभीर था। रेन पाइप का ऊपरी सिरा जो सांतवे माले की छत तक जाता था-तमन्ना के फ्लेट की खिड़की के पास से गुजरता था। एकाएक वह चहकता हुआ बोला-"निशान इसलिए नहीं है क्योंकि वह नीचे आया ही नहीं।"

"आसमान में उड़ गया, क्योंकि उसे जब जी चाहे खुद के पंख लगा लेने की सहूलियत हासिल थी।"

"आसमान में उड़ नहीं गया बल्कि वो छत पर गया।" धर्मा ने ऊपर देखा।

"छत पर क्यों? क्या उसे मालूम था कि हमें उसके बारे में पता चल जाएगा और हम रेन पाइप चैक करेंगे?"

"अनुमान होगा तभी तो ऊपर छत पर गया। आओ, छत पर चलते है।" चेतन आगे बढ़ गया।

"छत पर न हुआ तो?" धर्मा पीछे लपकते हुए जल्दी से बोला। पर चेतन ने कोई जवाब नहीं दिया।

वे घूमकर वापस आए फिर लिफ्ट से सांतवे माले पर पहुंचे। लिफ्ट से निकलकर लंबे गलियारे में पहुंचे। लंबे-लंबे डग भरते हुए आगे बढ़े। गलियारे के अंत में ऊपर छत पर जाने के लिए सीढ़ियाँ थी। दोनों झटपट सीढ़ियाँ चढ़ गए। आखिरी सीढ़ी पर पहुंचकर दोनों ठिठके। दरवाजा उनकी तरफ से बंद था।

चेतन ने कुंडी खोली और फिर दरवाजा। दोनों अब ऊपर छत पर थे। छत पर कोई नहीं था।

"यहां तो कोई नहीं है। अगर कोई ऊपर आया होता तो यहां होता। यहां से बाहर नहीं जा सकता क्योंकि दरवाजा दूसरी तरफ से बंद था।" धर्मा ने कहा।

चेतन बिना बोले रेनपाइप तक पहुंचा। पिछवाड़े झांका,मुस्कुराया।

"क...क्या हुआ?" धर्मा चौंककर बोला और लंबे-लंबे डग भरकर उसके पास पहुंचा।

"देखो।" धर्मा नजदीक पहुंचा तो चेतन ने नीचे की तरफ इशारा किया।
धर्मा ने देखा। वह सन्न रह गया।
पाइप में जूतों आदि के रगड़ के निशान बने थे। जो ऊपर की तरफ थे।
"अ...अब बोलो?" चेतन मुस्कुराया।
"त...तुम सही थे। पर...ऊपर तो कोई नहीं है।"
"वह यहां से जा चुका है।"
"कैसे? सीढ़ियों वाला दरवाजा तो अंदर से बंद था।"
"हो सकता है। पहले कुंडी खुली हो या उसने पहले से ऐसा इंतजाम कर रखा होगा कि बाई चांस ऐसी नौबत पड़े तो...।"
"त...तब तो वह बहुत शातिर हुआ।"
"या...कुंडी खोली गई हो।"
"ख...खोली होगी? किसने? तमन्ना ने?"
"और कौन खोलेगा?"
"उसने तमन्ना को मोबाइल से फोन कर अपने बारे में बताया होगा...।"
"हो सकता है। या तमन्ना ने खुद ही अनुमान लगा लिया हो और हमारे यहां से रुखसत होते ही कुंडी खोली हो आकर। वैसे एक अनुमान और भी है।"
"क्या?"
"वो रेनपाइप से नीचे उतर कर फ्लेट की खुली खिड़की से वापस बेडरूम पहुंचा हो।"
धर्मा ने नीचे झांका।
"तब तो दिलेर भी होगा। इतनी ऊंचाई से वैसा दो बार कोई दिलेर ही कर सकता है। पर वो कौन हो सकता है-तमन्ना से क्या वास्ता है? तमन्ना तो प्रभु की लवर है। वह एकाएक जेल न चला जाता तो उसकी बीवी होती।"
"इन सवालों के बारे में अभी जवाब कहां?"
एकाएक धर्मा चौंका।
"क्या ये नहीं हो सकता कि वो अभी भी तमन्ना के फ्लेट में ही हो?" धर्मा बोला।
"आइडिया बुरा नहीं है। आओ देखते हैं।" चेतन फुर्ती से गेट की तरफ बढ़ गया। पीछे-पीछे धर्मा भी लपका।
दोनों सरपट नीचे गलियारे में पहुंचे। गलियारे में कोई नहीं था। दोनों दबें पांव बिल्ली की मानिंद तमन्ना के फ्लेट के दरवाजे के पास पहुंचे। दरवाजे पर कान चिपका दिये। पर भीतर कोई आवाज नहीं उभरी। फिर वे लिफ्ट की तरफ बढ़ गए।
"ये जरूरी तो नहीं कि वो तमन्ना के फ्लेट में अभी भी घुसा बैठा हो। मेरे ख्याल से तो चला गया होगा।" धर्मा लिफ्ट की तरफ बढ़ते हुए बोला-"य...या ये तुम्हारा वहम ही हो कि तमन्ना के बेडरूम में कोई था।"
"रेनपाइप में जूतों के घिसटने से बने निशान देखे थे न?"
"ह...हां हो सकता है, वे निशान किसी और चीज के हो।"
"किसके?"

फिर धर्मा सोचने लगा। दोनों लिफ्ट के नजदीक पहुंच चुके थे। देखते ही देखते उसमें सवार हो गए और ग्राउंड फ्लोर की तरफ लिफ्ट सरकने लगी।

अगर वो शख्स नीचे गया होगा तो रेसेप्शन पर बैठे लड़के ने जरूर देखा होगा।" चेतन बोला।

धर्मा ने उसकी तरफ देखा पर कहा कुछ नहीं। लिफ्ट नीचे पहुंची। दोनों उससे निकलकर सीधे रेसेप्शन पर पहुंचे।

"हैलो...हैलो।" काउंटर पर बैठा 28-29 वर्षीय थुल-थुल शरीर का मालिक लड़का ऊंघ रहा था। चेतन ने दो-तीन बार बुलाया, वह टस से मस नहीं हुआ।

"तुम्हें लगता है इसने उसे देखा होगा? ये तो खुद ही गायब है।" धर्मा ने चुटकी ली।

चेतन के दो-चार बार बुलाने पर वह पहाड़ जागा।

"यहां सोने के लिए आते हो- वो भी दिन में।" धर्मा ने हड़काया।

"जी!"

"देखा। कह रहा है सोने के लिए आता है।" धर्मा ने एक नजर चेतन पर डालकर युवक को खा जाने वाली नजरों से घूरा।

वह हड़बड़ाया।

"म...मैंने ऐसा कब कहा?" वह संभालकर बैठा।

"अभी तो कहा-जी।"

"व...वो तो मेरे मुंह से ऐसे ही निकल गया।"

"पर सो तो तुम रहे थे।"

"व...वो जरा झपकी लग गई थी। रात में ठीक से सो नहीं पाया न इसलिए।"

"क्यों?"

"ग्यारह बजे रात को छुट्टी मिलती है तो...।"

"ये तो डेली रूटीन होगा फिर...। तब तो रोज सुबह के वक़्त ऊंघते रहते होंगे।" धर्मा ही बोले जा रहा था।

"ए...ऐसा नहीं है।"

"फिर?"

"व...वो कल रात मेरी कई दिन से रूठी बीवी अचानक घर आ गई थी और मैं तीन-चार बजे रात तक उसके साथ बिजी रहा।" उसने अश्लील मुद्रा में कहा।

"क्या कहने?"

"ठीक है। ठीक है।" बीच में चेतन ने इंटरफेयर किया-"अच्छा ये बताओ कि कुछ देर पहले तुमने उस लिफ्ट से किसी को बाहर निकलते-जाते देखा था।"

"किसको?" लड़के ने सामने लिफ्ट को देखते हुये पूछा।

"किसी को भी।"

वह सोचने लगा।

"ब...बोलो।"

"मुझे नहीं पता।"

“कैसे पता होगा जब सारे टाइम ऊंघते रहते हो।” धर्मा चिढ़कर बोला-”तुम अगर इसी तरह ड्यूटी करते रहे तो एक दिन कोई आतंकवादी आएगा और बिल्डिंग में बम रख देगा। बम फूटेगा और बिल्डिंग स्वाहा। तुम सबसे पहले मरोगे।”

“क्यों?” वह सकपकाया।

“क्योंकि बम वो तेरे पास ही रखकर जाएगा न। तुम तो सारे वक़्त ऊंघते रहते हो-तुम्हें क्या पता चलेगा?”

चेतन ने धर्मा की बांह पकड़ी और बाहर की पार्किंग की तरफ बढ़ गया।

“एक तरीका है।” पार्किंग में खड़ी अपनी बाइक की तरफ बढ़ते हुये एकाएक चेतन बोला।

“किस बात का?” धर्मा ने चौंककर उसे देखा।

“तमन्ना के बेडरूम में कौन शख्स था, ये पता लगाने का।”

“अच्छा! क्या है वो तरीका?”

“आओ! बताता हूं।”

मधुमती अपार्टमेंट की पार्किंग में धर्मा को वो तरीका बताकर चेतन बाइक से अकेले द्वारकापुरी पहुंचा, जहां प्रभु का घर था। वह उसी के घर आया था। घर की चाबी चूंकि वीर के पास थी-शादी के मंडप से पुलिस प्रभु को फ़ार्महाउस ले गई थी और आगे जेल, सो पीछे घर की ज़िम्मेदारी दोस्त होने के नाते वीर ने उठाई थी। जेल में प्रभु से मिलते वक़्त उसे प्रभु को चाबी लौटानी थी, पर प्रभु ने चाबी उसे अपने पास रखने को बोल दिया था। उसने वीर को रास्ते में फोन कर दिया था। वीर का फोन नंबर वगैरह कई जानकारियां उसने प्रभु से पहले ही मालूम कर ली थी क्योंकि केस की खोजबीन के वक़्त पता नहीं कब उनकी जरूरत पड़ जाती, प्रभु से बार-बार पूछना मुश्किल था। प्रभु के घर पहुंचने के लिए चाबी लाने के लिए बोल दिया था।

पर अभी वीर आया नहीं था, सो प्रभु के घर से थोड़ी दूर, बाजार में जहां से प्रभु का घर दिखता था, स्थित एक दुकान पर वो पहुंचा। दुकान जगन की थी। उसने बाइक साइड में खड़ी की और जगन के पास पहुंचा। जगन एक ग्राहक को निपटा रहा था।

“नमस्ते।” चेतन ने हाथ जोड़े।

“न...नमस्ते।”

“मुझे आपसे थोड़ी बात करनी है।”

ग्राहक चला गया।

“क्या?”

“प्रभु के संबंध में।”

“प्रभु के संबंध में।” जगन की आंखें सिकुड़ी।

“हां!”

“त...तुम कौन हो?”

“आपको तो पता ही होगा कि प्रभु जेल में है।”

“उसकी खोटी किस्मत। किसी ने उसे बुरा फंसाया।” जगन ने अफसोस जताया।

"जिसने उसे फंसाया है उसी को ढूंढने का काम प्रभु ने मुझे सौपा है।"

"तुम्हें! पर तुम हो कौन?" इस बार जगन ने उसे सीरियसली वाच किया।

"जासूस।"

जगन ने उसे सर से पांव तक तीन बार निहारा। चेहरे पर आश्चर्य के भाव थे।

"देखने में मैं जासूस नहीं लगता हूं। है ना? क्योंकि मेरे चेहरे पर घोर गंभीरता नहीं है-सर के बाल कम नहीं है उम्र चालीस नहीं है...सर पर हेट नहीं है-हाथ में सिगार-सिगरेट-मेग्नीफ़ाइंग ग्लास नहीं है।"

जगन ने कोई जवाब नहीं दिया।

"लेकिन फिर भी जासूस हूं।"

"जब प्रभु ने तुम्हें खोजबीन का काम सौपा है तो होगे ही जासूस।" फिर सर को हल्के से जुंबिश देते हुए जगन ने स्वीकारा और कहा-"मुझसे क्या बात करना चाहते हो?"

"प्रभु का कहना है कि जब उसके पापा जिंदा थे तब एक औरत अक्सर उनसे लड़ने-झगड़ने आती थी। गालियां बकती थी और भागने से भी नहीं भागती थी। तब आप ही उस औरत को समझा-बूझाकर वहां से हटाते थे। वह औरत कौन थी-क्यों वो प्रभु के पापा को जलील करती थी?"

"क्या प्रभु को जेल पहुंचाने के पीछे उसका हाथ है?"

"पता नहीं। पर मैं हर संदिग्ध व्यक्ति को जांचना चाहता हूं।"

"हूं!"

"बताइये।"

उस समय ग्राहकों की जरा भी भीड़-भाड़ नहीं थी। शायद इसलिए कि वह दुकान हार्डवेयर की थी-हलवाई की नहीं।

"वह शिवम साहब की बीवी थी।" जगन क्षणभर बाद बोला।

"कौन शिवम साहब?"

"शिवम ट्रांसपोर्ट कंपनी के मालिक, जिनके यहां पहले प्रभु के पापा एक मामूली मुलाज़िम हुआ करते थे।"

"ओहह...आपको कैसे पता?"

"मैं भी पहले शिवम साहब के यहां ही नौकरी करता था, उनका ड्राईवर था। शिवम साहब एक करोड़पति आदमी थे। ट्रांसपोर्ट का अच्छा-खासा बिजनेस था-खूब आमदनी थी। फैमिली में बीवी के अलावा एक बेटा व बेटी थे। छोटी सी हैप्पी फैमिली थी उनकी पर एक दिन सीढ़ी से गिर गए। सिर में भयंकर चोट आई। इलाज़ में पैसा पानी की तरह बहाया गया पर वे न बचे। उनकी मौत क्या हुई, समझो पूरे परिवार की मौत हो गई। पर परिवार की मौत की शुरुआत बेटे ने की। उसे शराब-शवाब का चस्का शिवम साहब के समय ही लग चुका था, जो उनकी मौत के बाद और बढ़ा-बढ़ता ही गया। उसकी बादशाहत हो गई। जो काम चोरी छुपे करता था-खुलेआम करने लगा। किसी से दबता नहीं था-किसी की सुनता नहीं था। मैंने एक-दो बार उसे समझाने की कोशिश की तो...मुझे नौकरी से निकाल

दिया। मेरा क्या था मैं किराये की टैक्सी चलाने लगा। पर बातें सुनने को मिलती रहती थी।"

"क्या?" चेतन को उसकी बातों में खूब दिलचस्पी आती जान पड़ रही थी।

"यही कि सब कुछ बर्बाद हो गया। जो परिवार राजा की तरह ऐश करता था, फूटपाथ पर आ गया।'

"बेटे की लत ने सब चौपट कर दिया।"

"हां! लेकिन...।"

"क्या?"

"मुझे सही-सही नहीं पता पर सुना है कि बेटे को बिगाड़ने में प्रभु के पापा का पूरा हाथ था। वो बेटे की हां में हां मिलाते थे। उसके उलूल-जुलूल लाखों रुपयों के खर्चे देते रहे।"

"उन्होने डांटा होता या उसकी हां में हां नहीं मिलाई होती तो उन्हे भी निकाल दिया जाता जैसे आपको खड़े पैर निकाल दिया।"

"बेटे के लिए क्या बड़ी बात थी। वो मालिक था-मुख्तार था। उसे किसे रखना है-बाहर करना है-पूरा अख़्तियार था।'

"बिल्कुल!" कहकर चेतन ठिठका फिर सोचकर पूछा-"प्रभु के पापा शिवम के यहां मुलजिम थे?"

"क्लर्क थे। पैसो का सारा हिसाब-किताब वही रखते थे। शिवम साहब उन पर बहुत विश्वास करते थे।"

"हां! और महीने में निर्धारित सैलरी पाते होंगे। आपकी तरह नहीं?"

"हां!"

"फिर वे करोड़पति कैसे बन गए?"

जगन हिचकिचाया।

"बताइये प्लीज।" चेतन ने ज़ोर दिया।

"सही क्या है नहीं मालूम, पर...सुना है कि उन्होने बिगड़े बेटे की दशा का फायदा उठा कर पचास लाख से ज्यादा का माल पार कर लिया था और उसी से अपना खुद का ट्रांसपोर्ट बिजनेस शुरू किया था। अनुभव पहले से था। कामयाबी मिल गई।"

"तब तो शिवम साहब की बर्बादी में उनके नालायक बेटे के अलावा प्रभु के पापा का भी सहयोग रहा।"

जगन ने कुछ नहीं कहा।

"अच्छा...जब प्रभु के पापा अमीर आदमी बन गए तब आप उनके ड्राईवर कैसे बन गए-कैसे?"

"उनकी दरियादिली थी। एक दिन मार्केट में मिल गए। मैं उस घड़ी एक यात्री से टैक्सी के भाड़े को लेकर बहस कर रहा था। उन्होने मुजह देखा-पास आए, मामला शांत कराया और बातचीत में मुझे अपने ड्राईवर की नौकरी ऑफर की। तनख्वाह भी बढ़िया थी। मैं मना न कर सका।"

"आपने पूछा नहीं कि उनकी हैसियत ड्राईवर रखने की कैसे बनी?"

जगन मुस्कुराया।

“वे मुझे पहले से जानते थे। मेरी ईमानदारी, काबिलियत से प्रभावित थे-मुझे पसंद करते थे। पर मैं एक मामूली आदमी था-हूं। भला एक ड्राईवर की क्या औकात-हैसियत कि अपने मालिक से ऐसे सवाल करे।”

“आपको डर सता रहा होगा कि कहीं फिर से मिली नौकरी हाथ से न चली जाए।”

“सच कहूं तो...एक वजह ये भी थी। फिर मैंने सुन तो रखा ही था। अनुमान भी था।”

“और सच्चाई भी थी।”

जगन परे देखने लगा।

“उसी वजह से शिवम साहब की बीवी अक्सर प्रभु के पापा से लड़ने-झगड़ने पहुंच जाती थी।”

“ग्रीन कलर की पेंट है?” तभी एक ग्राहक आ पहुंचा। जगन उसकी तरफ मुड़ गया। बातचीत मे कुछ पल के लिए व्यवधान आ गया जो ग्राहक के जाते ही हट गया।

“शिवम की बीवी आपसे बैर नहीं मानती थी? बहरहाल आप भी उनके दुश्मन के यहां नौकरी करने लग गए थे?”

“मैं ठहरा नौकर आदमी। फिर मेरी तरफ से कोई फाल्ट नहीं था। उनके बेटे ने ही मुझे काम पर से हटाया था-उनके सामने ही...।”

“हूं! अच्छा, अब शिवम साहब की फ़ैमिली कहां रहती है?”

जगन ने हिचकिचाते हुये बताया।

तभी दूर से वीर अपनी बाइक पर प्रभु के घर के सामने पहुंचता दिखाई दिया।

‘अच्छा...नमस्ते। चलता हूं।” चेतन फौरन वहां से उठा। अपनी बाइक से सेकंडों में वीर के नजदीक पहुंचा।

“मुझे जरा देर हो गई।” वीर ने सफाई देनी चाही।

“नेवर माइंड।” चेतन मुस्कुराकर बोला-”चाबी तो लाये होंगे?”

“हां!”

“फिर ठीक है।”

“तुम प्रभू का बेडरूम चैक करना चाहते हो?”

“हां! शायद वहां कुछ काम का मिले।”

“वहां क्या काम का मिलेगा?”

“अ...अभी क्या पता।”

वीर ने आगे बढ़कर पहले आयरन गेट का ताला खोला फिर बीस-पच्चीस कदम चलने के बाद घर के मुख्य गेट का ताला खोला।

क्षणभर बाद दोनों प्रभु के ड्राइंगरूम में होते हुए बेडरूम में घुसे।

वीर एक तरफ हो गया। चेतन पूरे बेडरूम में घूम-घूमकर बारीकी से चेक करने लगा। फिर वह राइटिंग टेबल के पास पहुंचा। उसकी जानकारी में उसी मेज की दराज में वो डायरी रखी थी। उसने दराज को बाहर खींचने के लिए हाथ से उसे पकड़ा था।

“उ...उ...ऊई।” उसने फौरन हाथ वापस खींचा।

“क्या हुआ?” वीर उसकी तरफ लपका।

“क...कुछ नहीं।” उसने अंगुली मुंह में दबा ली।

फिर झुककर सफ़ेद रंग से पुती उस दराज के हत्थे को-उसका नीचे का हिस्सा देखा-फिर खड़ा हुआ।

“क्या हुआ था?” वीर ने पूछा।

“दराज के हत्थे में थोड़ी सी कील निकली हुई है वही चुभ गई है।”

“ओहह।”

दूसरी बार चेतन ने दराज संभालकर खोली। उसमें कुछ कागज रखे थे-पेन पड़े थे।

“इसी दराज में प्रभु ने वह डायरी रखी थी-ऐसा प्रभु बताता है।” चेतन दराज बंद करके बोला।

“हां! पर...मुझे समझ नहीं आता की जब वह डायरी इतनी महत्वपूर्ण थी तो उसने उसे यहां क्यों रखा था? क्यों इतनी बड़ी लापरवाही की? डायरी किसी सेफ में रखनी चाहिए थी।”

“वह इतना सोच ही नहीं पाया की कोई वह डायरी पढ़कर उसके खिलाफ इतनी तगड़ी साजिश रच सकता है, वरना वह डायरी जरूर किसी पुख्ता जगह रखता।”

“व...वैसे...।” वीर सोचकर बोला-”तुम्हें पूर्ण विश्वास है प्रभु के खिलाफ साजिश रची गई है?”

चेतन ने चौंककर वीर को देखा।

“य...ये तुम कह रहे हो। तुम्हें तो लगता है कि प्रभु के खिलाफ साजिश रची गई है।”

“ह...हां! पर कल मैंने सोचा...कि कहीं मामला कुछ और तो नहीं...।”

“और क्या?”

“प्रभु की वासु से कुछ पर्सनल बात हो, जिसकी वजह से उसने वासु को मारा हो। ओवरकॉन्फ़िडेंस का शिकार हो कि पकड़ा नहीं जाएगा पर पकड़ा गया। वो बौखला गया और डायरी, प्लान, गोली-भुल्लन वगैरह अनाप-शनाप बकने लगा हो।”

चेतन ने वीर के चेहरे पर नजरें गड़ा सी दी।

“यह बात मैंने एक संभावना के तौर पर कही।”

एक अच्छा दोस्त अपने अच्छे दोस्त के लिए फांसी के तख्ते तक पहुंचाने के लिए संभावना क्रिएट कर रहा था। वाह!

चेतन ने क्षणभर सोचा फिर ‘हां’ मे गर्दन हिलाते हुये कहा-”ह...हो तो सकता है ऐसा। पर मैं यही सोचता हूं कि उसके खिलाफ साजिश हुई है।”

वीर शांत रहा।

चेतन घूमकर सामने लकड़ी की खुली सेफ के पास पहुंचा। सेफ में उपन्यास भरे थे।

“प्रभु को नॉवेल पढ़ने का बेहद शौक जान पड़ता है।” एक नॉवेल को उठाकर उसके पन्ने पलटते हुये चेतन बोला-”इसलिए सेफ में इतने सारे ना...।” चेतन के आधे शब्द हलक में ही अटक गए। क्योंकि तभी वीर ने एकाएक पीछे से दोनों हाथों से उसकी गर्दन दबोच ली। चेतन के हाथों से नॉवेल भी फिसलकर जमीन पर गिर गया।

हमला चूंकि अप्रत्याशित हुआ था। वह बौखला गया। फिर भी उसने खुद को वीर के मजबूत पंजे से छुड़ाने का भरसक प्रयास किया। पर वीर पक्का शैतान लग रहा था, लगता था चेतन की जान लेकर ही मानेगा।

चेतन का चेहरा लाल हुआ पड़ा था। आंखें बाहर को निकली जान पड़ रही थी।

सहसा चेतन का हाथ हिला, जो वीर की जांघों के जोड़ पर चला गया।

"आह!" वीर चिल्लाता हुआ पीछे हट गया।

चेतन अब मुक्त था। वीर की तरफ पलटकर गर्दन पर हाथ फेरते हुए चैन की सांस ले रहा था, वीर की तरफ दुश्मन की तरह देख रहा था।

वीर दोनों हाथों से जोड़ को पकड़े हुये नीचे झुका खड़ा रहा।

जब राहत मिली तो सीधा हुआ। चेतन को अपनी तरफ कहरभरी निगाहों से घूरते पाया।

"त...तुमने मुझ पर हमला क्यों किया?" चेतन ने गुस्से में पूछा।

"स...सॉरी...! सॉरी...।" वीर मुस्कुराने की चेष्टा करते हुये बोला-"म...मैं तुम्हें परखना चाहता था।"

"क्यों?"

"तुम काबिल जासूस हो...और काबिल जासूस को ऐसे हमलो से भी तो निपटना आना चाहिए। अगर प्रभु के खिलाफ साजिश वाली बात सच है तो हो सकता है कि साजिशकर्ता कभी तुम पर ऐसा ही या इससे भयानक हमला करवा दे, क्योंकि उसे प्रभु के लिए तुम्हारी इंवेस्टिगेशन क्या अच्छी लगेगी?"

"यहीं बात थी?" चेतन को अभी भी उस पर विश्वास नहीं आ रहा था।

"हां! कसमे से।" वीर ने गले की घंटी छुई।

"ठीक है। बाहर चलो।"

वीर कमरे के बाहर निकला-चेतन पीछे पीछे। चेतन उसे आगे रखना चाहता था ताकि फिर से उस पर हमला हो तो वो संभाल ले। अब वह बेहद सतर्क था। थोड़ी लापरवाही की थी उसका मजा वो चख चुका था।

दोनों घर के बाहर आ गए। शीघ्र ही वे अपनी-अपनी बाइको के पास थे।

"मेरी उस हरकत का बुरा मत मानना। मैं सिर्फ तुम्हें परखना चाहता था। और सच में तुम काबिल, काबिल ही नहीं बहादूर जासूस हो। तुम जरूर कामयाब होगे।" वीर बाइक पर सवार होते हुए बोला फिर वहां से चला गया।

चेतन दुविधा में था। वीर के केरेक्टर को लेकर उसके मन में भारी दुविधा उपज चुकी थी। वीर के जाने के बाद उसने बाइक स्टार्ट की और आगे बढ़ा दी। पर जगन की दुकान के पास पहुंचकर उसने बाइक रोकी, साइड में खड़ी की। उतरकर जगन के पास पहुंचा। जगने ने उसे रुकते हुये देखा था। वह उसी को घूर रहा था।

"न...नमस्ते।" चेतन मुस्कुराया।

"नमस्ते...।"

"व...वो मुझे प्रभु की मेड का एड्रैस पूछना था।"

“वीर से नहीं पूछा?”

“भूल गया तभी तो आपके पास आया हूं।”

वीर के हमले ने उसका दिमाग हिला डाला था। उसी वजह से भूला था।

जगन ने बताया।

चेतन ने जेब से फोन निकाला था और कोई नंबर पंच किया। कई बार ट्राई किया पर बात न हो सकी।

“धत तेरे की।” उसने झल्लाहट में मुंह बनाया।

“क्या हुआ?” जगन ने पूछा।

“मेरा फोन काम नहीं कर रहा है।” चेतन बोला। फिर एकाएक कहा-”आपके पास फोन होगा?”

“ह...हां क्यों?”

“जरा दीजिये, उसी से नंबर मिलाता हूं। शायद बात हो जाये।”

जगन ने जेब से अपना फोन निकालकर उसे थमाया। नंबर मिलते ही वह बोला-”हैलो तिवारी जी! मुझे प्रभु से थोड़ी बात...। क्या थाने में राणावत है। ओहह ठीक है। मैं दो घंटे बाद पहुंचता हूं।” बात होने के उपरांत उसने फोन वापस जगन को दे दिया और नमस्ते बोलकर वहां से रुखसत हो गया।

दस मिनट बाद चेतन एक मध्यम वर्गीय इलाके में था। वह मेड से मिलने आया था जो प्रभु के घर पर काम करती थी। जगन द्वारा बताए गए पते पर पहुंचने में उसे ज्यादा वक़्त नहीं लगा था।

अब वह मेड के घर के सामने था। मेड का घर,कमरा,बरामदा बिना प्लास्टर का था। वहां उस बस्ती में अधिकांश मकान वैसे ही थे-छोटे...बेतुके...कलरलेस।

चेतन ने बाइक गली में एक साइड में खड़ी की। फिर वहां से गुजर रहे एक व्यक्ति से कुछ पूछा तो उसने पास के एक मकान की तरफ इशारा किया और आगे बढ़ गया। चेतन बाइक से उतरकर मकान की तरफ बढ़ गया।

उस मकान के बरामदे में चारपाई पर एक 40 वर्षीय पतली-दुबली महिला विचारमग्न बैठी थी। वह सफ़ेद साड़ी में थी। कोई श्रृंगार नहीं किया हुआ था। वैसे भी वह कोई खास आकर्षक नहीं थी। इस लिबास में वो बुझी-बुझी सी लग रही थी। चेहरे पर गंभीरता, उदासी छाई थी।

“नमस्ते।” चेतन ने बरामदे में पहुंचकर कहा।

“न...नमस्ते।” उसका ध्यान भंग हुआ और नजर चेतन पर गड़ा सी दी। नजरों की भाव भंगिमा बता रही थी कि वह उसके लिए पूर्ण रूप से अपरिचित था।

“म...माफ करना बेटा! मैंने तुम्हें पहचाना नहीं।” क्षणभर घूरते रहने के बाद वह बोली।

“मैं प्रभु का दोस्त हूं।”

“प्र...प्रभु...प्रभु सोनकर।”

“हां!”

वह उठ बैठी। कमरे में एक फाइबर की कुर्सी निकालकर बाहर डाली।

“ब...बैठो।”
चेतन कुर्सी पर बैठ गया। महिला चारपाई पर विराजमान हो गई।
“प्रभु का अब कैसा हाल है?” उसने पूछा।
“जेल में पड़े शख्स का हाल कैसा होगा?”
“हूं!” महिला और ज्यादा गंभीर,दुखी हो गई।
“ईश्वर भी भले-अच्छे लोगों की ही हरदम परीक्षा लेता है। वह नेक लड़का था।” महिला ने आह भरी।
चेतन कुछ नहीं बोला।
“उसकी एक गलती ने कैसी आफत ला दी?”
“गलती! क्या?” चेतन ने पूछा।
“अरे न खुद को दिमागदार साबित करने के लिए प्लान रचता और न ही ये आफत आती, जो वो भुगत रहा है, जेल में रहकर।”
चेतन का सिर ‘हां’ में स्वयंमेव ढंग से हिला। फिर महिला को मुख्य बात का ख्याल आया।
“अ...आप कैसे आए?”
चेतन ने सारा माजरा समझाया। ये जानकर उसके चेहरे पर भी आश्चर्य था कि सामने बैठा छोटा लड़का जासूस है।
“मुझे इसी संबंध में आपसे थोड़ी बात करनी थी।” अंत में चेतन ने कहा।
“अ...आप कुछ चाय-वाय लेंगे?” एकाएक महिला ने पूछा।
“नहीं। रहने दीजिये।” उसने मना कर दिया।
महिला ने फिर दोबारा नहीं पूछा। उसके मुंह को ताकते हुये पूछा-”पूछो! क्या पूछना चाहते हो?”
“आपकी याददाश्त कैसी है?” चेतन ने पूछा।
वह सकपका गई।
“य...ये कैसा सवाल है?”
“बताइये...प्लीज।”
“ठ...ठीक है।”
“मैं आपको पूरी बात बता चुका हूं। अब बताइये उन पाँच -छ: दिनों के दरम्यान प्रभु के घर कौन-कौन आया था।”
वह सोचने लगी।
“वीर...तमन्ना।” फिर वह बोली।
“वो तो अक्सर आते रहते है। कोई और?”
“और...हां, एक शख्स और आया था। नाम-पता नहीं मालूम।”
“क्यों?”
“मुझे क्या मतलब? मालिक के जान-पहचान वाले होंगे और क्या?”

"पर उसके बारे में कुछ तो पता होगा। वह कैसा था-लंबा, मोटा...बूढ़ा...जवान...वगैरह...वगैरह?"

"हां!" महिला ने जो हुलिया बताया वो जीवन सोनकर का था।

"व...वो मुझे अजीब लगा।"

"अजीब! क्यों?"

"वो पहली दफा घर आया था और ड्राइंग में न बैठकर सीधा प्रभु साब के बेडरूम में जा बैठा था। मैंने जाकर उसे बताया भी था कि प्रभु साब बाथरूम में है। फिर भी वहीं जमा रहा।"

"मालिक का ज्यादा खास होगा।"

"ह...हां! ऐसा ही होगा।"

"वैसे, आपने उसे बेडरूम में जाते समय क्यों न टोका? पूछताछ क्यों न की कि वह कौन है-क्या काम है वगैरह-वगैरह?"

"मैं घर की नौकर हूं। फिर मेरा काम केवल झाड़ू-पोंछा बर्तन करना है-खाना बनाना है-घर की साफ-सफाई करना है।"

"कोई अपरिचित घर में घुसे और तिजोरी खोल कर सारा माल पार कर दे। झाड़ू-बर्तन, खाना बनाने वाला कुछ नहीं कहेगा?"

महिला हड़बड़ाई फिर संभलकर बोली-"वो सूट-बूट वाला शख्स था। मैं समझी प्रभु साब का कोई खास होगा जैसे कि तुम बोले थे। तभी बिना पूछे.... बिना कुछ कहे बेडरूम में जाकर बैठ गया।"

"हूं! फिर बाद में क्यों वार्निंग जारी की?"

"वार्निंग?"

"क्यों कहा कि प्रभु बाथरूम में है।"

"मैंने सोचा मेहमान को बता दूं। उसे पता नहीं होगा इसलिए कहा।"

"अच्छा। जब आप यह बताने बेडरूम में गई तो मेहमान क्या कर रहा था?"

"म...मुझे नहीं पता।"

"क्यों?"

"वो कुर्सी पर बैठा था। उसकी पीठ मेरी तरफ थी। फिर मैंने जो कहा था वो दरवाजे पर खड़े-खड़े ही कहा था और वापस जाकर अपने काम में लग गई थी।"

"मेहमान ने कुछ कहा था?"

"उसने केवल एक बार मुंडी घुमाकर मेरी तरफ देखा था बस।"

"उस मेहमान के बारे में आपने प्रभु को भी तो इन्फॉर्म...बताया होगा?"

"हां! तब वो बाथरूम में थे।"

"क्या कहा उनसे?"

"यही कि कोई आया है।"

"ये क्यों न कहा कि वह बेडरूम में बैठा है?"

"मैंने सोचा था कि अब तक मेहमान ड्राइंगरूम में आ गया होगा।"

“यानी, पहले आपने मेहमान को जाकर प्रभु के बारे में बताया फिर प्रभु को उसके बारे में?”

“ह...हां!”

“आपने प्रभु को यह नहीं बताया कि मेहमान आते ही बेडरूम में जा बैठा था।”

“य...यह तो न कहा।”

“क्यों?”

“पहले मुझे भी नहीं पता था कि प्रभु साब बाथरूम में है। जब मैं घर पहुंची थी तो बेडरूम का दरवाजा तब भी खुला था। मैं समझी साब बेडरूम में है...पर आगे जब किचन में गई तो प्रभु साब को बाथरूम में जाते देखा।”

“ठीक! प्रभु ने पूछा नहीं कि कौन आया है।”

“पूछा था।”

“आपने क्या कहा?”

“मैंने कह दिया मुझे नहीं पता।”

“फिर प्रभु ने क्या कहा?”

“यही कि...आता हूं।”

चेतन ने पहलू बदला।

“मेहमान प्रभु के बाथरूम में जाने के बाद आया था?”

“हां!”

“आपने उसे बेडरूम में जाते देखा?”

“किचिन से साफ दिखता है। मेरी नजर यूं ही बाहर की तरफ चली गई थी।”

“तब आपने उस मेहमान को बेडरूम में जाते देखा था।”

“हां!”

“फिर आपने उसे जाकर प्रभु के बारे में बताया फिर प्रभु को उसके बारे में...है न...?”

“ह...हां!”

“पर पहले प्रभु को मेहमान के बारे में बताना चाहिए था।”

वह सकपकाई।

“अ...अब मैं क्या कहूं? व...वो...।”

“खैर छोड़िए। उस मेहमान के अलावा और कोई भी शख्स उन पांच-छ: दिनों के दरम्यान घर आया था?”

“म...मेरी मौजूदगी में तो नहीं।”

चेतन सोचने लगा।

“अच्छा। आपकी नजर में ऐसा कोई है जिस पर साजिशकर्ता होने का शक किया जा सकता है।”

औरत ने फौरन ‘न’ में सिर हिलाया।

कुछ पल खामोशी से कटे।

“अब प्रभु तो जेल में है। ऐसे में आपकी नौकरी का क्या...?”

“साब पर संकट आया है तो...मेरी नौकरी तो खतरे में पड़नी ही थी पर...।”
“पर क्या?”
“पर मेरी नौकरी कोई सरकारी नौकरी तो है नहीं कि चली गई तो दोबारा नहीं मिलेगी।”
“हां! लेकिन मेड की नौकरी यूं ही नहीं मिल जाती है। बिना जान-पहचान के मेड को आजकल कौन रखता है?”
“सही कहा। पर मुझे भटकना नहीं पड़ा। वीर साब ने अपने यहां नौकरी दे दी।”
चेतन के जेहन में वीर के लिए बनी हालिया इमेज फौरन घूम गई।
“प्रभु घर वापस आ गया...तब...?”
“तब मैं 101 रुपए का प्रसाद चढ़ाऊँगी दुर्गा मां का। मैंने मान रखा है।” महिला चहकी।
चेतन मुस्कुराया।
हर आदमी का संकट के समय का सहारा- ईश्वर! जो पता नहीं है भी या नहीं। पर सहारा है तो।
“मेरा मतलब था कि तब भी आप वीर के यहां ही काम करेगी?”
“नहीं। मैंने वीर साब से कह रखा है कि प्रभु साब के आते ही मैं उनकी नौकरी छोड़ दूंगी। प्रभु साब ने मुझे बुरे वक़्त में नौकरी देकर सहारा दिया था।”
“वीर मान गया?”
“माने तभी तो मैं उनके यहां काम करने के लिए राजी हुई।”
“अच्छा।” चेतन सोचकर बोला-”आपसे पहले वीर के यहां कौन काम करता था।”
“कोई नहीं। बहन थी सब संभालती थी। पर वह मुंबई में अपनी बुआ के यहां चली गई। उसे लगता है वासु की हत्या में वीर का हाथ है। मीडिया में ऐसी खबरें आती रहती थी।”
“बहन को मनाने-समझाने की कोशिश न की?”
“करते पर...उसने बात तक नहीं की।”
“शादी कर लेते तो आराम होता।”
“हां! एक दिन मैंने युही हिम्मत जुटाकर शादी की बात की थी। बोले...कर लेंगे।”
थोड़ी देर खामोशी आ ठहरी।
“आपको पढ़ना आता है?” एकाएक चेतन ने महिला की तरफ देखा।
वह मुस्कराई। पर हंसी व्यंग्यात्मक थी।
“आपको लगता है कि प्रभु साब की वो डायरी मैंने पढ़ी?...मैंने उनके खिलाफ साजिश रची?”
“अ...अरे नहीं। म...मेरा वो मतलब नहीं था।” चेतन हड़बड़ाए स्वर मे बोला।
उसने ठंडी आह भरी।
“मेरी बचपन से ही बड़ी इच्छा थी कि पढ़ूँ। मेरी सभी सहेलियाँ पढ़ने जाती थी। उन्हें स्कूल बैग टांगे स्कूल जाते मैं रोज देखती थी। पर मेरी किस्मत में शायद पढ़ना नहीं था। पढ़ी-लिखी होती तो अपने पैरो पर खड़ी होती.. इज्ज़त की नौकरी करती। इधर उधर,

दर-बदर भटकती न फिरती...बिन मांझी की नाव की माफिक। पर मेरी किस्मत में ही लिखा था दूसरों के घरों में झाड़ू-पोंछा करना-दर-बदर भटकना.-जलील होना,बेइज़्ज़त होना,लुटना-पिटना...।" बोलते बोलते महिला भावुक हो उठी।

"आपकी कहानी दर्द में डूबी जान पड़ती है।" चेतन सहानुभूति दिखाते हुये बोला-"मुझे भी सुनाइए अपनी कहानी।"

महिला ने सर उठाया। सामने दीवार पर थोड़ी देर शून्य भाव से ताकती रही।

"मेरे मां-बाप कौन थे मुझे नहीं पता।" फिर बोली-"मुझे दूर के एक रिश्तेदार ने पाला। उनके बताए ही मुझे मालूम है कि मेरे मां-बाप बाढ़ की भेट चढ़ गए थे। किसी तरह मैं बच गई थी, दर-बदर की ठोकरें खाने के लिए। जरूर पूर्व जन्म में खूब पाप किए होंगे। मर जाती तो अच्छा होता। पर...किस्मत का लिखा कौन मेट सकता है।"

"मेरे दूर के रिश्तेदार ने मुझे पाला इसलिए क्योंकि उसके कोई संतान नहीं थी। पर दो साल बाद उनके बेटा हुआ। पहले तो मैं शुभ समझी गई-मेरी पूजा सी होने लगी क्योंकि शादी के दस साल तक उनके कोई संतान नहीं हुई थी। मैं भी बड़ी खुश थी। पर धीरे-धीरे सब बदलने लगा। मेरे दुर्दिन शुरू हो गए। मेरे नए मां-बाप का सारा ध्यान अपने बेटे पर लगने लगा। मेरी उपेक्षा होने लगी। मेरी सारी सुविधाए छिनती चली गई। मैं सिर्फ घर की नौकरानी बन कर रह गई। मेरा काम घर के काम-काज करना ही रह गया। स्कूल की उम्र थी पर नहीं भेजा। जबकि मेरी सारी सहेलियाँ स्कूल जाती थी। एक-दो बार कहा तो डांट-फंटकार मिली। विरोध नहीं कर सकती थी इसलिए चुप रही।" सांस लेने के लिए रुकी फिर पुनः बोली-"11-12 साल की हुई तो 30-35 साल के एक आदमी से मेरी शादी करा दी गई। साथ में समझाया गया कि पति चाहे जैसा हो, चाहे जैसा व्यवहार करे, चाहे जैसे रखे, रहना क्योंकि पति परमेश्वर होता है और औरत उसकी दासी। मैंने बातों की गांठ बांध ली थी और सदा दासी बनकर ही रही। ससुराल में दो साल तक तो सब ठीक रहा। सब अच्छा लगा। पर एकाएक सब बदलने लगा। खुशियों का बाग भयंकर काँटों का बाग लगने लगा।"

"ऐसा क्यों?" चेतन को स्टोरी इंट्रेस्टिंग लगती जान पड़ रही थी।

"कोई बच्चा नहीं हो रहा था। सास के कहने पर मेरी जांच कारवाई गई और...मेरा नरक का द्वार खुल गया। जांच में निकला, मैं कभी मां नहीं बन सकती। इस एक खबर ने घर के लोगों के तेवर बदल गए। मेरे साथ वक़्त-बेवक्त बुरा सलूक होने लगा। जो पति मुझे सपनों की रानी,खूबसूरती की देवी कहते न थकता था, उसे मैं चुड़ैल लगने लगी, डायन...लगने लगी। हर वक़्त गालियों से, मार से, नवाजी जाने लगी।"

"आप अपने उन नए मां-बाप, जिन्होने आपको पाला था उनसे कहती...।"

"कैसे कहती! एक तो बहुत दूर थे, दूसरे मैं पढ़ी-लिखी नहीं थी जो चिट्टी-पत्री कुछ भेजती। तब मोबाइल का भी जमाना नहीं था। घर से बाहर जाने तक की इजाजत नहीं थी। रोज-रोज गालियां सुनना, मार खाना, मेरा नसीब बन गया। पर किस्मत को इतनी बदसलूकी कम लगी इसलिए मुझे मार पीट कर घर से निकाल दिया गया।"

"अरे!"

“मैं कितना रोई-गिड़गिड़ाई पर उन्हें तरस न आया।” महिला की आंखों में झिलमिलाते आंसू स्पष्ट नजर आ रहे थे।

“ऐसा क्यों किया उन्होने? क्योंकि आप मां नहीं बन सकती थी?

“पति दूसरी शादी करना चाहते थे। शायद मेरी वजह से उन्हे मुश्किल हो रही थी। पर मुझे उनकी दूसरी शादी से जरा भी दिक्कत नहीं थी। फिर मैं ठहरी ठूंठी गाय। कौन ठूंठी गाय को रखकर खाना पीना देना चाहता है। सबको दुधारू गाय की जरूरत...उसकी चाहत...।” महिला ने हिचकी सी भरी।

थोड़ी देर माहौल गमगीन रहा। खामोशी पसरी रही।

“वहां से निकाले जाने के बाद जैसे-तैसे अपने पालक के पास पहुंची।” महिला ने खामोशी भंग की-”तो वहां से भी दुत्कार मिली। कहा गया कि वे उसकी डोली उठाने का...पति के घर भेजने का फर्ज निभा चुके है। अब उसका कुछ नहीं है वहां! पत्नी के लिए पति का घर ही सब कुछ होता है। उसी के घर से उसकी अर्थी निकलती है।यही रस्म है। मैं भी तो यही चाहती थी पर...।मैंने उन्हे लाख समझाया पर मेरी गुहार किसी ने न सुनी। कैसे सुनता। जब विधाता ने ही न सुनी जो सबकी सुनता है तो कोई और कैसे सुनता।”

“ठोकरे खाना मेरा नसीब बन गया। दर-बदर भटकने लगी। तब पहली बार एहसास हुआ कि एक अकेली औरत का इस संसार में जीना कितना दुश्वार है। मदद के लिए तो कोई आगे न आता था पर न जाने कितनी बुरी, हवस भरी आंखें मुझे खाने को हरदम तैयार मिलती थी। पेट की भूख-प्यास बुझाना सरल था पर उन वहशी आंखों से लड़ना, बचना मुझे मुश्किल जान पड़ने लगा। ज़िंदगी की नाव एक ऐसे भंवर में आ फंसी थी कि मुझे कुछ समझ नहीं आता था कि उसमें से कैसे निकलू। ऐसे हालत कुछ दिन और रहते तो शायद दुनिया छूट जाती या मुझे छोडनी पड़ती। पर दाता को आखिरकार मुझ पापिन पर, गरीब पर, रहम आया। तरस आया। एक मददगार मुझे भी हासिल हुआ..उस समय वासना के दो भूखे भेड़िये मुझे नोच खाने पर आमदा थे। पर एक बुजुर्ग ने समय पर आकर मुझे बचा लिया। फिर देवी शंकर मुझे अपने घर ले आए।”

“देवी शंकर कौन?”

“मेरे मददगार। जहां हम बैठे है, उन्हीं का घर है।”

“ओहह...।”

“वो अपनी वृद्ध पत्नी के साथ रहते थे। उनकी कोई संतान नहीं थी। मेरी कहानी सुनकर रो पड़े थे और मुझे अपनी बेटी मान लिया था। और अपने साथ ही रख लिया था। इस प्रकार बहुत जद्धोजहद के बाद मुझे भी आखिरकार ठहराव मिल गया था। मैंने भी उन्हे अपना मां-बाप मान लिया था।” महिला सांस लेने के लिए रुकी फिर बोली-”कुछ दिनों बाद दोनों बुजुर्ग फरिश्ते परलोकवासी हो गए। जब तक वे जिंदा थे मुझे कोई कमी नहीं थी। पर उनके न रहने के बाद खाने-पीने आदि की समस्याएं खड़ी हो गई।”

“उनके जीवित रहते मेरी जान-पहचान कई लोगो से हो गई थी। वे मेरी कहानी से परिचित थे। मुझसे सहानुभूति रखते थे। उनमें एक जगन चाचा भी थे। उन्होने ही प्रभु

साब के यहां मुझे मेड की नौकरी दिलवाई थी। घर तो मेरे पास पहले से ही था, अब सब कुछ नॉर्मल ही चल रहा था पर अपने पिछले दिन भूल नहीं पाती।"

चेतन दुखी लग रहा था। वह जब भी ऐसी किसी दुःख भरी स्टोरी से रूबरू होता था, दुखी हो जाता था। अपनी पिछली ज़िंदगी का हर वो लम्हा जो बहुत ही भयानक, दुःख में डूबा था, उसके जेहन में ताजा हो उठता था। वह भी एक भयानक भंवर में फंस गया था, जहां से निकलना असंभव लग रहा था पर किसी करिश्मे ने उसे बचा लिया था। लेकिन घाव ऐसा दे गया था जो वह कभी भूल नहीं सकता था।

एकाएक वो उठ बैठा।

"अच्छा, चलता हूं। नमस्ते।" उसने कहा।

"नमस्ते।" महिला ने हाथ जोड़े।

चेतन लंबे-लंबे डग भरकर अपनी बाइक की तरफ चला गया।

महिला उठी। अंदर कमरे में गई। अलमारी में रखा अपना फोन उठाया और कोई नंबर पंच करने लगी।

चेतन आगे मोती चाल पहुंचा।

वह निम्न वर्ग के लोगों की बस्ती थी। पता नहीं कहां-कहां के लोग वहां किराए की खोलियों में बसते थे। या ये कहें कि वह किसी बड़े शहर की झोपड़पट्टी जैसा, मुंबई की झोपड़पट्टी, जैसा इलाका था। ऐसा इलाका जहां सबको पनाह नसीब थी। जिसे कहीं पनाह न मिले उसके लिए वह इलाका मक्का-मदीना था। भगवान का घर था। जहां कोई भी आ-जा सकता था।

चेतन अपनी बाइक से उसी झोपड़पट्टी की एक पतली, लंबी, गंदी सी गली में आगे बढ़ रहा था। बाइक की स्पीड बहुत कम थी। ज्यादा स्पीड में वहां बाइक चलाना बनता भी नहीं था।

शाम कोई हुई बारिश का पानी गली के गड्ढो में अब तक भरा था। कहीं-कहीं गली में छोटे-छोटे बच्चे खेल रहे थे। एक-दो बार तो अचानक खोली से निकलकर कोई बच्चा बाइक के सामने आ खड़ा हुआ था। चेतन बुरी तरह हड़बड़ा गया था। पर चूंकि बाइक की गति बहुत कम थी सो को दुर्घटना न हुई।

पांच-सात मिनट बाद गली खत्म हुई और मैदान आ गया। दूर एक तरफ नीम का एक बड़ा पेड़ था। उससे थोड़ी दूर पर खोलियां बनी थी। चेतन ने बाइक नीम के पेड़ के पास ले जाकर रोकी-उतरा। बाइक स्टेंड पर लगाई और सामने एक खोली की तरफ बढ़ गया।

उस खोली के बाहर बांस का टट्टर पड़ा था जिस पर पुराना तिरपाल पड़ा था। उसी के नीचे एक महिला सिलाई मशीन से कपड़े सिल रही थी।

"नमस्ते।" चेतन उसके पास पहुंचकर हाथ जोड़कर शालीनता से बोला।

महिला ने सर उठाया। काम करना रोक दिया।

"नमस्ते।" फिर झिझकते हुये बोली। चेतन उसके लिए अनजान था। ये भाव उसका चेहरा साफ बता रहा था।

"जी मुझे आपसे थोड़ी बातचीत करनी थी?"

महिला ने उसे घूरा।
"क्या?"
चेतन चुप खड़ा था।
महिला को एकाएक कुछ याद आया। उसने पास रखे स्टूल को उसकी तरफ बढ़ाया।
"लो बैठो।"
वह बैठ गया।
"तुम कौन हो? मुझसे क्या बात करना चाहते हो?" महिला दुविधा में पड़ी नजर आई।
"मेरे पिताजी शिवम साहब के अच्छे दोस्त थे।"
महिला चौंकी।
"अक्सर मुझसे उनकी बातें किया करते थे। किसी पार्टी की कोई फोटो दिखाई थी। उसमें शिवम साहब के साथ-साथ आप भी थी। अभी यहां से निकल रहा था तो...तो आप दिख गई इसलिए...।" चेतन ने बातचीत का सिरा पकड़ने के लिए झूठी भूमिका बनाई जो चल गई।
"पहले मुझे यकीन नहीं हुआ कि आप यहां...।" महिला ने ठंडी आह भरी।
"य...ये सब कैसे हो गया...?"
महिला कुछ सोचती रही फिर थोड़ा गुस्से में बोली-"उस कमीने देव सोनकर की वजह से, जिसे मेरे पति अपना विश्वासपात्र समझते थे। उसी ने विश्वासघात किया।"
"शिवम साहब ने उसके खिलाफ कोई एक्शन न लिया?"
"उनके सामने उसकी मजाल नहीं थी कि वह कुछ गलत करता। व...वो उनके न रहने के बाद...।"
"ओहह...।"
"फिर आज मैं जिन हालातों में जी रही हूं उसके लिए केवल देव सोनकर को ही जिम्मेदार ठहराना गलत होगा। सच कहूं तो सबसे ज्यादा मेरा बेटा ही कसूरवार है।"
"आपके बेटे ने आपसे दगा किया।"
"जानबूझकर नहीं। अपनी बुरी आदतों की लत के कारण। लत भी ऐसी जो उसकी रूह से चिपक सी गई थी जो उसे छोड़ती न थी। दिन-रात होटलों-क्लबों में अपने अय्याश दोस्तों के साथ पड़ा रहता था। पैसा पानी की तरह बहाता था- मेरी एक नहीं सुनता था। उसी की इसी बिगड़ी हालत का फाइदा उठाकर देव सोनकर ने भी लाखो रुपए उड़ाए और बाद में उसी से अपना बिज़नस शुरू कर करोड़पति बन गया।"
"शिवम साहब की मौत के बाद उनकी सारी जायदाद आपके नाम आ गई होगी। ऐसा कानूनी नियम है कि पति की मौत के बाद उसकी सारी संपत्ति की हकदार पत्नी होती है।"
"हां! पर उन्हे बेटे से ज्यादा प्यार था। सब कुछ उसके नाम कर दिया था। ये बात मुझे बाद में पता चली।"
"ए...ऐसा तो नहीं करना चाहिए था उन्हें?"
"बेटा मेरी कोख से जन्मा होता तो शायद नहीं करते।"
"म...मतलब?"

“मेरे पति की दो शादियां हुई थी। बेटा पहली महरूम बीवी से था।”

“ओहह...।” चेतन ने होठ गोल किए फिर रुककर पूछा-”अब वह बेटा कहां है?”

“जहां होना चाहिए।” महिला ने तपाक से कहा।

“कहां होना चाहिए?”

“जिस ढंग की लाइफ स्टाइल थी, उससे उसका मुकाम स्वर्ग-नरक के अलावा और क्या हो सकता है?”

“म...मर गया?” चेतन चौंका।

“हां! मेरे पति के मरने के दो साल के भीतर ही उसने सब कुछ बर्बाद कर दिया। देव सोनकर ने पूरा साथ दिया। क्यों न देता-खुद भी जब माल काट रहा था। बेटा दो साल में ही मर गया और हमें इस हालत में पहुंचा गया।”

“लगता है बेटे से आपको कोई हमदर्दी नहीं थी?”

महिला ने गुस्से में बात कही थी इसलिए चेतन ने पूछा।

“ऐसे बेटे से क्या हमदर्दी जो दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर कर दे।”

“आपके सगे बेटे ने ऐसा किया होता तो?”

महिला ने उसे देखा। खुद को थोड़ा कंट्रोल किया।

“बात सौतेले की नहीं है। बात सही-गलत की है। गलत मेरा सगा बेटा करता तो मैं उसे भी गलत ही कहती। फिर सगा होता तो ऐसे हालत न बनते। वह सौतेला बेटा था। मेरे पति को शायद यह ख्याल आया होगा कि मैं उसका ख्याल ठीक से न रख पाऊँगी। इसलिए उन्होने अपना सब कुछ उसके नाम कर दिया।”

“आप पति-पत्नी में अच्छी नहीं पटती थी शायद?”

महिला चुप रही फिर बोली-”उसकी वजह बेटा था। सौतेली मां कितना भी करे पर सौतेली ही रहेगी।”

“हूं! वैसे, जैसा आपने बताया उस हिसाब से अगर देव सोनकर घपला न भी करता तो भी हालात ऐसे ही होने वाले थे। थोड़ा वक़्त और आगे सरक जाता।”

महिला ने सहमति में सर हिलाया।

“हां! लेकिन देव सोनकर ईमानदार होता तो मुझे पहले खबर करता तो शायद...। मुझे तो तब पता चला जब सब बर्बाद हो गया,घर तक बिक गया। खरीदने वाले घर आ गए।”

“आप कानून का सहारा लेकर आधा हिस्सा मांग सकती थी?”

“जरूर करती पर पता लगने में देर हो गई। जब तक पता चला तब तक चिड़िया खेत चुग गई थी।”

“देव सोनकर के खिलाफ कोई एक्शन लेती?”

“तब हालात ऐसे बन पड़े थे कि सर छुपाने को छत, रोटी-पानी की जरूरत ज्यादा बड़ी लगी। ये वो घड़ी थी जब कोई मददगार नजर नहीं आता था। चारो ओर अंधेरे के अलावा कुछ और न सूझता था। ऐसे में ऊपर वाले ने रहम किया। पापा के एक दोस्त आए और अपने घर में पनाह दी।”

“उनकी मदद से सोनकर के खिलाफ कानूनी कार्यवाही करती?”

"वे इस लायक नहीं थे। गांव के गरीब किसान थे। हमें आसरा दे रहे थे यही बड़ी बात थी। फिर सोनकर के खिलाफ कोई ठोस सबूत वगैरह नहीं था, जिससे उसे दगाबाज साबित किया जा सकता। फिर वह पैसे वाला बन गया था। हम दुर्बल-कमजोर की बात कौन सुनता है।"

'समरथ कोई नहीं दोष गुसाई'। चेतन ने सोचा।

"फिर भी गुस्से में-खीझ में देव सोनकर के घर दो-तीन बार जाकर उसे गालियां बकीं और उनसे क्या होता है।"

"हूं!" चेतन क्षणभर खामोश रहा फिर पूछा-"आपने यह बताया कि आप अपने पापा के दोस्त के यहां थी फिर...यहां कैसे?"

"उन्होने हमारी सात-आठ साल मदद की। आगे भी करते पर डेथ हो गई। डेथ के बाद उनके घर में बेटों के बीच पारिवारिक कलह होने लगी। मुझे वहां से हटना पड़ा। तब यही खोली नजर आई। इसी में पनाह पाई। खोली का मालिक शिवम को जानता था। इसलिए यहां रहने में कोई दिक्कत पेश न आई। चार साल से यहीं हूं।"

"मम्मी!" तभी कोयल जैसी आवाज गूंजी।

दोनों ने आवाज की दिशा मे देखा।

थोड़ी दूर पर एक तेरह-चौदह साल की खूबसूरत, पर मैले कपड़ो में सर पर लकड़ी का गट्ठर लादे लड़की खड़ी थी। उसके गोरे मुखड़े पर पसीने की बूंदें साफ झलक रही थी।

"आती हूं।" महिला उठने लगी।

"आ...आप बैठिए। मैं गट्ठर उतरवाये देता हूं।" चेतन आशय समझकर फुर्ती से उठा और बोला। महिला ठिठक गई।

चेतन लड़की के पास पहुंचा और हाथ बढ़ाकर गट्टा उतारने लगा।

"मम्मी! लकड़ी तो आ गई पर घर में आटा-दाल खत्म है लानी...।" लड़की के सर पर गट्टा ऐसे रखा था कि सामने ठीक से दिखता नहीं था। इसलिए वह चेतन को नहीं देख पाई और बोल पड़ी थी। पर जैसे ही नजर पड़ी वह चुप हो गई।

"मेरी बेटी है- खुशी।" तभी महिला ने कहा-"इसके पैदा होते ही शिवम ने दुनिया छोड़ी। उसके बाद गमों के बादलों ने हमें चारों ओर से जकड़ लिया। खुशी आज तक खुशी से मरहूम है।" खुशी कमरे में चली गई थी।

चेतना महिला के पास पुन: आ बेठा था। देव सोनकर कौन है चेतन ने ना पुछा और ना ही महिला ने इस ओर ध्यान दिया कि चेतन ने यह सवाल क्यों नहीं किया। एकाएक चेतन बोला-" अभी आता हूँ।"

महिला उसे देखती रही जबकि वह लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ अपनी बाईक की तरफ़ बढ़ गया।

तब खुशी ने बाहर चेतन के बारे मे माँ से पूछताछ की।

चेतन बाईक से कही चला गया था।

"मम्मी आटा-दाल तो है नहीं।" खुशी उदास होकर बोली।

"अच्छा तो ठाकुर की दुकान से ले आओ।"

“उसकी पहले से पांच सौ रूपये बाकी है। वह अब उधार नहीं देगा। उसने पहले से कह रखा है।”

माँ के चेहरे पर उदासी छाने लगी। लड़की उसे तकती रही।

फिर महिला ने साड़ी के खूँट में लगी गांठ खोल कर उसमें से रूपये निकाले।

“ये 250 रूपये हैं। सुबह मुरारी अपने कपड़े ले गया था। उन्हें ठाकुर को दे देना, कहना-बाकी बाद में मिल जायेगे।”

“इ...इनसे तो पुरानी उधारी भी नहीं चुकता होगी।” लड़की ने बुरा मुंह बनाया।

तभी एक बाईक खोली के सामने आकर रुकी। बाईक सवार बाईक खड़ी कर उधर ही बढ़ा जा रहा था। उसे देखकर माँ-बेटी की जान सी निकल गई। वह काला-कलुटा,भारी-भरकम,शर्ट-पाजामा पहने शख्स आ धमका।

“मेम साहब किराया तैयार है खोली का ?।

उसने समान लहजे में पूछा।

“न... नहीं।” महिला बड़ी मुश्किल में हिम्मत जुटा कर कह पाई।

“क्या।” वह झल्लाया।

“ वो दरअसल कुछ दिनो से मेरी तबीयत खराब थी। सिलाई मे आया पैसा उसी में लग गया। द... दुसरा कोई आमदानी का स्त्रोत नहीं है वरना अब तक किराया जरुर चुकता हो जाता।

“ ये नहीं चलेगा। में... अब तक शिवम साहब की वजह से अपका लिहाजा करता हूं पर पेसौ की मुझे भी जरुरत रहती हैं और आपने चार महीने से किराया नहीं दिया। कोई न कोई बहाना बनाकर टाल देती हैं। खोली किसी और को देता तो वो दुगुना किराया देता और वो भी टाईम पर।”

“मिल जायेगा भईया। हम इतने सालों से यहां हैं। क्या आज तक कभी ऐसी समस्या आई है? हमने हमेशा किराया टाईम पर दिया। पर..इस बार थोड़ी परेशानी की वजह से...।”

काला कलुटा इंसान ढिला पड़ा।

“प.... पर आप अक्सर तीन-चार महीने तक किराए की सुध नहीं लेती।” फिर भी वह धीरे से बोल गया।

थोड़ी देर खमोशी से कटे।

“अब किराया दीजिये। मुझे और भी काम हैं।” एकाएक वह बोला।

“इ...इस समय तो मेरे पास पैसे नहीं हैं।”

“कोई बात नहीं। कल आप खोली खाली कर दें। उसने नजरें चुराते हुए नाराजगी में कहा।

“कितना किराया हैं ?” तभी चेतन वहां आ पहुंचा। उसके हाथ में एक बड़ा सा झोला था, जिसमे आटा-दाल-चावल के अलावा किचिन की और भी वस्तुएं थीं। वो झोला उसने लड़की की तरफ़ बढाया। लड़की ने एक बार माँ की तरफ देखा फिर झिझाकते हुए थाम लिया।

काले शख्स ने उसे घूरा।

"कितना किराया हैं ?" चेतन ने उससे दोबारा पूछा।

"त...तुम कौन हो ?"

"कोई भी हूं। तुम अपना किराया बोलो।"

"चार हजार।"

"छ: हजार रुपए हैं। बाकी एडवांस में जमा कर लो। काले शख्स ने रुपए जेब के हवाले किए।

"मुझे एतनी जरुरत न होती तो एतना जोर न देता।" उसने कहा और अपनी बाईक की तरफ बढ़ गया। चेतन बाकी के रुपए जेब में रखने लगा। फिर रुपए महिला की तरफ बढ़ा दिए।"

"रख लीजिए। आपके काम आएगा।"

महिला ने झिझकते हुए रुपए ले लिए।

उसके बाद चेतन वहां से रुखस्त हो गया।

चेतन मुख्य रोड पर आया। आकाश में गहरे काले बादल आने की पूरी-पूरी संभावना जान पड़ रही थी। चेतन ने वहां से थाने जाने का रुख किया। पर तभी उसे धर्मा का फोन आया।

"हेलौ...कहां हो ?" इधर से फ़ोन जैसे ही चेतन ने कान से लगाया उधर से धर्मा का व्यग्र स्वर सुनाई पड़ा।

"गाँधी रोड़ पर। थाने जा रहा था।" चेतन ने कहां।

"इधर आ जाओ। कुछ काम का हाथ लगा हैं।"

"क्या ?" चेतन फौरन सीधा हुआ।

"यहां आ जाओ। पता चल गया।

"तुम वही हो ?"

"हां!"

"ठीक है मैं में आता हूं।"

चेतन ने बाईक सड़क पर दौडा दी। पर पहले तिवारी से कुछ बात जरुर की।

चेतन मधुमती अपार्टमेंट की मल्टी स्टोरी बिल्डिग के सामने पहुंचा। धर्मा उसका वही वेट कर रहा था। वह फौरन पार्किंग में बाईक पार्क कर रहे चेतन के पास पहुंचा।

"तुम्हारा शक सही था।" उसने आते ही उत्साह में कहा।

"अच्छा।" चेतन मुस्कराया।

"हां! तमन्ना के फ्लैट में सुबह सच मे कोई था। फिर गायब हो गया था।"

"रिशेप्शन पर बैठा युवक ऊंघ न रहा होता तो उसे जाते वक़्त जरुर देख लेता।"

"नहीं देख पाता। देख भी पाता तो बता नहीं पाता।"

"क्यो इनविजिबल मेन ?"

"नहीं!"

"फिर ?"

“वो इसलिये क्योंकि वह इसी अपार्टमेंट का बाशिंदा हैं। तमन्ना के एन सामने वाला उसका फ्लैट हैं।”

“अ...ओह तभी वो गायब होने में कामयाब हो गया था। पर तुमने कैसे पता किया ?” चेतन ने खुश होकर धर्मा को देखा।

“तुम मुझे यही छोड़ गये थे ताकि मैं तमन्ना को वाच करूं। मैने वही किया। तमन्ना क्लब जाने के लिए यहाँ से अकेली निकली। थोड़ी देर बाद एक और शक्स यहां से निकला। पर आगे जाकर दोनो एक ही टेक्सी में बैठकर क्लब गए। मुझे उस आदमी पर शक हुआ था कि कही यही वो तो नहीं हैं जो फ्लैट से गायब हुआ था।”

“ठीक हैं। फिर ?”

“मैं भी उनके पीछे-पीछे क्लब तक पहुंच गया। दोनों क्लब भी अलग-अलग ही पहुंचे थे।”

“तमन्ना तो क्लब में गाती है। पर वो शख्स वहां क्या करता है ?”

“वो तो वहां जाकर ऐसे गायब हो गया जैसे सर्दी के मौसम के जाते ही रजाई गायब हो जाती हैं।”

“या जैसे गधे के सिर से सींग।” चेतन बोला।

“मेरा भी वही मतलब था। पर ये गधे वाला जुमला ज्यादा पुराना हो गया है इसलिए...मैंने....।”

“पता तो किया होगा ?” चेतन ने टोका।

“बहुत। पर वो न मिला।”

“इस समय तो तमन्ना क्लब में होगी ? त.. तुम्हें वहीं रहना चाहिए था। तमन्ना वापस आती तो...।”

“मेरे मन में एक नया आइडिया आ गया था। इसलिये मैं पहले यहां आ गया और तुम्हें बुला लिया।”

“क्या आइडिया आ गया ?”

“दोनों फ्लैट की तलाशी लेने का। शायद कुछ काम का मिले।”

चेतन ने क्षण भर सोचा।

“ आईडिया तो सही है।”

“तो चलो।”

“तुम्हारे पास ‘मास्टर की’ तो होगी ?”

“ये भी कहने की बात है।”

“तो फिर चलो।”

दोनो पार्किंग से बिल्डिंग की तरफ बढ़ गए।

बादल बहुत काले हो गए थे। दिन मे चारो तरफ अन्धेरा सा छाया था। बिजली भी रह-रहकर चमक रही थी,गरज रही थी।

दोनो रिसेप्सन पर बैठे लड़के, जो एक रजिस्टर मे कुछ लिख रहा था, की नजर बचाते हुये लिफ्ट में प्रवेश हो गये। 7 नम्बर की बटन दबा दी। लिफ्ट ऊपर जाने लगी।

"तुमने ये कैसे जाना की वह शख़्स इसी बिल्डिंग में तमन्ना के फ्लैट के सामने वाले फ्लैट का बाशिंदा हैं? चेतन ने पूछा।

"रिसेप्शन पर जाकर उस लड़के से पूछा था। उसने ही बताया की वहां शख्स 614 न. के फ्लैट का बाशिंदा है और ये तुम्हें पता नहीं होगा। अगर ध्यान से फ्लैट नम्बर पढ़े होगें की 614 न. फ्लैट 609 की ठीक सामने वाला फ्लैट है।"

चेतन ने सहमति से 'हां' में गर्दन हिलाई।

"तमन्ना प्रभु की प्रेमिका हैं। प्रभु जेल ना जाता तो अब वह उसकी बीबी होती। फिर उस शख्स से तमन्ना का क्या कनेक्शन हैं।

"कुछ तो जरुरत होगा।"

"उन दोनों के एक्शन से लगता है वे अपने रिश्ते को छुपाकर रखना चाहते हैं ? मुझे तो कोई बहुत बड़ा झोल नजर आता हैं।"

"मुमकिन है कि हो।"

दोनों बातचीत करते लिफ्ट से निकल कर गलियारे मे आ गए थे और अपनी मंजिल की की तरफ बढ़ रहे थे।

"दोनों फ्लैटों की तलाशी लेनी चाहिए। जरुर कुछ काम का हाथ लगेगा।" धर्मा बोला।

"मुझे लगता हैं उसके फ्लैट में हमें कुछ नहीं मिलेगा इसलिये तलाशी केवल उस हजरत के फ्लैट की ही लेनी चाहिए।"

"क... क्यों कुछ नहीं मिलेगा ?" धर्मा ने विरोध किया।

"प्रभु का तमन्ना के फ्लैट में आना जाना था। ऐसे मे तमन्ना अपने फ्लैट में ऐसी कोई गड़बड़ी वाली चीज रखेगी ही नहीं!"

"प्रभु तमन्ना से मिलने ही आता होगा न कि उसका सूटकेस,अलमारी वग़ैरह खोलकर उसमें रखा सामान चेक करने।"

"मैं यह नहीं कह रहा कि तलाशी मत लो। मैं तो केवल अपना अनुमान व्यक्त कर रहा हूं।"

धर्मा कुछ नहीं बोला।

दोनों 614 व 609 के फ्लैटों के सामने खड़े थे। धर्मा ने गलियारे में देखा। खमोशी पसरी थी। उसने 'मास्टर की' निकालकर पहले 609 न. के फ्लैट का दरवाजा खोला। चेतन उसमें प्रविष्ट हो गया।

धर्मा ने फिर तमन्ना के फ्लैट के दरवाजे को खोला और भीतर घुस गया।

चेतन ने भीतर पहुंचकर दरवाजा अन्दर से बंद कर लिया। फ्लैट की लाईट ऑन करने का इरादा किया था फिर छोड़ दिया। अपना मोबाइल निकाल कर उसकी टॉर्च ऑन की और तलाशी में जुट गया। पांच मिनट बाद वह बैडरूम मे पहुंचा। वहां तलाशी के दौरान उसके हाथ

लैपटॉप लगा। उसे उसने खोला,ऑन किया,कुर्सी खीच कर बेठ गया उसके सामने। थोड़ी देर तक लैपटॉप को खंगालता रहा। चेहरे पर फैली चमक साफ बता रही थी कि जरुर कुछ काम का हाथ लगा था।

“आ...ओह तो ये बात है। स्क्रीन पर नजरे चिपकाये पहले वह चौंका , फिर मुस्कुराकर बोला।”

धर्मा को तमन्ना के फ्लैट में कुछ नहीं मिला। चेतन का अनुमान सही निकला। वह बैडरूम में अन्धेरे में विचारमग्न खड़ा था। मोबाइल की टॉर्च बंद कर ली।

भड़ाक!

एक जोरदार आवाज आई।

वह उछल पड़ा। पर जब देखा, सामने खिडक़ी खुली, जो तेज हवा से खुल गई थी। तमन्ना जाते समय शायद खिडक़ी की सिटकनी लगाना भुल गई थी और भाड़-भाड़ हो रही थी जो दहशत पैदा कर रही थी। धर्मा तेजी से खिडकी के पास पहुंचा। तब पता चला कि बारिश शुरू हो गई थी। खुली खिडकी से ठंडी-ठंडी बूंदें भीतर आ रही थी। धर्मा ने खिड़की के दोनों पल्ले पकड़े और बंद करने लगा। तभी वह ठिठका। नजरें सामने सड़क पर जम गई थी। टैक्सी से वे दोनों उतर रहे थे। दोनों के हाथ मे छाता था, जो उन्होंने टैक्सी से उतरते ही खोल लिये थे। टैक्सी का भाड़ा जेन्ट्स ने ही दिया था। और फिर दोनों थोड़ा फासला रखते हुए बिल्डिंग की तरफ बढ़ चले थे।

धर्मा ने फुर्ती से खिड़की बन्द की। तब तक वह काफी भींग चुका था। उसने ध्यान न दिया। लम्बे-लम्बे डग भरते हुए बाहर निकला, फ्लैट का दरबाजा बन्द किया। ‘मास्टर की’ से पुन: लॉक किया डोर को। तब तक चेतन भी बाहर आ गया।

“क्या मिला तुम्हें? “ चेतन ने पूछा।

“वो बातें बाद मे करेगें।” धर्मा तेजी से उसके पास पहुंचा और दूसरे फ्लैट के दरवाजे को भी बंद करने लगा- “अभी निकल लो यहां से।”

“क्यों? क्या बात है? “ चेतन चौंका।

“वे दोनों वापस आ गए हैं और ऊपर ही आने वाले हैं। “

“कौन दौनों ?”

धर्मा ने उसे घूरा।

“ अच्छा तमन्ना और वो ...।

“हाँ!” धर्मा लिफ्ट की तरफ लपका।

“उधर कहा जा रहे हो ?” चेतन ने फौरन रोका –” लिफ्ट नीचे गई होगी और वे दोनों ऊपर आ रहे होंगे उसी से।”

धर्मा ठिठका।

फिर सीढ़ियों की तरफ लपके। लगभग दौड़ते हुए वे सीढ़ियों तक पहुचे और फिर तेजी से नीचे उतरने लगे।

तभी लिफ्ट से दोनों ऊपर पहुंचे।

चेतन व धर्मा नीचे पहुंचकर तेज बारिश मे भीगने की चिंता किए बगैर पार्किंग में खड़ी अपनी बाइक तक पहुंचे।

धर्मा बाईक पर सवार होकर उसे स्टार्ट करने लगा। वह कुछ ज्यादा ही डर गया लगता था। एक बार तो बाईक गिरा ही देता।

"आराम से। अब क्या डर हैं ? अब तो हम उनसे बहुत दूर हैं।

चेतन ने हौसला अफजाई की।

पर धर्मा जानता था की खतरा अभी टला नहीं है।

तम्मना के फ्लैट में पहुंचते ही बिल्डिंग में हलचल मचने वाली थी।

फिर मिनट भर बाद दोनों बाईक पर बैठे तेज बारिश में वहा से अपने फ्लैट की तरफ उड़े जा रहे थे।

✠✠✠

अगले दिन दोपहर के बाद चेतन थाने पहुंचा। राणावत थाने में ही मौजूद था। तिवारी नहीं था।

"ओह ... सीआईडी आओ।" चेतन पर जैसे ही नजर पड़ी राणावत की, उसने सिगरेट को फूंकना बंद करके मजाकिया लहजे में कहा।

चेतन मुस्कुराया और उसकी ओर बढ़ आया।

" हेव ए सीट।"

"थेक्यू सर।" चेतन एक विजिटिंग चेयर पर ढ़ेर होते हुए बोला।

"और सुनाओ ... क्या प्रोग्रेस हो रही हैं ?" राणावत कुर्सी पर सीधा तनकर बेठते हुए बोला। सिगरेट वह ऐश ट्रे में डाल चुका था।

चेतन खामोश रहा।

"यानी कोई प्रोग्रेस नहीं हुई।" राणावत पुनः मुस्कुराकर बोला-"मुझे तो पहले से ही पता था कि कुछ नहीं होगा। वैसे ,प्रभु से रुपए तो एडवांस में ले लिए होंगे न... न लिए हो तो लें लेना।" उसकी व्यंग्य भरी बातों से चेतन परिचित था सो विचलित नहीं हुआ बल्कि मुस्कुराया।

"सलाह के लिए शुक्रिया सर !" फिर बोला- "वैसे, एक बात पूँछू ?"

"हां ...हां ... क्यों नहीं ?"

"आपको तो ये मालूम ही है की वासु के हिल स्टेशन पहुंचने से पहले यानी जब तक वो अपनी दुकान में पहुंचा था तो एक फोन आया था, जिसे प्रभु कहता है कि उसने किया था। आप भी मानते है ये बात ?"

राणावत की आँखे सिकुड़ी।

"कहना क्या चाहते हो ?"

"प्रभु ने फोन पर ऐसा क्या कहा था की जिसे सुनते ही वासु फौरन हिल स्टेशन के लिए निकल गया ?"

"उसने रतन के बारे में बताया होगा वासु को।"

"रतन के पता चलते ही वासु फौरन हिल स्टेशन निकल गया।"

"उसे डर होगा कि कहीं इस बार वह गायब न हो जाए।"

"फिर हिल स्टेशन पर केवल रतन मिला। रुपए तो पा नहीं सका। फिर क्या फायदा हुआ इतनी जल्दी करने का। रतन हिल स्टेशन से गायब हो जाता तो वासु क्या करता। "

राणावत सोच में पड़ गया।

“तुम आखिर कहना क्या चाहते हो?” फिर उसने गंभीरता से पुछा।

“ये कि प्रभु के वासु को फोन करने के पीछे वही मकसद था, जो वह बता रहा है, न कि वह जो आप सोच रहे है। उसकी खुद को दिमागदार साबित करने वाली बात सच है। उसके खिलाफ सच में साजिश हुई है। अगर ऐसा ना होता तो भला प्रभु वासु को अपने ही फोन से कॉल क्यों करता। क्या उसे पता नहीं होगा कि आगे चलकर वो इससे फंस सकता है ?”

राणावत उसे घूरता रहा।

“प्रभु ने जानबूझ कर वासु को फोन किया, क्योंकि उसका ही एक आदमी भुल्लन, वासु के फेस मास्क में था। वह अपने प्लान में खुद ऐसे प्वाइंट फिट कर रहा था या ... छोड़े थे कि पुलिस उस पर शक करने लगे और जब उस तक पहुँचे तो वह खुद को दिमागदार साबित करने वाले प्लान के बारे में बताकर सबको चौंका दे। पर ऐन वक्त पर बाजी उलट गई और वह निर्दोष होते हुए भी, वासु की हत्या न करके भी, उसकी हत्या के इल्जाम में जेल में एड़ियां रगड़ रहा है। इसमें जितना साजिशकर्ता जिम्मेदार है उतने ही अ ..आप ....भी हैं।”

राणावत ने गुस्से में घूरा।

“आपने पहले से ही प्रभु के खिलाफ दोषी होने कि धारणा बना ली थी इसलिए आपने उसकी एक न सुनी। इस ऐंगल को एक बार भी सोचा होता कि वह सच कह रहा है। उसके खिलाफ साजिश हुयी हो सकती है तो साजिशकर्ता बहुत पहले पकड़ा जाता।”

राणावत चौंका।

“क्या कहा तुमने?” उसने जल्दी से कहा –”साजिशकर्ता का पता पहले चल जाता। मतलब त ... तुमने पता लगा लिया है कि साजिशकर्ता कौन है ?”

तभी भीतर से जगन आया। वह प्रभु से मिलने आया था।

“प्रभु से मिलने आया था।” जगन दुखी स्वर में बोला –”उसकी दशा बहुत खराब हो रही है।”

फिर राणावत को ‘नमस्ते’ बोलकर वहां से रुखसत हो गया।

थोड़ी देर के लिए व्यवधान पड़ गया था।

“त... तुमने सच में साजिशकर्ता का पता लगा लिया ? “

जगन के जाते ही राणावत ने विस्मय से पूछा।

“हां। और वो गिरफ़्त में भी है। “ चेतन उत्साह से बोला।

“गिरफ़्त में है। किसके ?”

“कानून के।”

चेतन ने अपना फोन निकाला। कोई नंबर पंच करके कहा –”आ जाओ।”

राणावत उसे अवाक होकर देखे जा रहां था। जैसे चेतन कोई अजूबा हो।

कुछ मिनट खामोशी आ पसरी।

फिर कुछ लोग धड़धड़ाते हुए अंदर आए। उसमें सब इंस्पेक्टर तिवारी, तीन सिपाही व दो अन्य लोग थे। सिपाही उन दोनों लोगो को पकड़े थे।

“य... ये सब क्या है ? य ... ये दोनों कौन हैं “ राणावत तिवारी से मुखातिब होकर सख्ती से बोला।
“ सर !” तभी चेतन बोला –”जरा प्रभु को यहाँ बुला लीजिए।”
“क्यों ?” राणावत ने उसकी ओर देखा।
“फिर से पूछने कि जरूरत शेष ना रह जाएगी कि ये दोनों कौन हैं ?”
पता नहीं क्या सोचकर राणावत ने तिवारी को इशारा किया।
तिवारी फौरन भीतर चला गया। जब लौटा तो साथ में प्रभु था।
प्रभु को पुलिस ने कोई हफ्ते भर की रिमांड पर लिया था।
“आ... अरे ...! य... ये दोनों ....!” पुलिस की गिरफ़्त में दोनो व्यक्तियों पर नजर पड़ते ही प्रभु उछल पड़ा।
“कौन हैं ये दोनो?” राणावत ने पूछा।
“प्रभु ! सर को बताओं कि ये दोनो कौन हैं ?” चेतन ने प्रभु से कहा।
“ ये दोनो गोली व भुल्लन हैं।” प्रभु दांत पीसते हुए बोला।
राणावत ने चौंककर उन दोनो व्यक्तियों को सर से पांव तक घूरा।
जबकि प्रभु एकाएक गुस्से में गोली-भुल्लन पर झपटा। पर तिवारी को शायद इस बात का अंदेशा था इसलिए वह सतर्क था।
सतर्कता काम आई। उसने प्रभु को बीच में ही पकड़ लिया।
“मुझे छ... छोड़ दीजिए!” प्रभु छटपटाते हुए भयंकर गुस्से में बोला- “मैं इन कमीनों का खून पी जाऊंगा। सालों की वजह से ही मैं इतने दिनो से जेल में एड़ियां रगड़ रहा हूँ।
“प्रभु! काम डाउन।” प्रभु को काबू में आते न देख राणावत ने सख्त लहजे में कहा। प्रभु कमजोर पड़ता चला गया।
“हूं! तो यह दोनो शख्स हैं गोली-भुल्लन?” राणावत ने दोनो पर दृष्टिपात करते हुए कहा – “कुछ बका इन्होंने?”
“सबकुछ सर।” तिवारी मुस्कुराया।
“पर...।” राणावत चेतन से मुखातिब हुआ- “तुम्हारे अनुमान से जो कि सही निकला, ये दोनो तो सिर्फ मोहरे हैं। असली खिलाड़ी तो कोई और है। वो कौन है...कहाँ है?”
चेतन ने तिवारी की तरफ देखा तो तिवारी तुरंत बाहर की तरफ बढ़ गया।
“य...ये क्या बदतमीजी है... तुम लोग मेरे साथ क्यों बदसलूकी कर रहे हो... मैं... मैने भला क्या किया है?” तिवारी दो सिपाहियों के साथ अंदर आया। सिपाही एक शख्स को बुरी तरह जकड़े हुए था।
“असली खिलाड़ी यही है सर।” चेतन बोला।
राणावत व प्रभु की हैरत का कोई ठिकाना नहीं रहा।
“ज... जगन...अ...अंकल तुम!” प्रभु विस्मय से बोला।
“हाँ, प्रभु जी! तुम्हे फांसी के फंदे तक पहुंचाने वाले ये तुम्हारे जगन अंकल ही हैं।” चेतन मुस्कुराते हुए बोला।

"य... ये झूठ है प्रभु बेटा! म... मैने... कुछ नहीं किया। य... ये सब इस जासूस लड़के की चाल है।"

"जगन अंकल! जरा अपने पीछे देखिए। पता चल जायेगा कि किसकी चाल है।"

जगन ने हिचकिचाते हुए पीछे देखा तो ठगा सा रह गया। उसकी नजर गोली-भुल्लन पर चिपक सी गई। थूक गटकना तक मुश्किल जान पड़ने लगा था। चेहरे पर दहशत का भयानक बवंडर सा उठने लगा था।

"अब आप क्या कहेंगे जगन अंकल?" चेतन विजयी मुस्कान बिखेरते हुए बोला।

जगन नजर चुराने लगा।

"इन तक कैसे पहुंचे?" वह बड़ी मुश्किल से बोला।

"बता दूंगा। पहले कबूल करो कि प्रभु को फांसी के फंदे तक पहुंचाने वाले मुख्य कर्ता-धर्ता, साजिशकर्ता आप ही हैं।"

जगन चुप रहा।

"गोली उर्फ आवेश एवं भुल्लन उर्फ नागेश हमें सबकुछ बता चुके हैं। अब तुम्हारे चुप रहने से चलेगा नहीं!" तिवारी थोड़े सख्त लहजे में बोला।

"बोल जवाब दे।" ...राणावत उठकर दहाड़ा।

जगन की रूह कांप गई। उसने फौरन 'हां' में गर्दन हिलाई।

"मुंह में क्या छाले पड़ गए हैं, जो मुंडी हिला रहा है।"

"क्या हां ... मुंह में छाले हैं ?"

"प्रभु के खिलाफ मैने साजिश रची थी।"

प्रभु आवाक खड़ा जगन को घूर रहा था।

"मैने आपका क्या बिगड़ा था। जो आप मुझे फांसी के फंदे तक पहुंचना चाहते थे?" फिर प्रभु ने आश्चर्य से पूछा।

"प्रभु जो पूछ रहा है उसका जवाब दे।" राणावत ने फिर घुड़का।

"मै बताता हूं कि जगन अंकल ने साजिश क्यों रची।" बीच में चेतन बोला-"बात दरसल ये है कि प्रभु के पापा ने, शिवम मल्होत्रा, जहां पहले प्रभु के पापा मामूली मुलाजिम होते थे कि मौत के बाद उनके नालायक बेटे को गुमराह कर, जो वह पहले से था, खूब माल काटा था। या ये कह सकते हैं कि एक तरह से गद्दारी की थी, जिसकी वजह से शिवम की फैमिली राजा से रंक बन गई। शिवम साहब के यहां पहले जगन अंकल ही बतौर ड्राइवर थे। शिवम साहब इन पर बहुत भरोसा करते थे, खूब मदद भी करते रहते। एक तरफ से ये एहसानमंद थे जो कि हर इंसान को होना चाहिए। पर शिवम साहब का बेटा इन्हें समझ न सका और एक दिन जब इन्होंने उसे समझाने कि कोशिश की तो उसने इन्हें खड़े पैर नौकरी से निकाल दिया। ये किराये की टैक्सी चलाने लगे। उधर प्रभु के पापा धीरे-धीरे एक सफल बिजनेसमैन बन गए। उन्होंने भी जगन अंकल को बतौर ड्राइवर अपने यहां नौकरी पर रख लिया, क्योकि वे भी इनसे प्रभावित थे। पर इनके मन में सोनकर फैमिली के लिए नफरत के भाव थे। शिवम साब की फैमिली को फुटपाथ पर लाने का करण ये प्रभु के पापा को ही मानते थे।"

"य...ये तुम क्या बार-बार मेरे पापा के बारे में बोल रहे हो?"

एकाएक प्रभु गुस्से में चेतन से बोला।

"तुम शांत रहो।" राणावत ने फौरन हस्तक्षेप किया-"उसे अपनी बात खत्म करने दो।"

प्रभु कसमसाकर रह गया।

"पर ये कुछ कर नहीं पा रहे थे। मन की भड़ास मन में दबी रह जाती थी। हलांकि जब प्रभु के पेरेंट्स की कार एक्सीडेंट में डेथ हुई तो इन्हें अपार खुशी हुई।"

चेतन ने प्रभु की ओर देखा। प्रभु जगन की तरफ खा जाने वाली दृष्टि से देख रहा था। जगन की नजरें जमीन पर गड़ी सी थी।

"फिर इन्हें एक दिन प्रभु को खुद को दिमागदार साबित करने के लिऐ रचे गए प्लान के बारे में पता चला और इन्होंने अपनी उसी भड़ास के चलते प्रभु के खिलाफ साजिश रच दी। गोली-भुल्लन ने पैसे लेकर इसका साथ दिया।"

"ये सब बातें तुम्हें कैसे पता चली? " राणावत ने पूछा।

"गोली-भुल्लन को ये सारी बातें जगन अंकल ने बताई थीं और इन दोनों ने तिवारी जी को और उन्होंने हमें।"

राणावत ने तिवारी जी की तरफ देखा। तिवारी परे देखने लगा।

"तुम्हें प्रभु के प्लान के बारे में कैसे और कब पता चला ?" राणावत जगन से मुखातिब हुआ।

"एक दिन मैंने बाजार में तमन्ना को एक अजनबी शख्स के साथ ऐसा बिहेव करते देखा जैसै वे दोनों आपस में प्रेमी-प्रेमिका हों जबकि ...।"

"ये क्या बकवास कर रहे हो।" प्रभु ने दांत पीसे –"तमन्ना वैसी लड़की नहीं हैं।"

"तुम बीच में बिल्कुल नहीं बोलोगे।" राणावत ने सख्त लहजे में हिदायत दी। प्रभु कसमसाकर रह गया।

"तुम बोलो।"

"जबकि मेरी जानकरी में तमन्ना प्रभु की प्रेमिका थी। इसलिए दोनों के व्यवहार ने मुझे उलझा दिया। मन में आया कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं है। वैसे, क्लब वाली लड़की मुझे भी पंसद नहीं थी।"

"क्यों।"

"प... पता नहीं!"

"इसलिए तुम्हें लगा कि कोई गड़बड़ तो नहीं हैं।"

"हां!"

"ऐसा होता है। जब इंसान किसी के प्रति मन में पहले से ही कोई धारणा बना ले तो उसकी सोच भी उस व्यक्ति के प्रति वैसी ही बन जाती है। खैर , आगे।"

"मन में जिज्ञसा सी उमड़ी और उसी के वशीभूत होकर मैंने दोनों का पीछा किया। दोनों एक होटल में गए और कमरे में बंद हो गए। पर उनकी बातें मुझे साफ सुनाई दे रही थी।"

"क्या।"

“तमन्ना प्रभु के उस प्लान के बारे में, जो वह डायरी में उतार चुका था, का ज़िक्र उस आदमी से कर रही थी।”

प्रभु चौंका। वह कुछ कहना चाहत था पर राणावत ने सख्त हिदायत दी थी जिसकी वजह से चुप रहा।

“प...प्लान तुम्हें तमन्ना के थ्रू पता चला ?”

“हां! उसने प्रभु की डायरी पढ़ी थी।”

“फिर तुमने अपनी साजिश रच दी और उसी के तहत गोली-भुल्लन को प्रभु के पास भेजा।”

“कि... किया तो ऐसा ही था पर केवल तमन्ना कि बात सुनकर नहीं बल्कि पहले खुद डायरी पढ़ कर....।”

“तुमने...डायरी कब...कैसे पढ़ी ?” चेतन ने पूछा।

“य...ये तुम्हें नहीं पता ?” राणावत ने हैरानी से उसे देखा।

“जो बातें गोली-भुल्लन को पता थीं मैं वही जानता हूँ।”

वह फिर जगन से मुखातिब हुआ-”बोलो भाई।”

“मैं घर में जाकर पहले ही स्टोर रूम, जो बहुत इस्तेमाल नहीं होता था, में छिप गया था। उस समय प्रभु तमन्ना से मिलने जाने वाला था।”

“तुम्हें पता थी ये बात?”

“हां!”

“कैसे?”

“सुबह प्रभु ने पहले चलने को कहा था पर मैंने बीमारी का बहाना कर मना कर दिया था।”

“क्योंकि तुम्हें डायरी चेक करनी थी।”

“हां!”

“खैर, तुम स्टोर रूम में छिपे रहे और जब प्रभु घर से चला गया तो स्टोर रूम से बाहर निकले और बेडरूम पहुँच कर डायरी पढ़ी। उस समय घर की मेड कहाँ थी।”

“वो अपनी ड्युटी खत्म कर चुकी थी।”

“तुम घर से निकले कैसे ?”

“स्टोररूम की खिड़की खोलकर पिछवाड़े के रस्ते।”

“तभी तुम मेरी लिस्ट में नहीं आए।” चेतन बोला।

“इसी संभवना को ध्यान में रख कर ही तो ऐसा किया था।”

“सच में तुमने सारा काम बड़े अच्छे ढंग से प्लान किया था।”

“तो तुम्हें डायरी पढ़ लेने के बाद जब लगा कि प्रभु सच में खुद को दिमागदार साबित करने के लिए प्लान रच रहा है तो अपना प्लान सोचकर गोली-भुल्लन को उसके पास भेजा।” राणावत ने कहाँ!

“ह...हां! ये दोनों भी शिवम साहब के मुरीद थे,अहसान मंद थे और उनके लिए कुछ करना चाहते थे।”

“और क्या खूब किया। एक तरफ प्रभु को उलझाये रखा, उसे लगता रहा कि अपने प्लान में सफल हो रहा है जबकि वह खुद एक बड़ी साजिश का शिकार होता जा रहा था। खूब बहुत खूब। वैसे, वह डायरी तुमने कब गायब की?”

“प्रभु की शादी वाले दिन, जब आप लोग वहां पहुचे थे। ऐसी बात का मुझे इंतजार था।

“तुमने डायरी गायब क्यों की ?”

“मैं ऐसा कोई भी सबूत नहीं छोड़ना चाहता था। जो यह बात सिद्ध करें कि प्रभु का खुद को दिमागदार साबित करने वाला प्लान सच है। “

“हुं!” राणावत ने पलभर सोचा फिर पूछा-”वासु का फेस मास्क किस डॉक्टर ने बनाया था।”

“मालूम है सर।” तिवारी बीच में बोला।

“कौन है ?” राणावत ने घूरा।

“हर्षित मेहता।”

“मेहता भी शिवम साहब का मुरीद था ?” राणावत ने तिरछे नेत्रों से जगन कि ओर देखा।

“ह ...हां! डॉक्टरी की पढ़ाई में शिवम साहब ने मेहता की बहुत मदद की थी। न करते तो वह डॉक्टर नहीं होता। खैर, हिल इस्टेशन पर जो लाश लेकर पहुंचा था। वो कौन था। ?”

“गगन त्रिपाठी।” जगन बोला।

“गगन त्रिपाठी-शातिर अपराधी ?” राणावत चौंका।

वह त्रिपाठी से परिचित था। उस पर बहुत सारे इल्जाम थे पर गिरफ्तार नहीं किया जा सका आज तक उसे।

“हां!”

“वो भी शिवम साहब का मुरीद था?”

“उसने पैसे लेकर काम किया था।”

“वो हिल स्टेशन पर कैसे पहुंच गया?”

“उसे भेजा था, ताकि वासु को मारकर प्रभु व नकली वासु बने भुल्लन को सौंप दे। प्रभु की नजर में ये काम भुल्लन ने उसके लिए किया था, जबकि हकीकत ये थी कि वो काम ...।”

“तुमने किया था।” राणावत ने बात पूरी की- “प्रभु को लगता कि भुल्लन ने किसी की लाश का बढ़िया इंतजाम किया है, जिसके लिए उसने भुल्लन को कुछ दिनों पहले हिल स्टेशन भेजा था।”

“हां।”

“वासु को यहाँ से कैसे और कौन हिल स्टेशन ले गया था?”

“गोली ले गया था। वासु को बेहोश किया गया था। हिल स्टेशन पर गोली को बेहोश वासु को त्रिपाठी को सौंपना था। जिसने वासु को मारकर आगे प्रभु को देना था।”

“इसमें जगन की क्या जरूर थी। ये काम तो गोली भी कर सकता था।”

“हां! पर इसमें रिस्क था। प्रभु की नजर में गोली रामनगर में वासु की रखवाली कर रहा था। अगर धोखे में, बाई चांस भी वह कार के नजदीक पहुंच जाता, उसे झांकता और ड्राइवर को पहचान लेता तो गड़बड़ हो जाती। हलांकि इंतजाम सब ऐसे सेट किया था कि ऐसे होने के चांस बहुत कम थे। फिर भी अगर प्रभु कार के नजदीक जाता ...झांकता ...ड्राइवर को देख लेता तो और ...जगन को देखता भी तो कोई बात नहीं थी। वह यही समझता की इसका इंतजाम भुल्लन ने किया है।

फिर आगे जगन भी ढूंढे मिलने वाला नहीं था।”

“इस समय गगन त्रिपाठी कहाँ है ?” राणावत ने सब पर दृष्टिपात किया।

“काम हो जाने के बाद उसने कहा था की वह हमें ढूंढे नहीं मिलेगा। काम की कीमत वह पहले ही ले चुका था।”“इस बार नहीं बचेगा ये त्रिपाठी।” राणावत ने दांत पीसे- “इन्हें अंदर लॉकअप में डालो।”

गोली-भुल्लन दोनों लॉकउप में पहुंचा दिए गए। सब वहीं कुर्सियों पर विराज गए। तिवारी व प्रभु भी।

“तुम्हें इन सबके बारे में कैसे पता चला?” राणावत समने बैठे तीनों चेतन, प्रभु और तिवारी पर नजरें जमाते हुए बोला।

चेतन ने गला खंखार, पहलू बदलकर कहा –”एक छोटे से धब्बे से।”

“धब्बे से।”

“हां!”

“ये धब्बे की क्या कहानी है ?”

“छोटी सी है।”

“सुनाओ।”

“कल जब मैंने प्रभु के घर जाकर वह मेज दराज चेक की जिसमें प्रभु की प्लान लिखी डायरी रखी थी,जो गायब हो गई थी, तो मेरी अंगुली में दराज में निकली कील चुभ गई थी। मैं देखने के लिऐ झुका कि आखिर क्या चुभा है। तब वह कील दिखी और दिखा वो लाल धब्बा, जो किसी अंगुली का था। मन में ख्याल आया कि वह धब्बा तब बना होगा जब किसी ने वह दराज़ खोली होगी। हो सकता है कि वो धब्बा डायरी गायब करने वाले की अंगुली का हो।”

“तुम्हें ऐसा ख्याल क्यों आया ?”

“ऐसे ख्याल ही तो हम लोगों को जासूस बनाते हैं सर।” चेतन मुस्कुराया।

“पर वह धब्बा और वजह से ... किसी और का ...प्रभु का भी ...तो हो सकता था ?”

“बिल्कुल। पर मन में चूंकि एक ख्याल आ चुका था -सो बाद में मैंने प्रभु से पूछा। उसने बताया की मेज डायरी में प्लान लिखने के दो-तीन पहले ही मंगाई थी और उसने खुद चेक किया था तब वहां कोई धब्बा नहीं था।”

“तुमने प्रभु से कैसे पूछा?-ये तो लॉकअप में बंद था ?”

राणावत की आँखे सिकुड़ी।

“मैंने फोन किया...।” चेतन कहते-कहते रुका। दृष्टि तिवारी की तरफ उठी।

“व...वो बात ... मैंने करवाई थी।”

“बढ़िया।” राणावत ने तिवारी को घूरा फिर चेतन की तरफ देखकर बोला-”फिर?”

“तब मुझे लगने लगा कि वह धब्बा डायरी गायब करने वाले की अंगुली का ही हैं।”

“ऐसा क्यों? क्या मेज को प्रभु के अलावा वीर, तम्मना, जिनका इसके घर खूब आना जाना था नहीं छूते होंगे?”

“फिर घर में मेड भी तो थी।”

“उसका काम केवल खाना-बर्तन करना ही है।

“वीर, तमन्ना ....। “

“उस समय मुझे भी सिर्फ ख्याल आया था। पक्का कुछ नहीं किया था।”

“ठीक! फिर?”

“वह धब्बा लाल रंग का था और मेरी पूछताछ के केन्द्र वाले व्यक्तियों में से लाल रंग से भी केवल तमन्ना का संबंध था। पर वह लाल रंग की नेल पॉलिश लगती थी फिर वह प्रभु को फंसाकर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी क्यों मारेगी। फिर ख्याल आया जगन अंकल का, जिसके पास मैं शिवम साहब की जानकारी लेने गया था।”

“तुम्हें शिवम के बारे में कैसे पता ? “

“प्रभु ने बताया था। मैंने उन सभी व्यक्तियोंके नाम पूछे थे, जिन पर जरा भी संदेह किया जा सकता था। तब प्रभु ने शिवम की वाइफ के बाबत बताया था, जो उसके घर उसके पापा से लड़ने आती थी।”

“क्यों ?”

चेतन ने बताया।

“हूं फिर।”

“तब मुझे जगन अंकल, जिनकी हार्डवेयर की दुकान है और वहां पेंट वगेरह भी मिलता है, का ख्याल आया क्योंकि इनके घर के गेट का कलर भी लाल था। बातचीत में जगन अंकल ने ही बताया था की गेट की पुताई लगभग बीस-बाईस दिन पहले की है।”

“तुम्हें लगने लगा जगन ही साजिशकर्ता, डायरी गायब करने वाला? “

“हां!”

“ये न सोचा कि वह भला ऐसा क्यों करेगा।?”

“सोचा था। पर वजह कई बार में पता चलती है।”

“हूं! खैर आगे।”

“वैसे, वह मेरा तुक्का ही था कि मैंने तब वजह भी सोच ली थी।”

“क्या ?”

“यही कि जगन अंकल के शिवम साहब से ताल्लुक थे। शिवम की फैमिली की बर्बादी का फुल नहीं तो बहुत हद तक प्रभु के पापा भी जिमेदार थे और ये बात भी जगन को पता थी। हो सकता है प्रभु के पीछे जगन को शिवम साहब के प्रति अपनी वफादारी दिखाने का यह सुनहरा मौका लगा हो।”

“जो कि सही निकला।”

“हां! पर उस समय यह दूर की कौड़ी थी। खैर, मैंने इसी संभावना के तहत तिवारी जी को फोन कर जगन के फोन की सारी कॉल रिकॉर्ड करवाने का इंतजाम करने को कहा। अगर जगन दोषी था तो वह कभी न कभी तो कोई गलती करता ही।”

“जगन का नम्बर पता था।”

“संयोग से प्रभु के बेडरूम को चेक करने के बाद जब मेरे फोन ने काम करना बंद कर दिया और मुझे वही धब्बे के बारे में प्रभु से बात करनी थी तिवारी जी के थ्रू, तो मैंने जगन का ही फोन यूज किया था। उसका नंबर तिवारी जी के फोन में आ चुका था। फिर जगन के प्रति लाल पेंट से पुता गेट देखकर मेरी विचारधारा बदली। मुझे लगा वह साजिशकर्ता हो सकता है। इसलिए बाद में मैंने तिवारी जी से उसकी कॉल रिकार्ड करने व पिछले एक महीने की सभी कॉल डिटेल्स निकलवाने को कहा।”

“उसमें एक नंबर ऐसा था, जिससे जगन ने महीने भर के अंदर बहुत बार बात की।” तिवारी बोला पड़ा – “पता किया तो वह नंबर नागेश के नाम पर था।”

“नागेश मतलब गोली?”

“हाँ! पर तब पता नहीं था। लेकिन कल शाम को जगन ने नागेश को फोन करके मुम्बई जाने को कहा और नागेश अपने काम के पैसे मांग रहा था। उसकी बातचीत से तय हो गया था कि जगन ही सारे फसाद के पीछे है पर पहले हमें नागेश को पकड़ना था। मोबाइल कम्पनी को उसका नंबर बताकर उसका एड्रेस हासिल किया और जाकर उसे दबोचा। संयोग से भावेश उर्फ भुल्लन भी वही था। वह भी पकड़ में आ गया। हर्षित मेहता आउट ऑफ स्टेशन है, रामनगर आते ही पकड़ा जायेगा।”

“नागेश... भावेश को पहचाना कैसे?”

“प्रभु ने हुलिया बताया था ना।”

“ओह! दोनो कहाँ मिले?”

“यहीं रामनगर में।”

“रामनगर में। दोनो तब से रामनगर में ही रह रहे थे?” राणावत को हैरत हुयी।

“हाँ! आपकी मेहरबानी से।” चेतन धीरे से मुस्कुराया था।

“क... क्या कहा?” राणावत ने फौरन उसे घूरा।

“आपकी धारणा में प्रभु ही वासू का कातिल था, शुरू से ही जो आगे और मजबूत हो गयी थी, जिसके चलते आपने किसी और संभावना की तरफ देखना भी गंवारा नहीं समझा। प्रभु की बातें आपको बकवास लगी। आपकी इसी धारणा की वजह से असली अपराधी निश्चिंत हो गए थे। खुद को सेफ समझने लगे थे।”

चेतन चुप हुआ तो खामोशी छा गयी – कुछ पल बरकरार रही।

एकाएक राणावत ने तिवारी को देखा।

“तुमने मुझे जरा सी भी भनक नहीं लगने दी तिवारी ! मुझे बताते तो क्या मैं...।”

“आप प्रभु को ही कातिल मान बैठे थे। उसकी साजिश वाली बात को बकवास समझते थे। इसलिए मेरी आपको बताने की हिम्मत न पड़ी।” तिवारी हिचकते हुऐ बोला।

राणावत ने गहरी साँस भरकर छोड़ी, लगा अफसोस में आह भरी हो।

प्रभु ने गला खंखारा। सबकी नजरें उस पर आ ठहरी।

"सीआईडी, जगन अंकल तमन्ना के बारे में क्या बात कर रहे थे? क्या उनकी बातें सच थी?"

"हाँ!" चेतन ने उसे देखा।

प्रभु उलझन में पड़ गया।

"ये मुमकिन नहीं है।"

"तुम्हारी सोच में... पर ये सही है।"

प्रभु ने चेतन को देखा।

"त... तो वो शख्स कौन था जिसका जिक्र जगन अंकल कर रहे थे?"

"तुम ना सुन सकोगे।"

"क्यों?" प्रभु ने चौंककर उसे देखा। राणावत की आँखों में भी दिलचस्पी के डोरे साफ नजर आ रहे थे।

"बात ही ऐसी है।"

"त... तुम बताओ।" प्रभु के दिल की धड़कने बढ़ने लगी थी।

"तो... सुनो... वह शख्श तमन्ना का पति था।"

भयानक विस्फोट सा हुआ।

प्रभु सन्न रह गया। यही हालत राणावत की भी थी।

कुछ पल कोई नहीं बोला।

"य... ये नया माजरा क्या है?" फिर राणावत ने ही पूछा।

"तमन्ना पहले से ही शादीशुदा है। वो प्रभु से प्यार का नाटक करके इसे बेवकूफ बना रही थी।"

"हाँ! और ये उसका धंधा है। प्रभु इकलौता शख्स नहीं है, जिसे उसने अपने रूप के जाल में फंसाया हो। इससे पहले भी वो कई लोगों के साथ ऐसा कर चुकी है। पहले किसी रईस को अपने रूप के जाल में फंसाकर अपना दीवाना बना लेती है फिर शादी कर लेती है, जो मुश्किल से महीने दो महीने चलती है और पति की किसी एक्सीडेंट में मौत हो जाती है। उसके बाद वो उसकी सारी सम्पत्ति समेटकर अगले शिकार की तलाश में निकल जाती है। इस काम में उसका पति भरपूर मदद करता है। इस बार के शिकार प्रभु थे। मेरे पास सारी बातें प्रूफ करने के लिऐ सबूत भी है।" चेतन ने तमन्ना के पति के फ्लैट में मिले लैपटॉप, जिसमें उसके सारे गुनाह कैद थे, से काम की सारी जानकरी फोन में ट्रांसफर कर ली थी। वो सब राणावत, प्रभु को दिखाई।

उन्हें तलाशी की जरूरत क्यों पड़ी, ये भी बताया।

प्रभु को काटो तो खून नहीं।

"तुम वासु के कत्ल से बरी हो जाते फिर भी तुम्हारी जिंदगी ज्यादा दिन की नहीं थी, मिस्टर प्रभु सोनकर।"

राणावत प्रभु की तरफ देख कर मुस्कुराया।

प्रभु जड़ बना रहा। फिर क्षण भर बाद गुस्से से बिफरते हुए बोला-"म...मैं उस दगाबाज, कमीने को छोड़ूंगा नहीं।"

"फिलहाल ये मुमकिन नहीं है।" बीच में चेतन बोला- "तमन्ना अपने पति के साथ पुलिस के हाथ लगने से पहले ही फरार हो चुकी है। उन्हें शायद पता चल गया था कि उनका भांडा फूटा चुका है।"

कुछ पल खामोशी छाई रही।

"अच्छा , प्रभु के बेडरूम की मेज की दराज़ के हत्थे पर जो हल्का लाल रंग का धब्बा बना, वो तब बना था जब तमन्ना से प्लान के बारे में जगन को पता चला और वो सच्चाई जानने के लिए डायरी पढ़ने के लिए प्रभु के घर गया। उसी दौरान उसने गेट में लाल रंग पेंट की थी। प्रभु के घर हाथ साफ करके गया होगा पर अनजाने में अंगुली में कहीं पेंट लगी रही, जिसका निशाना हत्थे पर बना ...है न ?" राणावत बोला।

"जी, बिल्कुल।"

"डायरी गायब कब की?"

"शादी वाले दिन, जब आप सब प्रभु के पास पहुचे थे। बाकी साब बाहर बिजी थे और जगन अंकल ने मौका मुफीद देखकर डायरी गायब कर डाली। वैसे वह डायरी न भी गायब करता और वो आपके हाथ लग जाती तो भी कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था। आपको वो भी प्रभु का ही शातिराना कारनामा जान पड़ता।"

"सर ! इसी खुशी में चाय हो जाए।" तिवारी हंस कर बोला। पर राणावत ने उसे घूरा तो शांत हो गया।

जबकि राणावत बोला-" मंगा लो।"

फिर चाय मंगाई गई। सबने पी।

चेतन उठा।

"अच्छा , नमस्ते सर। चलता हूं।" उसने तिवारी, राणावत दोनों का अभिवादन किया और दरवाजे की और बढ़ गया।

"तुमने एक बार फिर बाजी मार ली पर इसका मतलब ये नहीं कि खुद पर घमंड करने लगे।" राणावत ने कहा।

चेतन ठिठका-पलटा-मुस्कुराया बोला-"नो ... नेवर सर।"

"नाऊ...गो।"

"यस सर...।"

चेतन वहां से रुखसत हो गया।

प्रभु ने गला खंखारा।

"म...मैं भी जाऊं।"

"तुम वासु के कत्ल से भले ही बरी हो गए हो पर वासु के अपहरण का अपराध तुमने किया था। सच कहू तो अगर तुम खुद को दिमागदार साबित करने का प्लान न बनाते तो वासु जिंदा होता।"

प्रभु बेचैन दिखने लगा।

"देखते हैं। कोर्ट में क्या फैसला होता है।"

"त...तब तक ?"

प्रभु परेशान नजर आने लगा।

✠✠✠

चारों तरफ अधेरा व्याप्त था। एक तो रात का वक्त था। दूसरे उस इलाके कि लाइट गुल थी।

अंधेरे में डूबा वह घर भुतहा घर की शक्ल अख्तियार किए जान पड़ता था। उस लॉन में खड़े अशोक आदि के पेड़ थे जो हवा में झूम से रहे थे, भयानक दैत्य प्रतीत हो रहे थे।

ऐसे में कोई बाउंड्री से नीचे लॉन में कूदा। धप्प की हल्की सी आवाज हुई पर हवा के तेज शोर में दबकर रह गई।

कूदने वाला खड़ा हुआ और सधे कदमो से घर के मुख्य द्वार की तरफ बढ़ गया।

दरवाजे के पास पहुंचकर ठिठका-फिर दरवाजे पर दस्तक दी।

कुछ देर बाद दरवाजा खुला। वह झट से भीतर प्रवेश कर गया। दरवाजा पुनः बंद हो गया।

"लाइट कब से गुल है ?" आगंतुक ने भीतर पहुंचकर पूछा।

"देर हो गई। तुम अंदर कैसे आए? आयरन गेट तो बंद था।" वह जनानी आवाज थी।

"बाउंड्री फांद कर।"

"ब...बाउंड्री फांदकर।"

"ऐसे अंधेरे में गेट पर खड़े होकर दरवाजा खोलो-चिल्लाता तो अच्छा लगता।" आगंतुक सोफे पर बेठ गया।

"उसका बुखार कैसा है ?" क्षणिक चुप्पी के बाद आगंतुक ने पूछा।

"अब ठीक है।"

तभी लाइट आ गई।

उसी समय दूसरे कमरे से निकलकर तीन शख्स और वहां आ खड़े हुए।

"तुम आ गए वासु।" उन तीनों में से वासु की चाची बोली।

सोफे पर बैठे वासु जिसके चेहरे पर घनी-दाढ़ी मूँछ थी, वह पहचान में नहीं आता था। सर के बाल भी बहुत बड़े-बड़े थे, ने 'हाँ' में गर्दन हिलाई और जूते-मोजे उतारने लगा।

वासु की बहन भी वहीं खड़ी थी। इसके अलावा भी, करनी, उसकी प्रेमिका व एक बुजुर्ग महिला भी थी जो करनी की बुआ थी।

वासु जूते-मोजे उतार कर फारिग हुआ, मुस्कुराता हुए करनी की तरफ देखकर बोला – "अब हमें डरने की जरूरत नहीं है। अब हमें कोई खतरा नहीं।"

"म... मतलब ?" करनी चौंकी। बाकियों का भी यही हाल था।

"जवाब में उसने जेब से न्यूज़ पेपर उसे थमा दिया।"

"अब मामला निपट गया है – हमें शादी कर लेनी चहिए।"

करनी ने उसकी बातों पर ध्यान दिए बगैर पेपर के फ्रंट पेज को खोला तो वह विस्फोटक खबर पढ़ी। खबर रामनगर से संबंधित वासु मर्डर केस साल्व के नाम से थी।

उसमें जगन, गोली, भुल्लन वगैरह की गिरफ्तारी आदि की पूरी खबर थी। जिसे पढ़कर करनी खुश नजर आने लगी थी। उसे खुश देखकर बाकियों के चेहरे भी खिल गए।

बुजुर्ग महिला आगे आकर मुस्कुराकर बोली – "अब कोई प्रॉब्लम नहीं है तो तुम दोनों शादी कर घर बसाओ, यहीं रहो। मैं कौन ज्यादा दिन जियुंगी। जितने दिन जियूँ, रोटी देते रहना बस। वैसे, सोचा था कि वीर को अपने पास रखूंगी। पर वह बहुत गुस्से से वाला है – मेरे से उसकी जरा भी नहीं पटती। आज तक पूछने भी नहीं आया कि बुआ कैसी हो -जिंदा हो या मर गयी। फोन तक कभी नहीं किया।"

"आ... आप फिक्र ना करे बुआ जी।" करनी ने बुजुर्ग महिला का हाथ अपने दोनो हाथों में लेकर प्यार से कहा-"हम आपको कोई तकलीफ नहीं होने देंगे।"

"पर तुम्हें जो तकलीफ होगी उसका क्या करोगे?"

सब उछल पड़े। फौरन दरवाजे की ओर देखा। करनी ने दरवाजा केवल भिड़ाया था, कुंडी नहीं लगाई थी। दरवाजे पे चेतन, धर्मा खड़े मुस्कुरा रहे थे।

"त...तुम लोग कौन हो?" वासु ने पूछा। सब के चहरे पर हवाइयां उड़ रही थी।

"सीआईडी मतलब चेतन इंद्र दीक्षित।"

"और मैं धर्मा।"

"त...तुम व... वो जासूस हो, जिसने प्रभु के लिए जासूसी कर साजिश का पर्दाफाश किया ?"

न्यूज़ में चेतन आदि के बारे में भी तफ्तीश से लिखा कि केस उन्होंने ही हल किया।

"हां! पर जिसके मर्डर के इल्जाम से प्रभु फिलहाल बरी हो जाएगा पर जगन, गोली-भुल्लन वगैरह जरूर सजा पाएँगे, वो जनाब तो हमारे सामने सही सलामत, जिंदा खड़े है। शादी-वादी का प्रोग्राम बना रहे हैं।"

वासु ने झिझकते हुए पूछा। here something is missing

"बताएँगे। पहले आप अपने जीवित होने के रहस्य से पर्दा उठाइये ?" चेतन ने सवाल किया।

वासु बगले झांकने लगा।

"बोलिए।"

"मुझे अपहरण करके एक फॉर्म हाउस में रखा गया था। पर घंटा भर बाद ही गोली मेरे पास आया और मुझे बेहोशी का इंजेक्शन जबरजस्ती लगा दिया। मैं बेहोश हो गया। जब होश आया तो खुद को एक कार की पिछली सीट पर पाया। चारों तरफ अंधेरा था। दो व्यक्ति कार के बाहर खड़े बातें कर रहे थे। उनकी बातचीत सुनकर मैं बुरी तरह चौंका क्योंकि वे मेरी हत्या की बात कर रहे थे।

"यानी तुम हिल स्टेशन पर पहुँच चुके थे। कार के बाहर खड़े दोनो व्यक्ति, एक गोली था दूसरा गगन त्रिपाठी।"

"हाँ, गोली उससे कह रहा था कि वह मुझे मारकर आगे प्रभु व नकली वासु को सौंप दें। उनकी बातों ने मेरी बुद्धि घुमा दी।– बेहोशी हवा हो गई। दिमाग तेजी से काम करने लगा। हालाँकि मेरी हत्या क्यों की जा रही थी? प्रभु व नकली वासु कौन थे? क्या चक्कर

था? मुझे कुछ भी पता नहीं था और उस वक्त मैं ये सब पता करना भी नहीं चाहता था। उस वक्त तो दिमाग में सिर्फ यही था कि कैसे बचुं। मुझे मेरी मौत निश्चित नजर आ रही थी। पर मैंने हिम्मत जुटाई। किस्मत ने भी मेरा साथ दिया। गोली के जाने के बाद दूसरा व्यक्ति जो तुम कह रहे हो कि गगन त्रिपाठी था कार की ड्राइविंग सीट पर बैठकर कार लेकर आगे चल दिया। कुछ देर बाद उसने कार एक सुनसान जगह रोकी। मैं समझ गया कि वह यहां मेरा कत्ल करके आगे मेरी लाश प्रभु व नकली वासु को सौपेंगा। मैं सजग हो उठा। मुझे जो भी करना था, जल्दी करना था। चालाकी से करना था। मेरी एक चूक मेरे लिए मौत का सबब बन सकती थी। मैंने शर्ट उतारी। त्रिपाठी की जानकारी में मैं बेहोश था जबकि किस्मत और ईश्वर की कृपा से मुझे होश आ गया था पर मैंने जाहिर नहीं किया था। और इससे पहले कि त्रिपाठी कार से बाहर निकलकर घूमकर पीछे की खिड़की खोलकर मुझे मौत के घाट उतारता, मैं शर्ट का फंदा उसके गले में डालकर जुनून में कसता चला गया। वह मर गया। मैं उस घड़ी बुरी तरह कांप रहा था। दिल राजधानी ट्रेन की गति की माफिक धड़क रहा था। ठंडे मौसम में भी मुझे पसीना छूट रहा था।

"ठीक। ठीक। आगे।"

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। पहले ख्याल आया कि मैं बच गया हूं। मुझे वहां से फौरन भाग जाना चाहिए। पर फिर थोड़े ठंडे दिमाग से सोचा जाए कि मुझे जानना चाहिए कि आखिर माजरा क्या है। क्यों मेरा अपहरण करके मुझे यहां लाकर, मार कर प्रभु व नकली वासु क्या करने वाले हैं? ये सब जानने कि इच्छा हुई और मैंने त्रिपाठी की लाश को प्रभु व नकली वासु को सौंपने का फैसला किया और फिर गगन की लाश को पीछे डिक्की में डालकर खुद कार ड्राइव करके प्रभु व नकली वासु के पास पहुँचा। कहाँ पहुंचना है ये जानकरी भी गोली व त्रिपाठी की बातचीत से ही पता चली थी।

"हूं! पर तुम्हें कैसे पता था कि वो जगह कहाँ है?"

"मैं दो साल पहले उस हिल स्टेशन पर पहले भी जा चुका था।"

"क्यों।"

मेरा एक क्लाइंट था। उसके रिश्तेदार हिल स्टेशन पर रहते थे। रिश्तेदारों के यहां लड़की की शादी थी और मेरा क्लाइंट चाहता था कि मैं शादी की फोटोग्राफी करूँ। उसे मेरा काम बहुत पसंद था। उसने अपने रिश्तेदार से बोल रखा था, वह बढ़िया फोटोग्राफर लेकर आएगा। उसी दौरान मैं हिल स्टेशन घूमा था।

"ओह... पर तुम्हें यह डर नहीं था कि प्रभु व नकली वासु तुम्हें पहचान लेंगे?"

"गोली, त्रिपाठी की बातचीत से ये भी पता चला था कि नकली वासु वहां खुद लाश रिसीव करेगा। ऐसे करेगा की ड्राइवर के बारे में प्रभु को पता नहीं चलेगा। फिर नकली वासु लाश का इंतजाम ऐसे करने वाला था कि प्रभु को उसके बारे भी पता नहीं चलता। इन्ही बातों ने जहां मेरा मनोबल बढ़ाया था वही ये भी समझ में आने लगा था कि प्रभु कोई खेल खेल रहा है, पर कोई उसके साथ भी खेल रहा है। मामला बेहद उलझाऊ था।

"खैर तुम वहां पहुंचे। नकली वासु ने कार से लाश निकाल ली और तुरंत ही उसके चेहरे पर एसिड डालकर लाश का चेहरा खराब कर दिया।"

“हाँ! मैं समझ गया था कि नकली वासु भी प्रभु के साथ गेम खेलने वालों का साथ दे रहा है।”

“फिर तुम वहां से चले गए?” चेतन ने पूछा।

“हाँ! पर त्रिपाठी का एक काम और करना था। इसलिए मुझे सुबह तक रुकना पड़ा।

“कौन सा काम ?”

“झरने में अटकी पड़ी लाश के बारे में पुलिस को सूचना देने का।”

“यानी हिल स्टेशन कि पुलिस को सुबह झरने के पास अटकी पड़ी लाश, जिसे वासु की लाश का रूप दिया गया था, पर जो दरअसल गगन त्रिपाठी की लाश थी, के बारे में तुमने फोन किया था।

“हाँ! गगन त्रिपाठी का फोन मेरे हाथ लगा था। मेरा फोन तो गोली ने ले लिया था और नकली वासु बने भुल्लन को दे दिया था।”

“फिर?”

फिर मैं मोबाइल डैमेज कर ट्रेन से रामनगर आ गया। चूंकि अभी सारा माजरा डिस्क्लोज था तो ऐसे में मेरा खुले में आना खतरे से खाली नहीं था। मैं कुछ दिन खुद को छुपाना चाहता था पर मुझे अपने घर वालों व करनी की भी चिंता थी जो मेरी मौत की खबर पाकर परेशान थी। करनी तो आत्महत्या तक कर सकती थी। ये मुझसे कई बार कह चुकी थी कि अगर हम दोनो एक ना हुए तो वह सुसाइड कर लेगी। मैंने करनी को फोन किया और अपने बारे में बताया। साथ ही साथ कुछ दिनो के लिऐ खुद को छिपाने वाली बात बताई, तो उसने मुम्बई चलने को कहा। यहां इसकी बुआ जी रहती थीं। मैं इसके साथ मुम्बई चला गया। बाद में चाची-बहन को फोन कर उन्हें भी यहीं बुला लिया।

“तुम्हें पहले पता नहीं था कि प्रभु को जगन फंसा रहा है?”

“नहीं! मुझे तो प्रभु को खुद को दिमागदार साबित करने वाले प्लान के बारे में भी बाद में न्यूज़ से पता चला।”

अगर हम साजिशकर्ता को पकड़ने में नाकाम हो जाते तो प्रभु का तुम्हारे कत्ल के इल्जाम में फांसी पर चढ़ना एकदम पक्का था।”

वासु बगलें झांकने लगा।

“हमें उससे फर्क नहीं पड़ने वाला था। ये सारी फसाद कि जड़ भी प्रभु ही था। फिर वासु बच गया तो अपनी किस्मत से वरना ये तो मौत के मुंह में पहुँच ही गया था।

चेतन को सवाल न सूझा।

“अच्छा, तुम्हें रतन के बारे में पता था कि वह भी हिल स्टेशन पर रहता है?” कुछ रुककर चेतन ने पूछा।

“पता होता तो उससे सम्पर्क नहीं करता। कमबख्त ने मेरे साथ धोखेबाजी की। पचास हजार रुपए का मुझे चूना लगा दिया।”

बहरहाल प्रभु की जो लाश वासु की लाश बनाकर पेश की गई थी, वो दरअसल गगन त्रिपाठी की थी। जरूर गगन त्रिपाठी की एक पैर में छः अंगुलियाँ रही होगीं तभी पुलिस

भी यही समझी कि वह लाश तुम्हारी ही है क्योंकि तुम्हारे घर वालों ने निशानी के तौर पर बताया था कि वासु के एक पैर में छः अंगुलियाँ हैं... नहीं?

"ह... हां।"

"अगर गगन त्रिपाठी के पैर में छः अंगुलियाँ नहीं होती तो?"

तो मामला उलझ जाता। पर किस्मत ने, ईश्वर ने मेरा साथ दिया।

हमारे यहां आने के बावजूद भी तुम ऐसा कह रहे हो ?

मैं पहले की बात कर रहा हूं – तुम्हारे यहां आने से पहले तक की बात कर रहा हूं। वैसे, तुम लोगों को मेरे बारे में कैसे पता लगा?

करनी का मुम्बई जाकर टिक जाना मुझे खटका था क्योंकि मेरी जानकारी में वह तुम्हें बहुत प्यार करती थी... तो उसको रामनगर में ही रहकर कुछ करना चाहिए था। जैसा कि एक प्रेमी के कत्ल हो जाने के बाद प्रेमिका उसके क़ातिल को पकड़वाने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा देती है, जैसा कि करनी ने पुलिस के सामने धमकी भी दी थी। पर ऐसा कुछ न हुआ। वो मुम्बई में जाकर शान्ति से रह रही थी। मुझे कुछ अजीब लगा – मेरा जासूसी दिमाग उलझन में पड़ गया था। इसके अलावा जब मैंने धर्मा को तुम्हारे घर भेजा – सोचा शायद बातचीत में कुछ पता चले तो वहां ताला लगा पाया। आसपास पूछने पर पता लगा कि ताला कई दिन से लगा है। न जाने क्यों मेरी खटकन बढ़ने लगी। वीर से पूछताछ के दौरान मैंने यहां का एड्रेस जान लिया था। फिर मैंने अपनी क्यूरोसिटी शांत करने के लिए मुम्बई में अपने एक दोस्त बाला सिंह को फोन कर यहां का एड्रेस बताकर यहां के बारे में जानकरी जुटाने और मुझे ट्रांसफर करने को कहा। उसने आज सुबह ही यहां के बारे में, यहां के सभी रहस्यों के बारे में बताया। मेरी जानकरी में यहां बुआ व करनी ही होने चाहिए थे। जबकि उसने बताया कि घर में पांच लोग हैं। चार लेडीज व एक जेंटस हैं।

जेंटस तो एक स्टुडिओ चलाता है। लेटनाइट घर आता है। मैंने तुम्हारी फोटो मोबाइल से बाला को भेजी। पता नहीं क्यों मुझे लगा कि वो तुम ही हो। पता नहीं कैसे बच गए हो। बाद में बाला सिंह ने इस बात की पुष्टि की। उसने स्टुडियो जाते वक्त तुम्हारी फोटो भी खींची थी और मुझे भेजी। मामला एकदम साफ हो गया।"

चेतन के शांत होते ही खामोशी पसर गई।

चेतन धर्मा को छोड़कर बाकी के चेहरे पर चिंता की लकीरे साफ नजर आ रही थी।

"अ...अब...त...तुम क्या करोगे? फिर वासु ही बोला-"म मुझे पकड़वाओगे ?"

"किसी बसते हुए घर को उजाड़ना मेरा मकसद कभी नहीं रहा। लेकिन इस तरह छिप-छिपकर, डर-डर कर तुम कैसे जीओगे। कभी तुम्हारे जिंदा होने का राज खुला तो तुम्हारे लिए मुसीबत बन सकती है।"

"फिर...फिर...? "

"मेरे पास एक रास्ता है जो सारी मुश्किलों से तुम्हें दूर रख सकता है।"

"क्या ?"वासु ने चौंककर कर उसे देखा।

उसने बताया

"न...नहीं!" करनी चिल्लाई।

“डरो मत। वैसा कुछ नहीं होगा, जैसा तुम सोच रहे हो।” चेतन ने समझया। सब मान गए।

चेतन ने वासु को आदलत में पेश किया और शुरू से अंत तक सब बात बताई तो न केवल जज बल्कि वहां मौजूद सब लोग हैरान रह गए। पर जज ने वासु को बेगुनाह माना और गगन त्रिपाठी का कत्ल सेल्फ डिफेंस में हुआ, मानकर बाइज्जत बरी कर दिया।

✠✠✠

कुछ महीनो बाद।

प्रभु को रिहा कर दिया गया। दो तीन घंटे बाद चेतन वहां आया और दोनों कार से शिवम की वाइफ-बेटी से मिलने पहुंचे। उन दोनों के बारे में चेतन ने प्रभु को पहले ही बताया हुआ था। फिर प्रभु का परिचय जब उन दोनों से कराया तो दोनों के चेहरों पर नफरत साफ दिखी।

“मैं आपके पास एक विनती लेकर आया हूं।” प्रभु ने नमस्ते करने के बाद विनम्रता से कहा।

महिला ने चौककर उसे देखा।

“कैसी विनती ?” उसने प्रभु के चेहरे पर नजरे गड़ा दी।

“मैं यह नहीं कहूंगा की आपकी इस हालत का असल में कौन जिम्मेदार है। पर फिर भी में मानता हूं कि इस हालत के लिए मेरे पापा भी जिम्मेदार थे, जिसके लिए मैं शर्मिंदा हूं। अ...और पापा के पापों के लिए सजा भुगतने के लिए तैयार हूँ।

मैं आपको इन बुरे हालतों से उबारना चाहता हूं।”

“क्या कहना चाहते हो ?” महिला की आँखे सोच भरे अंदाज में सिकुड़ी।

“अ...आप मेरे चलकर रहें।”

“नौकर बनकर।” महिला व्यंग्य से मुस्कुराई।

“मलिक बनकर।” मुझे अपना बेटा न मानें तो नौकर ही मान लें। पर मेरे साथ रहें। मुझे भी माँ- बहन का प्यार मिल जाएगा। जिसके लिऐ मैं वर्षो से तरस रहा हूं। किसी अपने का साथ कभी नसीब नहीं हुआ।”

प्रभु डबडबाई आंखो से हाथ जोड़कर बोला-”मेरी इल्तजा कबूल करेंगी तो मुझ पर बड़ा अहसान होगा।”

महिला सोच में पड़ गई।

तभी चेतन ने हाथ में दबा रखी फाइल महिला की तरफ बढ़ाई।

“ ये क्या है ?” महिला ने फौरन पूछा।

“ये प्रभु कि वसीयत है। इसने अपना सब कुछ आपके नाम कर दिया है।”

माँ-बेटी ने हैरानी से प्रभु को देखा।

“हैरानी की कोई बात नहीं है। वैसे भी मेरे पास जो भी कुछ है वो अब है तो आपका ही। आप मेरी इल्तजा स्वीकर कर लेंगी तो मै भी आपके साथ बना रहूँगा वरना...घर चल के देखूंगा। फिर पापा के बुरे काम का प्रायश्चित भी तो करना है। जो सिर्फ वसीयत आपके नाम करने से कहा पूरा होगा।”

माँ-बेटी अपलक उसे ताकती रही।

चेतन ने गला खंखारा।

"मुझे पता नहीं बीच में बोलना चाहिये कि नहीं पर...।" चेतन बोला "प्रभु का दिल सच में साफ है। आपकी बर्बादी के जिम्मेदार अकेले प्रभु के पापा नहीं हैं। आपका बेटा केयरलेस न होता तो ऐसी नौबत नहीं आती।" कुछ रुककर वह पुनः बोला। "मेरी आपसे गुजारिश हैं कि प्रभु की इल्तजा कबूल कर लीजिए।"

महिला ने बेटी की तरफ देखा।

"मुझे...म..मंजूर है।" फिर वह बोली।

चेतन खुश हो गया। प्रभु के आंसू निकाल पड़े।

"पर यह मंजूर नहीं है।" महिला ने वह वसीयत वाली फाइल चेतन को पकड़ा दी।

कुछ देर बाद चारों कार में बैठे प्रभु के घर जा रहें थे।

राणावत किसी फाइल में उलझा था। जब प्रभु ने थाने में कदम रखा। गेट पर पहुंचकर प्रभु ठिठका। कुछ पल वेट किया। फिर हल्के से खांसा।

राणावत ने सर उठाया।

"अरे, प्रभु ! आओ...आओ।" फाइल एक तरफ करके वह फौरन प्रसन्नता से बोला।

प्रभु आगे बढ़ा।

"बैठो।"

वह एक विज़िटिंग चेयर पर बैठ गया था। कुछ पल खामोशी बनी।

"कैसे आए।" फिर राणावत ने ही पूछा। "थैंक्यु बोलने ?"

"हां! आप अगर सही समय पर न पहुंचते तो तमन्ना जैसी धोखेबाज लड़की से मेरी शादी हो जाती और मैं बर्बाद हो जाता। पर अपने मुझे बचा लिया। उसके लिए थैंक्यु बोलने आया हूं।"

राणावत ने गर्दन हिला कर थैंक्यु कबूल किया और धीरे से बोला –

"तुम्हारे दिल में मेरे लिए बहुत नफरत होगी। नहीं ?"

"क...क्यों ?" प्रभु चौंका।

"मैंने तुम्हें फांसी के फंदे तक पहुँचाने का पूरा इंतजाम...।"

"अरे...नहीं...नहीं। उ... उसमें आपकी कोई गलती नहीं। उस समय हालात ही ऐसे बन पड़े थे कि आपकी जगह कोई और भी होता तो वही सोचता जो आपने सोचा। फिर आप अपना फर्ज निभा रहे थे। आपकी मुझसे कोई पर्सनल दुश्मनी तो थी नहीं। मेरे साथ जो गुजरी उसके लिए सबसे ज्यादा दोषी अगर कोई है तो...व...वो ...मैं हूं ...। न मैं खुद को दिमागदार साबित करने का प्लान रचता और ना ही वो सब होता।"

"मैं तो सोचता था तुम्हारे दिल में मेरे लिए अपार गुस्सा, नफरत होगी जैसे कि अमूमन हर अपराधी के दिल में मेरे लिए होती है।"

"न...नो सर...नेवर सर।"

"अगर सच सामने न आता तो तुम्हरा फांसी पर झूलना महज वक्त की बात होती। अ...और इस बात का मुझे जिंदगी भर अफसोस रहता। किसी निर्दोष व्यक्ति को कष्ट

देकर सुकून पाना मेरी फितरत कभी नहीं रही।" प्रभु कुछ नहीं बोला।

कुछ क्षण फिर खामोशी आ ठहरी।

फिर प्रभु ने शिवम की वाइफ-बेटी को आपने साथ रखने वाली बात बताई तो राणावत ने मुक्त कंठ से उसकी प्रशंसा कि।

तभी वहाँ देवेन वर्मा आ पहुचा।

"आइए वर्मा साहब।" राणावत ने फौरन हंस के कहा।

"अ...आपने मुझे पहचान लिया?" वर्मा आगे बढ़ते हुए बोला। उसके साथ में एक आठ-दस साल का सांवली सूरत का खूबसूरत बालक भी था।

"इस बारे में मेरी याददाश्त कमाल की है वर्मा साहब ! मैं एक बार जिससे मिल लेता हूं वह मेरे जेहन में बैठ जाता है। बैठिये।" वर्मा प्रभु के पास पड़ी उसकी विज़िटिंग चेयर पर बैठ गया।

राणावत की नजर बालक पर आ ठहरी।

"ये कौन है ?" फिर राणावत ने पूछा।

"मेरा बेटा है।" वर्मा मुस्कुराया।

"ब...बेटा...।"

"हां...। आपने मुझे नजरिया बदलने को बोला था-आपकी बात मुझे जंची थी और मैंने अपना नजरिया बदला तो मुझे...।" वर्मा ने बालक को प्यार से खुद से सटाते हुए कहा –"मेरा राजकुमार बेटा वापस मिल गया। "

"आ...आपने इसको गोद लिया है ? "

वर्मा ने 'हां' में मुंडी हिलाई। उसके चेहरे पर जमाने भर की प्रसन्नता झलक रही थी। आज के देवेन वर्मा में और कमरे पर नशे में धुत मिले देवेन वर्मा में जमी-आसमान का अंतर था। नशे वाला, गम में डूबा वर्मा मुरझाया नजर आता था जो हर घड़ी सिर्फ मरने की दुआ करता था। पर आज का देवेन वर्मा एकदम खिला-खिला ताजा फूल सा लग रहा था। जो अपनी मुकम्मल जिंदगी शान से जीने का तमन्नाई जान पड़ता था।

राणावत अपलक उसे देखता रहा जबकि वर्मा मंद-मंद मुस्कुरा रहा था।

"आपने मेरी सोच बदल कर मुझे जीने की नई राह दिखाई थी। उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देने आया हूं।" फिर वर्मा ने कहा।

राणावत जो खुद केस सॉल्व न कर पाने का मलाल पाले था। अंदर ही दुखी था, ये धन्यवाद पाकर खुद को सफल समझ रहा था। अंदर ही अंदर बहुत खुश हो रहा था। गम आहिस्ता-आहिस्ता दूर होता जा रहा था। ये सच्चे सुख की अनुभूति थी जो किसी के साथ बेहतर करने से ही मिलती है।

क्या हुआ जो वो केस सॉल्व नहीं कर पाया।-कम से कम कुछ चेहरों पर मुस्कुराहट तो ला दी। जिंदगी में अगर सबसे खास कुछ है तो यही तो है।

राणावत के चेहरे पर अब बड़ी ही मोहक, निश्छल मुस्कान तैर रही थी। उसी खुशी में उसने सबको चाय ऑफर की।

समाप्त